गलत संदर्भ



प्रफुल्ल प्रभाकर

राजस्थान साहित्य अकादमी प्रकाशन

हिन्दी उपन्यास – 1980



गलत संदर्भ

प्रफुल्ल प्रभाकर

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

GALAT SANDARBH (Hindi Novel)

Prafulla Prabhakar

प्रकाशक : राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
मुद्रक : मेसर्स महावीर प्रिन्टिंग प्रेस, उदयपुर
मूल्य इक्कीस रुपये पचास पैसे मात्र
आवरण : श्री राजाराम व्यास

गलत सन्दर्भ (हिन्दी उपन्यास)

प्रफुल्ल प्रभाकर

अपनी बात

उम्र के इस पड़ाव पर लगता है लेखक होना भी अपने-आप मे परेशानिया पाल लेना जैसा ही है। क्योंकि लेखक हर क्षण टूटता है तनिक से आहत होने पर और यह टूटन धीरे-धीरे जीवन! जिसे आम शब्दो मे व्यावहारिक जिन्दगी कहा जा सकता है उसके लिये, परिवार के लिये निश्चय है आत्मपीडा का दुख, कही क्षणिक सुख भी। सुख अपने ही होते है पर दुख जो आर्थिक पीडा से अधिक जुडे हैं उसका प्रभाव परिवार के सदस्यो पर सीधा पडता है।

आत्मसंतोष! जैसे शब्दो मे लेखक जीता-मरता है। सारे दुखो को जानते हुए भी लेखनकर्म चुना है। भविष्य, कुछ भी हो।

उपन्यास के सम्बन्ध मे पाठक ही कहे श्रेयस्कर है। खुद कुछ कहना अच्छा नही लगता।

साहित्य अकादमी ने भारी भरकम लेखको के नामो को छोड नये नाम, नयी कृतियो को चुना है मूल्यांकन के आधार पर। इसके लिये अकादमी के प्रति मेरा आभार।

प्रफुल्ल प्रभाकर

प्रकाशकीय

राजस्थान साहित्य 'अकादमी' की प्रकाशन योजना के अंतर्गत हिन्दी की यह प्रथम औपन्यासिक कृति गलत सन्दर्भ प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष है। इस उपन्यास में आयातित आधुनिकता और भारतीय मानस की सादगी एवं मासूमियत की अहिंसक लड़ाई के तरख तवर हैं लेकिन फिर भी यह 'बयान' नहीं है बल्कि पाठक को इस सामरिक तैयारी का एक हिस्सा बना देने वाला ईमानदार प्रयास है।

उपन्यास की भाषा और शैली में श्री प्रफुल्ल प्रभाकर की निजी आवाज और निजी अन्दाज है जो उनकी अलग पहचान बनाता है। श्री प्रभाकर राजस्थान के युवतम साहित्यकर्मियों की उजली पंक्ति में हैं, उनकी आन्तरिकता और सामाजिक जिम्मेदारी परस्पर सहधर्मी और सहकर्मी हैं, अन्तर्विरोधी नहीं। इसीलिये उनकी रचनाएं समाज के द्वन्द्वात्मक रिश्तों को बड़ी सच्चाई और ईमानदारी के साथ उजागर करती हैं।

गजेन्द्र शर्मा
निदेशक

उदयपुर
अक्तूबर, १९८०

ग्रन्थारम्भः

१

राजेश आपकी कविता की ये पक्तिया बहुत सुन्दर है। इनमे जो दर्द है लगता है सारी दुनियां का दर्द आप अपने जीवन मे समेट लेना चाहते हैं। आपकी ये पक्तिया ही देखलो—

हाट लगते रहे उम्र बिकती रही
नींद आती रही, आख मुदती चली।
नयन अजते रहे,
दर्द पलता रहा, टीस,उठती रही॥

अब मुझे जीवन के प्रति कोई विश्वास, कोई आस्था नही रही। मैं हमेशा जीवन को ऐसा रास्ता मानता रहा हू जिसमे फूल कम और काटे अधिक हो। मैं तो क्या कोई भी जीवन मे हमेशा सुख ही मिलता रहेगा इस बात का दावा नही कर सकता है। जिन्दगी जहा महकते फूलो की बगिया है वहा उसमे लगे काटो से अपने को कहा तक बचाया जा सकता है। फिर भी जो रास्तो मे बढ गये हैं उन्हें रास्ते मे आने वाली कठिनाइयो की चिन्ता नही करनी चाहिये। ठीक इसी तरह के विचारो वाले लोगो मे से हू। फिर भी मुझ मे कभी कभी कमजोरी आ जाती है। तुम हमेशा जीवन के प्रति मेरे से भिन्न विचार रखती हो।

आप दर्शन को छोडकर साहित्य की ओर देखिये। जिन्दगी क्या है ? क्या होगी ? आप तो न जाने क्यो अभी से सोचने लगे। जीवन को सोचने के लिये पूरी जिन्दगी आपके सामने है। मैं कुछ और ही सोच रही थी और आप हैं कि न जाने क्या सोचने लगे ? मै मानती हू जीवन एक बहुत बडी परीक्षा है, कठिन है, फिर भी हमेशा उसके लिये सोचते रहना मेरे विचार से ठीक नही, आपकी कविताओ मे इतना दर्द होता है।

नही ऐसी तो बात नही। फिर भी आखिर इंसान ही तो हू। कभी इस लम्बे जीवन के अत के बारे मे सोचने लगता हू तो एक अजीब सा विचार आ जाता है। लगता है हर ओर निराशा हो, जीवन के प्रति कोई प्रेम नही, एक घुटन और जुगुप्सा का भाव ही हर ओर दृष्टिगोचर होता है।

हर बार न जाने क्यो इस विचार से घबरा जाता हू और सोचता जाता हू, क्या इस प्रकार के जीवन का अत भी खुशी लिये हो सकता है। लेकिन इस विचार से घबरा उठता हू। तुम्हे कई बार चाहते हुए भी नही कह पाया। कालेज मे पढते दो साल हो गये। तुम्हे याद होगा, कवि सम्मेलन के दिन का तुमसे प्रथम परिचय। उस दिन मैंने अपनी कल्पना को साकार पाया। कल्पना जब साकार हो उठी तो गीतो का प्रसव हुआ, लोगो ने वाह-वाह की। हर ओर से प्रशसा मिली। तुमने भी उन्मुक्त हो कविताओ को सराहा।

मैं हमेशा से कहती हू जो कुछ आप सोचते हैं वह उचित नही। उसमे सत्यता क्या है उसे आपका हृदय भी जानता है और मेरा भी। जीवन का हर कार्य मात्र भावना से नही हो जाता। उसके लिये त्याग, तपस्या और बलिदान करने होते हैं। वे बलिदान अगर समाज के, परिवार के सुख शाति और नियमो को तोड-कर किये जायें तो मैं उसके पक्ष मे नही।

सच कहती हो। समाज के प्रति हमारे कर्तव्य ही कर्तव्य हैं। इस समाज को बनाने वालो का समाज के प्रति कोई कर्तव्य नही है तुम यही कहना चाहती हो ना? जीवन मे कर्तव्य भी हैं उनके प्रतिदान मे हमारे कुछ अधिकार भी है। लेकिन अधिकारो को रूढिवादिता प्रिय लोगो ने अपनी क्रूरता के पैरो कुचल डाला है और तुम भी क्या उन्ही लोगो मे से नही? जीवन का प्रत्येक कार्य समाज के नियमो के अनुसार नही चलाया जा सकता और न ही चल ही सकता है। क्योकि जिस गति से समय ने अपने मे परिवर्तन किया है, उसी गति से समाज अपने को बदलने मे निरर्थक सिद्ध हुआ है। तुम शायद न मान पाओ। जब भी किसी बात को सोचने का प्रयास किया है, उसमे तुम्हारा विचार अवश्य रहा है। मैंने जीवन को हर दृष्टि से सोचा है। लेकिन उसमे हर ओर केवल तुम्हारा नाम दिखाई व सुनाई पडता है। तुमने शायद मुझे समझने का प्रयास नही किया है अन्यथा मेरे विचारो को जरूर समझ जाती और इस तरह की बातें नही करती।

खैर, छोडो इन बातो को। फिर कभी समय से बात करेंगे। सामने देखो नम्रता आ रही है।

कहो, नम्रता अब कैसी हो?

बुखार था। आज सोचती हू दार्जिलिंग चली जाऊँ। डैडी का पत्र आया था, उनकी तबियत ठीक नही है। बहुत काम करते है वे भी। सुबह से शाम तक लगे रहते हैं। आज मैने जाने का निश्चय कर लिया है। आप राजेश, लगता है मुझसे नाराज हो। आप न जाने कहा से सुन्दर कल्पनायें कर लेते हैं। कभी दार्जिलिंग आना हो तो किसी से भी पूछ लीजिये। मि० सिन्हा कहते ही कोई भी बता देगा। आपकी कविताओ के साथ जब आपकी याद आती है तो जी करता है आप सामने सुनाते रहे है मैं सुनती रहू। डैडी को भी कविताओ और पैंण्टिग मैं रुचि है। अच्छा, नमस्ते।

नमस्ते।

क्या तुम मेरा जीवन मे साथ नही दे सकती ? मेर जीवन का हरेक क्षण तुम्हारी याद मे वीतता है, जिस भी ओर देखा है, तुम्हे पाया है। मैंने जीवन को तुम्हारे सहारे छोड दिया और तुम न जाने क्यो मेरे से दूर रहने की बात सोचती हो। क्या तुम्हारे हृदय मे मेर लिये वह प्यार नही जो अलस्त हो। मेरे हृदय मे जो तुम्हारा स्थान है उसे शब्दो मे कहना बहुत कठिन है। उसकी अभिव्यक्ति के लिये मेरे पास शब्द नही हैं। मैं हर बार अपनी बात कहते-कहते ठिठक सा जाता हू। विचारो के तीव्र प्रवाह मे न जाने उस शक्ति का जन्म क्यो नही होता, जिससे मैं तुम्हे कुछ समझा सकू, अपनी बात कह सकू। नीरजा, अच्छे सृजन के लिये अच्छी कल्पना कितनी आवश्यक है, अच्छे परिणाम के लिये अच्छे साधनो का होना कितना आवश्यक है, तुम भी तो इस बात को समझती हो। उद्देश्य का उच्च होना ही उतना महत्व नही रखता। मेरे जीवन की सुन्दर सी तस्वीर की तुम उच्च कल्पना हो। मेरे हर गीत के प्रत्येक शब्द मे तुम्हारा रूप है, तुम्हारी प्रेरणा है।

तुम यदि यह सोचते हो कि मैं तुम्हारी कल्पना हू, तुम्हे मुझसे प्रेरणा मिलती है तो इसमें मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। मेरे से तुम्हे जीवन पथ पर अग्रसर होने मे सहायता मिलती है, तो मुझे प्रसन्नता है और उसी के सहारे उन्नति करते जाओ, यही शुभ कामना है। लेकिन जहा तक पूरे जीवन भर साथ देने का प्रश्न है यह बहुत कठिन है, तुम शायद न समझ सको। जिन्दगी मे भावुकता तो सब कुछ नही। वास्तविकता जीवन है, उसीमे उसकी सफलता का रहस्य है। मेरे पिताजी वैसे ही बहुत भावुक है। उन्हे जब विदित होगा कि उनकी लडकी ने उन्हे बिना बताये शादी करली तो उन्हे बहुत दुख होगा। उन्होंने मेरे पर जितना विश्वास किया है, उसका प्रतिदान क्या मैं केवल एक भावना मे बहकर, उन्हे दुख दू।

इसके माने तुम मानती हो कि प्यार बेकार की बात है। इसके प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नही। तुम्हारे हृदय मे जहा स्वय के घर वालो के प्रति ऐसे विचार हैं दूसरी ओर मेरे प्रति कोई उत्तरदायित्व नही।

मैंने हमेशा तुम्हे अपने मित्र के रूप मे माना, तुम्हे अपने स्वय के जीवन के प्रति निष्पक्ष रूप मे देखा। जिस प्रकार तुम्हारे और भी मित्र हैं मैं भी एक मित्र ही थी। यदि उसे तुम गलत समझ बैठे तो इसमे मेरा क्या दोष है। हरेक दृष्टिकोण से जीवन को मैंने देखा है, समझा है। जिससे अभी तुम बहुत दूर हो या कहू जीवन रूपी सागर के दूसरे किनारे पर खडे हो जहा से समुद्र का दूसरा किनारा बहुत पास व पहुचना सरल लगता है। क्षितिज जब बीच मे आ जाता है तो तुम यही मान बैठते हो कि समुद्र का दूसरा छोर बहुत पास है। लेकिन जब तुम उस ओर चलते चलोगे तो अनुभव होगा कि वही क्षितिज तुमसे दूर हटता जा रहा है और तुम फिर भी अपनी मजिल से दूर हो। मैंने जीवन मे इन सब बातो को समझा है। तुम जानते हो कालेज मे मेरा यह अतिम साल है। फिर भैया मेरे को लखनऊ रखना ही पसन्द करेंगे। आगे पढने की इच्छा भी नही है। वहा भाभी है उनके दो बच्चे है मेरे साथ की वहा न कोई मित्र होगी न कोई आनन्द ही। लेकिन वहा रहना जरूरी है।

तुम भी रहो, तुम्हारी याद मेरे हृदय को कचोटती रहेगी। तुम समझने का प्रयास क्यो नही करती। सामने देखो सूर्य की अतिम किरणो मे भी कितनी चमक है, ओज है जिसमे हम शिथिलता अनुभव नही करते। यही इसका रोज का क्रम है, इसका उत्साह क्या कभी कम होता है? इसका कारण है उसमे सच्चाई है, रोज उदय होना, अस्त होना एक प्राकृतिक स्वाभाविक क्रिया है। जीवन मे स्थिरता को अनुभव नही करता। लगता है जी रहा हू और न जाने कब तक। तुम यदि अपने को मेरे जीवन मे साथ देने मे असमर्थ अनुभव करती हो, तुमने कभी यह सोचा है तुम्हारे से विलग व्यतीत जीवन का क्या होगा। खैर, तुम जो उचित समझो, करो।

मैं यह नही चाहती कि तुम मेरे लिये अपने जीवन की परवाह करना छोड दो। मैंने जो कुछ भी था सब कुछ बहुत ही साफ-साफ ढग से तुम्हारे सामने रख दिया। मैं मानती हू इससे तुम्हे आघात पहुचा होगा। लेकिन क्या तुम इस बात को ठीक समझते हो कि मैं तुम्हे अपनी स्थिति बताये बिना ही तुमसे झूठा प्यार जताती रहू और जब तुम मेरे प्रेम मे पूर्ण रूप से लिप्त हो जाओ, तब मैं अपनी मजबूरियो का सहारा लेकर तुम्हारी राह से अलग हट

जाऊं। मैं इसे अच्छा नही समझती। जो कुछ भी दोनो के हृदय में है उसे बहुत ही सच्चाई के साथ एक दूसरे के सामने रख दें ताकि बाद मे एक दूसरे से शिकायत न रहे। इसीलिये अपनी स्थिति को तुम्हे बताया। तुम स्वयं निर्णय करलो। मेरी परिस्थितियां ही सबसे बड़ी बाधा हैं। आज मैं तुमसे शादी कर भी लूं, मेरी तीन छोटी बहिनें और है उनकी शादी का क्या होगा। लोग क्या सोचेंगे कि जिस तरह बड़ी लड़की खराब थी, बाकी भी वैसी ही होगी। इसके अलावा अगले दो महीनो के बाद पिताजी रिटायर हो जायेंगे। घर का खर्च चलाने के लिये मुझे नौकरी करनी हो सकती है। कई और भी बातें हैं जो मुझे रोकती हैं। मेरा जीवन जिन परिस्थितियो से गुजरा है या बीत रहा है उसे तुम नही समझ सकते। बड़े भैया का क्या है। उनकी आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नही कि वे हमारे परिवार का खर्च चला सकें। अन्य और भाई नही होने के कारण घर मे मैं ही बड़ी हूं। तुम्हारे साथ बीते दिनो की बातें जीवन मे याद रहेंगी। मेरी गलती यही रही कि कभी इस बारे मे गम्भीरता से नही सोचा। मुझे तुम बहुत प्यार करते हो मालूम नही था और न ही कभी तुमने कहा ही।

मुझे तुम से कोई स्वार्थ नही और न ही कुछ पा लेने की इच्छा थी। यदि कुछ है तो प्यार। तुम्हारी घरेलू परिस्थितिया अवश्य तुम्हे मजबूर करती हैं। लेकिन तुम लड़की हो, पिता के पास कब तक रहोगी। आखिर एक न एक दिन तुम्हें अपना घर बसाना है। तुमने अपनी स्थिति को कह दिया, तुमने अच्छा किया। अपने भाग्य से विरोध है उसके लिये किसे कहूं। आओ चलें, शाम हो गई है।

२

आपका प्रश्न कि मैं इतना दुखी गंभीर क्यो रहता हूं। क्या उत्तर दू, इसका। बिलकुल हारे खिलाडी सा हूं जिससे कुछ कहते नही बन पडता है। आप तो स्वयं जानती हैं नीरजा से मैं कितना प्यार करता हूं। उसके साथ जीवन चलाने के सारे स्वप्न नष्ट हो गये और एकाकी जीवन बिता रहा हूं। मुझे कभी भी तनिक सा विचार नही आया कि नीरजा मेरी इच्छा को ठुकराकर यो चली जायेगी कि जैसे उससे मेरा कोई परिचय ही न हो। उसने जो भी किया उसकी मजबूरिया थी। इसीलिये मैंने यही सोचकर कि विवश मनुष्य क्या कर सकता है, उसे क्षमा

कर दिया। फिर भी उसकी याद आज भी हृदय को काटती रहती है, मैं जीवन से दूर भाग जाने का असफल प्रयास करता हूँ और बच जाता हूँ। जिन्दगी क्या बन गयी है उसके बारे मे न पूछो तो अच्छा है हर ओर जीवन से पलायन की भावना दृष्टिगत होती है और मैं जीवन से बहुत दूर चले जाने का विचार करने लगता हूँ।

नीरजा ने आपके लिये जैसा कहा, वैसे ही हैं। बहुत भावुक हैं आप। हो सकता है आपमे नीरजा को भुलाने की शक्ति नही है। लेकिन आप जहा तक हो सके अपने स्वास्थ्य को ठीक बनाये रहिए। जब वह आपके साथ इस प्रकार का व्यवहार कर सकती है तो आप ही क्यो इतने भावुक है। यो क्यो नही सोचते कि कभी आपने भी उसे चाहा था न कि प्रेम किया था। आप प्रयास करें तो सोचती हूँ आप अवश्य भुला देंगे उसे।

आपने जो कहा एक सीमा तक वह सही है। मैं नीरजा से पूछूं कि मैं उसकी यादो से भरा हृदय लेकर कैसे जी सकता हूँ? उसके पास इस बात का कोई जवाब नही। इसे मजाक मानलें तो यह भी मुझे मेरी मृत्यु के पास खीच लाया है। खैर, नम्रता, विश्व मे दो तरह के लोग होते हैं, एक वे जिन्हे जीवन मे दुख ही उठाने है और दूसरे वे जिन्हें उनके अच्छे बुरे प्रत्येक कार्य से सुख मिलता है। अपने को मैं प्रथम तरह के लोगो मे से मानता हू। लगता है जीवन मे आशा नाम की कोई वस्तु नही, शेष जो भी है वह निराशा। जिसे मैं न जाने क्यो फिर भी सजोये चला जा रहा हू। *लगता है अब जीवन का सारा सुख इन्ही दुखो और निराशा के परिवेश मे आकर सीमित और स्थिर सा हो गया है। मैं अपने इस सुख को बहुत लगन और स्नेह से जिलाये जा रहा हू। आपको दार्जिलिंग मे उसकी कमी ने और दु खी कर दिया। यहा मुझे एक घुटन सी लगती हैं।*

ये सुन्दर दूर तक दिखाई देने वाले पेड़, हरियाली कितनी कल्पनाशील है, लेकिन मुझे लगता है अब इन प्राकृतिक दृश्यो और निर्झरो मे कोई हलचल नही है। सब मूक से लगते हैं।

नही, नही, आप ऐसा क्यो सोचते है। विश्वास रखिए, सब धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा। अभी तो आपकी उम्र ही क्या है, जो आप ऐसा सोचने हैं। कभी कभी ऐसा होता है। आपने साथी का चुनाव जो किया, वह ठीक नही था। उसने निवाहने की जगह आपको दुख पहुचाया है। उसने आपके साथ प्यार का नाटक खेला। आपके जीवन का मूल्य उसकी दृष्टि मे कुछ नही के बराबर है। बात को किस तरह गंभीरता से सोचा जा सकता है, इस बात का उसमे माद्दा नही है।

खैर, छोडो जिसने हमे कही का नही छोडा उसकी चर्चा करना भी बेकार है। जिसमे सोचने विचारने की शक्ति ही न हो, उसकी क्या बात की जा सकती है। किसी को चाहने की लालसा हृदय मे नही रह गयी अब तो जैसे-तैसे दिन पूरे हो जायें।

आप तो गुजारने की बात कर रहे है मैं तो कहती हू खूब खुशी के साथ जिन्दगी की आखिरी सांस तक इसका आनन्द लो। क्यो छोटे विचारो को मस्तिष्क मे लाते हो। आपका तो कर्तव्य है समाज को नई राह दो। पाठक आपके नये साहित्य की राह देख रहे हैं, आशा करते हैं और आप हैं कि जीवन को इतने सकीर्ण परिवेश मे देखने की सोचते है। मेरा तो विचार है कि आप साहित्यकारो के जीवन मे ऐसे क्षणो का बीतना आवश्यक है जिससे आप लोग हर तरह के विचारो को अपने जीवन मे घटित घटनाओ के आधार पर बडी सहजता और स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत करने मे सफलता प्राप्त कर सकें। आपकी कला का वह सामने वाला चित्र ही देख लो। कितना अर्थपूर्ण है। देखते हो ना वह आदमी सूर्योदय की कितनी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है। सूर्योदय का अर्थ उसकी आशाओ का प्रबल होना है, उत्साह का सूचक है। फिर भी न जाने क्यो तुम हताश हो जाते हो, निराश हो जाते हो। उधर देखो माँ, अपनी गोदी मे बच्चे को बिठाये है। अपने बच्चे की रक्षा करना कर्तव्य होने के साथ-साथ उससे उसकी बडी-बडी आशायें हैं। इतने भावपूर्ण चित्र बनाने के बाद भी आप इतने निराश रहते हो।

नम्रता, आज मुझे उत्साह दे रही हो। कल तुम भी बदल जाओगी। मैं क्या कर सकता हूँ। आज का ही क्या पता क्या हो जाय? हो सकता है तुम भी अपनी मजबूरियो का बहाना लेकर राह मे चलती हुई रुक जाओ और मैं बढता ही चला जाऊ अकेला। तुम जानती ही हो मैं कितना दुःखी हू, जिनसे प्यार कर बैठा हू उन्हे इस जिन्दगी मे भुला देना कितना कठिन है, शायद न समझ पाओ। मुझमें जीवन के प्रति ऐसी भावनाओ का विस्तार हो चुका है जिसमे इसके सारे दुःख सुख सम्पन्नता सुविधायें तुच्छ हैं। मेरा उनसे कोई सरोकार नही है।

ऐसा सोचते हैं, ठीक नही। मैं नही चाहती कि आप ऐसे सोचें और दुखी रहे। आप यदि ऐसा करते रहेगे तो भविष्य मे, मैं नही आऊँगी आपके पास। आप वास्तविकता को समझने का प्रयास क्यो नही करते। आपको चाहिये कि उसे भूलने की कोशिश करें। अपने को जहां तक हो कार्यों मे लगाये रखें जिससे बेकार की बातें सोचने का समय ही न मिले। आप पेंटिंग ही किया कीजिये।

एक क्षण भी तो ऐसा व्यतीत नही होता जबकि नीरजा का नाम, उसका विचार मस्तिष्क मे बवडर की तरह नही चलता। मैं न्चाह चाहते हुए भी उसकी याद को अपने हृदय से नही निकाल पाता।

मेरे रहने से अगर थोडा सा भी दुख कम हो तो मुझे अपने से अलग नही पाओगे।

धन्यवाद देता हू सहानुभूति के लिये। वैसे भी धनवानो के प्रति मेरे हृदय मे आक्रोश है। तुम्हारे और मेरे विचारो मे समता आ ही नही सकती। मेरा स्पष्ट कहना तुम्हें दुखाएगा अवश्य, पर यह दुख मेरे दुख से भारी न होगा।

मेरा विचार था दार्जिलिग मे आप अकेले हो। मैं रोज क्लब जाती हू। आपके साथ रहने से मुझे भी कपनी मिलेगी, आपका दिल भी हल्का हो जायेगा। क्लब मे चलकर देखो जिन्दगी क्या है यहा। क्या घर मे घुटे-घुटे, बद पडे रहते हो। घर से बाहर निकलो तो स्फूर्ति आ जाती है यहा की हरियाली सारे दुखो को अपने मे समेट लेती है। मजे की बात बताऊँ डैडी ने आपके फोन को रिसीव किया था कहने लगे– तुम्हारे दोस्त का फोन है। मैंने सोचा शरद होगा। लेकिन तुम्हारी आवाज सुनते ही पहिचान गयी। देखो कल शाम को तुम्हारा हमारे यहा डिनर है। मैं लेने आ जाऊगी। क्यो ठीक है न ?

खाने का प्रबध तो तुम जानती ही हो मेरा, यहा नौकर है सारा काम कर लेता है। ऐसी [जल्दी क्या है। अभी तो लगभग पूरे दो महीने यही हू। अभी से इतना सब कुछ करोगी तो दो महीने में थक जाओगी। हा, वैसे कल शाम को आ सको, तो आना कही घूमने निकलेंगे। खाने का तो अभी रहने दो। तुम्हारे डैडी इन दिनो यही हैं या बाहर गये हुए है बडी इच्छा है उनसे मिलने की।

वे तो अधिक व्यस्त रहते हैं। कभी इस बगीचे गये कभी दूसरे। बहुत काम करते हैं। आपसे ठीक कह रही हू कि उनके बराबर आप भी काम नही कर सकते। इस उम्र मे भी चुस्ती से काम करते हैं। मम्मी हमेशा मना करती रहती है उन्हे अधिक काम करने को, पर वे मानते ही नही। आपसे हो सकता है मिल ही न पाये और कही मिले भी तो बात पूरी भी नही होगी कि कोई बुलाने आ जायेगा और चल पडेगे। आपमे तो वह शक्ति है कि आप थोडी मेहनत करें तो बहुत बडे आदमी बन सकते हैं। आपने भी न जाने क्यो यह दर्द ले लिया। फिजूल में एक शात चल रही जिन्दगी मे बाधा ने जन्म ले लिया। खैर, मुझे पूरा

विश्वास है कि जब यहा पर रहेगे तो अवश्य ही सब कुछ भूल जायेंगे और यहा प्रकृति मे खो जायेंगे। आपने यहा की प्रकृति को देखा है कितना शात वातावरण प्रस्तुत करती है। जी करता है प्रकृति का सारा सौन्दर्य इन आखो मे समा जाये और आत्मिक शाति का अनुभव हो। यहा से दूर तक फैले बगीचे आपके कवि हृदय को छू लेंगे और मैं तो सोचती हू आप यहा से जाने का नाम ही न लेंगे।

तुमने वर्डसवर्थ, कॉलरिज को पढा है ना। उसमे पता होगा तुम्हारा विचार भी प्रकृति के प्रति उसी तरह था जो है। मैंने बहुत पहिले पढा था। तुम यदि पसन्द करो तो इन्ही कवियो की मेरे पास और भी कविताओ की पुस्तकें है। चाहो ले लेना। मुझे प्रकृति मे माँ का सा आभास होता है क्योकि माँ की तरह यह दुखो को हमसे ले लेती और एक शाति का वातावरण प्रस्तुत करती है। इतनी सुन्दर प्रकृति मे भी अपने को बहुत घुटा सा, खोया सा अनुभव करता हू। मुझे लगता है जैसे प्रकृति मे कोई स्पन्दन न हो। एक उदास निश्चल सा रूप मुझे हर ओर दिखाई देता है। मैं अपने दुखो को भुलाने म असमर्थ समझता हू, हो सकता है कुछ दिनो बाद मस्तिष्क मे कुछ शाति का आना हो। इन दिनो तो हृदय का ज्वार बहुत तीव्रता के साथ चल रहा है। ज्वार में उतार कब हो क्या पता ? लेकिन यह तो कहना पडेगा कि जिस तरह ज्वार उतरता है वैसे ही मस्तिष्क पर का यह प्रभाव भी धीरे धीरे कम हो जायेगा। मैं भी अपने पागलपन को जिलाये चला जा रहा हू। जानता हूँ नीरजा का रास्ता मेरे से बिलकुल भिन्न है। मैं उसे पाने में असमर्थ हूँ फिर भी मैं उसकी इच्छा कर रहा हूँ। यह न जाने किस अदृश्य शक्ति का प्रभाव है। ये जो सारी पेन्टिग्स तुम देख रही हो ये सब उस समय की हैं जब नीरजा मेरे पास बैठी होती। मैं बनाता रहता। इन दिनो यहा आने के बाद चित्रो को कैनवास पर उतारने का प्रयास किया, लेकिन लगता है वह कल्पना-इच्छा ही न रही हो। जी नही करता कि कुछ करू। वैसे मैं पेन्टिग का सारा सामान साथ ले आया हूँ। लेकिन इन दिनों मस्तिष्क सतुलित नही होने के कारण हर ओर असफलता, असमर्थता ही दीख पडती है। इस ससार के सारे कार्यकलापो पर जब तक विस्तृत दृष्टि डालता हू तो लगता है जो कुछ हो रहा है वह क्या सचमुच ठीक ऐसा ही है और मैं हस पडता हू उन्हे देख।

देखिये कितना समय हो गया है। आज्ञा दीजिये। कल ठीक पाच बजे फिर। आप तैयार रहियेगा। डिनर के लिये। मैं आपकी ये दोनो पुस्तके ले जा रही हू। आपने तो पढ लिये होगे ये उपन्यास।

मैंने कहा न, डिनर तो आप रहने दीजिये। वैसे ही घूमने निकल जायेंगे। कल ठीक पाच बजे मैं यही तुम्हारी राह देखता रहूंगा। अपने डैडी को कहना कि यदि हो सके तो कल वे शाम के समय घर पर ही रुक जायें, उनसे भी मिलना हो जायेगा।

पत्रों मे आपकी कहानी, कवितायें देखते रहते हैं। वैसे आपका कभी कोई परिचय नही हुआ है। मैं डैडी से कहूगी जरूर रुक जायेंगे। क्योंकि उनकी इसी रुचि का दूसरा कोई आदमी यहा पर है नही। वे खुद आपके साथ घुल-मिल जायेंगे। हा, यह बात जरूर है कि उन्हें कही दार्जिलिग से बाहर नहीं जाना हो। तब तो वे अवश्य थोडा समय निकाल पायेंगे यदि कही बाहर जाना रहा तो फिर कठिन रहेगा। खैर जो भी हो कल तैयार रहे।

ठीक है समय पर पहुच जाना। वैसे मेरा दिल इतना प्रसन्न नही है कि तुम्हारे डैडी से मिला जाये क्योकि वे न जाने क्या सोचने लगें मेरे लिये। *अब तो रात का समय हो रहा है। देखो तुम जाओ अब काफी समय हो गया* है। मैं जानता हू तुम कार बडी तेज चलाती हो। अच्छा।

देखो, *कविता वाली डायरी निकाल रखना।* फिर *कल कहो न जाने* कहा रखी हुई है। तुम्हारे डैडी ने कह दिया तो वहा कविता सुनानी पड़ेगी।

हम आपके यहाँ पहली बार आये आपने काफी के लिये भी नही पूछा। माना नीरजा नही है और न बन सकते हैं, लेकिन इस तरह बुरे भी नही कि आपको हमारा थोडा भी ख्याल न रहे।

दस मिनिट मे बन ही जाती है। क्या देर लगती है न जाने कब समय निकल गया। ठहर रही हो ना? बनवाता हूँ अभी।

औपचारिक बनने का प्रयास न कीजिये। आपको क्षमा कर दिया। फिर कभी सही। बहुत समय हो गया है मम्मी भी सोच रही होगी, कहा चली गयी है। अच्छा कल आ रही हूँ।

अच्छा, ठीक है।

३

दार्जिलिंग ने सुबह से चारो ओर घने कोहरे का परिवेश बना रखा है। कोई भी चीज दिखाई नही देती। अपने से थोडी दूर की वस्तु भी अदृश्य सी लगती है। घना धुधलका सारी दार्जिलिंग की पहाडियो और बागानो पर छाया हुँ। यो प्रतीत होता है कि उस प्रकृति के सौन्दर्य को शर्म सी लग रही है और उसने अपनी सारी प्राकृतिक सुन्दरता की वस्तुओ पर कोहरे का महीन घूघट सा डाल रखा है। अधेरे को दूर करके प्रकृति की सुन्दरता को प्रकाश म लाने वाला सूर्य भी न जाने क्यो आज कही रुक सा गया है। प्रकृति अब तक बहुत ही बेचैनी के साथ सूर्य की, जो आकर उसके घूघट को धीरे से उठायेगा, राह देख रही है।

चुपचाप बैठा थके हाथो से, बुझे हृदय से केनवास पर हाथ चला रहा हूँ। चित्र बनाते हुए उत्साही सा लगता हूँ, उसमे एक स्फूर्ति लगती है।

राजेश को लगा कि कमरे मे सूर्य की अन्तिम किरणे आने लगी है। शाम का समय है लेकिन सुबह स सूर्य की अनुपस्थिति से ऐसा लग रहा है मानो सूर्योदय हो रहा है। किरणो मे अधिक गर्मी नही है लेकिन कोहरा शनै शनै हटता जा रहा है। बाहर की वस्तुओ को अब देखा जा सकता है। उनमे कितना नयापन है। एक लम्बे समय की राह के बाद जो वे दिखाई दे रही है। शाम के छ बजे हैं। लगातार सुबह से केनवास पर लगे चित्र को बनाने म राजेश की अगुलिया अपना कार्य कर रही हैं। शाम का समय राजेश को और अधिक चित्र बनाने मे लगाये रखन मे लगता है अपनी असमर्थता प्रकट कर रहा है। बार-बार अपने हाथो से ब्रुश रख देता है और न जाने कौन से विचार उसे अपने मे बहा ले जाते हैं और फिर कुछ देर बाद उसे अपने कार्य की सुध हो जाती है और वह हडबडा उठता है, थक हाथो को कनवास पर चलान लगता है। हर चीज ने अपनी सीमाओ का निर्धारण कर रखा है। हा यह अवश्य है कि कुछ बहुत छोटी हैं तो कुछ बहुत बडी। जिस ओर भी देखा है हर ओर सीमाएँ ही सीमाएँ है। समाज ने मर्यादाओ को बनाया है तो उसी के साथ समय ने जब उन्हे अनावश्यक समझा तो उखाड कर फेंक भी दिया है। जब समाज ने उन्हे बनाये रखने का प्रयास किया है तो पहिले धीरे और बाद म उसी विद्रोह ने क्रांति का रूप लिया और समाज ने अपना नया रास्ता क्रांति के मोड से बनाया है।

कौन ? नम्रता ।

बडी देर हो गई सुबह से मौसम बडा खराब हो रहा था । कल मैंने सोचा था कि जल्दी ही आ जाऊगी । लेकिन अब आ पाई हू । अच्छा तो आपका मूड बनने लगा है । जरा कैनवास के ऊपर से पर्दा हटाओ तो देखें कि कौन सा चित्र बनाया जा रहा है । मैं कहती नही थी थोडे ही दिनो मे सब ठीक हो जायेगा । अरे तुम्हारी आखो मे आसू ? क्यो ये हमेशा गभीर हो जाना कोई अच्छी बात नही है । मैं तो कहती हू क्यो नही नीरजा को भूल जाते हो। जिसने तुम्हारे जीवन मे एक दुख दे दिया है और तुम हो कि उसी मे अपनी जिन्दगी को खत्म कर लेना चाहते हो । जो बात तुम्हे सुख नही दे सके उसे क्यो नही हृदय के बाहर निकाल देते हो । उसने तुम्हे हमेशा एक मित्र समझा और तुम इस बात को और ही रूप म ले बैठे और दूसरे मित्रो की तरह उसे भी एक मित्र मान लो और उसे मानलो कि एक अच्छा पर बेकार मित्र ।

नमता यह ठीक है कि इस जमाने के साथ नहीं, इससे बहुत पीछे हू । आखिर मनुष्य का दूसरे के प्रति कोई कर्तव्य ही नही । मैंने किसी को भी चाहा है तो उसके प्रति हमेशा सहृदय रहा हू । मैंने लोगो के दुखो को बाटा है, उनके दुख को अपना ही समझा । मैं तो इतना भी कहू गा कि इस चल रहे जमाने को पश्चाताप करके फिर पुरानी, मेरी विचारधारा पर आना होगा ।

उसकी मजबूरिया ही केवल इस बात का उत्तर नही कि उसका कोई कर्तव्य ही नही रह जाता । आप व्यावहारिकता को क्यो नही मानते ।

देखो नम्रता, जब लोग व्यावहारिकता का नाम लेत है तो मुझे इस प्रकार के लोगो की दृष्टि मे अवहेलना का सा भाव प्रतीत होने लगता है । लोग यो क्या सोचने है कि व्यावहारिक बना जाय । व्यावहारिक होने का अर्थ हुआ कि हम गलतिया, भ्रष्टाचार करते रहे और जब लोग अगुली उठाये तब उन्हें शात करने के लिये अपने को व्यावहारिक कहे । ये क्या अपने को बचाने का रास्ता नही । व्यावहारिकता की नयी परिभाषा आज भ्रष्टाचार के कारण होने वाली बदनामी से बचने का यह बडा अच्छा सीधा और बीच का रास्ता है । मनुष्य व्यावहारिक क्यो हो ? उसमे क्यो नही साफ-साफ कह देने का भाव हो । क्यो नही वह हिम्मत करके सही स्थिति को सामने रखने का प्रयास करते ।

फिर भी अपने को व्यावहारिक तो होना ही चाहिये । जहा सारा विश्व व्यावहारिकता के आधार पर है, उसमे हम अपना अस्तित्व इन बातो के विरुद्ध बनाना चाहे तो कठिन है । लोग आपको कितना भी हो सकता है पसन्द न करें

क्योंकि आप सब बातें साफ कहने मे विश्वास करते है। इस प्रकार के विचारो को अधिकतर लोग एक नासमझी से अधिक नही मानते।

मेरे विचार तुम्हारे विचारो से भिन्न है। जीवन मे सिद्धान्त न हो तो मैं उसे एक सफल जीवन नहीं मानता। मेरा विचार तुम्हारे सामने हीं है। मै यह नहीं मानता कि दुनिया के सारे लोग मेर विचारो के विरोध मे खडे होंगे। कुछ तो और भी हैं जिनके अपने सिद्धान्त हैं स्वतंत्र दृष्टिकोण रखते है इन विचारो की भी अपनी महत्ता है अपना एक विशिष्ट स्थान है।

तुम्हारा बनाया यह चित्र कितना उदास दृश्य प्रस्तुत करता है। चित्र मे सजीवता लेशमात्र भी नही दीखती। यह चित्र अधूरा ही है। याद है जिस दिन तुमने इस चित्र को बनाना शुरू किया था तब नीरजा अपनी एक विशेष भाव भगिमा के साथ खिडकी के पास बैठी थी और तुम उसका चित्र अपने रगो स बना रहे थे। तब चित्र मे एक सजीवता थी और मुझे पूरा याद है उस दिन तुमने नीरजा से कहा था कि चित्र का क्या है न मालूम बन भी पाये या नहीं, यदि बन जाये तो आज ही और नही तो फिर पूरी जिन्दगी भी कम हैं। वह बात आज देख रही हू।

सजीवता चित्र म कैसे आ सकती है। जब मैं खुद ही सहृदय नही रह गया तो। चित्र कैसे बन सकता हैं। चित्र मात्र चित्र नहीं, हृदय की वास्तविक स्थिति का ही चित्रण है। हृदय की उदास भावनाओ की अभिव्यक्ति ही तो इस चित्र म आई है। जीवन का हर पहलू उदासीन हो चला है। तुमने उस दिन देखा होगा कि यह चित्र पहिले जितना ही बना हुआ है। यह तब भी अधूरा था और आज भी पूरा नही। मैं शायद इसे कभी पूरा न कर पाऊ। मेरी यह कृति ही ऐसी है, जो अधूरी रहेगी। मेरी कल्पना ने प्रेम की स्वच्छदता के खुले आकाश मे जब अपने को स्वतत्र पाया, मैं भावो के बहाव मे आनन्द ले रहा था तब मेरी कल्पना ने मुझसे अपने को दूर कर लिया और एकाकी छोड दिया। मुझम कुठा ने जन्म लिया। मैं फिर भी अपने बोझिल हृदय को लिये जीवित हू। ये हृदय का बोझ न जाने कब तक मुझे कुरेदता रहेगा।

आपने हमे कल भी और आज भी एक कप काफी के लिये तरसा दिया। जब जाने लगू गी तब आप कहेगे कल की तरह ठहरो अभी बन ही जाती है। अब देखो समय भी बहुत हो रहा है, अब जल्दी तैयार हो जाओ। काफी बना लेती हू तब तक। तुम क्यो तकलीफ करती हो। बना लायेगा वह, तुम बैठो।

यदि मेरे हाथ की पसन्द न हो तो दूसरी बात है। मैं नही बनाती।

अगर मैं कहूं आप कॉफी न बनाकर आराम से बैठो तो आपको क्या हर्ज हो सकता है। देखो मेहमानो से भी क्या कोई काम करवाया जाता है।

मै बना ही लेती हूं,

देखो जल्दी आ जाओ।

मुझे ज्यादा समय नही लगेगा। अच्छा आ ही रहा हूं।

क्या नीरजा का पोर्ट्रेट बना रहे थे? जब बात ही खतम हो गई फिर न जाने क्यो पागलपन सवार है।

हा, देखो आ गया मैं, बन गयी।

कमाल है, बडी जल्दी आ गये। मैं तो अभी कुछ भी नहीं कर पाई। अच्छा अभी छोडो, घर पर चलकर पियेंगे।

नही, यही बना लो। फिर अपने को उलाहना न देना कि आप हमेशा टाल देते हैं।

अपना ओवरकोट ले लो। तेज सर्दी है बाहर। जब वापस लौटेंगे तब और भी बढ जायेगी।

नही ठीक हैं, ऐसी भी क्या सर्दी पड रही हैं। रात मे मैं कभी कभी यू ही बिना कुछ पहिने बाहर निकल पडता हूं।

पहिन लीजिये। पहिली बात कि आप अपने को सर्दी से बचा भी लेंगे दूसरी डैडी तो बहुत तेज है वे कहते नही चूकेंगे– मैं लेकर आती हूं।

चलें– ले आई।

देखो, सामने बत्तिया जल रही हैं ये सारे हमारे बागान हैं। हर साल बडा पैसा कमाते है इनसे।

सामने इतनी लाइट कैसे दिख रही है?

वहा चाय को सुखाया जाता है। वही से बाहर भेजा जाता है। कभी चलेंगे। डैडी के साथ निकल जाओ वे सारे बागान दिखादें। दो-चार महीने जो उनके साथ रह जाओ, तो पूरी ट्रेनिंग मिल जाये।

वह सामने वाला बगला है?

जी हा, बस अभी पहुच जाते हैं। डैडी हो सकता है अब तक घर पहुच गये हो। क्योकि सुबह आज वे वकील साहब के घर चले गये थे। देर रात तक लौटने को कह गये थे। वकील साहब पिताजी के पुराने दोस्त है, उनके यहां कोई

पार्टी थी आज। लीजिये बातो-ही बातो मे पहुच गये। हमीद, डैडी आ गये वकील साहेब के यहां से ?

अभी तो नही आये हैं। आने वाले ही हैं। शाम को सात बजे के करीब तो आये थे, लेकिन फिर चले गये। आपको याद कर रहे थे।

देखो, खाना बनवाना शुरू करो, जब तक डैडी भी लौट आयेंगे। आइये, पहिले अपना कमरा दिखा दूं। मम्मी, ये मेरे साथ कॉलेज म पढते थे। अच्छे लेखक के साथ-साथ चित्रकार है। ये है मेरी मम्मी।

नमस्ते, मम्मीजी।

नमस्ते बेटे। नम्रता इन्हे ऊपर ले जाओ। कमरे मे बैठाओ। तुम्हारे डैडी पूछ रहे थे।

मम्मी कहा था ना मैं इनके घर जा रही हू। क्या नाम था ?

जाओ बेटे बैठो।

देखा न मम्मी का नेचर।

तुमने तो सारे महापुरुषो को अपने कमरे मे बन्द कर लिया है। यह रवीन्द्र बाबू की पेंटिंग सुन्दर है अरे यह तो तुम्हारे डैडी ने बनाया है।

मैंने बताया था या नही कि डैडी को भी पेंटिंग का बडा शौक है। वह देखिए माडर्न आर्ट की भी बडी अच्छी पेन्टिंग्स है। अब डैडी को इतना समय नहीं मिलता। देखो मेरी लाइब्रेरी। मेरी पसन्द के सारे अंग्रेजी नाटक, सारे कवियो की कविताएँ हैं। इनमे से बहुत सारी किताबें डैडी की हैं अब उन्होने मुझे दे दी हैं। वैसे जहा कही भी वे जाते हैं दस पन्द्रह नई किताबें ले आते है। आप कभी समय निकाल कर उनके साथ बैठे, उन्हे अंग्रेजी कवियो की कविताए पूरी की पूरी याद है। बर्नाडशॉ के नाटक बहुत पसन्द करते है। उन्हे अपने देश के कवि भी अच्छे लगते हैं। ये रवीन्द्र बाबू का पोर्ट्रेट उन्होंने उनसे प्रभावित होकर ही बनाया था। देखते नही कितनी सजीवता है।

तुमने यह नही बताया कि तुम्हे किस बात का शौक है। तुमने क्या-क्या सीखा ? आर्ट मे शौक है या नही ? तुम भी शौक रखती हो पेंटिंग मे ?

बनाना तो नही आता, लेकिन सीखना चाहती हू। गये साल डैडी ने एक पेंटिंग के अच्छे जानने वाले साहब को रखा था। लेकिन उन्हे मॉडर्न आर्ट न जाने क्यो नही अच्छा लगता था। वे केवल कन्वेंशनल आर्ट मे दिलचस्पी रखते थे, मुझे अजन्ता आर्ट तो ठीक लगता है लेकिन कन्वेंशनल आर्ट मैं ज्यादा रुचि नही। आपको

मॉडर्न आर्ट मे अच्छा अभ्यास हो गया है। आपके पास आ जाया करूंगी। थोडा गाइड कर दिया करना।

मॉडर्न आर्ट ठीक है। लेकिन पहिले अपने को अपनी ही चित्रकला को सीखना चाहिये। क्योंकि ये सब बाद की बातें है। तुम्हें मॉडर्न आर्ट ही सीखना है तो कोई बात नही थोडा बहुत बता दूंगा। तुम्हारे डैडी को भी अच्छा ज्ञान है।

मैंने पाश्चात्य सगीत सीखा है। ट्विस्ट, शक, शिविर भी जानती हू। अपने कालेज के जलसे मे देखा नही था हमारा कार्यक्रम। मैंने ही दिया था वह। लोगो नें बडा पसन्द किया था। पर आपनें कोई कमेंट तक नही किया था।

ठीक है पाश्चात्य सगीत और सब कुछ, लेकिन तुम ये क्यो नही देखती कि अपने देश मे भी सगीत, नृत्य कला मे भी बडा विकास हुआ है। तुमनें रविशकर को सुना व देखा होगा। उन्होने सारे विश्व मे भारतीय सितार को महत्ता को उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचा दिया है। सारे विश्व के लोग उनके पास जादू की तरह खिचे चले आते हैं।

राजेशजी मैं तो आपको ऐसे ही देख रही थी कि आपको अपने देश की कला मे कितना विश्वास है। मैंने उन्हे भी सुन सीखा है। भरतनाट्यम् भी जानती हू। मेरे पास सितार है डैडी बबई से लाये थे। आपको सुनाऊंगी कोई चीज। निखिल बैनर्जी से दो एक बार भेंट हुई थी। डैडी को प्यानो के अलावा सगीत वाद्यो मे कोई दूसरा अच्छा ही नही लगता। अब तो प्यानो कई दिनो से बन्द पडा है। पहिले तो डैडी रोज बजाया करते थे, अब इतना शौक भी नही रहा और न उन्हे समय ही मिलता हैं। नीचे जहा प्यानो रखा है हम चलेंगे तो आपको मेरी और डैडी की पसन्द की रिकार्डस की लाइब्रेरी दिखाऊंगी। रेडियोग्राम पर जब कभी इच्छा होती हैं सुन लते हैं। अभी हमारे पास करीब तीन हजार रिकार्डस् है। उनमे से ज्यादातर तो बहुत पुराने है। जो डैडी ने बहुत पहिले खरीदे थे। डैडी को अब भी उनमे से कई बहुत पसद है।

ये आप का उपन्यास मैं पढना चाहता था। लेकिन वही मिल नही पाया। तुम्हारी लाइब्रेरी से मुझे बडा लाभ रहेगा। देखो चीनी कम डालना। ज्यादा पसन्द नही करता। मेरी अब यही इच्छा रह गई है कि सारे देश विदेश के लेखको का साहित्य पढू। इनको पढने से बडा ज्ञान का भडार मिल जाता है अपने ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। विश्व को एक सीधी निष्पक्ष दृष्टि से देखने का ज्ञान होता है। मॉम को ही ले लो। मानवीय स्वभाव का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है अपनी रचनाओ मे।

कहा-कहा की बात करते जा रहे हैं कुछ ध्यान अपने काफी के प्याले की तरफ दें।

आपकी बातो मे लग गई और काफी का कोई ध्यान ही नही।

सच गए कई दिनो से ऐसी चीज नही मिली। अच्छा आगे की जिन्दगी के बारे म क्या विचार है। आगे कॉलेज जान का है या नही।

बस अब तो आराम– ज्यादा से ज्यादा कुछ किया तो शादी कर लू गी। आपको बताऊँ मम्मी को पढना पढाना पसन्द नही है। उनका विचार अपनी पुरानी परिपाटी के अनुसार है। उनके विचार मे लडकियो का ज्यादा पढना ठीक नही। मैंने तो डैडी से भी कहा था लेकिन मम्मी ने हा नही की।

जहा तक जीवनयापन का प्रश्न है अपने लेखन कार्य से ही अच्छा पैसा पा जाता हू। इसलिए इस बात की तो चिन्ता ही नही। अब तो डाक्टरेट करने का विचार है।

आपको अपने खर्च के साथ साथ और खर्चो पर भी तो ध्यान देना होगा।

मेरा विचार नही है कि शादी करू। क्योकि पहिले ही सारे सुखो से जी भर गया है। आगे कोई इच्छा बाकी नही। अब तो अध्ययन की इच्छा रह गयी है। अब मुझे इस विश्व की आडम्बरपूर्ण सामाजिक बातो के प्रति एक घृणा सी हो गई है। जीवन वैसे भी कितना छोटा है मुझे तो और छोटा लगता है। इस समय भी यदि कोई बडा कार्य नही कर पाया तो क्या किया। यही सोच शेष बातो को छोड मैं अपने को पूरे रूप मे ज्ञान के विकास मे लगा देना चाहता हू।

इससे बढकर प्रसन्नता की बात और हो ही क्या सकती है। कर्त्तव्य और कर्म को जब आप अपने साथ लेकर चले हैं तो सफलता मे सशय का कोई स्थान नही लेकिन अपने स्थान पर उनका भी बडा महत्व है, उनको मानना भी आवश्यक है। उनके बिना भी कुछ खोया सा या अधूरा अधूरा सा लगता है।

महत्त्वहीन ही कह लो। आपका आदर्श विश्व की दृष्टि मे कोई अर्थ नही रखता, डैडी आ गये है। नीचे खाने के समय परिचय होगा आपका।

नम्रता।

आइये डैडी। कितनी देर लगा दी आपने। क्या वायदा किया था आपने। ये मेरे क्लासफेलो मि० राजेश हैं अच्छे शायर, लेखक और आर्टिस्ट और आप हैं मेरे डैडी मि० सिन्हा। डैडी को नाम से जानने वाले तो मुश्किल से बहुत कम लोग है।

नमस्ते। सिन्हा साहब।

नमस्ते, बैठो।

आप डैडी समय के बिल्कुल भी पाबन्द नहीं। आपको कह दिया था फिर भी इतनी देर से।

देखो, पहिले नारंग के पास गया था। वहाँ से जरूरी काम से वापिस आया। यहा आते ही फोन पर मैनेजर देवेन्द्र से बात हुई कुछ खास काम से पहाडी के पीछे वाले बगीचे चला गया और वहा से सीधा यहाँ आ रहा हू। हां, आपने वहा तक एज्यूकेशन ले ली है।

जी, डाक्टरेट का विचार था। लेकिन फिलहाल तो छोड सा दिया है। एम एम. किया है। इन दिनो तो साहित्य मे ही कुछ करने का विचार है। किसी का नियन्त्रण मुझे अपनी स्वतंत्रता का अपहरण लगता है।

डैडी, अब ये अपने पर किसी का अधिकार पसन्द नही करते।

पेण्टिग में भी शौक है बडी खुशी है। भई, हमे लगता है हमारा शौक हमें तुम्हारे जरिये वापिस अपनी ओर खीच रहा है। अच्छा है तुमसे भी कुछ सीखेगे। कब बुलवा रहे हो, घर पर। कभी देखा जाये तुम्हारी पेण्टिग्स को।

डैडी क्या मजे मे बातें कर रहे हैं। जैसे कोई समय निकाल कर पहुच ही जायेंगे, आप वहा।

तुम्हे कभी बागानो मे भी ले चलूगा अपने सारे काम दिखाऊगा। तब मालूम पडेगा कि कितनी व्यस्तता रहती है।

डैडी, आप मेरे लिये शाम को पूछ रहे थे क्या काम हो गया।

ओ, हा। तुम्हे कल शाम को जो कागजात दिये थे, कहा रख दिये नारग ने देखने को मगवाये थे।

मैंने ड्राइङ्ग रूम की आलमारी में रखे हैं। अभी निकाल दूगी।

सिन्हा साहब, आपका व्यापार बडा अच्छा है।

भई, काम कितना हो जाता है यह भी तो देखो। आज मजदूरो की हडताल, कल इन्कमटेक्स वालो की परेशानी, माल विदेशो मे भी जाता है। कस्टम का सिरदर्द, दुनिया भर की दिक्कतें।

ये तो है ही। सोचता हू आपके पास यहा सबसे ज्यादा बागान होगे।

नही जी, एक और भी हैं, जिनके पास अपने से थोडे अधिक हैं। अपना उनका बिजनेस साथ-साथ ही चलता है। उनकी मुझ पर बडी मेहरबानिया हैं।

मैंने जब शुरू में यहां बागान खरीदे तो उन्होंने हमेशा मेरी सहायता की। ऐसे दिल वाले कम होते है। आज तो जहां देखो आपस मे झगडे, जहां भी मौका मिलता है एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते है। अभी गये दिनों मेरा माल इंगलैण्ड जा रहा था। मेरे पास में एक सेठ और है उसने अपनी पूरी ताकत लगादी कि मेरा माल नही जाये लेकिन नारग की अच्छी पहुंच थी उधर उसने सब संभाल लिया।

नीचे चलें, आप बिजनेस की बात छोड़कर पेट के बिजनेस की बात करिये।

चलो, देखो बहुत समय हो रहा है। साढे ग्यारह बज गये। आज यही सो जाओ तो ठीक रहेगा।

नहीं, मैं चला जाऊंगा। मुझे काम भी करना है वहा।

ठीक है, जैसा तुम्हे पसन्द हो। आओ चले।

४

हेलो शरद कब आये। कमाल है भई नम्रता रोज मुझसे पूछती थी कि शरद का कोइ पत्र आया या नही, बेटे भूल कैसे गये और जर्मनी पसन्द आया। तुम्हें जो पता भेजा था उससे तुम मिले।

हां, अकल आपने जो पत्र लिखा था मुझे मिल गया था। मैं उससे मिला। बड़ी इज्जत की उन्होंने, आपको बहुत याद किया है। आपके लिये कुछ चीजें भी उसने भेजी है। समय पता नहीं कैसे बीत गया। जी करता था इन्डिया वापस न जाऊं। लेकिन डैडी माने नही। वहीं की एक कम्पनी में अच्छी नौकरी भी मिल रही थी। लेकिन डैडी को पसन्द नही था लौट आया।

तुमको यही ऊंची, इज्जत वाली नौकरी दिलवा देंगे। इतनी दूर रहने से क्या लाभ। मैं खुद भी पहिले दो साल वही रह चुका हूं।

डैडी को मैंने यहां के बारे में बताया तो कह रहे थे कि अगले महीने मे वे भी जाना चाहेंगे। नम्रता दिख नही रही।

घूमने निकल गयी होगी। शाम का समय है न बाहर बगीचे में होगी। कहती है मेरी सहायता करेगी। उससे कोई पूछे कि उसके डैडी को कितना काम करना

अच्छा तो अभी भी बहुत कुछ कहना बाकी है। कहिए, तैयार है हम। जो सजा देनी है सुना डालो। उसमे भी ऐसा न हो हमे इन्तजार करना पड़े। ये इन्तजार नाम की चीज कितनी खराब है। इन्तजार करते ही जाओ, कभी अपनी इच्छा की बात पूरी होनी ही नही।

तो आप इस समय क्या पसन्द करेंगे।

जो भी कुछ मिल जाये। इस गुस्से से बडी चीज होगी। चाय तो पीना छोड दिया है।

अब बताइये जर्मनी कैसी लगी। कैसी जिन्दगी रही, वहा की। यह बीच म नही कहना कि बिना तुम्हारे सब बेकार था और भी न जाने क्या क्या बहुत कुछ।

मैं यह तो कह भी नहीं रहा था कि बिना तुम्हारे कुछ भी अच्छा नही लगा। सच बात तो यह है कि बिना तुम्हारे ही बडा मजा आया। स्वीटजरलैण्ड, इटली लन्दन फ्रास सब जगह घूम आया। खूब आराम म दिन निकले। कोई भी चिन्ता, किसी की भी याद दिमाग म नही। बस एक चिन्ता और वह ।

किसकी ? बता दो, ना।

चिन्ता किसकी ? सिर्फ अपने कोर्स की और किसी की नही। वहा पर लगता था स्वर्ग मे हू। सारे काम अपने आप चुटकी मे हो जाते थे।

हम पहिले ही जानते हैं कि आप बड स्वार्थी हैं। आपको जरूर किसी की याद नही आ सकती। आपको भारत क्यो याद आये। आप क्यो याद करो कि नम्रता भी कोई है। क्या चिन्ता है ?

कहना अब है कि आपकी भी याद आती थी या नही। क्योकि आप ने पहिले तो साफ-साफ मना कर दिया कि मेरी याद, मेरे लिए कुछ भी न कहना। सुनना चाहती थी। सच अकेले कुछ अच्छा नही लगा वहा। जहा भी गया तुम्हे याद ही करता रहा। वहाँ के कई फोटो तुम्हारे लिए लाया हू।

अच्छा वहाँ पर अपने भारतीय लोग कितने हैं ? अपने देश को किस दृष्टि से देखा जाता है।

मत पूछो तो ज्यादा अच्छा है। अपने यहा के काफी लोग हैं। लेकिन अपना उतना सम्मान नही होता जितना यहा के लोग मानते हैं। अपने को तो अपनी पढाई करनी थी, करली। वहा बडी अच्छी नौकरी मिल रही थी।

बडी गलती की, वहां नौकरी कर लेनी चाहिये थी। एक बात यह भी तो है ना कि मिस्टर शरद नारग को भारत मे नौकरी मिल ही नही सकती है

पडता है सुबह से शाम तक। इन दिनो भी बडा काम है। वह आ ही गयी।

हलो, कितनी देर हो गयी है तुम्हारा इन्तजार करते।

अच्छा शरद बेटे, मैं चलू गा, तुम लोग बैठो। इसे बिठाओ खाना खिलाओ। अच्छा चलेंगे। अरे हा नारग को कहना मैंने कागजात निकाल दिये हैं और अपने किसी आदमी को भेजकर मगाले। क्योकि वह कह रहे थे कि जल्दी ही करना है।

ठीक है, अकल।

और नम्रता देवीजी क्या हाल है। ये गुस्सा। देखो मैं वहा कितना व्यस्त था। इस छोटी सी बात पर गौर करो तो सारी गलतफहमी आपके खयाले शरीफ से निकल जायेगी एक दो पत्र शुरू मे जरूर डाले थे। कोई बात नही कर रही हो।

कहते जाइये और क्या मजे रहे। कहा-कहाँ घूमे। कहने को और भी कई बातें हैं। तुम वहा के बीते समय की कहते रहो मै सुन रही हू। क्या चिन्ता है दूसरो की ? आपकी बला से।

तुमने बात को नही समझा। मैंने कहा था कि मै बहुत ज्यादा व्यस्त रहा। पूरा वर्ष जिन कठिनाइयो के साथ बीता, उसका कैसे बयान करू तुम्हारे सामने।

आपको याद आती भी थी हमारी ? आप इतने परेशान रहे कि पत्र लिखना ही भूल गय। मै तुमसे बात नही करती। जाते समय बड वायदे किये थे। मैं नारग अकल के पास गई हर बार उन्होने कहा, बडा व्यस्त रहता होगा। इतनी भी क्या व्यस्तता हो सकती है।

तुम तो लगता है नाराज हो।

यदि हो भी गयी तो आपका क्या कर सकती हू ? मेरा क्या अधिकार है।

आपका अधिकार चलो मान लिया नही है, पर हमारा तो आप पर है। क्या तुम मना कर सकती हो। डैडी ने भी कहा था कि नम्रता बहुत नाराज है। रात को तो पहुचा ही था। डैडी से बाते हो रही थी तो बीच मे उन्होंने बताया। कल शाम को घर पर ही अपना डिनर मेरे साथ लेना। डैडी ने विशेष रूप से बुलवाया है तुम नही आओगी तो मैं भी नाराज हो जाऊ गा।

नारग अकल ने कहा है तो आ जाऊ गी। तुम्हारे कहने स नही। जब तक तुम नही आये थे, सोचती थी तुम्ह ये कहूगी, वह कहूगी लेकिन अब तुम आ गये तो गुस्सा न जाने कहा चला गया।

अच्छा तो अभी भी बहुत कुछ कहना बाकी है। कहिये, तैयार है हम। जो सजा देनी है सुना डालो। उसमे भी ऐसा न हो हमे इन्तजार करना पड। ये इन्तजार नाम की चीज कितनी खराब है। इन्तजार करते ही जाओ, कभी अपनी इच्छा की बात पूरी होनी ही नही।

तो आप इस समय क्या पसन्द करेंगे।

जो भी कुछ मिल जाये। इस गुस्से से बडी चीज होगी। चाये तो पीना छोड दिया है।

अब बताइये जर्मनी कैसी लगी। कैसी जिन्दगी रही, वहां की। यह बीच म नही कहना कि बिना तुम्हारे सब बेकार था और भी न जाने क्या क्या बहुत कुछ।

मैं यह तो कह भी नही रहा था कि बिना तुम्हारे कुछ भी अच्छा नही लगा। सच बात तो यह है कि बिना तुम्हारे ही बडा मजा आया। स्वीटजरलैण्ड, इटली लन्दन, फ्रास सब जगह घूम आया। खूब आराम स दिन निकले। कोई भी चिन्ता, किसी की भी याद दिमाग म नही। बस एक चिन्ता और वह ।

किसकी ? बता दो, ना।

चिन्ता किसकी ? सिर्फ अपने कोर्स की और किसी की नही। वहा पर लगता था स्वर्ग मे हू। सारे काम अपने आप चुटकी मे हो जाते थे।

हम पहिले ही जानते हैं कि आप बडे स्वार्थी हैं। आपको जरूर किसी की याद नही आ सकती। आपको भारत क्यो याद आये। आप क्यो याद करो कि नम्रता भी कोई है। क्या चिन्ता है ?

कहना अब है कि आपकी भी याद आती थी या नही। क्योंकि आप ने पहिले तो साफ-साफ मना कर दिया कि मरी याद, मेरे लिए कुछ भी न कहना। सुनना चाहती थी। सच अकेले कुछ अच्छा नही लगा वहा। जहा भी गया तुम्हे याद ही करता रहा। वहाँ के कई फोटो तुम्हारे िय लाया हू।

अच्छा वहा पर अपने भारतीय लोग कितने है ? अपने देश को किस दृष्टि से देखा जाता है।

मत पूछो तो ज्यादा अच्छा है। अपने यहा के काफी लोग है। लेकिन अपना उतना सम्मान नही होता जितना यहा के लोग मानते हैं। अपने का तो अपनी पढाई करनी थी, करली। वहा बडी अच्छी नौकरी मिल रही थी।

बडी गलती की, वहां नौकरी कर लेनी चाहिये थी। एक बात यह भी तो है ना कि मिस्टर शरद नारग को भारत मे नौकरी मिल ही नही सकती है

क्योकि वे जर्मनी से जो लौटे हैं।

तुम तो मजाक करने लगती हो तो रुकती ही नही। आपके लिये ही तो भारत आया हू। नौकरी का क्या है डैडी के टाटा स्टील मे कई लोग जान पहिचान के है सब ठीक हो जायेगा। तुमने अपनी पढाई जारी रखी थी ना।

जी हा, रखी तो थी। लीजिये कॉफी।

पूरे एक साल बाद तुम्हारे हाथो की काफी पी रहा हू। बडी याद आती थी इस बात की भी। वह मजाक जब तुमने काफी मे बजाये चीनी के नमक डाला था और मेरा मजाक बनाया था। खैर और क्या उन्नति हुई है। डैडी का काम जोरदार चल रहा है।

कितनी प्रेम की बातें हो रही हैं लेकिन पहिले एक पत्र भी नही दिया गया।

तुम्हारी दोस्त नीलम क्या नही आ रही इस बार यहा। उसकी कोठी बन्द पडी लगती है। वह भी मस्त लडकी है।

इस साल नही आ रही है। उसका पत्र आया था। वह इस बार यहा न आकर किसी दूसरे पहाडी स्थान पर जायेंगे। क्यो क्या हुआ, आपको बडा ध्यान रह गया उसका।

हां, ध्यान तो रह ही जाता है। आगे कालेज मे जाने का इरादा है कि नही।

अब मम्मी नही भेजेगी। उनका विचार आगे पढाने का नही है।

ठीक है आराम ही करो अब तो। डैडी ने कहा है मैं परसो ही टाटानगर जाकर, वहा के मैनेजर से मिलू क्योकि वे डैडी के मित्र है और मुझसे मिलना चाहते हैं। तुम यदि चाहो तो चली चलो इन दिनो तुम्हे काम भी क्या है यहा ?

ऐसा है कि मैं नही जा सकती। क्योकि मेरे कॉलेज में साथ पढे एक साहब यही आये हुए हैं हो सकता है ठीक न समझें। तुम्हारा परिचय करवाऊगी उनसे। बडे अच्छे कवि हैं पेंटिंग भी उनका शौक है। बडा अच्छा स्वभाव है। उनको छोडने को अपनी दूसरी गाडी गयी थी लेकिन आज दिन भर बीत गया वापिस ही नही आयी। हो सकता है वे कही घूमने निकल गये हो।

क्या नाम है आपके क्लासफेलो का।

उनका नाम है राजेश।

अरे, राजेश, कौन वे ही जिनकी अक्सर पत्र पत्रिकाओ मे कवितायें

छपती रहती हैं यदि वे ही हैं तो मैं भी उनसे मिलना चाहूगा तो कब मिलवा रही हो ।

अभी तो समय हो रहा है । कल सुबह ही चलेंगे । तुम यहाँ लगभग बारह बजे आ जाओ । मैं वैसे उन्हें फोन कर देती । लेकिन उनके यहा तो फोन है नहीं थोडी दूर है । उनके यहा कल चलेंगे । तुम मेरे लिये कुछ लाये हो वहां से या नही ।

कैसे नही लाऊगा । तुम्हारे लिए एक से एक शानदार कपडे । वहां से टेलीविजन ला रहा था । लेकिन जब अपने देश की ओर देखा तो उसे बेकार समझ कर नही लाया । तुम मेरे साथ टाटानगर चलती तो अच्छा रहता । हो सकता है वहा मुझे एक सप्ताह लग जाये । इतना समय तो लग ही जायेगा । जहा तुमने इतने दिन इन्तजार किया । थोडा इन्तजार और सही । क्यो ठीक है कि नही ।

जब पुरुष लोग इन्तजार की बात करते हैं तो बडी हसी आती है । आप लोग ये क्यो नही सोचते कि स्त्री की पूरी जिन्दगी मे से आधी से अधिक तो इन्तजार मे ही बीत जाती है । पहिले प्यार मे इन्तजार, फिर शादी का इन्तजार और इसके बाद जब पतिदेव देर रात तक घर पहुँचे और खाना खाने की दया करें तब तक का सारा समय भी इन्तजार मे ही तो जाता है । इतने लम्बे इन्तजार को भी स्त्रियाँ न जाने क्यों सहन करती है ।

ये भी क्या बात हुई देखो यह तो हरेक पत्नी का कार्य है ।

यह एक काम है, दूसरा वह पत्नी हो जाने की दोषी है, इसीलिये वह राह देखती है । यह बात तो कुछ समझ मे नही आई ।

इतनी जल्दी समझने की कोशिश बेकार सी है । जहा तक समझ नही आने का प्रश्न है वह आ भी कैसे सकती है । अभी तुम इसके चक्कर मे पडी ही कहां हो । जिस दिन शादी होगी, शहनाई बजेगी उस दिन से यही काम रहेगा । कि इन्तजार और इन्तजार । तब समझ आ जायेंगी सारी बातें ।

कितनी गभीरता से भाषण दे रहे हैं । जैसे कि आप पुरुष न होकर स्त्री हो और आपको इन्तजार का अनुभव हो । सच तुम तो बजाये इस इंजीनियरिंग की नीरस पढाई के आर्ट्स पढते और कालेज मे लेक्चरर बन जाते तो आपके लेक्चर से छात्रो को कितना लाभ होता । दया आती है उन बदनसीब छात्रों पर जिन्हे आपका लेक्चर नसीब नही हुआ ।

12284

बडी हसी आ रही है। मैं तो वास्तव मे आर्ट्स ही पढना चहता था। मुझे तो शुरू से ही साहित्य मे रुचि रही है यो तो डैडी ने जिद की और मैं भी उनकी बात के लिये आगे वढना रहा। अब कोई रास्ता नही रह गया इसमे पीछा छुडाने का।

फिर तो ज्यादा दुख है आपको। वह अवसर हाथ मे खोना पडा और बजाये लेक्चरार बनने के इजीनियर मिस्टर शरद नारग बनना पडा। तव तो तुम्हारे डैडी से शिकायत है।

धन्यवाद। मैं ही नही सारे देश मे यही वात चल रही है। चाहे लडके को किसी विषय मे शौक नही, चाहे उस विषय से उसे नफरत है, कोई विचारणीय चिन्ता की बात नही। यदि कुछ है तो देश मे जिस विषय की आवश्यकता है, वस यह जानने के बाद सारे के सारे माता-पिता अपने बच्चो को उसी विषय मे पढाना चाहेगे और दाखिला दिलवायेंगे।

यह तो ठीक ही है। लेकिन इस आर्थिक युग मे ऐसा करना पडता है और आवश्यक भी है। मैं यह नही कह रही थी कि दुनिया के लोग क्या पढते हैं क्या नही। मैं तो केवल आपकी बात कह रही थी कि आप हैं कि लेक्चर अच्छा देते हैं।

नम्रता, राजेश बाबू की कविताओ की किताब भी प्रकाशित हुई होगी, क्योकि हमेशा उनकी रचनायें पत्रो में आती रहती हैं।

उनकी दो पुस्तकें दिल्ली के बडे प्रकाशक ने प्रकाशित की है। उनके पास अवश्य होगी। मेरी एक मित्र कालेज मे थी जिसको राजेशजी ने अपनी पुस्तकें भेंट की थी उनमे से एक तो अभी भी मेरे पास ही रखी हुई है। आप कहो तो लाकर दू। उस किताब का नाम है **"रीती आंखो का सावन"** उसमे से दो चार कवितायें तो बहुत ही सुन्दर हैं। जिसने भी पढी है, सुनी है, पसन्द की हैं। बता रहे थे उनके कुछ गीत फिल्मो मे भी आ रहे है। देखिये कब तक उनके रिकार्ड्स मार्केट मे आते हैं। उनकी कविताओ को जब हम सुनते हैं तो अपना सा ही दर्द लगता है। उनकी कविता का दर्द किस तरह से धीरे-धीरे मस्तिष्क पर प्रभाव डालता जाता है और हम उसमे खोते जाते हैं।

इन बातो से लगता है कि आपको भी अपने में दर्द का अनुभव होता है। हृदय के किसी कोने मे लगता हैं टीस सी उठती है तो मैं इसे सही मान लू वो दर्द हमे क्यो नही होता। क्या खूबी है आप मे।

खूबी तो कुछ भी नही। यो कह सकते हो कि हमारी लगन की विशेषता है, जो प्यार के साथ पूर्ण रूप से न्याय करती है और वही सब कुछ हृदय मे एक कसक छोड जाती है। आप हमारे प्यार की विशेषता को शायद समझ गये होगे। क्यो ठीक है या नही।

समझ गये। इसका मतलब यह हुआ कि हमारा प्यार, प्यार नही एक स्वप्न है काल्पनिक कहानी। हमारा प्यार क्या है, समय अपने आप कहेगा।

आपकी वफादारी की कद्र हमने नही की। वास्तव मे हम ही बुरे है। आपने चाहे बाहर जाने के बाद पत्र नही दिया तो क्या हुआ हमें तो पूरा विश्वास, प्यार रखना ही चाहिये और भी कहना चाहो तो कह सकते हो कि तुम तो स्त्री हो और तुम्हारा कर्त्तव्य है।

मुझे अनुभव हो रहा है कि गये वर्ष म और इस वर्ष मे बहुत परिवर्तन हुआ है। खूब समझने वाली अच्छी चचल लडकी बन गयी हो। पहिले इतनी बाते कहा आती थी। इस उन्नति के लिये क्या मैं बधाई दे सकता हू। मुझे भी ठीक तुम जैसी ही लडकी की जरूरत है जो हरेक कदम पर हाजिर जबाव हो।

चलो अच्छा है आपको तो मेरी जरूरत नही है।

क्यो यह किसने कहा है आपको कि आपकी जरूरत नही।

इतनी जल्दी भूल जाते हो, आपने ही तो कहा था ना कि मुझे ठीक तुम जैसी ही लडकी की जरूरत है। इसका मतलब कि मेरी नही मेरी जैसी किसी और लडकी की जरूरत है।

अच्छा वकील साहब, अब बहस बन्द कीजिये। यदि आप मुझे खाना खिलाना चाहे तो मैं उपस्थित हू, वरना घर जाकर ही खाना होगा।

क्यो नही, क्यो नही आओ चला जाय। खाना भी बन गया होगा। फिर कभी आओ तो तुम्हारी पसन्द का बढिया खाना बनवाकर खिलवाया जाय। आज तो पता नही क्या बनाया हो। तुम परसो तक जाओगे टाटानगर, क्यो ठीक है ना?

हा, एक सप्ताह तो लग ही जायेगा वापिस आने मे। राजेश बाबू से बजाये कल मिलने के अच्छा होगा आने के बाद ही मिला जाये।

हा, अभी एक महीने के लगभग यही पर है वे।

५

कौन आया है, हमीद जरा देखो तो ?

जी मैनेजर बाबू आये है ।

अन्दर भेज दो और अपना काम करो ?

नमस्ते सिन्हा साहब ।

नमस्ते देवेन्द्र बाबू, आज सुबह-सुबह कैसे आना हुआ । वहा क्या हालचाल है, काम तो ठीक चल रहा है ना ?

जी, काम तो ठीक चल रहा है लेकिन परसो रात को जब राजेशजी यहा से गये थे तो रास्ते मे उन्होने ड्राइवर से कहा था कि वह उन्हे रास्ते मे ही उतार दे वे खुद पैदल घूमते हुए निकल जायेंगे ।

हा, वह तो ठीक है बात क्या हुई ।

जब वे घूमते हुए जा रहे थे तब वे पुल पर यो ही बैठ गये । काफी देर तक सोचते रहे होगे । उन्हे वहा बैठे बैठे एक चक्कर सा आ गया और वे पुल से नीचे गिर गये । कल सुबह के दस बजे तक बिना किसी सहायता के वही पडे रहे । बाद मे कुछ लोगो ने उन्हे कराहते देखा और पूछताछ करके उन्हे उनके बगले तक पहुचा दिया गया । डाक्टर ने बताया है कि उन्ह किसी बात का गहरा सदमा पहुचा है । जिसके कारण उन्हे चक्कर आ गया और वे गिर गये ।

तो ये बात आज कैसे मालूम पडी ।

डाक्टर साहब खुद ये नही जानते थे कि राजेशजी है कौन और फिर गये दिन सारे समय बेहोश पडे रहे । इसलिये डाक्टर भी कुछ जान नही पाया ? आज जब डाक्टर ने बहुत पूछा तो उन्होने आपका नाम बताया है । वे पहिले तो बताना ही नही चाहते थे ।

ये तो बडा बुरा हुआ । अच्छा दो दिन से गाडी भी तो नही पहुची है वापस ।

जी वह तो आफिस पर उसी दिन रात को ही पहुच गयी थी।

ठीक है, तुम जाओ। अच्छा, देखो हो सकता है आज मैं ऑफिस न आ पाऊं। तुम सारा काम देख लेना।

यस, सर।

अरे नम्रता की मा सुनो। देखो, अभी परसो जो नम्रता का एक दोस्त आया था ना, उसके साथ बुरा हुआ। उसका एक्सीडेन्ट हो गया है। नम्रता को नीचे भेजो। मैं और नम्रता दोनो देख आते हैं। क्या बात हो गयी, कैसी हालत है।

बुरा रहा यह तो। नम्रता ऊपर कुछ पढ रही थी मैं वहीं से आ रही हू। अरे, विष्णु ऊपर से नम्रता को बुला लाओ। बेचारा वह तो अकेला ही होगा वहा पर।

अकेला ही है। कोई भी नहीं सिवाय नौकर के उसकी देखभाल करने वाला। अब पता नही क्या हुआ कितनी चोट लगी है। यह सब तो देखने से ही मालूम पड सकता है। अभी नम्रता के साथ थोडी देर के लिये चला जाता हू। देख आऊंगा।

क्या बात है डैडी। मैंने मुश्किल से रावर्ट फ्रास्ट की दो तीन कविताए भी पूरी नही पढी कि आपने विष्णु को बुलाने भी भेज दिया।

ऐसा है कि राजेश, जब वह यहा से परसों रात को घर गया था तो रास्ते मे ही गाडी से उतर गया। बाद मे उसका एक्सीडेंट हो गया। मुझे तो आज ही मालूम पडा।

नही, डैडी। आपको पूरा नही मालूम है क्या हुआ।

बात तो कोई खास नही। कवि ही तो है। पुल पर बैठे चादनी रात का नजारा देख रहे होगे। उन्हे चक्कर सा आया और पुल से नीचे गिर गये। अभी मैनेजर आया था बता रहा था कि काफी चोट आयी है।

डैडी, प्लीज आप चलिये मेरे साथ।

आओ। नम्रता की मां, देखो हो सकता है लौटने मे कुछ समय लग जाये।

आप डाक्टर माथुर को साथ ले जाना रास्ते से।

ठीक है।

नम्रता, तुम पहिले चलो क्योकि मैं तो पहली बार ही जा रहा हू। मैं यहा खडा हू।

नही डैडी आप भी चलें।

नमस्ते, सिन्हा साहब। आपने फिजूल ही तकलीफ की।

वाह, क्या बात करते हो, राजेश। इसमे तकलीफ की क्या बात है, यह तो मेरा फर्ज है। कुछ समझ मे नही आया। यह सब कैसे हुआ।

आप बैठियेगा। न मालूम कैसे हुआ। उस दिन रात जब मैं आपके यहा से लौट रहा था। मैंने पैदल चलना ठीक समझ ड्राइवर से गाडी रोकने को कहकर उतर गया और उसे वापिस जाने को कह दिया। थोडी दूर पर ही एक पुल सा बना हुआ है। मैं उस पर बैठ गया। मुझे पूरा याद है, मैं बहुत देर तक बैठा किसी बात पर सोच रहा था कि मुझे चक्कर सा आया, एक झटका सा अनुभव हुआ। बाद मे न जाने क्या हुआ। दूसरे दिन सुबह मुझे होश आया तो बहुत जोर का दर्द था पैर मे। कुछ लोगो ने मेरी सहायता की और यहा मुझे पहुचा दिया।

चोट अधिक तो नही आई।

जी नही, ऐसे ही हल्की सी है। कोई विशेष बात नही है। डाक्टर बता रहा था कि विशेष समय नही लगेगा। बस एक महीने मे ठीक हो जायेगा।

एक महीना कम होता है। ऐसा कीजिये कि आप हमारी कोठी पर ही चले चलिये। क्योकि यहां देखभाल करने वाला कोई है नही। क्यो डैडी ठीक है कि नही।

हा, वही चले चलो। सब जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

नही, नही सिन्हा साहब आपको इतनी अधिक परेशानी नही देना चाहता। ये तो जब ठीक होना है हो जायेगा। ऐसी कोई विशेष बात नही है। आपकी इतनी सहानुभूति के लिये आपका आभारी हू।

बहुत औपचारिक न बनें तो ठीक रहेगा। इसमे परेशानी या आभारी होने की बात ही क्या है। आप दार्जिलिंग मे हमारे मेहमान हैं।

नम्रता तुम समझने की कोशिश क्यो नही करती ?

भई राजेश मान गये तुमको। क्या पेंटिंग करते हो। कहीं कालेज मे सीखी है।

जी नही वैसे ही थोडा बहुत शौक रखता हू। ऐसे ही अपनी कल्पना को, अपने विचारो को कैनवास पर उतारने की कोशिश करता हू।

नही, अच्छा बना लेते हो तुमने मेरी भी कुछ पेंटिंग्स देखी होगी। नम्रता के कमरे मे लगी हुई हैं।

बहुत सुन्दर बनाई है।

अब पुराना पड गया है। मॉडर्न आर्ट मे भी मुझे शौक है। लेकिन सही बात तो यह है कि सुबह से शाम तक की व्यस्तता के कारण इस क्षेत्र मे कोई समय दे नही पाता। कई बार इनाम भी मिल चुके है। अब तो हमारे इनाम लेने के दिन तो बीत गये, अब तो कह देने वालो की उम्र में आ गये। सारा अभ्यास भी छूट गया है। समय मिलता नही। तुम तो जानते ही हो, आर्ट के शौक मे समय बहुत चाहिये। कुछ बनाने बैठ गये ता पता ही नही लगता कितना समय बीत गया। हम बनाने बैठते हैं तो हजारो काम दिमाग मे घूमते रहते हैं।

जी हा आप ठीक कह रहे है। मैं ज्यादा पेंटिंग्स नही लाया। कुछ जो मुझे बहुत ही पसन्द हैं केवल वे ही यहा ले आया हू। गये दिनो एक अधूरा चित्र बनाने की तैयारी मे था लेकिन अब ये कठिनाई आ गयी। देखें कब तक पीछा छूटता है इससे।

बस तुमको जैसा नम्रता कह रही है करते जाओ और चुपचाप घर चलकर वही आराम लो। यहा कौन है जो तुम्हारा ठीक ध्यान रख पायेगा।

जैसी आपकी आज्ञा। मैं वही चला चलता हू।

देखो, मेरी नही नम्रता की आज्ञा कहो। नम्रता तो मुझे भी कई बार ऑर्डर्स दे देती है। अभी सुबह सुबह जब मैंने तुम्हारे बारे म हमारे मैनेजर से सुना और नौकर को इसे बुलाने भजा तो ये शायद फ्रास्ट की कवितायें पढ रही थी इसने समझा इसे डिस्टर्ब कर रहा हू और ये नाराज हो गई। इसके गुस्से से तो मैं डरता हू।

डैडी मजाक बना रहे है मेरा।

बेटे हम तो तुम्हारी तारीफ कर रहे हैं। अच्छा राजेश तुम नम्रता के साथ घर चले जाना। मैं ऑफिस चला जाता हू। कुछ जरूरी काम याद आ गया है। गाडी मैं अभी भेज देता हू। मुझे ऑफिस छोडकर गाडी लौट आयेगी। अच्छा मैं चलूगा। नम्रता, डाक्टर माथुर को लेती जाना।

अच्छा, सिन्हा साहब

नमस्ते।

कहिये राजेश साहब, कैसी तबियत है आपकी। आपको चक्कर आ गया था, फिर गिर पड़े। यह सुनते ही मैं तो समझ गयी थी कि क्या कारण है। क्यो ठीक कह रही हू या नही। याद आ गई होगी और लगे होगे सोचने। जब मस्तिष्क मे एक जोरदार घुटन का वातावरण तैयार हो गया होगा। फिर आप सतुलन खो बैठे। यह बात तो मैं अभी डैडी के सामने कहने वाली थी। सोचा चलो माफ कर दिया जाय तुम्हे। हो सकता है आप मेरी उस बात से सख्त नाराज हो जाते, क्यों ठीक कहती हू या नही।

जो भी कहा सही है। ऐसी बातो मे बडा आनन्द सा मिलता है। कहती जाइये न आगे। इस तरह की बातो से दिल मे पैदा हो जाने वाले दर्द को बडा आराम मिलता है। वास्तव मे उस दिन रात को अकेले घूमते हुए यह विचार मेरे मस्तिष्क मे आया था कि मैं अकेला चला जा रहा हू। कोई भी मेरे साथ चलने वाला नही। इन सब बातो के साथ नीरजा का चित्र सामने आ गया। हा गिरते समय यह जरूर लगा था कि मुझे एक तेज झटका लगा है। फिर तो दूसरे दिन सुबह मैं पडा कराह रहा था एक बहुत ही बूढे आदमी ने आकर मेरी सहायता की और मुझे उस भले इन्सान न यहा पहुचा दिया।

देखिए न, हमे भी दो दिन बाद मालूम पडा। आपने जल्दी क्यो नही कहला भेजा।

नही चाहा कि तुम्हे इस बात का मालूम पडे और दुख हो। वरना ऐसी क्या बात है।

यह माना कि हमे कोई अधिकार ही नही कि हम आपका खयाल कर सकें। फिर भी आपकी सहायता करने के लिये ही क्या यह कम है कि आपको मैं जानती हू और आप मुझे। इतनी जान पहिचान होने पर भी हम एक दूसरे के दुख मे काम नही आ सकें तो फिर क्या लाभ है जीने का।

बात सिर्फ यही थी कि तुम्हे मेरी वजह से थोडा भी दुख न पहुचे, यही सोच मैंने ठीक नही समझा कि कहला भेजू।

अफसोस इसी जगह आकर होता है कि आपने हमे अपना नही समझा। आपने ये भी न सोचा कि मैं आपकी ऐसे समय मे थोडी सी सहायता करके आपको मानसिक शाति देने म अपना सहयोग दे सकू। आप न जाने ऐसा क्यो सोचते हैं। ये ठीक है — हो सकता है कि मैं आपकी समस्या को सुलझाने मे असफल रहू लेकिन आपने तो इसके लायक भी न समझा कि इस क्षेत्र मे कुछ प्रयास करू।

आप शायद मेरे हृदय के दुख को न समझें जो आपने अपनी इस बात से मुझे दिया है।

नम्रता, जिस रूप में बात को तुमने समझा है मेरा कहने का यह अर्थ कभी नही रहा था। मैंने जो भी कहा वह एक साधारण रूप मे कहा। तुम्हे मेरी इस बात से दुख पहुचा है। मुझे इसके लिये दुख है। न जाने मैं क्यो नही अपने दुख को भुला पाता हू। हमेशा जब भी सोचा है तो यही कि मैं उसे भूल जाऊ, कभी उसका नाम मेरी जबान पर भी न आये। लेकिन जितना ज्यादा सोचा है मेरे दुख ने अपने मे उतना ही विस्तार किया है और मैं दुखी नही होना चाहता हुआ भी और अधिक दुखी निराश होता जाता हू।

जो भी आपके साथ हुआ है, स्वाभाविक है। आपको दुख हो और हो सकता है रहे। लेकिन समय एक ऐसी दवा है जो आपके दर्द को धीरे धीरे खतम कर देगी। समय बडे से बडे दुख दर्द को ठीक कर देता है। आपका दुख भी अपने आप अच्छा हो जायेगा। मैंने सोचा था कि आप यही है तो आपके साथ बाहर घूमने फिरने का कार्यक्रम रहेगा। जिससे आपका मनोरजन होगा और आप पिछली बातो को भुलाने मे सफल होगे। लेकिन चलते रास्ते आप पर एक और दुख आ पडा।

एक बात कहूं यदि बुरा न मानो। मुझे लगता है कि गये दो दिनो से मैं अपना दुख कुछ भूलने लगा हू क्योकि मे जो गिर जाने से दर्द हो गया है इसने मुझे अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। सोचता हू जब तक ये दर्द रहेगा, मेरे मस्तिष्क को कुछ शाति तो मिलेगी और यह बढ जाता है तो मैं चिन्ता नही करता।

आपका मस्तिष्क कुछ समझ नही आता। आप क्यो नही चाहते कि आप खुश रहे आपकी जिन्दगी मे प्रसन्नता आये।

आखो मे तुम्हारे ये मोती अच्छे नही लगते। चुप करो। इस हृदय मे अब कोई दुख नही न कोई प्रसन्नता। अपने लिये इनमे कोई अन्तर नही। इन बातो, जीवन मे प्रसन्नता–दुख, सबके प्रति मै निष्पक्ष, तटस्थ बन चुका हू। इसलिये इन बातो का मुझ पर कोई प्रभाव नही पडता। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के प्रति अपने विचार विरक्त से हो चले हैं। शॉपिनहावर का मत ठीक से याद नही आ रहा है बिल्कुल वैसे ही विचार मेरे मस्तिष्क मे आ गए है। हार्डी के उपन्यास पढे। पहले विचार आया करता था क्या वास्तव मे मनुष्य मे इतना परिवर्तन हो जाता है। पहले मैं इस प्रकार के विचारो को एक काल्पनिक कहानी से अधिक नही मानता

था। लेकिन जब स्वय उन स्थितियो मे चल रहा हू तो लगता है कि उसने जो भी लिखा सब एक जीवन का महान अनुभव, विश्लेपण था।

आपका विचार लगता है दृढ हो चुका है। फिर भी इतने बडे जीवन को आखिर किसी भी तरह व्यतीत तो करना ही है।

वह तो कर ही रहा हू। ये जिन्दगी भी बीतती जा रही है और क्या चाहिये मुझे सब खुशिया मेरे पास है।

जीवन के गुजर जाने मे और इसे प्रसन्नता के साथ व्यतीत करने मे आकाश-पाताल का अन्तर है। आप बस अपने जीवन के बारे मे सोचना ही छोड दें। सब कुछ अपने आप ठीक हो जायेगा।

गाडी आ गयी है अब आप नही कहेगे वहा नही जाऊगा, क्या लाभ है, तक्लीफ नही देना चाहता आदि। उठिये, धीरे से।

मैं ठीक से नही चल पाऊगा। मेरे पैर म बडी चोट लगी है। दो चार दिन बाद चला चलूगा। जब ये थोडा ठीक हो जाये।

नही, आओ खडे होओ। बस ठीक है, अपना हाथ दो मुझे, चलो धीरे-धीरे हा ठीक। आ जाओ। ड्राइवर दरवाजा खोलो। हा, बैठिये देखो धीरे से। थोडा उधर हो जाइयेगा। ड्राइवर चलो। चलाओ गाडी।

६

नम्रता, सो जाओ देखो एक बज रहा है। ज्यादा देर तक जागना हानिकारक होगा। अपने कमरे मे जाकर सो जाओ।

नीद बिल्कुल भी नही आ रही है। अभी डैडी भी नीचे कुछ पढ रहे हैं। रात को जैसे-तैसे समय निकाल कर कुछ-न कुछ पढने मे लगे रहते हैं। डैडी साढे दस बजे तो नारग अकल के घर से लौटे। आज उनका वही डिनर था। आप लेट जाईये। मुझे नीद नही आ रही।

मुझे तो अभी नीद आ गई थी। सो जाओ, रात काफी बीत चुकी है।

आज डाक्टर माथुर कुछ बता रहे थे । कब तक और यहां रहना होगा, आपकी कोठी में ।

आपको जल्दी क्या है जाने की । आपको जेल में तो नही रखा हुआ । डाक्टर माथुर कह रहे थे कि कम से कम एक सप्ताह और लग जायेगा । बाद में एक बार और घुटने की हड्डी का एक्स-रे होगा फिर ही पूरी तरह कहा जा सकेगा । बता रहे थे कि घुटने के जोड पर बडा असर पडा है ।

इसी असर ने तो तुम्हारी रातों की नीद खराब कर दी है । गये सप्ताह से ही देख रहा हू कितनी सेवा करती रही हो । तुम्हारे जीवन के लिये मेरे हृदय मे बहुत सहानुभूति, शुभकामनायें हैं । जबसे मैं आया हू देख रहा हू तुम्हारी आँखो की नीद मानो उड गयी हो । मुझे तो तुम्हारे स्वास्थ्य मे भी अंतर लगता है ।

अपनी चिन्ता कीजिये । दूसरो की चिन्ता छोड अपनी सहत का खयाल कीजिये । मुझे तो ये ही मौका मिल पाया है जब कोई काम कर रही हूँ, अन्यथा कोई मौका ही नही मिलता । सारे दिन इधर उधर की बेकार बातो, घूमने-फिरने मे ही सारा समय निकल जाता है । मुझे बडी खुशी होती है जब अपने हाथो से कार्य करती हू । जब मुझे देर तक नीद नही आती है तो बडे अजीब-अजीब से विचार आते हैं । आखो मे नीद का कोई नाम ही नही । जी करता है आपके पास ही रहू ।

समझा, तो आपको काम करने का मौका मिल गया । खुशी है । हम ही थे आपको ऐसा शुभ अवसर देने वाले । हमारी दुर्घटना को धन्यवाद दीजिये जिसने आपकी काम करने की आदत बनाने को विवश किया । क्यो ठीक है ना ? तब तो सोचता हू ये बीमारी लम्बी चलती रहे ।

आप मजाक करने लगे । हा, यह बताओ कि आगे क्या करने का विचार है, आज दिन मे डैडी से जब बात हो रही थी तो वे पूछ रहे थे ।

जो करना क्या है । आप जैसे बडे लोगो की कृपा हो गई और कोई छोटी सी नौकरी मिल गयी, कर लेंगे । वैसे अपना थोडा बहुत गुजारा पत्रो मे लेखो व रचनाओ से हो जाता है । कोई विशेष जरूरत तो है नहीं । अपने एक खास दोस्त का बगला है ही । वह भी आने वाला था न जाने क्यो नही आया । डैडी को कहकर अपनी टी– स्टेट मे ही कही नौकरी दिलवा दो ।

ठीक है डैडी को कल कहूगी । जगह कही हुई तो आपको नौकरी मिल जायेगी । उम्मीद तो नही है खाली जगह की । फिर भी कोशिश करेंगे ।

मजाक नहीं वास्तव में नौकरी करना चाहता हूं। अपनी ओर से सिफारिश कर देना। घर की स्थिति भी कोई विशेष अच्छी नहीं है। पिताजी भी इसी वर्ष शायद रिटायर हो जायेंगे। छोटा भाई है वह पढ़ता है अभी। सब कुछ मिलाकर बिना नौकरी के काम नहीं चलगा।

आप अपने शहर वापिस लौटने की कब सोचते हैं।

जब आपकी आज्ञा हो एक सप्ताह तो यही हैं क्योंकि तब तक जाना नहीं होगा। फिर देखेंगे। घर जाने से पहिले दिल्ली भी जाना है। मेरी कविता की एक किताब और एक पहिले का पड़ा उपन्यास है जैसे वह अधूरा है लेकिन इन दिनों मे यही पूरा करना चाहता हू। दिल्ली म प्रकाशकों मे बात करनी है। अब तो प्रकाशन के काम म दिल्ली ही केन्द्र बन गया है वहा इन दानो किताबों क बारे म बात करनी है। तुमने पहिले वाली दोनो किताबें देखी होंगी।

प्रकाशकों मे 'साहित्य प्रकाशन' के मालिक डैडी के अच्छे दोस्त हैं।

मेरे एक अच्छे मित्र का प्रकाशन भी है वहां। आजकल देखनी ही होगी कविताओ मे जन-साधारण की रुचि घटती जा रही है। सारी जनता का ध्यान उपन्यासो पर केन्द्रित हो रहा है। बाजार मे उपन्यासो की बाढ सी दिखाई देती है। मैने सोचा है कि समय के साथ अपने मे भी परिवर्तन लाना जरूरी है। अब मैं सोच रहा हू कि बडा सा उपन्यास लिखू।

यह तो ठीक कह रहे है कि उपन्यासो की माग बहुत है। इसका कारण यह है कि जन साधारण साहित्यिक कविता क्या होती है, इस बात को तो समझता तक नही है तो फिर उनके लिये कविता का अर्थ शून्य के बराबर रह जाता है। हा, मच की कविताओ मे आज भी उसकी रुचि है।

जनता की रुचि का स्तर बहुत गिर गया है। उसमे गभीर कविताओ के प्रति कोई रुचि नहीं है। कविता म उनके लिये तो फिल्मी गाना की धुनें होनी चाहिये। तुम जानती हो कि अच्छे स्तर के कवि इस प्रकार की बातो म विश्वास नही करते और अपने को इतना निम्न स्तर का नहीं बना सकते। स्तर की कवितायें केवल प्रबुद्ध पाठको व श्रोताओ के लिये हैं। कवियो को तो जनता अपने मनोरंजन का साधन मानती है। जैसकि वह एक कला प्रिय साहित्य सेवी न होकर, जोकर हो। इस प्रकार की मनोवृत्ति पर दुख होता है।

चलो आप ये ही मानलें कि अच्छे लेखको की रचनायें अच्छे श्रोताओ समझदार पाठको क लिये है और इसके लिये यह बात भी तो है कि उच्च कवितायें

प्रत्यक मनुष्य के लिये तो रुचिकर नहीं हो सकती। यह रुचि तो उसक ज्ञान और अध्ययन पर निभर करती है। वैस भी जनता किसी भी बात को एक कल्पना क चारजाल म सुनते सुनते तग आ चुकी है। वह चाहती है कि आज कवि जनता की वास्तविक स्थिति का प्रस्तुत कर। अपनी बात का बजाय घुमा फिराकर सुनने के वह सीधा सुनना चाहती है।

तुम्हारे इस विचार से ऐसा लगता ह कि स्तर की साहित्यिक कविताओ का यथार्थवादी कविताओ के समक्ष कोई महत्त्व नहीं है। यथार्थवादी कविताओ का अथ यह तो नहीं कि उसमे भाषा का रूप ही बदल जाय। अच्छे साहित्यिक शब्दचयन स भी तो यथार्थवादी कविताए लिखी जा सकती है मैं नहीं समझता उसके लिय ऊलजलूल शब्दो उपमाओ को बड ही बिगड रूप म प्रस्तुत किया जाये। नयी कविता ने यथार्थ को चाहे मुख्य माना हो लकिन उसम स साहित्यिकता बिल्कुल समाप्त हो गई है। इससे कोइ भी मना नहीं कर सकता।

कविता को छोड दो। एक म सब ओर दखलो हर क्षत्र म नये नये प्रयोग नए वाद प्रतिक्षण पैदा होते है और दूसर क्षण निर्जीव हो जाते है। उनम स्थायित्व कहा? पाश्चात्य सगीत माडन आट नृत्य सबम बडा परिवतन हुआ है।

तुमन जो बात कही कि इन सबमे स्थायित्व नहीं है शत प्रतिशत सच है। हमार दखते देखत साहित्य म न जान कितन वादो कितनी विधाओ ने ज म लिया और एक हवा क झोके की तरह गुजर गय। इस प्रकार का साहित्य एक बाढ की तरह ह। हा यह जरूर है कि इसक बहाव का प्रभाव हम पर हमार लेखको पर जरूर पडगा और पड रहा है। लकिन ये बाढ के पानी की तरह ही निकल जायेगा।

जिस ओर देखो लोग लिखे जा रहे है कु ठा पर सत्रास पर। शब्दावली भी एक विधा बन गयी है। नब्बे फीसदी कविताओ म जारगन का प्रयोग हो रहा है। बिलकुल माडन आट की तरह हो चली है साहित्य की यह विधा। जैसे लोग जब बिखरे फैल गये रगो मे स अथ निकालने म असमथता अनुभव करने लगत हैं तो उसे माडर्न आट की सज्ञा स विभूषित कर दिया जाता है। कुछ ऐसा तो होना चाहिय जो समझ म आता हो।

आपकी इस बात से मरा मतभेद है। जहा तक माडन आट का प्रश्न है उसमे एक उद्देश्य तो अवश्य होता है जिसको साधारण लोग समझने म सफल नहीं हो सकत।

बात तो वही हो गई। जो समझ नही आ आये वही मॉडर्न आर्ट। मैं तुमसे बताऊ कि अभी जब यहा आ रहा था तो कलकत्ते मे एक मॉडर्न आर्ट के प्रसिद्ध आर्टिस्ट से मिला और उनकी एक पेंटिंग जो उसने उसी दिन बनाई थी उसके बारे मे पूछ लिया तो उनसे जवाब नही बन पडा। एक बात ये कि दर्शक अपने विभिन्न विचार रखते है कृति के लिये। सब मतैक्य नही होते।

छोडिये इन बातो को। देखिये अढाई बज रहे हैं। डैडी भी सो गये हैं आप भी आराम करिये। क्या विषय लेकर बैठ गये इस समय। कल आप कहेंगे कि रात को सोने नही दिया।

तुम भी सो जाओ बहुत समय हो गया। मैं थाडी देर सोकर ही उठा था। तुम संभवत बिलकुल नही सो पायी।

अभी मुझे नीद नही आ रही। यह उपन्यास अभी अधूरा ही पढा है। आपने पढा इस।

हा, दोनों भाग पडे हैं मेरे पास। अब तक एक भाग ही पढ पाया हू। विमल मित्र की प्रशंसा करनी पडेगी। नाम भी देखो कितना साधारण सा है "खरीदी कौडियो के मोल"।

उनका जैसा अनुभव, चित्रण, अभिव्यक्ति आप भी अपनी कृतियो मे दे सकते है।

ये सब बातें तो जीवन के अनुभवो से प्राप्त होती है। इस छोटी सी उम्र मे मुझे मेरे अनुभव इतनी बडी कल्पना का वितान नही दे सकते कि मैं उनके बराबर जीवन के प्रत्येक पहलू को बहुत ही सुलझे तरीके से प्रस्तुत कर सकू। सब कुछ कोई दैवीय बात तो नही मनुष्य का स्वय का प्रयास, कठोर परिश्रम भी बडी बात होती है। जीवन के अब तक के अनुभवो ने मुझे सिखाया है कि विश्व के लोग हमेशा हमे बजाये उन्नति के मार्ग पर बढने देने के अपनी पूरी शक्ति से पीछे की ओर खीचते है मैं जब इस बात को समझ गया हू तो मुझ मे कार्य करने की लगन मेहनत करने का साहस अपने आप आ गया है और मैंने उसे हृदय से अपना लिया है। मुझे ईश्वर मे बडा विश्वास है। मैं बहुत सोचता हू अवश्य ही मुझे वह सफलता देगा। अरे, नीद आने लगी तुम्हे। समय भी बहुत हो गया है। जाओ, अपने कमरे मे आराम करो।

७

ट्रेन धीरे-धीरे पटरी पर रेंगने लगी। राजेश ने बुक स्टाल वाले से बाकी पैसे लिये और अपने डिब्बे की ओर दौड़ा। ट्रेन अपनी गति पा चुकी थी और तेज हो गई थी जिस ओर दृष्टि गयी अनजान चेहरो का समूह उसकी आखो के सामने घूम गया उसमे बैठे यात्रियो म से एक भी ऐसा नही था, जिसे वह अपना कह सकता हो या जिससे उसका परिचय हो। विश्व के विशाल जन समुदाय मे से हमारा परिचय बहुत ही सीमित और संक्षिप्त रहता है। यह भी कितनी रहस्यपूर्ण सी बात है जिन्हे हम जानते हैं उनके साथ के हमारे संबंध, व्यवहार तथा उनके साथ जो अजनबी हैं मे कितना अन्तर होता है। देखा जाए तो मनुष्य मनुष्य मे क्या अन्तर होता है लेकिन उनमे आपसी मत भेदो, ईर्ष्या, विरोध की भावनाओ से एक दद होता है। अपने लिये स्थान नही देख, राजेश बाहर के पीछे की ओर जाते वाले वृक्षो को देखता रहा। आपसी सहयोग की भावना का जो विचार कुछ ही क्षण पूर्व उसके मस्तिष्क मे कौंध गया था उसी विचार की, वहा बैठे यात्रियो ने उसे लग रहा था कि अन्त्येष्टि कर दी हो। किसी की भी दृष्टि मे सहयोग की भावना नही दीख रही थी।

ट्रेन तीव्र गति से दौड़ी जा रही थी। राजेश को डिब्बे के अन्दर एक घुटन का सा अनुभव होने लगा। घुटन के कारण सोच रहा था कि ट्रेन से नीचे कूद पड़े या जंजीर खीच कर गाडी रोक दे। बाहर का वातावरण उसे अपनी ओर आकर्षित कर रहा था जिसमे स्वच्छता एवं उन्मुक्तता का वातावरण था। उसमे अपने प्रति, अपने विचारो के प्रति विरोध का भाव उत्पन्न हो रहा था। उसे लगा किसी आवाज ने उसके विचार प्रवाह को भंग कर दिया हो। उसने पीछे की ओर देखा तो एक स्त्री ने उसे संकेत मे अपने पास खाली जगह पर बैठने का कहा।

धन्यवाद, आपको कष्ट होगा। मुझे तो बहुत लम्बी यात्रा करनी है।

नही, इसमे तकलीफ की कोई बात नही। आप आजाइये। काफी जगह है।

उसके आग्रह को टाल नही सका और धीरे से धन्यवाद देते हुए उसके पास बैठ गया।

क्षमा कीजिये, मैं यह जान सकती हू।

जी, मुझे राजेश कहते है।

मैंने वैसे पहिचान लिया था आप ही राजेश है।

आपने कैसे जाना मुझे, ऐसा याद नही आ रहा कभी आपसे पहिले भेंट हुई हो।

परिचय साक्षात रूप मे न सही। मैं आपकी कविताए पत्रो मे देखती रहती हू। आप बहुत सुन्दर लिखते है।

धन्यवाद, आपने पहिचान कैसे लिया ?

यह देखिये न इस पत्र मे आपका फोटो छपा है। फोटो मे और आपमे जब इतनी समानता देखी तो स्पष्ट ही था आप ही होगे। आपको जब आज अपने सामने देख रही हूँ तो न जाने कैसी अनुभूति हो रही है। मेरी कल्पना थी कि आप जरूर पके सफेद बालो वाले, झुकी कमर वाले बुजुर्ग कवि होगे लेकिन आपको देखकर तो मेरी विचारधारा मे बडा अन्तर आ गया है। आप तो बिलकुल नवयुवक हैं।

हमारे भारत मे कृतियो का मूल्याकन सफेद पके बालो से किया जाता है है। चाहे बुजुर्ग लेखक की कलम मे ताकत नही हो और ईश्वर की दया से थोडा बहुत नाम है तो अन्य कम आयु वाले अच्छे लेखको को तो बेकार ही समझा जाता है। देश मे नवयुवको से कोई आशा नही की जाती कि वे कुछ लिखें। यही धारणा नव लेखको की प्रगति मे बहुत बडी बाधा के रूप मे उपस्थित होती है।

आप बिल्कुल ठीक कहते है। देश मे जब अच्छे लेखको की खोज के लिये देखते हैं तो पुराने घिसे पिटे लेखको का एक सकुचित समुदाय दिखाई पडता है जिसमे नव लेखक नाम का कोई दिखाई नही देता।

साहित्य सेवा व्यावसायिक अधिक बन गयी है उसमे बडे-बडे लेखको को इस व्यवसाय के ठेकेदारो के रूप मे मान सकते है जिनके हाथो मे ही आने वाली नयी पीढी का भविष्य है। हम देखते हैं – ईर्ष्या, द्वेष, आपस मे विरोध की भावना और गुटबन्दी की बीमारी से ये लोग ग्रस्त हैं। प्रतिपक्ष दूसरे को गिराने, नीचा दिखाने को साहित्य सेवा का भाग मानता है।

ऐसे ही विचार आपकी इस कविता म स्पष्ट हैं। आपके कोई कविता सग्रह प्रकाशित हुए हैं या नही। इच्छा थी कि आपकी कविताओ को पढा जाय।

दो कविता सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अगने प्रकाशन के सिलसिले में ही दिल्ली जा रहा हू। मुझे कलकत्ता मे कुछ कार्य था इसलिये रुक गया। अभी दार्जिलिंग से लौट रहा हूँ। वहा मेरा एक्सीडन्ट हो गया था सो काफी दिन चारपाई पर पड रहना पडा। अभी परसो मे कुछ ठीक से चलने फिरने लगा हू। इतन दिना के आराम से कुछ घबरा सा गया था। सोचा ठीक भी हो गया हू। दिल्ली होकर अपने घर लौट जाऊगा। एक ही जगह इतने दिनो तक चारपाई पर सोते रहना, कितना अजीब सा लगता है। लेखन का काय करते रहू तो भी कोई बुरा नही है। मुझे थोडी सी सीमायें अच्छी नही लगती। आप स्वय ही बताइये कि एक स्वतत्र लेखक के लिये स्वतत्रता का वातावरण कितना आवश्यक है। कमरे की बन्द चार दीवारी मे बैठकर लिखना बहुत कठिन है। हो सकता है आपका विचार मेरे विचारो से साम्य न रखता हो।

आपकी कविताओ मे से दो कविताए हमारे कॉलिज के जलसे मे मेरी एक सहेली ने सुनाई थी। उस आपकी कविताए बहुत पसन्द है। अपनी डायरी म उसने आपकी कई कविताए पत्रा स उतार रखी हैं। हमारे कॉलेज म, जब कभी आप लखनऊ आयें अवश्य पधारें या दिन निश्चित कर आपको आमन्त्रित कर लेंगे। आशा है जरूर आयेंगे।

देखिये देहली से लौटने के बाद मुझे लखनऊ ही जाना है। मेरे माता पिता वही रहते हैं। पिता का तबादला वहा हो गया था सो लगभग दस वर्ष मे वही है। मैने अपनी सारी शिक्षा देहली म रहकर पाई है। आप यदि अपने कॉलिज मे बुलाना चाहेगी तो मुझे बहुत ही खुशी होगी। वैसे स्टेज पर कविताए नही पढता हूं। आपसे एक बात जानना चाहता हू कि आपका क्या नाम है?

मेरा नाम सविता है। मेरे डैडी का व्यापार है लखनऊ मे ही। आप इन दिनो किस डिपार्टमेन्ट म कार्य कर रहे हैं।

मैं नौकरी मे नही हू। बेकार हू। सोचता हू कोई अच्छी नौकरी मिल जाये। वैसे लेख कविताएं लिखकर अपने जीवन यापन के लिये तो कमा लेता हू। लेकिन अब नौकरी की आवश्यकता समझता हूँ क्योकि आप तो जानती ही हैं कि जो पत्र-पत्रिकाए लेखको को पारिश्रमिक देती हैं उनमे लेखक को सम्पादको से बनाकर रखनी पडती है। सम्पादक की इच्छा है कि वह कविता या कहानी

उसके आग्रह को टाल नही सका और धीरे से धन्यवाद देते हुए उसके पास बैठ गया।

क्षमा कीजिये, मैं यह जान सकती हू।

जी, मुझे राजेश कहते है।

मैंने वैसे पहिचान लिया था आप ही राजेश है।

आपने कैसे जाना मुझे, ऐसा याद नही आ रहा कभी आपसे पहिले भेंट हुई हो।

परिचय साक्षात रूप मे न सही। मैं आपकी कविताए पत्रो मे देखती रहती हू। आप बहुत सुन्दर लिखते हैं।

धन्यवाद, आपने पहिचान कैसे लिया?

यह देखिये न इस पत्र मे आपका फोटो छपा है। फोटो मे और आपमे जब इतनी समानता देखी तो स्पष्ट ही था आप ही होगे। आपको जब आज अपने सामने देख रही हूँ तो न जाने कैसी अनुभूति हो रही है। मेरी कल्पना थी कि आप जरूर पके सफेद बालो वाले, झुकी कमर वाले बुजुर्ग कवि होंगे लेकिन आपको देखकर तो मेरी विचारधारा मे बडा अन्तर आ गया है। आप तो बिलकुल नवयुवक हैं।

हमारे भारत मे कृतियो का मूल्यांकन सफेद पके बालो से किया जाता है। चाहे बुजुर्ग लेखक की कलम मे ताकत नही हो और ईश्वर की दया से थोडा बहुत नाम है तो अन्य कम आयु वाले अच्छे लेखको को तो बेकार ही समझा जाता है। देश मे नवयुवको से कोई आशा नही की जाती कि वे कुछ लिखे। यही धारणा नव लेखको की प्रगति मे बहुत बडी बाधा के रूप मे उपस्थित होती है।

आप बिल्कुल ठीक कहते है। देश मे जब अच्छे लेखको की खोज के लिये देखते हैं तो पुराने घिसे पिटे लेखको का एक सकुचित समुदाय दिखाई पडता है जिसमे नव लेखक नाम का कोई दिखाई नही देता।

साहित्य सेवा व्यावसायिक अधिक बन गयी है उसम बडे-बड लेखको को इस व्यवसाय के ठेकेदारो के रूप म मान सकते है जिनके हाथो मे ही आने वाली नयी पीढ़ी का भविष्य है। हम देखते हैं – ईर्ष्या, द्वेष, आपस मे विरोध की भावना और गुटबन्दी की बीमारी से ये लोग ग्रस्त हैं। प्रतिपक्ष दूसरे को गिराने, नीचा दिखाने को साहित्य सेवा का भाग मानता है।

ऐसे ही विचार आपकी इस कविता मे स्पष्ट हैं। आपके कोई कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं या नही। इच्छा थी कि आपकी कविताओं को पढा जाय।

दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अगले प्रकाशन के सिलसिले मे ही दिल्ली जा रहा हू। मुझे कलकत्ता म कुछ कार्य था इसलिये रुक गया। अभी दार्जिलिंग से लौट रहा हूँ। वहा मेरा एक्सीडेन्ट हो गया था सो काफी दिन चारपाई पर पडे रहना पडा। अभी परसो से कुछ ठीक से चलने फिरने लगा हू। इतने दिनो के आराम से कुछ घबरा गया था। सोचा ठीक भी हो गया हू। दिल्ली होकर अपने घर लौट जाऊगा। एक ही जगह इतने दिनो तक चारपाई पर साते रहना, कितना अजीब सा लगता है। लेखन का कार्य करते रहें तो भी कोइ बुरा नही है। मुझे थोडी सी सीमायें अच्छी नही लगती। आप स्वय ही बताइये कि एक स्वतन्त्र लेखक के लिये स्वतन्त्रता का वातावरण कितना आवश्यक है। कमरे की बन्द चार दीवारी मे बैठकर लिखना बहुत कठिन है। हो सकता है आपका विचार मेरे विचारो से साम्य न रखता हो।

आपकी कविताओ मे से दो कविताए हमारे कॉलेज के जलसे में मेरी एक सहेली ने सुनाई थी। उसे आपकी कविताए बहुत पसन्द है। अपनी डायरी मे उसने आपकी कई कविताए पत्रो स उतार रखी है। हमारे कॉलेज म, जब कभी आप लखनऊ आयें अवश्य पधारे या दिन निश्चित कर आपको आमन्त्रित कर लेंगे। आशा है जरूर आयेंगे।

देखिये देहली से लौटने के बाद मुझे लखनऊ ही जाना है। मेरे माता पिता वही रहते हैं। पिता का तबादला वहा हो गया था सो लगभग दस वर्ष से वही है। मैंने अपनी सारी शिक्षा देहली म रहकर पाई है। आप यदि अपने कॉलेज मे बुलाना चाहेंगी तो मुझे बहुत ही खुशी होगी। वैसे स्टेज पर कविताए नही पढता हू। आपसे एक बात जानना चाहता हू कि आपका क्या नाम है?

मेरा नाम सविता है। मेरे डैडी का व्यापार है लखनऊ म ही। आप इन दिनो किस डिपार्टमेन्ट मे कार्य कर रहे हैं।

मैं नौकरी मे नही हू। बेकार हू। सोचता हू कोई अच्छी नौकरी मिल जाय। वैसे लेख कविता लिखकर अपने जीवन यापन के लिये तो कमा लेता हू। लेकिन अब नौकरी की आवश्यकता समझता हूँ क्योकि आप तो जानती ही हैं कि जो पत्र-पत्रिकाए लेखकों को पारिश्रमिक देती हैं उनमे लेखक को सम्पादको से बनाकर रखनी पडती है। सम्पादक की इच्छा है कि वह कविता या कहानी

प्रकाशित करे या न करें। उनसे जब मिलो तो उनकी प्रशंसा के पुल बाधते रहो चाहे बाद मे मित्रों मे बैठकर जी भरकर गालिया दो। आजकल कृतियो का मूल्याकन करने के लिये सबसे अच्छी विधि यह है कि कृति के लेखक का नाम पढ लीजिये। लेखक के नाम से रचनायें प्रकाशित होती है। ये कोई भी सम्पादक देखने का प्रयास नही करता कि क्या लिखा है। कहने का मतलब यह था कि इस प्रकार की आमदनी का क्या भरोसा। इसलिये नौकरी करना जरूरी है। यह बात भी है कि मेरे पिताजी भी इस वर्ष ही रिटायर हो जायेंगे।

आप देहली से वापस कब तक लौट जायेंगे।

ज्यादा समय नही ठहरना है। मुश्किल से एक सप्ताह लगेगा क्योंकि प्रकाशकों से सम्पर्क करना है। वैसे मेरे मित्र का भी प्रकाशन है। लेकिन मैं बडे प्रकाशक से प्रकाशन करवाना चाहता हू।

देखिये लौटें तब हमारे कॉलेज मे आने का विचार अवश्य अपने मस्तिष्क मे रखे। ट्रेन रुक रही है। आप इस सुराही मे पानी ले आयेंगे। वैसे आपको कार्य बताना मै ठीक नही समझती हू।

लाइये दीजिये। आप कुछ नाश्ता लेना पसन्द करेंगी।

बस धन्यवाद, अभी विशेष भूख नही है। आप यदि कुछ लेना चाहे तो लेलें।

राजेश सुराही लेकर पानी लेने के लिये डिब्बे से नीचे उतर ही रहा था कि उसे उसका कॉलेज का मित्र देवदास मिल गया। दोनो ने एक दूसरे को गले लगा लिया। अब देवदास एक बडे प्रेस का मालिक है। अच्छी आमदनी के साथ-साथ बडी इज्जत बना रखी है। राजेश ने उसे डिब्बे मे बैठने को कहा और खुद सुराही लेकर जाने लगा तो उससे छीनते हुए कहा—

यार मैं ले आता हू। तुम तो बहुत बदल गये हो। यारो से औपचारिक नही होना चाहिये। जाओ बैठो डिब्बे मे कोई तुम्हारी राह देख रहा है और तुम हो कि यहा खडे समय खराब कर रहे हो। तुम बैठो मैं लेकर आता हूँ पानी। जरा अन्दर से पूछ लो कुछ और लाना है।

राजेश ने संकेत से मना कर दिया और डिब्बे में आकर बैठ गया। राजेश ने हसते हुए कहा। बडा मस्त आदमी है। शुरू से ही ऐसी आदत है इसकी। हसी मजाक करना तो यह अपना अधिकार ही समझता है। जब कॉलेज मे थे तो ये बडा अच्छा गाता था मस्त प्रकृति का होने के कारण कुछ लडकियाँ तो

शरारती समझती थी और जो इसके गाने से प्रभावित थीं उनके लिये एक अच्छे गायक के रूप मे था। वे लडकिया इसे बडा चाहती और सराहती थी।

मैंने भी आपके मित्र के बात करने के हावभाव से यह अनुमान लगा लिया था कि अवश्य ही प्रसन्न प्रकृति का युवक है। देखा जाये तो उसके बात करने के तरीके से शरारत का आभास तो होता है। बहुत से चेहरे तो हमेशा गभीर दिखते हैं। उन्हे देख खुशी का कोई अनुभव नही होता।

अजी, इसका क्या कहना कॉलेज के समय से ही इसकी ये आदते है कोई अन्तर नही आया है चाहे जो भी हो दिल का बडा साफ है। गभीरता से किसी बात को सोचता ही नही है। अब तो फिर भी न मालूम क्यो कुछ गभीर सा हो गया है। इसने जो उन्नति की है बडी प्रशसनीय है। ले आये, देखो वहा रखदो।

क्या हालचाल है राजेश, कहा से आ रहा है। दिन तो अच्छे गुजर रहे है।

ठीक ही है। दार्जिलिग गया था। बहुत दिनो बाद लौट रहा हू। वहा मेरा एक्सीडेन्ट हो गया था। इसलिये कुछ अधिक रुकना पडा।

वहा नम्रता से मिला। वह मुझे थोडे दिन पहले कलकत्ते मे मिली थी।

हाँ, मिला था। उसके डैडी का स्वभाव अच्छा लगा। एक्सीडेन्ट के बाद तो उनके वही रहा। पूरे परिवार के लोग अच्छे लगे। वहा ठीक रहा।

रहेगा क्यो नही नम्रता जो वही थी। मै भी गये साल पूरी गर्मी वही था मुझे तो यार किसी के यहा ठहरना बिलकुल पसन्द नही। किसी के यहाँ रहे तो बध से जाते हैं औपचारिकता सी बनी रहती है। नम्रता ने तेरा हृदय भी मोह लिया होगा।

ऐसा कुछ नही। उसने मेरी जो सहायता की उससे मेरे हृदय मे उसके लिये सहानुभूति अवश्य हो गई। उसके सेवाभाव ने जरूर मुझे मोह लिया है।

तेरा जैसा साहित्यकार तो कभी-कभी मिल ही जाता है। क्यो नौकरी तो नही कर रहा होगा।

मिलती नही। देश मे नौकरी नाम की बात रह नही गयी है। कोई मिनिस्टर जानकार नही। अच्छी श्रेणी मे एम ए कर लिया लेकिन कौन पूछता है जब तक सिफारिश न हो। कही छोटी नौकरी मिल जाती है तो ज्यादा समय तक नही चलती क्योंकि अपने को बॉस की तारीफो के पुल बाधना पसन्द नही।

चापलूसी से नफरत है– बस यही गुर है नौकरी का और तुम्हें नफरत है। जमाने को देखकर चला करो। तुम्हारा क्या बिगड जाता है। हा मे हा करने मे। सफलता के लिये आज सबसे बडा हथियार ये है। चापलूसी ही नहीं कुछ भेंट पूजा भी जरूरी है। जब कभी काम हो अपने बॉस के घर मिठाइयो के पैकेट लेकर पहुच जाओ। इतना सब कुछ करने की अक्ल अगर है तो समझो तुम जिन्दगी मे सफल, नही तो साहित्यकार तो हो ही।

ट्रेन प्लेटफार्म पार कर चुकी थी।

प्रत्येक इन्सान तो नही कर सकता ये कार्य। आप यदि सच्चे अर्थों मे साहित्यकर्मी है तो आपमे इस अतिरिक्त योग्यता का आना उतना ही कठिन है जितना सरकारी अफसरो मे ईमानदारी का। देश के प्रत्येक विभाग का हरेक चपरासी अपने को अफसर से कम नही समझता। ठीक भी है आपको यदि अफसर से बातचीत करना है तो पहिले नौकर की आज्ञा लीजिये और उसको प्राप्त करने मे आपको केवल एक डेढ रुपया उसे चाय नाश्ते के देने होंगे। इस विनम्र अदायगी के बाद ही आप अन्दर प्रवेश पा सकते हैं।

सारा का सारा ढाचा बिगड चुका है। शुरू से अत तक सब कुछ ऐसा ही है। बडा कठिन हो चला है कि इसे सभाला जाय।

यह बात सोचना बेकार है। इसके लिये तो आप कह सकते हैं कि अपने यहा सारा ढाचा, भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वत के कीचड मे गले तक डूब चुका है। इस स्थिति मे इसे बचाने के लिये सोचना अपने को धोखा देने से कम नही। इसे तो डूबना ही है सो इसे बिना छेडे जैसे चल रहा है वैसा ही चलने दें और हो सके तो ऊपर से एक धक्का और लगायें।

नही, देवदास ऐसी बात नही है। अभी जो बिगडा है वह माना कि कम नही है लेकिन यह बात नही कि इसे नियंत्रित नही किया जा सके। सब कुछ हो सकता है किया जा सकता है। इसे वर्तमान परिस्थिति म छोडने का अर्थ है कि इसे और विकृत होने दिया जाये। इसको रोकने का कोई रास्ता ही नही निकाला जाय। एक बात बताओ कि आदमी जब बीमार हो जाता है और उसकी स्थिति बुरी हो जाती है तो भी आखिरी समय तक भी हम अपने सारे प्रयत्न करते है कि वह ठीक हो जाये। यह बात जरूर है कि समय लम्बा लगे।

हा, यह बात तो मैं भी मानती हू कि समस्या को समस्या के रूप मे नही छोडा जा सकता उसके लिये उपाय करने ही होगे जिससे उसे सुधारा जा सके।

आज जिस ओर दृष्टि डालें, कहीं भी स्वस्थ वातावरण नहीं दिखता फिर हम अकेले इसको सुधारने में सफल नहीं हो सकते। संगठन हो जिसमें इन विचारो को सच्चे रूप में मानकर चलने वाले व्यावहारिक लोग हो। उनके सहयोग से तो अवश्य कुछ किया जा सकता है।

देखो देवदास जहां तक संगठन की बात है मेरे विचार में ठीक नहीं। जहा संगठन की बात सामने आयेगी जरूर उसके नेता के रूप में कुछ लोग आगे आयेंगे और अपने स्वार्थों की पूर्ति के रास्ते ढूंढना शुरू कर देंगे। जहा तक सोचता हू संगठन नाम में ही एक संकुचितता का आभास होता है बजाये संगठन संघ के व्यक्तिगत रूप में ही इस ढांचे को अपने अपने कार्य करते हुए पूरी शक्ति से सुधारने का प्रयास करें।

मुझे तो कम आशा है। मैं तो जानता हू जो भी सुधारने का प्रयत्न करेगा स्वयं हानि में रहेगा। क्योंकि ऐसे लोगो को आगे बढने नही दिया जाता। जहा तक होना है इस प्रकार के लोगो को तंग किया जाता है। मेरे तो रोज ही काम पडते रहते हैं। यदि सच्चाई ईमानदारी से चलें तो आज ही प्रेस बंद करना पडे।

एक बात क्या यह सच नहीं कि जो भी बिगडा है आपने हमने ही बिगाडा है। रिश्वत लेना हमने सिखाया। सारे भ्रष्टाचार हम ही सिखाते है।

राजेश सरकार के भी काम हैं। उसका कर्त्तव्य नियंत्रण रखना है।

सरकार नहीं कर सकती। सरकार कानून बनाती है उसे लागू करती है। तुम भ्रष्टाचार बेईमानी की बात करते हो। देखते नहीं एक के ऊपर एक विभाग खोले हुए है। सरकार का करोडो रुपया खर्च होता है लेकिन नीचे के कर्मचारी लोगो की गलती से सब काम खराब हो जाते है। हम बजाये सरकार में दोष निकालने के स्वयं में कमियां निकालें और उनका उन्मूलन करने का प्रयत्न करें तो सब कुछ स्वयं ठीक हो जायेगा। सही बात तो यह है कि जनता में भी कुछ गलतियां हैं सरकार में भी कहीं कहीं कमजोरी है फिर भी दोनों मिलकर यदि कुछ करना चाहें तो मैं नहीं समझता कि कोई कठिनाई सामने आये।

इस बात से सब सहमत तो हो जाते हैं लेकिन यह सब कुछ कहां हो पाता है। जनता अपने स्वार्थ देखती है सरकार कानून पर कानून बनाती है आश्वासन देती है नेता लोग भाषण देते है उद्घाटन करते हैं और अपनी कुर्सी मजबूती से दबोचे रहते है। इस प्रकार की स्थिति में देश में उन्नति, सुधार समृद्धि की बातें हास्यास्पद प्रतीत होती है।

गलत बात को जानते हुए भी उस पर निष्पक्षता प्रकट करना इस बात को प्रदर्शित करता है कि आप खुद भी उसके पक्ष मे हैं। यदि आप उसके प्रति विरोध की भावना प्रकट नही करते हैं तो इसके मायने आप उसे रोकना नहीं चाहते। इस प्रकार से आप निष्पक्ष होते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से उसके पक्षपाती हो जाते हैं।

खैर छोडिये इन बातो को। न तो राजेश बाबू आप ही युद्ध इन्कलाब लाने वाले है और न आप देवदासजी।

देखिये सविताजी, आप देवदास की बात छोड दें। इसका कारण यह है कि इसको गृहस्थी चलानी है, प्रेस चलानी है, बच्चे पालने हैं। मैं इन सार कार्यों से दूर हू। अभी तक न तो शादी ही की है और न ही कोई नौकरी। इस परिस्थिति मे मुझे कोई चिन्ता नही हो सकती।

अच्छा जी आप इनकी श्रेणी मे न सही। आप सबसे अलग होकर चलिये।

अच्छा देवदास कहा जा रहे हो।

इतनी क्या जल्दी थी। जहा जाना है वहा पहुच जाता, फिर पूछ लेता। देहली जा रहा हू।

मैं भी देहली ही चल रहा हू अच्छा रहेगा।

गाडी तो रास्ते मे रुकगी नही। लखनऊ ही रुकगी।

राजेश बाबू लखनऊ आयें तो हमार यहा अवश्य आयें। ये मेरा विजिटिंग कार्ड है। बस अमीनाबाद चले आइये, जिसे भी आप पूछेंगे आपको मालूम हो जायेगा। पिताजी का वही बहुत बडा स्टोर है इसलिये सब अच्छी तरह से जानते हैं। देवदासजी आप भी आइयेगा कभी। आपके साथ बीता समय बडा अच्छा रहा।

कालेज भी खुल जायेंगे। आपको अपने कालेज मे आमन्त्रित करेंगे। विरह गीतो मे तो आप प्राण डाल देते हैं। बहुत ही मार्मिक चित्र खीचते हैं।

देहली मे मुझे एक सप्ताह लग जायेगा। लखनऊ आने के बाद आपसे अवश्य मिलना होगा। गीतो मे जो दर्द आपको अनुभव होता है, वह हम कवि लोगो के दर्द का बहुत छोटा अंश होता है। हम अपनी बात, अपने दुख को चाहते हुए भी उसी रूप मे शब्दो के सहारे नही कह पाते। शब्दों मे इतना भाव कहा जो हृदय का दुख ठीक वैसे ही रूप म सामने रखदे।

देखिये आप आइयेगा जरूर। हमारी मजिल आ पहुची है आप को तो अभी बहुत चलना है।

आप बड़ी भाग्यशाली है जो आपकी मंजिल स्वयं आपके पास चली आई। हमे अभी मंजिल की राह देखनी होगी क्या पता मिले न मिले। आप तो हसने लगी।

अच्छा, राजेश बाबू।

नमस्ते सविताजी, अवश्य मिलूंगा आपसे।

८

राजेश एक लम्बे अरसे के बाद घर जा रहा है। पूरे चार साल बाद। अपने पडोसी लोगो के रहन सहन मे गये समय और आज मे कोई अन्तर नही आया होगा। सब कुछ वैसा ही होगा। गरीब मजदूर लोगो का क्या तो रहन-सहन हो सकता है केवल यही रोज कमाना, अपना खर्च चलाना। वे ही दो चार बर्तन जिन्हे गत कई पीढ़िया प्यार से सभाले अपनी पूंजी और पूर्वजो की धरोहर मान काम मे लेती आ रही है। उनमे किसी तरह का कोई परिवर्तन नही हो पाया है। अपने सीमित वस्त्रो से गर्मी, सर्दी, बरसात गुजार लेते है। राजेश का मकान सडक के पास वाली गली मे है गरीब बच्चों को देखकर एक बडी टीस उठती है। अपने पर ही गुस्सा आता है बच्चो का स्वास्थ्य देखकर। देश के भविष्य को इन्ही नन्हे मुन्ने बच्चो के कमजोर कधो पर मानने वाले नेताओ पर हसी आती है। ये शिथिल काय बच्चे जो स्वय स्वस्थ नही है जो स्वय मजबूत नही है उनसे देश के सुखद समृद्धिशील भविष्य की बात सोचना कितनी बडी भूल है। रात को जब ये लोग दिन भर की थकान को समाप्त करने के लिये गली म टाट के टुकडे बिछा और ओढने के लिये पैबन्दो द्वारा बनी हुई चद्दर से मुंह ढक सो जाते है। छोटी चद्दर को ओढे सीधे लेटे ये लोग लगता है लाशें पडी हो। जिन्हे ढक दिया गया है क्योकि दिन भर की थकान से वे इतनी गहरी नीद मे सो जाते है कि करवट लेने तक का ध्यान नही रहता और सुबह जब उनकी घर वाली अपने धधे पर जाने को उठाती है तब उठते है और चल देते है नये दिन के रोजगार की तलाश मे।

राजेश के पिता दफ्तर मे क्लर्क है। मा पडौसी लोगों के कपडे सी लिया करती है। छोटा भाई है। राजेश के पिता की शुरू से इच्छा थी उनका लडका

शिक्षित होकर अच्छी नौकरी पा जाये। राजेश पढ़ गया है लेकिन उसे नौकरी में रुचि नही। राजेश के पिता उसकी शिक्षा से प्रसन्न हैं लेकिन उसके बेकार बैठने से खुश नही। लेखन कार्य से वह जो उपार्जन करता है उससे स्वयं का ही खर्च चला पाता है। वर्षों के बाद जब घर आता है तो जरूर कुछ रुपये अपनी मां को दे जाता है। कुछ कपड़े छोटे भाई के लिये बनवा देता है। वह जानता है कि अब वह बड़ा हो चुका है स्कूल में पढ़ता है, उसका भी एक मित्र समाज है जिसमें अपना स्तर बनाये रखने के लिये ऊपरी टीपटाप भी थोड़ी बहुत जरूरी है।

राजेश को अपने बचपन में साथ खेलने वाली मीना की याद आ गई। पिछली बार यहां आया था तब वह अपने यौवन की दहलीज पर चरण रख चुकी थी। तब ही उसका पिता सोमू उसकी शादी की बात सोचने लग गया था। मीना बचपन से ही साथ में खेली और बड़ी हुई थी। शुरू से ही एक दूसरे के प्रति गहरा आकर्षण था। धीरे-धीरे बड़े होते गये। आयु के साथ-साथ बचपन की मजाक, एक दूसरे को छोटी-छोटी बातों पर मार देना, शिकायत करना सब समाप्त हो गये। अब तो सामने आ जाने पर एक नजर देख लेने में भी बड़ा अजीब सा लगता है। बचपन का स्नेह यौवन तक आते-आते प्रेम का रूप धारण करने लगता है। उसमें शर्म का अंश आ जाना स्वाभाविक ही है। हो सकता है सोमू ने मीना के हाथ पीले कर दिये हो।

वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि ट्रेन की गति में शिथिलता आ गई और गाड़ी लखनऊ स्टेशन शेड में पहुंच गई। स्टेशन पर खड़े लोगों की आंखें अपने-अपने आगन्तुकों को खोजने में लगी हुई थी। जैसे-जैसे ट्रेन आगे बढ़ती जाती लोगों की दृष्टि में सावधानी का भाव बढ़ता जाता था। सोचते थे आगे नही कहीं पीछे होंगे। ट्रेन रुक गयी। तेज दौड़ भाग शुरू हो गई थी। राजेश की दृष्टि अपने छोटे भाई को ढूंढने का प्रयास कर रही थी लेकिन दूर तक दोनों ओर वह दिखाई नही दे रहा था। स्वयं सामान ले नीचे उतर आया। सामने से अपने वृद्ध पिता को आते देख उसकी प्रसन्नता का बांध टूट सा गया उसने भी उनके झुर्रीदार चेहरे पर दौड़ आई हल्की सी प्रसन्नता के भाव से समझ लिया वे प्रसन्न है उसने बढ़-कर चरण स्पर्श किया। पिता ने पुत्र को उठा सीने से लगा लिया राजेश अपने पिता की आंखों से गिर गये आंसुओं को देख रहा था लगता था वे उन्हें छिपा लेना चाहते हों। उनके आंसुओं में जहां पुत्र के आगमन का संकेत था, दूसरी ओर अवश्य ही उनके हृदय में वेदना का गहरा भाव छिपा हुआ था जिसे राजेश समझ नही पाया — पूछ बैठा —

पवन नही आया। आपने बेकार ही तकलीफ की, उसे ही भेज देते।

इसका उत्तर बहुत ही गंभीर भाव से दिया गया — हां वह नही आया।

राजेश ने इस बात को यहीं समाप्त कर बाहर चलने का विचार कर, सामान अपने हाथों मे ले लिया और बाहर आकर एक इक्का कर लिया। जिसमे पिता और पुत्र दोनो बैठ गये। उसे लग रहा था कि सारी की सारी दुकानें, बाजार पहिले जैसे ही हैं। कोई अन्तर नही आया। उसको सामने वाली पान की दुकान दिखाई दी जहा से वह पान सिगरेट उधार लिया करता था। दुकान का मालिक मुहम्मद अली बैठा अपने शिथिल हाथो बेमन पान लगा रहा है। यह उसका रोज का काम है। यदि वह नही करे अपने बच्चो का पेट कैसे पाले। मुहम्मद के सारे बाल पककर सफेद हो गये थे कमर झुककर कमान हो चली थी। लम्बी चुप्पी के बाद राजेश के पिता ने प्रश्न किया—बेटा तुम्हारा पत्र कल ही मिला था कि तुम आ रहे हो। तुम्हारी मा को बहुत खुशी हुई। वह कल से ही तुम्हारा इतजार कर रही है बडा प्यार है तुम्हारे लिये उसमे।

बड़े दिनो बाद आया हू पिताजी। हमेशा उससे दूर ही रहा हू। पहिले पढाई के कारण बाहर रहता था, अब यदि यहा कोई नौकरी नही मिली तो जरूरी है कि फिर बाहर ही जाना पडेगा। क्या करें सब कुछ जरूरी है।

तुम ठीक कहते हो। आज ही कह रही थी कि इस बार जब तुम आ गये हो तो वह तुम्हे वापस नही जाने देगी। बडा समझाया कि नौकरी कही भी मिले करने मे कोई बुराइ नही है। अपने घर की खेती तो है नही कि बाहर जाना ही नही पडे। तुम्हारी मा का दिल बहुत कमजोर है। समझाया पर उसे समझ नही आती।

पिताजी नौकरी का क्या भरोसा। जहा मिलेगी करनी पडेगी और मेरे यहाँ रहने न रहने से क्या होता है। पवन तो यही रहता है। दोनो मे से एक तो आपके पास है। चिन्ता जैसी कोई बात नही होनी चाहिये। पिछली बार जब मैं लौटा था उसके व्यवहार ने मुझे बडा अच्छा लगा।

इस बात से राजेश के पिता मे राजेश के प्रति प्यार का तूफान सा उठ आया। उनकी आख नम हो चली थी। लगता था उनमे दुख का गहरा भाव छिपा हो। इन्ही बातो के बीच राजेश का मकान आ गया। इक्के वाले को पैसे देकर राजेश घर मे सीढी से ऊपर चढ गया। मा के पैर छुए। मा अपने प्रेम को रोक नही सकी और उसकी आखो से आसुओ की धारा बह निकली। मा ने बडे प्रेम से बैठने को मुढिया दी जिस पर वह बैठ गया। उजाले मे मा के चेहरे पर उभरे भावो से दुखित हृदय का आभास होता था। राजेश पूछ बैठा— क्यो मा क्या बात है बडी दुखी लग रही हो। पवन कहा गया है। इतना समय हो गया।

मा की आखे डबडबा आयी। मुझे लगा कि मैने उसके दुख को कुरेदा है। माँ ने बहुत ही दुखी ढग से कहा– पवन की सगति गये दो सालो से बडी खराब है। उसने पढाई भी छोड दी है। सारे दिन शहर मे झगडा करता फिरता है। गये दिनो उसने एक सेठ के यहा चोरी करली थी। उसने पुलिस मे बद करवा दिया। उसे सात दिन हो जायेंगे कल क्या करें।

राजेश को लगा कि जो आशायें उसने अपने भाई स की थी वे सब बेकार थी, मिथ्या थी। इन बातो पर विश्वास नही हो रहा था। लेकिन मा झूठ क्यो बोलेगी। उसके हृदय मे भाई के प्रति प्रेम, घृणा का रूप लेन लगा। उसका विचार प्रवाह इतना तीव्र हो चुका था कि वह इन सब बातो से जड रह गया। उसके मुह से कोई भी शब्द नही निकल पा रहे थे।

मा ने सिसकते हुए अपनी बात जारी रखी– तेरे पिताजी तो पवन को घर मे रखना ही नही चाहते। बहुत कहा लेकिन वे उसे छुडाना भी नही चाहते। कोई प्रेम ही नही है उनमे उसके लिये। एक ही जिद पकड रखी है कि जो जैसा करेगा वैसा ही फल पायेगा। बेचारा कितनी कठिनाई मे होगा। बच्चे हैं गलती हो जाती है।

राजू की मा तुम समझती क्यो नही। गलती एक बार होती है दो बार होती है वह पूरे दो साल से मेरी टोपी उछालता आ रहा है। कितना समझाया लेकिन उसे समझ नही आती। रहने दो नीच को थोडे दिन अन्दर सारी चौकडी भूल जायेगा। न जाने क्या समझता है अपने आपको। ऐसी औलाद न भी हो तो कोई दुख नही। सारा मोहल्ला उगलिया उठाता है मेरे पर। गरीब हू लेकिन इज्जत भी तो कोई चीज होती है। तुम्हें भी कहे देता हू कोई जरूरी नही है कि उसको छुडवाया जावे। रहने दो थोड दिन वही।

पिताजी, इतने कठोर भी न हो जाओ। ये बडे दुख की बात है कि उसने अपने काम को छोडकर बुरी सगति अपनाई। फिर भी हो सकता है अपने रास्ते पर आ जाय। मा, ऐसा है कल देखेंगे। क्या कर सकते है। सगति उसकी गलत रही। अभी तो पिताजी, छोटा ही है सब ठीक हो जायेगा। इस उम्र मे बच्चो को जो सगति मिल जाती है अपना लेते हैं। लेकिन वे इसका बुरा परिणाम नही सोचते क्योकि इस समय तक इतना ज्ञान होता नही। मेरे एक जान पहिचान के सेठ हैं कल मैं उनसे मिलू गा हो सकता है मेरी इस मामले मे मदद करें। उनकी अच्छी जान पहिचान होगी। आप पिताजी चिन्ता न करें ईश्वर सब ठीक करेगा। मा देखो बहुत समय हो गया है अब सो जाओ, पिताजी आप भी सो जाओ।

खाना खाले, बनाकर रखा है।

नहीं अब देर हो गई। रात देर से कुछ भी नहीं भाता। खाना खाकर ही आया हूँ। उसके दोस्त लोग भी जेल मे होगे।

नही वे तो सारे भाग छूटे हुए। पवन ही अकेला पकड़ा गया। उसमे इतनी भी तो समझ नहीं।

तुम आराम करो। मैं यही बाहर ही सो रहूगा।

राजेश का हृदय टूटा जा रहा था पवन के बारे मे सोचकर। वह सोचता था पवन पढ़ने में आगे रहेगा। क्योंकि पढ़ने मे भी वह शुरू मे ही प्रथम श्रेणी मे पास होता रहा है। लेकिन इस स्तर पर आकर उसे अपनी योजना विचारो मे एक बड़ा गतिरोध सा अनुभव हुआ। उसके माता पिता सो गये। तब भी उसके इन विचारो ने उसे सोने नहीं दिया। राजेश वैसे बहुत थका हुआ था लेकिन अशान्त मस्तिष्क मे नीद नहीं आ रही थी। उसे पूरा याद है कि चार साल पहिले जब राजेश दिल्ली गया था अपनी पढ़ाई के लिये, तब उसके माता-पिता बड़े प्रसन्न थे लेकिन इन चार वर्षों मे उनमे बड़ा परिवर्तन ला दिया था पवन के दुख ने, उन्हें वृद्धावस्था की ओर धकेल दिया था। इन्ही विचारो की गहनता मे थकान के कारण उसकी आख कब लग गयी इसका उसे ध्यान नहीं रहा।

६

राजेश को रात भर नींद नहीं आयी। थोडी सी आख लगी थी। उसे बस एक ही विचार काटे जा रहा था। वह दैनिक कार्यों से निवृत्त हो शहर के प्रतिष्ठित सेठ कमलनयनजी के पास जाना चाहता था। यदि सेठजी सिफारिश करदें तो आज ही पवन को छुड़वाया जा सकता है। जल्दी करते भी नौ बज रहे थे। मा को आश्वासन दिलाया कि वह जरूर पवन को घर ले आयेगा और घर से निकल पड़ा।

गली के नल पर मीना बर्तन लिये खड़ी थी। उसकी दृष्टि राजेश पर पड़ी। उसने जल्दी से नीचे गिर आये आंचल को अपने वक्ष पर डाल लिया। मीना ने भी राजेश के चेहरे पर बिखर आयी हंसी को समझ लिया। राजेश ने आगे हो पूछा–कैसी हो मीना।

अच्छी हू देख नही रहे। बडी जल्दी आये। अभी तो और भी बाहर रह सकते थे। तुम्हारे नही आते रहने से पवन कितना खराब हो गया है। उसने सारे मुहल्ले म तुम्हारा नाम बदनाम कर रखा है।

अरे तू ता सारी बातें एक साथ ही कह गयी। मुझे मालूम है पवन बिगड गया है। उसकी सगति अच्छी नही है लेकिन इसम मैं क्या कर सकता हू। छोड इन बातो को और सामू चाचा कैसे है।

अच्छे हैं। बहुत याद करते है तुम्हे। अब यहा आ गये हो। यही रहो, मा बाप के पास। पवन को सुधारो। देखते नही कितनी दुखी रहती है चाची।

अच्छा, अच्छा अब अपनी शिक्षा बन्द कर। कल की छोकरी चली शिक्षा देने। भूल गयी जब नाक भी साफ नही करनी आती थी। आज बडी बातें कर रही हैं। सोमू चाचा से नमस्ते कहना। हो सका ता शाम को घर आऊगा। एक बात अभी भी तेरे मे वैसी की वैसी हैं, बात बात पर झगडा करती है। अभी तक यही हैं। गयी नही कही। सोमू चाचा तो जब मैं गयी बार आया था तब ही कह रहे थे कि अब जल्दी ही इस निकालना है।

तो तुम्हे क्या तकलीफ हो रही है मेरे यहा रहने से। मेरा घर है यही रहूगी देखती हू कौन रोकता है?

देखता हू तेरे को रखता कौन है यहा। चाचा म कहकर एक दो महीने म यहा से किसी बन्दर के साथ बाहर नही भेज दिया तो मेरा नाम नहीं।

बडा बेशर्म हो गया है। मैं तो चाची को पहिले मना करती थी कि इसे कालेज मे भेज दिया तो बिगड जायेगा। सच निकली मेरी बात।

जानता हू तेरे मन मे क्या हो रहा है अभी। अच्छा अपना काम कर तेरे से बहस करे जो पागल हो। शाम को आऊगा मैं।

अभी कहा चल दिये नेता बनकर।

कोई कही भी जारहा है क्यो रोकना उसे, तेरी बला से भाड म जारहा हो।

शौक से जाओ भाड मे। जोर से हस देती है।

पगली कही की।

मीना से बात करना अच्छा लगा। ज्यादा अन्तर नही आया है उसमे। गली स निकल बाजार की ओर आ गया। दस बजने का समय हो रहा था।

कालेज मे पढने वाले छात्र, आफिस मे काम करने वाले चपरासी से लेकर बडे अफसर लोग तेजी से बडी सावधानी से चले जा रहे है। यह दृश्य रोज देखा जा सकता है। ऐसी व्यस्तता, मशीन की तरह चलन का कार्य हृदय मे एक नीरसता का भाव जाग्रत कर देता है। फिर दिन भर बीत जाने पर शाम को पाँच बजे से फिर इसी प्रकार की भीड भाड सडको पर देखी जा सकती है। उसमे लोगो क चेहरो पर थकान, उदासी, आलस्य का भाव स्पष्टत देखा जा सकता है। जबकि सुबह के समय आफिस अपन अपन कार्य से जान वाले लोगो के चेहरो पर नय दिन का नया उत्साह बिखरा होता है जिस वे दिन भर टेबल पर पडी फाइलो मे खो दते हैं। दिन भर टेबल पर दृष्टि गडाय काम मे जुटे रहते हैं जिसके बदल म उन्हे तीन चार सौ रुपय मिल जाते है जिससे अपन परिवार का दोनो समय का भोजन जुटा पाते हैं। महीने क आखिरी दिनो म तो सामान्य रूप से पडोसी लोगो से उधार लेकर काम चलाना पडता है। क्लर्क लोगो की जिन्दगी फाइलो मे ही बीत जाती है। इन्ही विचारो मे डूबा चला जा रहा था कि उसके दोस्त मोहन ने आवाज दी। मोहन की पुस्तको की दुकान थी। वह राजेश से काफी समय से मिलना चाहता था।

राजश को बिठाते हुए बोला– अरे भैया राजू खूब उन्नति की तुमने। तुम्हारी ये दोनो किताबें जबस मेरे पास आई हैं बहुत ज्यादा खुशी हुई। बहुत समय से मिलना चाह रहा था। पिताजी स दो एक बार पूछा भी। लेकिन आयेगा आयेगा कहकर टाल लिया।

कैसा चल रहा है काम। अच्छा पैसा निकाल लेते होगे दुकान से। अच्छी दुकान लगाली है ये क्या कम तारीफ की बात है।

हा, गुजार लायक तो निकल आता है इससे। सब मिलाकर कह सकते हो अच्छा चल रहा है। मैं ज्यादा पढ नही सका। तुम्हारी भाभी तो बी ए पास है। मैंने उसे बतायी, तुम्हारी कविताओ की किताब, उसने बहुत पसन्द की। नौकरी क्या कर रखी है।

नौकरी मिलती कहा है। थोडा बहुत अखबारो मे लिखता हू।

अरे भाई, अखबारो से होता क्या है। कुछ धधे की भी बात किया करो। एम. ए तो कर ही लिया होगा।

हा, कर लिया। नौकरी की तलाश मे हू।

एक मिनिट आया– हा, आपके लिये खास तौर पर मैंने दिल्ली से राजेश की दोनो कविताओ की किताबें मगा दी हैं।

राजेश ने मुडकर देखा तो सविता खडी थी। राजेश ने नमस्ते किया।

सविता ने भी बड़ी नम्रता के साथ प्रत्युत्तर दिया और सवाल कर बैठी– बड़े दिन लगा दिये आपने देहली में। मैं तो कई दिनों से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। आपकी कवितायें पढ़ने की बड़ी तीव्र इच्छा थी। सो मैंने इन्हें विशेष तौर पर आपकी ये पुस्तकें मगाने को कहा था।

आपसे कहा था हो सकता है कि दो सप्ताह लग जायें वहां। लेकिन वहां जाने पर कुछ दिन अधिक रुकना पड़ा। गयी रात ही पहुंचा हूं। सोहन दोनों किताबें देना।

राजेश ने दोनों किताबें लेकर अपने कुर्ते की जेब में पेन निकाला और उन दोनों पर लिख दिया– *'यात्रा के एक पड़ाव पर मिल जाने वाली सविता को'* और उन्हें सविता को दे दिया। सविता सोहन को पुस्तकों का मूल्य देने लगी तो राजेश ने बीच में रोकते हुए कह दिया– आपको भेंट की हैं। रुपये क्या दे रही हैं आप, और उसने जेब से रुपये निकाल कर सोहन को दे दिये।

हां, दोनों पुस्तकों के प्रकाशन के बारे में क्या रहा।

एक महीने बाद प्रकाशन प्रारम्भ होगा। आशा है दो तीन महीने में ही बाजार में आ जायेंगी। उपन्यास बड़ा पसन्द किया गया।

उपन्यास लेखक यदि कवि है तो और भी अच्छा लिख सकता है। भावों की गहनता, कवित्वमयी शैली से आ जाती है। कवि नयी-नयी बातें, कवितायें करता है और उन्हें उपन्यास में प्रस्तुत करता है। आपकी कवितायें अपने में जो दर्द का भाव रखती है आपके उपन्यास में भी अवश्य उसका भाव रहा होगा।

हां, कुछ इसी ढंग का है। तुम तो जानती हो कि दुखी भावों का प्रस्फुरण हृदय की वेदना की कराह से होता है और यह वेदना जहां मिलती है उसे तुम समझती हो। दुख सबके हृदय में होता है। लेकिन प्रकट करने के लिये सशक्त भावों का होना आवश्यक है। भावों के होने के बावजूद प्रत्येक मनुष्य तो उन्हें प्रकट नहीं कर सकता। कवि, लेखकों में इस प्रकार के अपने भावों को प्रेषित करने की अद्भुत शक्ति होती है जिसके सहारे वह अपने को प्रकट करता है अपने विचारों को पाठकों के सम्मुख अपने शब्दों में रखता है।

आप ठीक कह रहे हैं। अभिव्यक्ति के लिये सुदृढ़, व्यवस्थित भावों का होना आवश्यक है। इसके बिना कोई भी लेखक अपने भावों को प्रकट नहीं कर सकता। आइये, घर चलिये।

आज तो आप क्षमा करें, क्योंकि आवश्यक कार्य से कहीं मिलने जाना है फिर भी हो सकता है जिनसे मिलना है, न मिलें। बड़े लोगों का क्या भरोसा है।

किनसे मिलना है आपको। क्यो बहुत जरूरी कार्य है। यदि आवश्यक ही हो तब तो आपको रोकू गी नही। जब आपका कार्य हो जाये तो घर पर आ जाइयगा। अच्छा रहेगा। किस ओर जायेगे आप।

मुझे इधर जाना है सेठ कमलनयनजी के यहा।

अच्छा उनसे मिलने जाना हैं आपको। यह तो अच्छा हुआ वे खुद हमारे घर पर आ रहे हैं करीब बारह बजे। आज उनका खाना हमारे यहा ही है। मेरे साथ घर ही चलिये, वही पर मिल लेना।

ठीक है। अच्छा भई सोहन, फिर बाद मे मिलू गा। नमस्ते, आइये चलें।

इधर आइयेगा मेरी गाडी उधर खडी है। कई परेशानिया रहती है। घर लौट रही थी कि पुस्तको की याद आ गयी। यह अच्छा हुआ कि आप मिल गये। आप नही मिलते तो न जाने क्या पता आप घर आते भी या नही।

नही जब कह दिया था तो जरूर आता। गयी रात ही तो पहुचा हू। आज आने का प्रश्न नही उठता। हा दो चार दिन बाद अवश्य आता।

मेरा मतलब था शायद आप भूल जाते। आप कवि जो ठहरे, आइये।

गाडी चलाते हुए सविता अच्छी लग रही थी। राजेश कुछ कहना चाहते हुए भी रुक गया। इस बात को सविता ने देखा। राजेश के भावो को समझते हुए कहा शायद कुछ कह रहे थे ?

नहीं कुछ नही। ऐसी कोई बात नही।

मैं समझती हू आप जरूर कुछ छिपा रहे है। कहिये न क्या कहना हैं।

कुछ नही। कोई खास बात नही। कहूगा तो फिर कहेगी आप कवि ही हैं।

नहीं, आप कहियेगा।

सोच रहा था कवि की कल्पना बिना स्त्री के अपूर्ण है। उसके बिना कुछ नही लिखा जा सकता। उसी से सारे भावो का प्रसव होता है। चाहे वे शृ गार के हों, चाहे प्रेम के या विरह के सब भावो को देने वाली स्त्री ही होती है।

तो इसमे कौन सी बात थी जो आप बताने मे इतना हिचकिचा रहे थे। बडी साधारण सी तो बात है।

हू ।

लेकिन आप कुछ बताने से घबरा रहे हैं। कहिये आपकी कल्पना मे कौन सी छवि आ टपकी है जिसे छिपाना चाहते हैं।

छिपाना तो क्या है आपके स्वभाव के बारे मे सोच रहा था। इतने कम समय मे आपसे बडा प्रभावित हुआ हू।

बड भाग्यशाली है आप। आपसे तो मुझे प्रभावित होने मे बडा लम्बा समय लगा है। कितने ही दिनो से आपकी कविताए पढती रही हूँ। जब जाकर आप प्रभावित कर पाय है मुझे।

आपका तरीका ज्यादा अच्छा है। गभीरता भी होनी जरूरी है जो गभीर है उस जल्दी प्रभावित नही किया जा सकता।

कार एक बगले म प्रविष्ट हुई और पोर्टिको मे रुकी। सविता राजेश को घर के अन्दर ले गयी। अपन कमरे मे बैठा दो मिनिट मे लौट आने की कह चली गयी। राजेश कमरे मे लगी सुन्दर पेन्टिग्स को बड ध्यान से देखता रहा। वह अपन जीवन मे जो है उससे भी बहुत ऊचा बडा आदमी बन सकता था। लेकिन हमेशा घर की परिस्थितियो ने उसे जब भी उसन आगे की ओर पैर बढाये, पीछे खीच लिया। वह अपनी समुचित उन्नति करने मे असमर्थ था, विवश था। लेकिन स्वय जो कुछ आज है उसमे वह सन्तुष्ट है क्योकि साधनो की कमी होने पर भी उसने जीवन से जो सघर्ष किय, हर कदम पर ठोकर खाई, फिर उठा और चलने लगा, इन सब परिस्थितियो के बाद भी जो उसने उन्नति की, उससे उसे प्रसन्नता है, सन्तुष्टि है। पेट के लिय दो रोटी सुख से जुट जायें ये ललक जरूर है। इसम बुराई भी क्या है ?

इन्ही विचारो म डूबे राजेश की ओर चाय का प्याला बढाते हुए सविता ने विनम्रता के साथ कहा– कहा खो गये आप। कमाल है मेरी ओर कोई ध्यान ही नही। मैंने भी नही चाहा कि आपको कुछ कहू। सोचा, देखें कब तक आप इस मुद्रा म डूबे रहत है। सोचन जैसी क्या बात आ गयी थी मस्तिष्क मे। लगता है बडे परेशान से है।

उसे पवन की याद एकाएक आ गई और कहने लगा– जी परेशानियो का जिक्र क्या किया जाये। आज ये, कल वो, फिर परसो न जाने क्या-क्या। आज यहा दो दिन भी ढग से नही बीते कि जी करता है यहा से चल दू। सारी खुशिया न जाने कहा चली गयी कुछ मालूम नही। वैसे भी क्या कम तकलीफें रहती हैं। लोग जब मुझे हसते देखते हैं उन्हे लगता है कि मैं खुश हू सुखी हू। लेकिन आज तक किसी ने मेरे दिल को नहीं जानना चाहा– उसमे कितना दर्द है हजारो दुख अपने हृदय मे लिये फिरता हू जीवन के प्रति कितने घृणित विचार मस्तिष्क मे हैं।

देखिये इतने गंभीर न होइये। क्या मैं आपकी किसी भी समस्या का हल नही निकाल सकती जिससे आपको मानसिक शांति मिले। अभी साथ ही तो चले आये है। आप अच्छे मूड में थे। यकायक ऐसी क्या बात हो गई। क्यों मुझसे कोई गलती हो गई है क्या ?

नही गलती तुम्हारी नहीं मेरी ही है। कभी घर के समाचार नही जान पाया। जब भी पत्र लिखे मां ने लिखा - सब ठीक है। उसके प्रेम ने ही बिगाडा है।

किसकी बात करने लग गये है। किसने, किसको बिगाडा है ?

खैर छोडिये आपको कहकर मैं स्वय आपकी दृष्टि मे नीचा नही होना चाहता। मैं चलना चाहूंगा। मुझे कमलनयनजी से मिलना है।

क्या काम हो गया उनसे।

जी, ऐसे ही सिफारिश कराने का काम है। आप इतनी रुचि ले रही है जब इस बात मे तब मैं अलग नही समझता इसलिये कह देना चाहूंगा। मेरा छोटा भाई एक चोरी के जुर्म मे पकडा गया है। उसे हो सके तो छुडवा लू। मा का हृदय टूटता जा रहा है। कम उम्र है गलती कर बैठा। एक सप्ताह हो गया, पिताजी ने उसे छुडवाने का प्रयत्न नहीं किया। सोचता हूं कमलनयनजी अवश्य मेरी सहायता करेंगे।

बड़े दुख की बात है। आपको लखनऊ आये पहिला ही दिन निकला है। उनमे बडी परेशानियां देखनी पड रही है। मेरा दृढ विश्वास सा हो चला है, जो आदमी शुरू से ही दुखी रहता है, उसे अपने पूरे जीवन में दुख ही उठाने होते है। इसके साथ देखें तो उसका अंत भी दुख ही होता है। मुझे वैसे ऐसा कहना नही चाहिये था। लेकिन जो मैने कहा वह साधारणतः लोगों के जीवन मे होता है।

आपने ठीक कहा। खुशी क्या होती है मेरे को नही मालूम। आज भी मैं उसकी कल्पना से दूर हूं। जहा बैठा मैं केवल उसके बारे मे सोचता रहता हूं। कुछ क्षण मेरे जीवन मे ऐसे भी रहे है जिन्हे मैं सुखी मानता था। लेकिन जिसके भाग्य मे सुखी होने का सयोग न हो तो किया क्या जा सकता है। वे सुख के क्षण दुख मे बदल गये आज कोई पूछे कि वे क्या थे ? मुझे वे सब बाते कहानी सी दिखाई देती हैं। ऐसी कहानी जिसे मैं औरो को बताना नही चाहता। मैं नही चाहता कि लोग मेरी बुद्धि का मजाक उड़ायें।

आपके भाई का नाम पवन है ? सच कहे, मुझे कहते हुए दुख हो रहा है। यदि एक सप्ताह पहिले वाली चोरी जो पवन और उसके साथियो ने की थी, की ही बात है, तो वह चोरी हमारे घर पर हुई थी और उसे पकड लिया गया

था। यह बातें मैं आपसे कहना नही चाहती थी। आपने थोडी देर पहिले जब पवन का नाम बोला था, मैं समझ गयी। लेकिन कहना ही पडा। देखिये मैं पिताजी को फोन करती हू वे इस केस को आगे न बढाये। मैं जब आपको बाजार मे मिली थी तो कोतवाली से इसी के काम के लिये जाकर आ रही थी।

इन सब बातो से राजेश को लगा कि किसी ने उसके मुह पर करारा तमाचा मार दिया हो। बहुत दुख था कि सविता उसके लिये क्या सोचेगी, क्या प्रभाव पडेगा उस पर। उसे अपने पर ही गुस्सा आ रहा था कि उसने ये बात सविता के सामने रख दी।

अच्छा आज्ञा हो। क्षमा भी चाहता हू कि आपका समय लिया।

नही ऐसी क्या बात है। आप तो शर्मिन्दा कर रहे हैं। आप पिताजी से कहिये, सब ठीक हो जायेगा, चिन्ता जैसी कोई बात नही।

अच्छा, नमस्ते, चलूगा अभी।

१०

राजेश ऊपर बरामदे मे खाट डाले लेटा हुआ कोई उपन्यास पढ रहा है। मा रसोई मैं बैठी खाना बना रही है। पवन जेल से छोड दिया गया। उसमे अपने प्रति तीव्र आत्मग्लानि का भाव है। चुपचाप बैठा पत्रिका के पृष्ठो को उलट फेर रहा है। वैसे उसका मन इन सब चीजो से अलग हो गया है। उसे याद नही आता इससे पहले कब पुस्तक हाथ मे उठाई थी। पिताजी आफिस जाने की तैयारी मे लगे हुए हैं। उनकी आदत है सारा काम तेजी से करते है। देर हो जाने की आशका मे वे कभी राजेश को, कभी पवन को काम बताते जाते है। राजेश का ध्यान उपन्यास से हटकर कभी नम्रता, कभी नीरजा तक हो आता है। सविता के प्रति वह आभारी है क्योकि उसी के कहने से पवन को उसके पिता ने छुडवा दिया। एकाएक उसका ध्यान पास मे रहने वाली राजेश की बचपन की मित्र मीना की आवाज से टूटा।

नमस्ते, चाची।

नमस्ते बेटी। पवन आ गया है। राजेश छुटा लाया। इसके बाबूजी तो मना कर रहे थे। राजेश उधर बैठा है मिल ले।

पहिले ही मिल चुकी हू। उसे मिलना हो तो आये मेरे घर। मैं उससे नही, चाची तुम्हारे से मिलने आयी हू।

अच्छा चाची से मिलने आयी है। ऐसे कह रही है जैसे रोज आती हो।

नही, यह तो रोज आती रही है। लेकिन कहती कैसे है कि सिर्फ तेरे से ही मिलने आयी है। उस दिन घर आना नही हुआ। शाम को घूमने निकल गया था। कल पवन के चक्कर म सारा दिन खराब हो गया। आज शाम को देखो आना हुआ तो आऊंगा।

जब इच्छा हो आ जाना। जबरदस्ती तो है नही। क्यो ठीक है ना।

कौन ? सोमू चाचा। नीचे आया अभी एक मिनिट ।

पैर लागू चाचा। ठीक हो ना, आओ। इधर बैठो।

हां ठीक हू। बेटा और तुम्हारा क्या हाल है। पढाई पूरी करली ना।

हा, अब कही नौकरी की तलाश मे हू।

ऊंचे पढ लिखे लोग यो ही सडको पर घूमते हैं। दूसरी तरफ सरकार के पास रोजगार नही है। ऐसी शिक्षा से क्या फायदा है। सबसे बडी बात देश की शिक्षा का तरीका शुरू से ही गलत है।

चारो पचवर्षीय योजनायें इस काम को पूरा करने मे असफल सिद्ध हुई। इन योजनाओ मे जो उद्देश्य रखे गये बडी इमारतें बनायें, सडकें बनायी जायें, दूसरे देशो से आने वाले लोगो को दिखाने के लिये सारा काम आधुनिक तरीको से हो। जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि जितनी बेरोजगारी प्रथम पचवर्षीय योजना मे थी, दूसरी मे वह थोडी बडी और तीसरी मे एक बडे रूप म सामन आयी और अब सब चौपट। सारी योजनायें अव्यवस्थित, अपूर्ण और काल्पनिक रूप मे तैयार की जाती हैं। वास्तव में वे योजनाओ से ज्यादा अधिक कुछ बन नही पाती। देश के नेता कहते है— अनुमान किया जाता है इस सन् तक इतने देश खाद्य सामग्री मे आत्मनिर्भर हो जायेंगे। ऐसी हालत रही तो आज के नौजवान पढने वाले बच्चों का भविष्य न जाने क्या होगा।

चाचा, एक तरफ से शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। देश के बजट का अधिक पैसा शिक्षा पर खर्च हो रहा है दूसरी ओर छात्र शिक्षा लेकर बेकार घर बैठ जाते हैं। जब वे अपने अधिकारो की मांग करते है सरकार धारा एक सौ चवालीस, अश्रु गैस, लाठी चार्ज से उनके आन्दोलनो का दमन करती है। कई बार गोलियो से भून दिया जाता है। ऐसे कृतघ्न कार्य करते समय देश के राजनीतिज्ञ

हमारे सविधान को उठा कोने मे फेंक देते हैं। यदि नवयुवक अपने अधिकारो को शाति के साथ लेना चाहता है उन्हे प्राप्त करने के लिये प्रस्ताव रखना है, प्रार्थना करता है तो उसमे बुराई क्या है? एक ओर तो यह कहा जाता है कि देश मे जनतन्त्र है सबको अपने अधिकारों को प्राप्त करने का अधिकार है और दूसरी ओर जब अधिकारो को अधिकार के रूप मे नही प्रार्थना से प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है तो उनका दमन किया जाता है। इस स्थिति मे हमारे ही द्वारा निर्वाचित सदस्य लोग कहा दुबक कर बैठ जाते है? हमे एक हाथ से सवैधानिक अधिकार दिये जाते हैं, दूसरे हाथो उन्हें दमनचक्र से वापस ले लिया जाता है। ऐसा ही जनतत्र देश की नीव बन चुका है।

तुम नवयुवक ही देश के ढाचे को सुधार सकते हो। एक बात, इतने बडे देश का शासन चलाना कठिन काम है। उसमे जरूर कमजोरी रहेगी। इसलिये हरेक बात को कमी के रूप मे मान लेने पर काम नही चल सकता। देश के उत्थान मे सारे देशवासियो के भी कर्त्तव्य हैं। जानते ही हो कितने फीसदी लोग हैं जो देश के हित की बात सोचते हैं।

बेरोजगारी की समस्या के लिये नवयुवक क्या कर सकते हैं। कुछ भी तो नही। हमने पढाई की है माँ-बाप ने पैसा खर्च किया है तो क्यो इन सबके बदले हमे नौकरी भी न मिले, ये कहा का न्याय है?

वैसे भी शिक्षा नौकरी की जिम्मेवारी अपने पर नही लेती। शिक्षा का सबध नौकरी से अवश्य है लेकिन हरेक शिक्षित को नौकरी मिले जरूरी नही। हमारे गाव के बच्चे अपना खेती का काम छोड शहरो की ओर भागते हैं। फिर शिक्षित होकर नौकरी की माग करते हैं वे क्यो नही शिक्षित होकर अपनी खेती का काम करते। शिक्षित हो जाने पर तो अपना काम और भी अच्छी तरह से कर सकते है। इसी बात की कमी है देशवासियो की विचारधारा मे। तुमने देखा होगा कितनी बडी सख्या गावो की शहरों मे आ गई है। उन्हे पसन्द नही कि वे खेती करें। बाबूगीरी करके डेढ सौ रुपये मे अपने को बडा समझते है। अपने खेतो की मिट्टी जिसमे सोना पडा है उसे निकालने मे उन्हें शर्म आती है। इन सब बातो से देश की उन्नति नही हो सकती है।

चाचा, पानी ही कहा है खेती के लिये। इस स्थिति मे देश के किसानो को किस सीमा तक दोष दिया जा सकता है।

वर्षा की अनिश्चितता को रोकने के लिये सरकार ने बडे बाध बनाये। इन सब बातो पर सरकार ने पूरा ध्यान दिया है और दे रही है। सबसे बडी यदि कोई बात सामने है तो वह है कठिन मेहनत और सच्चाई की। इसे हो जाने के बाद

हम प्रत्येक क्षेत्र मे आत्मनिर्भर हो जायेंगे। हम क्यो निर्भर करते हैं सरकार पर। मेहनत हमें करनी है।

सोमू चाचा, मीना के बारे म कुछ सोचा है ?

सोचने से होना क्या है ? जब भगवान की इच्छा होगी, हो जायेगा। अब तुम यह जानते हो मेरी आमदनी है ही कितनी। मुश्किल से घर चलता है। मन तो करता है आज ही पीले हाथ कर दू उसके। पास मे कुछ जमा नही।

चाचा, जैसे तैसे हो अब तो शादी कर डालो।

कोई लडका मिल जाय। लेने देन को तो मेरे पास है ही क्या ? हमेशा इसी बात की चिन्ता मुझे खाय जाती है। इसकी मा हमेशा घावों को कुरेदती रहती है। इतना भी नही समझती कि शादी के लिय गाठ म कुछ पैसा होना चाहिये। क्या करें जो होना है होकर रहेगा।

चाचा नौकरी लग जान दो। भगवान ने चाहा तो सारा काम ठीक से हो जायेगा। चिंता न करो। चिंता जैसी कोई बात नही। अच्छा सा दूल्हा लेकर आऊ गा उसके लिये।

तुम्हारी बोली फले। तुम्हारे पिताजी से मिले बडे दिन हो गये।

पिताजी अभी गये हैं। उन्ह शायद देर हो गई। आओ, ऊपर चले।

बस ठीक है। ऊपर चलने की हिम्मत नही। मीना ऊपर है या नही ?

ऊपर ही है।

आपका लिफाफा। और क्या हालचाल हैं आपके। भैया बड साल बाद आये हो यहा। कभी कभार आकर सभाल लिया करो। बाबा से घर का काम इतना होता नही। पवन किसी काम का नही रहा।

ठीक कह रहे हो। अब यही रहूगा। मेरी पढाई का काम पूरा हो गया।

अच्छा नमस्ते।

नमस्ते भैया। अच्छा जा रहे हो चाचा, ठीक है। अरे, वाह देवदास का पत्र। जिन्दगी म पहली बार लिखा है, साले ने।

प्रिय राजेश,

पत्र पढकर तुम उदास हो जाओगे। मैं चाहता नही था कि तुम्हे कुछ बताऊ। लेकिन नियत्रण मे रहने मे असमर्थ हू। मुझ मे दोस्त के लिये प्यार है। दिल्ली से लौटते समय तुम लखनऊ ठहर गये थे। मैं आगे आ रहा था। अगल ही स्टेशन पर नीरजा के परिचित डिब्बे मे चढ़। उनसे काफी देर तक बातचीत होती

रही। उनको मैं जानता हू। तुम्हें याद होगा कॉलेज में जब थे तब हम चुनाव के सिलसिले मे नीरजा के घर गये थे और एक मजाकिये ढग क महाशय से परिचय हुआ था। इसी महीने की बाईस तारीख को नीरजा की शादी हो रही है। यह बात उन्होंने बताई। तुम्हारे और नीरजा के आपसी सबंध मैं जानता हू। और ये भी कि इन बातो से तुम्हे दुख होगा। अच्छा पत्र देना।

तुम्हारा
देवदास

पत्र पढ लेने के बाद पत्र की प्रत्येक पंक्ति, राजेश को कचोट रही थी। राजेश को लगा पागल हो जायेगा वह। सारा शरीर सुन्न हो गया। नीरजा के साथ रहे प्रणय सम्बंध का एक एक चित्र आखों के सामने घूमने लगा।

मीना की आवाज ने उसके विचार प्रवाह को तोड़ा–क्या कर रहे हैं बिना हिले, बिना बोले ?

कुछ नहीं।

कुछ नही ?

बस ऐसे ही एक दोस्त का पत्र पढते-पढते याद आ गई थी।

मैं पढ सकती हू इस पत्र को।

नही तेरे काम का नही है।

अरे पढेगा भी कौन ? किसी लडकी ने लिखा दिखता है। कौन है वो।

क्यो पीछे पड रही है किसी लडकी का नही है। पिताजी खाना खा गये ?

हां अपनी, चिन्ता करो।

अच्छा चल।

११

राजेश इस सड़क से कई बार निकला है। कविताओं के लिये प्रेरणा दूर तक दिखाई देने वाले हरे खेतों से प्राप्त की। कई गीत लिखे। ये हरे भरे खेत उसें बडे प्रिय लगते हैं। चुपचाप अकेला इधर निकल आया। खेतों की हरियाली, दूर तक मखमली दिखने वाले खेत, रहट से पानी पिलाता किसान। आज उस व्यर्थ लग

रहे थे। उनमें कोई प्रेरणास्पद बात नही लग रही थी। अपनी धुन मे, विचार मगन चला जा रहा है। रह रह कर देवदास के पत्र की पुनरावृत्ति उसके मस्तिष्क मे स्वत. हो रही है। उसके लिये विश्व की हर खुशी व्यर्थ लग रही थी। राजेश को जब भी नीरजा का ख्याल आता वह बहुत परेशान और विचलित हो उठता। यदि कोई दूसरा व्यक्ति उसके सामने नीरजा का एक बार नाम ले ले तो वह अपने को लम्बे समय तक या कह सकते है कई दिनो तक सतुलित नही रख पाता। उसके मस्तिष्क मे नीरजा का नाम पूर्णत: जम चुका है। किसी भी कीमत पर उसे नही भूल सकता। लोग कहते हैं– समय प्रत्येक दुख को भुला देता है। मनुष्य विधाता के हाथो मे एक खिलौने से ज्यादा नही है। जैसा ईश्वर चाहता है वैसा ही मनुष्य करता है। राजेश जब परेशानी अनुभव करता है तो वह अपने को घर की चार दीवारी मे नही रख पाता। उसे एक घुटन सी होने लगती है और वह सडकों पर निकल आता है। प्रकृति उसके दुख को बाट लेती है। प्रकृति अपनी पवित्रता, स्वच्छन्दता के वातावरण से मनुष्य के कष्टो को अपने मे ले लेती है। राजेश सडक के किनारे चला जा रहा है।

गाडी रोको। हलो, राजेश.... ।

कौन ? सविता जी।

कहा जा रहे थे। बडी शिकायत आपसे है यह कि इतने दिन हो गये घर नही आये।

ऐसे ही आना नही हुआ। यो ही घूमने निकल आया। मन नही लग रहा था। इस बार लखनऊ से बड़ी जल्दी दिल भर गया। यहा की जिन्दगी मे न जाने क्या उक्ताहट का सा भाव आ गया है, न घर अच्छा लगता हैं न बाहर। नौकरी के लिए अपनी ओर से मैंने पूरा प्रयास किया है। अभी कही से कोई जवाब नही आया। यदि मेरी कही बाहर नौकरी लग जाती है तो मै यहा से चला जाना चाहता हू। न जाने क्या हो गया है मुझको।

आपको कुछ भी नही हुआ है। बेकार ही परेशान होते है। आइये; अपने बगीचे जा रही थी। आज ऐसे ही घूमने का मूड हो गया। बैठिये।

आप ही जाओ मै क्या करूगा चलकर।

अरे साहब, बैठिये भी। चलो ड्राइवर। आप उस दिन के बाद नहीं आये। पिताजी भी मिलना चाहते थे।

रोज ही आ सकता हूं लेकिन जो कुछ भी मेरे छोटे भाई ने किया उससे मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। आप से जैसे-जैसे परिचय बढता जायेगा, हो सकता है आपके ऋण बढते ही जायेंगे और मैं जीवन में फिर उऋण नहीं हो पाऊंगा।

आप पर कोई कृपा तो नही की मैंने । फिर आपने तो कोई गलती की नही । इतनी सी बात के कारण घर नही आये । आपके किताबो वाले मित्र से भी पूछा था उसने भी मना कर दिया ।

उसने घर पर दो तीन बार आदमी भेजा था मैंने मना करवा दिया । सविताजी, सच तो यह है कि अब मेरा यहा दिल बिलकुल नहीं लगता ।

चलो यह भी अच्छा रहा मैं आपका घर नही जानती नहीं तो आप मना करवा देते ।

मुझे तो न यहा के शिष्ट समाज से कोई मतलब है और न ही अशिष्ट समाज से । समाज से मेरा क्या सबध है फिर लखनऊ मे चार वर्ष लगातार बाहर रहा अब न तो मेरा कोई मित्र समाज है और न कोई साहित्यिक समाज । मो उनकी सीमाओ से परे हू । मुझे शिष्ट बनकर क्या करना है ।

आपके छोटे भाई के कारण आपको दुख हुआ है । लेकिन इसमें इतना ज्यादा गभीर होने जैसी कोई बात नही । ये है अपना बगीचा । बडा भी बहुत है । मेरे दादाजी के समय का है । उन्हे बहुत शौक था बगीचे लगाने का । देखिये न कितने विभिन्न रगो के गुलाब हैं और बहुत से पेड हैं । कभी कभी इधर घूमने निकल आती हू । घूमने के साथ-साथ यहा का कार्य प्रबध भी देख लेती हू ।

अच्छा है । आइये बैठेंगे थोडी देर ।

एक बात बताइये । आप इतने गभीर क्यो दिखाई दे रहे है ।

पिताजी अगले महीने मे रिटायर हो रहे है । घर का सारा भार मुझ पर ही आ पडेगा । इन गये कई दिनो से कुछ लिख भी नही पाया । परेशानिया रहती हैं दिमाग मे । दो तीन पत्रो ने रचनायें मगवाई है । लेकिन लिख ही नही पाया हूँ ।

आपको प्रकाशक अगले महीने मे रुपया भेजेगा ।

हा । उसका पत्र आया था प्रकाशन शुरु हो गया है । अभी भी एक महीना लग जायेगा । उसके बाद पुस्तकें बाजार मे आयेगी । देखें कैसा बाजार पकडती है । सारी रायल्टी इस बार नहीं भेजेगा । कुछ रुपया ही भेज सकेगा ।

आपके भाई और आपमे बहुत अन्तर है । उसके अच्छे भविष्य के बारे मे शकित हू ।

ऐसी बात नही, ठीक हो सकता है ।

छोडिये इस बात को । इन दिनो मे आपने लिखना बन्द कर रखा है । बन्द नही होना चाहिये । फिर से शुरु कीजिये । क्या अन्तर पडता है उसम । मेरा तो विचार है आप स्वय ही कोई साहित्यिक पत्र प्रकाशित करें ।

पत्र का प्रकाशन भी हो सकता है। वह अच्छा भी चल सकता है। लेकिन उसके लिये रुपया कहा से आयगा। पत्र के लिये सबसे पहिले अपना प्रेस हो जिससे कि प्रकाशन महगा न पडे। दूसरे कई खर्चे होते हैं। ये काम बडी जिम्मेदारी और अनुभव का है।

आपमे क्या अनुभव नही है?

पत्र को चल निकलने के लिये एक समय चाहिये। वह समय कितना हो सकता है, उसके बारे मे कुछ नही कहा जा सकता है। हो सकता है एक वर्ष के अन्दर ही बडे पत्रो के स्तर पर आ जाए हो सकता है अधिक समय लगे। शुरू मे पत्र यही सोच कर चलाया जा सकता है कि हानि ही होगी। पत्र अच्छा शुरू हो जाये।

आइये, बाहर घूम आयें।

समझ गयी आपकी अब सिगरेट पीने की इच्छा हो रही है। मुझे ध्यान है आपने दरवाजे के पास की पान की दुकान देखी थी। आइये।

माचिस देना।

और भी सिगरेट ले लीजियेगा न।

आपसे मैने कहा था नही कि इन दिनो कुछ लिख तो रहा नही हू। जो कही से पैसा आ जाये। हाथ बडा तग चल रहा है घर से मागना अच्छा नही लगता। वैसे ही वे अपना काम चला लेते है। ये क्या कम है मुझ बेकार को बिठाये खाना खिला रहे हैं।

मैं दे देती हू पैसे। कौन सी पीते हैं आप।

धन्यवाद, अभी जरूरत नही है। कुछ दिनो से तो छोड रखी है क्योकि जब जेब इजाजत न दे तो क्या करें।

मुझे इससे बडी नफरत है लेकिन आपकी आदत है इसके बिना रह नही सकते हैं इसलिये मैं कुछ कहती नही आजकल तो सब पीते हैं।

आप कहो तो छोड सकता हू।

कितने भोलेपन से कह रहे हैं। अरे साहब, जब छोडेगे तो मालूम पड जायेगी कि छोडना कहते किसे हैं। ये कहने से थोडे ही छूट जाती है। पिताजी पीते हैं। हम घर वालो को पसन्द नही। उनको डाक्टर ने मना कर रखा है। फिर भी पीते है।

आज तो बडी दूर ले आयी शहर से। बगीचा बडा अच्छा है मेरा विचार है चला जाय। समय हो रहा है।

आपको उसने कोई भी उत्तर नही दिया ।

नही, उसने कहा - उसने मुझे कभी नही चाहा, कभी प्यार नही किया । उसकी इन बातो से मेरे पर जो प्रभाव पडा । उसस आज भी मैं सुख का अनुभव नही करता । तब मैंन गलती को महसूस किया । सोचने लगा हू दुनिया म प्यार रह ही नही गया है । हर ओर व्याप्त औपचारिकता से जी ऊब चुका है । इस प्रकार की बातो से विश्व के प्रति घृणा का भाव आ गया है । सारी इच्छाये बन गयी है स्वप्न, जिन्हे याद भर किया जा सकता है ।

दुख की बात अवश्य है । जीवन की सफलता का सबसे बडा गुण वास्तविकता है । आप भावुक अधिक है । जीवन म कल्पना भविष्य के प्रति हो सकती है वर्तमान के साथ नही ।

मुझे वास्तविकता और कल्पना मे कोई अन्तर दिखाई नही देता । चाहे कल्पना स्वप्न रहे लेकिन उस समय तक वह मेर लिये वास्तविकता से कम नही थी । इस प्रकार की गलतिया हो जाती हैं । यही सोच अपने को समझाने का प्रयास करता हूँ लेकिन उसे भूल नही पाता । जब भी किसी न उसका जिक्र किया है स्वय से घृणा सी होने लगती है ।

वह आपको चाहती थी प्रेम नही करती थी । इस तरह के एक पक्षीय प्रेम पर इतना दुख करना व्यर्थ है । मेरा विचार है उसे आप एक बेकार का स्वप्न मानकर भी छोड सकते हैं । जिससे आप अपने मे शाति का अनुभव कर सकें । बडी उम्र आपको बितानी है इस स्थिति मे इस प्रकार की व्यर्थ बातो और नाकाम भावनाओ को छोडना होगा । आप हमेशा अपने को पुस्तको की दुनिया मे डुबाय रखें आपको अवश्य ही सुख मिलेगा । यह तो शुरु से ही होता रहा है कि जब भी मनुष्य दुखी हो जाता है तो अपने को इससे थोडा दूर करके अपना सारा समय मनन, चिंतन मे लगाता है । आप भी अपने को इसी प्रकार रख सकते हैं । यह बात समझ नही आयी कि जब आपको वह चाहती ही नही थी तो आप उसे कैसे अपने पास समझ बैठे ।

मुझे पूरा विश्वास है कि उसने भी मुझे चाहा मैं इतना नासमझ नही कि किसी के हृदय की भावनाओ को न समझू । मैं यह भी सोचता हू कि हो सकता है वह अपनी घरेलू परिस्थितियो के कारण मजबूर रही हो । अनुभव करता हू तो लगता है मैंने अपना सारा सुख चैन खो दिया । रह रहकर अपने भविष्य के प्रति भयावह स्थिति सामने आ जाती है । डर सा जाता हूँ यदि जीवन मे यो ही चलता रहा तो क्या होगा, जीवन का ।

नीरजा को भी यदि आपसे प्रेम था तो मैं कहूगी कि उसने आपका साथ न देकर भूल की। उसने आपकी भावनाओ का आदर नही किया। उसे प्रारम्भ से ही जबसे आप उससे अधिक घुलने मिलने लगे थे, स्पष्ट कर देना था कि वह आपका साथ देने मे असमर्थ रहेगी। उस परिस्थिति मे उसका आपसे सबध बनाये रखना उचित नही कहा जा सकता। उसकी गलती है। उसने आपके जीवन मे जहर घोल दिया। जिससे आप उदास रहते हैं। लडकी के जीवन - निर्वाह के भिन्न उद्देश्य होते है। शायद उसने उचित न समझा हो कि वह आपका साथ दे क्योकि वह अपने जीवन को ऐसे मनुष्य के हाथो मे नही देना चाहती जिसका स्वय का भविष्य ही स्पष्ट न हो।

उस बात को मैंने इतना महत्वपूर्ण नहीं समझा। क्योंकि प्रेम अलग है उसका सबध धन से नही। इसी माह उसका विवाह हो रहा है। सविता, जब से मैंने यह बात सुनी है मेरा मन कहीं भी नहीं लग रहा। अपने को टूटा हुआ सा महसूस कर रहा हू। मेरे सारे विचार थोडी बहुत इच्छायें जड हो गयी हैं। अपने जीवन के छोटे से भाग मे मेरे सम्मुख कितने परिवर्तन आये। उन्हें देखकर विस्मय होता है। क्या जीवन का दूसरा नाम ही नयी परिस्थितिया और परिवर्तन है।

आपकी बातो से तो लगता है कि आप नीरजा को भुला नही सकते। क्यो ऐसी ही बात है ना?

नही ऐसी तो क्या बात है जो भुलायी नहीं जा सकती। लेकिन जितना इन बातो से दुखी हू न मालूम कब वह स्थिति आये। मुझे अब किसी से प्यार नही। अपने मे ही खुश हो जाता हू और अपने मे ही दुखी हो लेता हू। हृदय मे इच्छा नही रही कि कोई मुझे चाहे या मैं किसी के प्रेमपाश मे बधू। हमेशा जीवन के प्रति एक विरक्तता का भाव रहता है। अपने बहते आसुओ मे नीरजा का प्रतिबिम्ब देखता हूं। अपने आसुओ से भी प्रसन्नता का अनुभव होता है। सोचता हू - मेरा प्यार सच्चा था। चाहे मुझे उसमे कोई सफलता न मिली हो।

कैसी मजाक की बातें करते हैं आप भी। आपने अपना सब कुछ जिसके लिये त्याग दिया, बलिदान कर दिया और जो आपकी इच्छाओ का आदर नही कर सकी, जिसने आपके सच्चे प्रेम के प्रतिदान के रूप मे आपको दिया केवल दुख दर्द और जीवन से विरक्ति।

सविता तुम भूल जाती हो। तुम क्या नही जानती कि प्रेम प्रतिदान नहीं चाहता और न ही उसकी कामना करता है। मैंने उससे कोई आशा नही रखी।

तो फिर ठीक है। अपने को दुखी बनाये जाइये आपको कोई रोकता नहीं। उसकी पूजा करिये यदि ऐसे ही विचार हैं तो। बडी दार्शनिक सी बातें करते है। हसी भी आती है आपके विचारो पर। फिजूल ही सिद्धान्त की बातें करते हैं। ससार म कोई कार्य सिद्धान्त से चलाया नही जा सकता। आप यदि उचित समझें तो मैं कहती हू कि आप नीरजा से एक बार और मिल ले। हो सकता है आपकी बात मानले।

छोडो इन बेकार की बातो को। प्रेम, विश्वास, घृणा सब मेरे लिये कुछ भी मायने नही रखते। सब एक ही हैं। मरे लिये बडा आवश्यक है कि मैं जल्दी ही कोई नौकरी देख लू।

पिताजी को कहिये। वे कही न कही प्रबन्ध कर देंगे।

क्यो तुम नही कहती। तुम्हारे कहने का ज्यादा प्रभाव होगा।

आप तो बिलकुल भी नही समझते। पहिले आप कहे फिर मैं कह दू गी।

ठीक है।

इन दिनो कोई फिल्म देखी।

व्यस्तता के कारण देख नही पाया। विचार भी किया था। अकेले जाते अजीब सा लगता है। जब तक साथ मे एक दो मित्र न हो, कोई आनन्द नही है। जब दार्जिलिंग से लौटा, तब कलकत्ता मे एक पिक्चर 'द स्ट्रेंजर' देखी थी। अच्छी लगी। कामू के उपन्यास पर थी।

प्रशसा तो इस मूवी की मैंने भी बहुत सुनी है। पहिले मैंने अग्रेजी पिक्चर्स बहुत देखी हैं। शुरू शुरू मे जब कालेज मे थी तब देखती थी। लेकिन यह फिल्म तो आपके साथ ही देखेंगे। क्यो, चलेंगे न।

मैंने कहा ना कि मैंने फिल्म देखना बहुत कम कर दिया है। यदि कभी मूड हो जाये और कोई अच्छी फिल्म हो तो जरूर देख लेता हू। कोई कसम तो नही खाई है, कल सूचित कर दू गा। फिर कार्यक्रम बना लेना। देखो अभी बहुत समय हो रहा है, चलें।

१२

अपने विचारो मे खोया टहलता घर की गली मे मुडा। दिन के प्रकाश मे दुनिया के सारे कार्य होते हैं। जब रात्रि आती है सारी दुनिया के पाप, बुरे कृत्य अपने साथ ले आती है। रात ही ऐसी है जो मनुष्यो के काले कारनामो को अपने मे छिपा लेती है और आदमी बिना किसी डर के अपने कार्य मे लगा रहता है। राजेश के गली मे मुडते ही तेज कोलाहल की सी आवाजें, आपस मे गालियाँ देने की आवाजे साफ-साफ उसके कानो मे पड रही थी। उसमे उत्सुकता का भाव जाग्रत हो गया। उसने रफ्तार तेज कर दी। न जाने क्यो इतना कोलाहल गली मे हो गया। गरीब ही रहते है सारे के सारे। कभी-कभी आपस मे थोडी बहुत कहा सुनी तो हो जाती है लेकिन आज का वातावरण कुछ भिन्न था। तेज कदमो से अपने घर तक पहुंचना चाहता था, लेकिन सारे मोहल्ले के लोग उसी के पास इकट्ठे हो रहे थे। उसे कुछ समझ नहीं आया। उसने जानने के विचार से एक से पूछा– क्यो क्या बात हो गई ?

बडी लापरवाही से उत्तर दिया– भैया, पवन गुन्डे का कोई नयागुल है। उसने तो अपने घर की सारी इज्जत ताक मे ही रख दी है।

वह तेजी से बढ अपने मकान की सीढियों के पास खडा हो गया। राजेश को देखते ही सारे लोगो मे एक शाति का वातावरण छा गया लगता था कि उन्हें कोई साप सूघ गया हो।

सोमू ने राजेश से पूरे गुस्से मे कहा– राजेश बेटा, मैंने आज तक अपनी इज्जत रखी है। तेरे को हमेशा अपना बेटा माना है। मै जानता हूँ तू खराब नही। तेरा बाप खराब नही लेकिन तेरे भाई ने जो मेरी टोपी उछाली है उसका बदला लेकर ही रहूगा। क्या समझता है गुण्डा साला। मैं उसकी खाल खींच दूंगा नीच की।

सोमू चाचा, आखिर बात क्या है ? कुछ बोलो तो, मैं कुछ समझ भी पाऊं। इतना गुस्सा न होओ। क्या कर दिया पवन ने जो इतना गुस्सा करने लगे।

तू कहता है बात क्या हो गई। पूछ जाकर अपने भाई से जिसमे शर्म गरत नही है। उसने सारी गली में मेरी इज्जत खराब कर दी। तू गुस्से की बात करता है इतना तेज गुस्सा आ रहा है कि पवन को जान से मार डालूं।

चाचा, आखिर बात क्या है। जब तक कहोगे नही मैं क्या कह सकता हू कि गलती किसकी है?

गलती तो मेरी है जो मैंने तुम्हारे जैसे कमीने लोगो पर विश्वास किया।

चाचा तमीज से बात करो ठीक नही होगा। मैं आखिरी बार कहे देता हू जो भी बात है साफ-साफ कहो। जिसकी गलती होगी, वह सजा पायेगा।

मुझे क्या पूछता है अपने भाई से जाकर पूछ, तेरे बाप से जाकर पूछ। छोड मेरा गिरेबान, क्या समझता है। बूढे पर हाथ उठाता है। तेरे भाई ने मुझे कही का ना छोडा। मेरी बेटी मीना से चुपके चुपके प्यार जताता रहा, शादी के वायदे करता रहा। मुझे लोगो ने कभी कुछ कहा तो मैंने यह सोचकर कि साले बच्चे है मैंने इन्हे बच्चे समझ कर कोई ध्यान नही दिया। तुम्हारा विश्वास किया। इतना ही निभाना जानते हो तुम लोग।

चाचा, समझ गया आगे बोलो।

बोलू क्या मीना ने एक बच्चे को जन्म दिया है। कुआरी बेटी है किसको अपना मुंह दिखाऊ, किसके सामने झोली फैलाऊ। सब ओर से लोग ताने मारते हैं बुरा कहते हैं। मैं किसको अपनी सूरत जाकर बताऊ। हर कोई मुझ पर थूकता है। लोग तरह तरह की बाते कहते हैं। जैसा वे कहते हैं सच ही कहते हैं। मेरी सचमुच तब आंखें फूट गयी थी। मैं तुम पर तुम्हारे घर पर विश्वास करता था तुम सारे के सारे आस्तीन के सांप निकले।

चिन्ता मत करो चाचा ठीक हो जायेगा। जो हो गया उसमे न तो तुम ही कुछ कर सकते हो और न मैं ही। अब तो रास्ता यही है कि समझदारी से काम लिया जाये।

राजेश भैया, तुम्हारे भाई ने तो गली मे तुम्हारे बाप की गरदन झुका दी तुम्हारी इज्जत को मिट्टी मे मिला दिया। तुम्हारी पढाई लिखाई किस काम की, धूल है धूल।

राजेश बेटे, तुम्हारे को यहा से मकान खाली करना होगा। तुम जैसे बदमाशो के लिये यहा कोई जगह नही है।

देखो साहब, आपसे माफी मागता हू जो भी हुआ। क्या कर सकते हैं।

अब तो तुम माफी मागोगे ही। क्यो नही अपने बाप को सभाल कर रखने हो घर मे।

इधर आ, इधर आ इज्जत की औलाद।

मुझे मारता है। मोहल्ले वालो तुम्हारी बहू बेटियो की इज्जत लूटकर हमे ही मारता है। तुम्हारे मे हिम्मत नही ऐसे नीच आदमी को मारने की। मारो बदमाश को। कमीने को मारो, मुझे मारता है, चोरी और सीनाजोरी।

मारो, मारो बदमाश को।

मारो–मारो।

भाईयो मैं माफी चाहता हू छोड दो इसे, छोड दो। मैं अपने बच्चे की भीख मागता हू।

हटाओ इस खूसट को। मारो इसे हमे बदमाश कहता है नीच साला।

सोमू भैया, क्या कर रहे हो, क्या अनर्थ करवाकर ही मानोगे।

छोडो–छोडो, माफ कर दो।

सोमू भैया, तुमने काम अकल से नही लिया। आखिर तुम चाहते क्या हो। कुछ बोलो तब ही तो समझ आयेगी। जो हो गया सो क्या कर सकते हैं। उठ बेटे उठ।

सोमू चाचा। इतना ही प्यार था मेरे साथ। बडे दुख की बात है, तुमसे ऐसी उम्मीद नही थी।

मुझे कुछ नही चाहिये। पवन के साथ मीना का ब्याह करदो। मेरी इज्जत तो मिट्टी मे मिल ही गयी। अब ये ही चारा है। मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये। मेरे कौन से बाल बच्चे है। तुम क्यो नही समझते कि हमने सारी जिन्दगी इज्जत के साथ अपना नाम ऊचा रखते हए बितायी है अब मरते समय जो नाम हमारी बेटी ने हमारा किया यह सब कुछ सुनकर भी हम जिंदा है यह क्या कम है। हमे तो डूब मरना चाहिए। लेकिन तुम बच्चो का प्यार हमे रोक लेता है।

सोमू भैया, चिन्ता न करो। पवन तैयार हो जायेगा शादी के लिये। मैं उसे मना लूगा। भैया जो कर्मों के लेख हैं टलते नही। तुम्हारे सामने जिन्दगी बीती है, किससे बुराई ली है, किसके आगे झुके। लेकिन पवन के कारण दुनियां भर के आगे सिर नीचा करके चलना पडता है। बच्चे ही कह देते हैं, पवन का बाप जा रहा है। इतना सब कुछ सहते हैं, जीना पडता है। इस बात को ये बच्चे

कहाँ समझूँ। जमाना ऐसा आया है। तुम लोग जाओ भाइयो। पवन को मैंने ऊपर कमरे में बंद कर रखा है इसीलिये कि कहीं भाग न जाये।

भैया मेरी इज्जत तेरी इज्जत। तू ही मेरी लाज रखने वाला है। नहीं तो मैं तो किसी नदी तालाब में जा मरूंगा। क्या बिगाड़ा था मुझ गरीब ने तेरा। आज तक तूने किसी अमीर को नहीं सताया। उनके बड़े से बड़े पाप छिप जाते हैं। लोग भूल जाते हैं उन सबको। हम गरीबों की जिन्दगी और कहानी बिलकुल अलग है। थोड़ी सी गलती करते हैं बड़ी बनकर पूरी जिन्दगी के लिये, एक धब्बा बनकर रह जाती है। हमारी इज्जत बड़ी सस्ती है। अमीरों के पाप, काले कारनामे सब कुछ पुण्य हैं। भैया हम तुम क्या कर सकते हैं। हमारी इज्जत को ऊंचा उठाना या नीचे गिराकर धूल में मिला देना, दोनों बातें बच्चों के हाथों में हैं। मुझे पूरा याद है, जब बीस साल का था, तब उतनी अकल मेरे में नहीं थी जितनी आज का दस साल का लड़का रखता है। भैया समझ लो हम तो जैसे तैसे अपने दिन निकाल रहे हैं। बच्चे हैं हमारी सुनते नहीं।

मुझे तो कभी शक था ही नहीं। मुझे कल्लू पंडित ने दो एक बार कहा। मैंने उन्हें डांट दिया आइन्दा कुछ कहा तो जीभ निकाल लूंगा। तुमने देखा होगा आज ये लोग कैसे ताने मार रहे थे। मैं क्या कर सकता था, चुपचाप सुनता रहा।

सच्ची कहते हो भैया। जो भी हुआ अच्छा नहीं हुआ।

तुमसे जान पहिचान कोई आज की नहीं। तुम आकर मुझसे तरीके से बात करते पवन की और मीना की शादी की बात कर लेते।

भैया, हमें क्या सपना तो आ नहीं रहा। हमें कुछ भी मालूम होता तो अपने बेटे को समझाते, तुम्हारी बेटी को समझाते। तुम्हारी बेटी हमारी बेटी। लेकिन ये जो भी हुआ, बीच बाजार में हमारी पगड़ी उछाली गयी। शर्म से मर जाने को जी करता है।

राजेश, भीड़ ने तुम्हें मारा।

सोमू चाचा लोग जान से मार भी देते तो भी खुशी होती। हमसे जो गलती हुई है उसकी सजा तो मिली ही नहीं है अब तक। मुझे तो पवन की हरकतों पर गुस्सा आ रहा है। चार दिन नहीं हुए जेल से आया है और दुनिया भर के काम करता फिरता है। उसे किसी की इज्जत का कोई ध्यान नहीं। उसे नीचे लेकर आता हूं।

हां, हां लेकर आओ। उसे भी तो मालूम पड़े कि गलती करने की हमें क्या सजा मिल रही है। क्यों हमारी जान लेने पर तुला है।

पिताजी आ ... पर चिन्ता न करो। मैं इसे देख लूंगा।

क्या बकता है पवन। शर्म नही आती, बडे बूढे से ऐसे बात करते।

कौन है ... बडा बूढा। ये बद ... माश, सोमू का बच्चा।

पवन तुमने शराब पी रखी है। अरे नीच क्यो हमारी रही सही आत्मा को जलाता है। अब तक हमारे खानदान मे शराब किसी ने छुई तक नही। क्या हो गया है तेरे को।

पिताजी, ये सोमू कह ता है, मुझसे बदला ले . गा। क्यों बे-सा... सो . मू ?

पवन छोड सोमू को, शर्म नही आती बडे पर हाथ उठाते हुए। चला जा यहा से कोई जरूरत नही, तेरी इस घर को। मुझे तेरे जैसे भाई का नाम लेते भी शर्म आती है, सिर झुक जाता है।

राजू भैया, सोमू ने तुम्हे मारा क्यो ? मैं इ स .. को दिखा...दूंगा कि प.. व...न भी बद...ला लेना जान ..ता है।

चाचा तुम घर चले जाओ। यह होश मे नही है। इसने ज्यादा शराब पी ली है।

कौ .. न कहता. प ..व ..न होश मे न . ही। क्यो .बे सो.. मू। क्यो . बे। ले संभा...ल।

शर्म नही आती। थप्पड मारते। नीच कही के।

हट जा राजू, इसकी जान ले लूंगा।

छोड इसे।

रा...जू भै...या हटजा सा...म ने.. से।

मुझे भी शराब के नशे मे भूल गया। मेरे चाटा मारा। नीच। तेरे को छोटे-बडे का ध्यान नही। आज से तू मेरा भाई नही। चला जा यहा से फिर कभी मत आना यहा।

तुम हो...ते...कौ.. न...हो, मुझे नि ..का...ल...ने वाले। मेरा... घर है, मेरे बाप का घ र है। तुम निकल जाओ, जो तुमको नही र.. ह...ना है इस घर मे।

ठीक है मैं ही चला जाऊंगा। ऐसे घर मे रहना नही – जहा मेरी इज्जत न हो।

तुम ऊपर चले जाओ। ये अभी होश मे नहीं है।

कमीनी औलाद के मुह मत लगो। पवन का सत्यानाश हो। भाई पर हाथ उठाता है।

इस घर मे नही रहूगा। चार साल बाद घर आया। अच्छा था नही आता। क्या हाल हो गया है घर का। यहा आने पर लोगो ने मेरी इज्जत की मुझे मारकर।

करूं क्या ? इतना समझाया मानता ही नही।

घर से निकाल दो इसे। कमा कर खायेगा तो मालूम पडेगी। इतना बिगड जायेगा कभी सोचा न था।

तुम्ही सुधार सकते हो इसे।

मैं क्या सुधारू गा इसे। बात करना भी ठीक नहीं समझता उससे। कल ही वापिस जा रहा हू। इसने ये नही सोचा अगले महीने मे पिताजी रिटायर हो रहे हैं, घर की कोई चिन्ता नही। कुछ तो सोचना चाहिय। अब बच्चा तो है नही। रुपये-पैसो की चिन्ता मत करना। ये पवन सुधरता है तो घर मे रखना नही तो दो टूक जबाब देकर घर से निकाल देना।

नही, बेटा तुम बाहर कही न जाओ। दो रोटी के लायक तो नौकरी यहा भी मिल सकती है। पवन से क्या उम्मीद रखें। तेरे जाने के बाद हमारी क्या हालत होगी कभी बीमार पड जायें तो कौन पूछने वाला है ?

यहा जरूर कोई छोटी-मोटी नोकरी मिल जायेगी। जो मेरे खाने पीने के लिये भी कम रहेगी। आये दिन पवन के झगडे, बातें, सब मेरे भविष्य के लिये बहुत बडी बाधा ही रहेंगी। मैं बीच-बीच में आकर देख जाया करू गा चिन्ता जैसी कोई बात नही।

चिन्ता जैसी बात क्यो नही। तू खुद ही देखले इस समय कितने समय के बाद आया। आखिर हम भी तो यह सोचते हैं हमारे बेटे हमारे पास हैं, उनका सहारा है। मेरी तो यह राय नही कि तू बाहर जाये। आगे तेरे को रोकती नही। जिसमे तेरी खुशी हो, वह काम कर। हम यही चाहते हैं कि जहा भी रहे, खुश रहे और कभी समय मिले तो देख जाया कर।

राजेश की माँ का गला रुध गया और आँखें भर आई। माँ के हृदय के उच्च पवित्र, ममतामय विचारो ने राजेश के हृदय पर प्रभाव किया। उसकी आँखो मे आसू थे। दीपक की रोशनी मे राजेश माँ की आखो से बह रहे आसुओ की चमक को देख सकता था। उसने अपने आसुओ को माँ की दृष्टि बचाते पोछ लिया। राजेश के पिताजी ऊपर आ गये।

देखो नीचे बेसुध पडा है शर्म नही है बदमाश को।

चलो अब छोडिये भी। क्या कर सकते हैं आप भी।

सब कुछ तेरी माँ ने किया है। जब भी उसने गलती की मैं सजा देने को हुआ कि आगे खडी हो गयी। बडा प्यार आता था तब अपने बेटे पर। लो देख लो उसे बचाने का नतीजा। हमेशा इसे रोका कि जब पवन को समझा रहा होऊँ बीच मे नहीं बोला कर। अभी देखलो। कमरे मे बंद करके गया था न जाने कैसे बाहर निकल गया और शराब पीकर आकर गुण्डागर्दी करने लगा।

मैंने तो नहीं खोला दरवाजा। मुझे क्या मालूम, पिछले दरवाजे से निकल गया होगा।

राजेश की माँ तुमने ही बिगाडा है उसे। हमेशा उसका पक्ष लेती रही। ये भी देखना चाहिये था कि बच्चा गलती कर रहा है तो उसे रोका जाय। हम कोई पवन के दुश्मन थोडे ही थे जो उसे कुछ कहते थे। हमने जमाना देखा है। हाथो से निकल गया है वह। सारी जिन्दगी इज्जत से बिताथी आखिर मे आते पवन ने टोपी उछाल ही दी।

पिताजी, कल जा रहा हू। वही नौकरी मिल जायेगी। यहा थोडे से समय मे ही घबरा गया।

बेटे यहीं रहो कहा जाने की सोचते हो। ये भी ठीक ही कहता है, कौन रहना पसन्द करेगा ऐसे घर मे जहा शाति न हो। रात दिन दुनिया भर के झगडे। इसको देखो, एक उस बदमाश को कितना फर्क है। भाई है लेकिन कितना फर्क है। अच्छा बेटा जहा तू जाना चाहे जा।

पिताजी मैं जानता हूँ किस दिल से कह रहे हो। जानता हूँ आपके दिल पर क्या गुजर रही है लेकिन अब तक जो कुछ मैंने पढा लिखा, दुनिया के सामने हू, यहा रहने पर मैं उन्नति नही कर सकता। मेरे जीवन का जो उद्देश्य है वह यहा रहते पूरा नही होगा। यहा पर सौ रुपए की नौकरी मिल जायेगी और उसी मे अपनी जिन्दगी खपा दूगा।

आपको मेरे पर विश्वास नही है। हो सकता है पवन भी सुधरने लगे। लेकिन इसकी उम्मीद कम है। आप मेरे पर पूरा विश्वास रखें, कभी आपके नाम को आच नहीं आने दूंगा। जहा भी रहूगा इज्जत के साथ। आप पवन की शादी मीना से कर देना, अच्छा रहेगा। अब जो कुछ हो गया अच्छा है। पिताजी आप आराम करो।

राजेश का मस्तिष्क बहुत ज्यादा विचलित हो गया है। उसके मन मे रह रह कर पवन के, माता-पिता के भविष्य के बारे मे विचार उठते है। जीवन के दुखदायी रास्तो पर गुजरने मे राजेश डरता नहीं। उसको गरीबी का कभी विचार नही आया। लेकिन जहा पर इज्जत का प्रश्न आता है राजेश अपने को नियत्रित नही रख पाता। कभी दार्जिलिंग नम्रता के यहा जाने की सोचता है। उसे आशा है नम्रता के डैडी जरूर उसे अपने बागानो के काम मे कही न कही अवश्य लगा देगे। लेकिन जब अपने जीवन के उद्देश्य की ओर ध्यान जाता है तो वह हिचकिचा जाता है। सविता क्या सहायता कर सकती है। वह नम्रता के पास चला जाना ही ठीक समझता है। वह सोचता है नम्रता उसके लिये सहानुभूति की भावना रखती है। जरूर वह उसकी सहायता करेगी। विचारो का तीव्र तूफान उसके हृदय मे उठ रहा था। बहुत ज्यादा परेशान है। रात्रि का बहुत समय निकल चुका है। राजेश की आखें धीरे धीरे डूबती जा रही है नींद के सागर मे। उसकी आख लग गयी वह सो जाता है।

१३

नमस्ते।

नमस्ते। आपकी तारीफ।

जी—राजेश कहते हैं। कुछ जरूरी काम था मुझे सविता से।

अच्छा तो आपका नाम राजेश है। बैठो, बैठो। सविता आपकी तारीफ कर रही थी। एक दिन उसने कहा कि आप घर आने वाले हैं लेकिन उस दिन कुछ जरूरी काम से आना नहीं हुआ। तुम जैसे होनहार बच्चो से मिलने मे मुझे प्रसन्नता होती है। अभी दो चार दिन पहले ही सविता से तुम्हे बुलवाने को कहा था। चलो अच्छा हुआ तुम आ गये। तुमने शायद सविता से किसी नौकरी के लिये कहा था ना ?

जी हा, मुझे नौकरी की सख्त जरूरत है। मैं बिना नौकरी के कैसे अपना काम चला रहा हू मेरा दिल जानता है। माता पिता पर भार बना हुआ हू।

यह बात जरूर है कि अब तुम काम करने लायक हो गये हो। आज ही मेरी एक दोस्त से बात हुई। मैंने तुम्हारी नौकरी की बात की थी। वह तुम्हारा इन्तजाम कर देगा। पर बात यह है कि बाहर जाना पडेगा।

यहा नौकरी करना भी नही चाहता । मेरा यहा मन नही लगता । आपको तो मालूम ही है मेरे भाई के बारे मे । अपने दोस्त को कहदें कि ऐसा काम देखदें जिसमे मेरी रुचि हो ।

इसे कैसे कहा जा सकता है कि तुम्हारे शौक की नौकरी जुटाने मे वह सफल ही हो जाये हा थोडे समय उसके पास काम कर लेना । फिर जैसे तैसे अपना जमा लेना । वहा जाने पर ही मालूम होगा कि किस तरह की नौकरी मिल सकती है । इस समय ये मत सोचो कि नौकरी कहा है, क्या है । ये देखो कि नौकरी मिल तो रही है । मेरी राय है चिन्ता मत करो और बबई पहुच जाओ । पता दे दूंगा । तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी । अपने काम से काम करो । सविता को बडी चिन्ता थी । मुझ से छिपा रही थी । खैर कोई बात नही, खुशी से वहा अपना काम जमा लो जमकर पाच साल काम कर लोगे तो पैसे वाले बन जाओगे । अभी जोश है, उम्र है, मेहनत से काम करो ।

आपका आशीर्वाद होना चाहिये । एक सहारे और प्रोत्साहन की आवश्यकता है । मैं एक दो दिन मे ही चला जाना चाहूगा । आपने कुछ कहा है अपने मित्र को ।

नही एक इशारा कर दिया है कि मेरा आदमी बबई आयेगा । वह तुम्हें अपने मिल मे ही रख लेगा या फिर कही अच्छी जगह लगवा देगा । उसका अच्छा प्रभाव है उधर । आदमी बहुत भला है ।

आपकी बडी मेहरबानी है ।

मेरे पास उसके कागजात पडे हैं उन्हें भी ले जाना । मुझे अभी कहीं काम से जाना है सविता ऊपर ही होगी ।

उसने सविता के कमरे मे प्रवेश किया । सविता बैठी पत्रिका के पन्नो को बिना किसी इच्छा के उलट रही थी । उसका मन कुछ अशात सा लग रहा था । बार बार उसकी दृष्टि कमरे मे पडी चीजो पर चली जाती ।

सविता के पीछे खडे हो धीरे से कहा – नमस्ते सविता जी । सविता एकदम घबरा सी गयी । उसने पीछे मुडते हुए कहा – हलो, आओ, बैठो । कैसे हो ।

ठीक हू, आपकी दया है और तुम ।

क्यों तुम्हें क्या मतलब है इस बात से ।

क्यो । मतलब क्यो नहीं ?

क्या कह रहे थे पिताजी । मैंने उनसे तुम्हारी नौकरी के लिये कहा था । कह रहे थे श्यामनारायणजी से बात करेंगे । बबई मे रहते हैं । उनकी दो तीन मिल्स हैं वहा । श्यामनारायणजी पिताजी को किसी हालत मे मना नहीं करेंगे ।

क्या पढा जा रहा था – रीडर्स डाइजेस्ट ।

मुझे अच्छी लगती है । नई आते ही दो चार-दिन मे पढ डाल्ती हू । तुम्हे अच्छी लगती है मुझे नही ।

आपको अच्छी नही लगती । दुनिया तो शौक से पढती है ।

कालेज मे तो आपको खूब बनाया होगा, लडकियो ने । मजा आता है बेवकूफ बनान मे ।

बहुत मजा आता है । लडकिया कवितायें सुनाने को कहती रहती हम सुनाते रहते चाय पीते रहते । खुद ही बेवकूफ बनती थी ।

आप कविता सुना देते, वे आपको चाय पिला देती ।

अजी, जब चार बार कहती तो सुनाते । हमे क्या था ।

अच्छा, लीजिये चाय आ गयी ।

कितनी चीनी ।

जितनी भी पिला दो असर तो उतना ही करेगी । शक्कर का जहा तक सवाल है, नही भी डालो तो चलेगी ।

क्योंकि अपने हाथो से जो दे रही हू । कहिये-कहिये । भूल गये अपना पेटेंट सेन्टेन्स । कहिये क्या लेंगे । लीजिये ।

आपकी तो औपचारिकता बडी अच्छ लगती है । आप, आप कह कर बुलाना क्या मजा आता है इसमे कि ।

कहिये आगे क्या कह रही थी आप । आज तो बडी मजाक के मूड मे हैं ।

मूड मे हू आप आये थे तब तक सीरियस थी । आप आ गये खुशी हो रही है । मैंने जब पिताजी और आपको नीचे देखा तो डर ही गयी थी कि कही पिताजी ने श्यामनारायणजी से तो बात नही करली है और आपको कुछ बता तो नही रहे । एक बात बताओ । मान लो पिताजी उनसे बात करते हैं और वे आपको नौकरी देने को तैयार हो जाते है आप क्या करेंगे ।

ये भी पूछने की बात है । मै साफ मना कर दूगा । कहूँगा कि मैं नही करना चाहता । मैं चाहे भूखे मर जाऊ लेकिन नौकरी नही करूगा । क्यो ठीक है या नही । तुम कहोगी तो जाने की सोचूगा ।

सच तुम नही जाओगे।

तुम झूठ मान रही हो।

तो फिर मुझे क्यो कहा था कि नौकरी के लिये।

यो ही मूड आ गया होगा। कह दिया। कई बातें यो ही कह देते है तो इसका मतलब यह तो नही कि उन्हे माने ही। इच्छा होगी तो चले जायेंगे। नही तो आपके राज मे यही क्या बुरे हैं। पिताजी बात कर भी लेंगे तो कौन स श्यामनारायणजी मेरे बिना अपना काम रोके बैठे होंगे। नही जायेंगे तो कौन सी उनकी मिल्स बद हो जायेंगी। अच्छा एक बात बताओ। यदि आज तुम्हारे पिताजी वहा बात कर लेते हैं और वे तैयार हो जाते हैं। तुम कहोगी तो ही जाऊगा। चाहे मैं भूखा मर जाऊ। चाहे घर पर, माता पिता पर भार बनकर ही मुझे रहना पडे।

मैं तो ऐसा कह नही रही थी कि तुम भार बनकर रहो। मेरा तो इतना ही कहना है इतने दूर चले जाओगे। न जाने कब मिलना हो।

मान लो मुझे बाहर कही जाना पडे तो तुम्हारा क्या विचार हैं।

मेरा विचार क्या हो सकता है। मैं तो चाहती हू तुम्हारी उन्नति हो, खुश रहो। नौकरी तो कही भी हो सकती है। तुम्हें मना नही करू गी, वास्तविकता तो यही है कि जहा कही भी नौकरी मिले कर लेनी चाहिये। क्योकि आपको तो अपने साथ साथ अपने माता पिता का भी काम चलाना है।

फिर कहना चाहूगा तुम्हारे पिताजी ने श्यामनारायणजी से बात करली थी फोन पर सुबह। अभी मैं आया तो कह रहे थे। श्यामनारायणजी ने हा कर दी है। नौकरी दिलवा देंगे। देखो दो चार दिन मे जाऊ गा।

सविता की आखो मे आसू बह निकले, बोली – तो तुमने आते ही क्यो नहीं बताया कि जा रहे हो। मुझ से इतनी इतनी देर से छुपाये बैठे रहे।

बस यही सोचा कि एकाएक तुम्हे कहना ठीक नही रहेगा। तुम्हे दुख होगा।

आपको रोकना नही चाहती क्योकि इसके पीछे दो-तीन बातें है। सबस पहिली बात कि आपको नौकरी की आवश्यकता है। आपके लिये नौकरी जरूरी है दूसरी बात आपके परिवार वालो की स्थिति भी उतनी अच्छी नही है। आपको समय की स्वतत्रता की बडी आवश्यकता है जो यहा मिलना कठिन है। मेरी शुभ कामनायें।

सविता, क्या दू कुछ भी नही। मैं तो एक कर्ता के रूप मे हू। देखता हू अपने जीवन के उद्देश्यो को जहा लेकर चला हू तो किस सीमा तक सफलता प्राप्त करता हू। सविता, मैं वहा रहूगा तो भी तुम्हारी याद हमेशा रहेगी।

ये पांच सौ रुपये अपने पास रख लो। जरूरत होगी, रास्ते म।

नही इसकी कोई आवश्यकता नहीं। अपने पास रखलो। मुझ नही लेना।

उधार दे रही हू। हो तब दे देना। अब तो ठीक।

बेकार ही ये सब कुछ कर रही हो।

अब चलू गा। जाने से पहिले हो सका तो जरूर मिलकर जाऊ गा।

पत्र दिया करना। अच्छा नमस्ते स वि ता।

१४

राजेश ने गयी रात होटल मे कमरा लिया और सो गया। सुबह होटल के नौकर ने चाय के लिये जगाया। आज का दिन बबई महानगर मे पहिला दिन था। पूरे दो दिन दो रात लगातार रेल के सफर ने उसकी हड डी हडडी म दर्द भर दिया था। यदि नौकर ने नही जगाया होता तो वह जरूर ग्यारह बजे तक सोता रहता। उसे नौकर का बिना समय के जगा देना अच्छा नही लगा, लेकिन फिर ध्यान आया कि उसकी तो नौकरी यही है उसके लिये समय हो न हो नौकर तो अपने निर्धारित समय पर चला आता है अपने काम पर। उसने खडे हो महानगर की दूर तक दिखाई देने वाली ऊ ची इमारतो को खिडकी मे से देखा। मुश्किल से आठ बजे थे। उसने देखा सडको पर कारो की एक के पीछे एक लम्बी कतार रेंग रही थी। नौकर ने कमरे मे प्रवेश किया। राजेश ने पूछा क्यो तुम्हारी बबई मे गरीब लोग नही रहते।

साब इधर का लोग जितना गरीब है और किधर भी नही मिलेगा। अभी तो आप इधर बैठे हैं इस वास्ते ऐसा लगता नीचे उतरो देखो क्या हाल है इधर का।

सामने कितनी बडी बडी इमारते है। कितने करोड रुपया लगा है इनम।

साब, सच्ची बात कहेगा। इधर लोग मेहनत नही दिमाग का काम इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट चलता है। लाखो-करोडो का इधर उधर। हमारे जैसा करता है। पेटर दो रोटी भी पूरी नही कर पाता। हमारा नसीब ही खराब है।

ये ही नही और भी काम हैं। ब्लेक, सट्टा, रेसकोर्स इन सबसे लाखो लखपति भिखारी बन गए, हजारो लोग करोडपति बन गए। इधर का कुछ पता नही पडता रुपया किधर से आता, किधर जाता। आपको किधर जाना।

गरीब हू तुम्हारी तरह। नौकरी की तलाश मे आया हू। माटुंगा मे किंग सर्किल के पास सेठ श्यामनारायण रहते हैं, उनसे मिलना है कितनी दूर है यहा से।

माटुंगा थोडा दूर पडेगा। कोई बात नही टैक्सी कर लेना क्योकि अभी बसो का नबर नही मालूम होगा, तुम्हारे को।

होटल के बाहर निकल आया। टैक्सी वाले से पूछा— माटुंगा चलोगे।

जरूर, चलेंगे।

राजेश ने अपना ब्रीफकेस गाडी मे रखा और बैठ गया।

कहा रुकोगे।

किंग सर्किल पर रोक लेना।

ये ही किंग सर्कल है।

राजेश टैक्सी वाले को पैसे देकर आगे बढा और एक दुकान वाले से पूछा— आप बतायेंगे सेठ श्यामनारायणजी का मकान कौन सा है ?

श्यामनारायणजी, वो देखो सामने वाली बिल्डिग उन्ही की है। नीचे लिफ्ट लगी है ऊपर, अरे नन्दकिशोर कौन से माला पर हैं श्यामनारायणजी अन्दर से किसी की आवाज आई।

सेठजी छठे माला पर। सीधे हाथ वाला।

छठे माले पर सीधे हाथ वाले फ्लैट मे है।

धन्यवाद कहकर राजेश इसी के साथ आगे बढ गया। लिफ्ट पर खडे चपरासी से कहा— छठी मजिल पर श्यामनारायणजी से काम है।

अभी आये ही हैं।

चलो अच्छा है।

राजेश छठी मजिल पर पहुच गया। अधेड उम्र का आदमी बाहर की बालकनी के पास खडा शात ढग से सिगार पी रहा था। राजेश ने नमस्कार किया।

कहिये आपकी क्या सेवा कर सकता हू।

श्यामनारायणजी से मिलना चाहता हू। लखनऊ से आया हू।

अच्छा आपका नाम रा

जी हा, मैं ही राजेश हूं।

आओ, अन्दर बैठेंगे। कब पहुचे।

गयी रात पहुचा। फिलहाल होटल मे कमरा ले रखा है। बाद मे दूसरा प्रबन्ध कर लूगा।

तुम्हारे लिये तो कोई नयी पोस्ट भी बना सकता था। लेकिन तुम तो जानते हो मिल मे सारा टेक्नीकल वर्क है जिसको सीखने, समझने मे एक वर्ष लग जायेगा। रघुवर ने कहा था तुम्हें परिवार को भी चलाना है।

जी तो फिर मेरे लायक कोई नौकरी नही है आपके यहां।

वैसे तुम्हारे लिये प्रबध कर दिया है। मेरा एक दोस्त है मनीश। उसका प्रेस है दादर मे। वह एक अखबार भी निकालता है। रघुवर ने बताया था कि तुम्हे लिखने-विखने का शौक है। तुम्हारा लिटरेरी फील्ड है तो उसमे तुम एडजस्ट भी हो जाओगे। क्यो ठीक है ना।

मेरी इच्छा का काम मिल रहा है, खुशी है।

उसमे रहते हुए तुम अपनी उन्नति भी कर पाओगे। यहा मिल मे तुम्हे वैसे अकाउन्टेन्ट का काम मिल सकता है लेकिन तुम्हारा सब्जेक्ट वह नही। अभी तक कुछ छपवाया भी है या नही।

दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। दो मैं गये दिनो प्रकाशक को दे आया था। अगले दो एक महीने मे छप जायेंगी।

आज लोग ये देखते है कि तुम्हारी कितनी किताबें छपी हैं, किसने छापी हैं। आजकल जमाना प्रचार का है आप चाहे बहुत अच्छा लिखते है और आपका प्रचार नही है तो सब कुछ बेकार है।

साहित्य का आपका मूल्याकन भी आवश्यक है। यदि किसी लेखक, कवि का मूल्याकन नही होता, इसके मायने कि आपका सारा लेखन, साहित्य सेवा, पटरी पर बिकने वाले लेखको की किताबो के लेखको सा है।

बात याद आई परसो की ही बात है यहा कुछ लेखक आये थे। कहने लगे उनके एक दोस्त बंबई आ रहे है उनका स्वागत करवाना है। मैंने कहा तो मैं क्या कर सकता हू। लगे कहने कि पाच हजार तो उसी ने दिये है। मैंने कहा भई पाच हजार बहुत हैं। उनका जबाब बडा हैरान करने वाला था। आप कुछ भी नही समझते, वे पाच हजार तो हम मच पर स्वागत परिषद् की ओर से उन्ही को भेंट करेंगे। बाकी थोडा खर्च जो होगा वह आप से ले लेंगे। क्यो आ गया ना मजा।

लेखक, लेखक ही है यह कोई दवा की गोलियां, टूथपेस्ट या कोकाकोला तो नही जिसका प्रचार जरूरी हो।

देखिये यहीं भूल कर रहे हैं आप। यह सोचना चाहिये कि जो हो रहा है, अच्छा है।

काफी लीजिये।

आपने बड़ा कष्ट किया।

लीजिये। कहां तक पढे हैं।

एम॰ ए॰ पास किया है। आगे पी-एच डी॰ का इरादा है। लेकिन आप जानते ही हैं कि मेरे घर की परिस्थिति मुझे इजाजत नहीं देती। बडी इच्छा थी कि युनिवर्सिटी मे रहते हुए डाक्टरेट करता। लेकिन भाग्य मे ऐसा है नही।

जरूर करिये।

आपकी बडी मेहरबानी है। आपकी कृपा रही तो जल्दी ही कर लूंगा।

कोई सर्विस की हुई थी क्या ?

थोडा बहुत पत्र-पत्रिकाओ मे लिखता हू उससे जो आमदनी होती है। मेरे लिये काफी है कभी कभार कुछ पैसा अपने घर भेज देता हू।

लेकिन यह आमदनी निश्चित नही कही जा सकती।

हा यह तो है– फ्री लासिंग मे ऐसा ही होता है। अपने देश मे लेखकों की स्थिति बडी दयनीय है। कोई पूछता तक नही।

मैंने बताया ना कि प्रचार का समय है जिसने ज्यादा से ज्यादा प्रचार किया या पैसा देकर करवाया वह ऊ चा लेखक बन गया और जो प्रचार की जोड-तोड मे पीछे रह गया समझो उसकी लेखन कला टाय टाय फिस। अधिक कुछ नहीं। आप हस रहे है, मैं ठीक कह रहा हूं।

वैसे ही आज के लेखको पर हसी आ गई थी। कितनी अजीब परम्परा पड चुकी है, इसे अजीब नही सरासर गलत ही कहियेगा। इसके अलावा गुटबदी का भी बडा महत्व है पाच सात कवि लेखक मिलकर एक गुट तैयार करलें और फिर दूसरी ओर भी इसी तरह के गुटवदी मे विश्वास करने वाले लेखको का गुट हो, फिर क्या है दोनो गुटो के लेखको के हाथो मे लड्डू ही लड्डू, एक गुट के लेखक दूसरे गुट के लेखको, साहित्यकारो की पत्रो मे प्रशसा लिखेंगे। फिर दूसरे गुट वाले भी बडे जोशोखरोश के साथ अपने साथी गुट के लेखको की प्रशसा करके उन्हें आकाश पर बिठा देंगे। ये परम्परा पड चुकी है। इन गुटो से अलग होकर लेखक

गुजारा तक नहीं कर सकते। कहिये साहित्य भी स्टट हो चला है। यदि कवियों मे ठन जाये तो देखिए कैसे कैसे दाव पेचों से एक दूसरे को नीचा दिखाया जाता है।

आपकी बडी नालेज है। वैसे आपका क्षेत्र तो नही।

अभी बताया था ना। एक मित्र है जो अपने को किसी लेखक से कम नही मानता। उसका काम ही है लेखकों का स्वागत करवाना।

आपके दोस्त एडवरटाईजिंग मैनेजर हैं लेखकों के।

बिलकुल ऐसा ही है। देखो ग्यारह बज रहे हैं। एक जगह जाना है। आशा है बुरा नहीं मानेंगे।

जी नही, ऐसी कोई बात नहीं है।

मैंने मनीश को लेटर लिखा दिया है। उसके प्रेस पर ही पहुच जाना दादर मे। उससे मिलने के बाद आना इधर, फिर कवितायें सुनेंगे आपकी।

जी, अवश्य।

मुझे इजाजत हो फिर।

हा, आप चलिये।

१५

डाक्टर मनीश है, अन्दर ?

जी, हा। कौन...।

नमस्ते साहब।

नमस्ते, बैठिये, कहिये कैसे आना हुआ।

जी, ये पत्र।

अच्छा, श्यामनारायण ने भेजा है, आपको

जी हां

आपकी क्वालिफिकेशन।

मैंने एम. ए. हिन्दी मे ही किया है।

लेखक, लेखक ही हैं वह कोई दवा क

तो नही जिसका प्रचार जरूरी हो।

देखिये यही भूल कर रहे हैं आप। य
है, अच्छा है।

काफी लीजिये।

आपने बडा कष्ट किया।

लीजिये। कहा तक पढे हैं।

एम० ए० पास किया है। आगे पी-एच
जानते ही है कि मेरे घर की परिस्थिति मुझे
कि युनिवर्सिटी मे रहते हुए डाक्टरेट करता।

जरूर करिये।

आपकी बडी मेहरबानी हैं। आपकी

कोई सर्विस की हुई थी क्या ?

थोडा बहुत पत्र पत्रिकाओ मे लिखर
मेरे लिये काफी है कभी कमार कुछ पैसा अप

लेकिन यह आमदनी निश्चित नही

हा यह तो है— फ्री लासिंग मे ऐस
की स्थिति बडी दयनीय है। कोई पूछता त

मैंने बताया ना कि प्रचार का स
किया या पैसा देकर करवाया वह ऊचा ले
दौड मे पीछे रह गया समझो उसकी लेख
नही। आप हस रहे है, मैं ठीक कह रहा

वैसे ही आज के लेखको पर हसी
पड चुकी है, इसे अजीब नही सरासर गलत
का भी बडा महत्व है पाच सात कवि ले
फिर दूसरी ओर भी इसी तरह के गुटबदी
हो, फिर क्या है दोनो गुटो के लेखको के
दूसरे गुट के लेखको, साहित्यकारो की
वाले भी बडे जोशोखरोश के साथ अपने स
आकाश पर बिठा देंगे। ये परम्परा पड

अजी प्रेस को तो यो ही सूना छोड देना पडा। महीनो बडौदा में रहना पडा। क्या करते। मेरे गाइड अच्छे आदमी थे। इन दिनो अमेरिका गये हुए हैं।

आपको बडौदा युनिवर्सिटी कैसी लगी।

शिक्षा के क्षेत्र मे करना है तो बडोदा भारत मे अच्छी है।

अभी पांच साल तो क्या उम्मीद की जा सकती है ? अभी नौकरी की शुरूआत ही है।

अभी तो आप कुछ साल मेहनत से काम करके अपना क्षेत्र बनाओ जब आप जम से जायें फिर करिये। आपकी उम्र कुछ भी नही है।

आप कहा के रहने वाले हैं।

जी, लखनऊ का हू। वैसे खास लखनऊ का नही। पूर्वज वहा रहने लग गये थे।

आजकल के लगभग सारे उपन्यासो का आधार सेक्स ही रहता है। जनता को यही पसन्द है।

सेक्स पर नही लिखता। मेरा विचार केवल दिल बहलाने वाले या समय गुजारने वाले उपन्यास लिखने का नही।

मेरे विचार से तो सेक्स का टच होना बहुत जरूरी है आप देखते नही, सुरेश तनेजा के उपन्यास कितने चल रहे हैं। लगभग तीस उपन्यास उसने लिखे हैं। लोगो ने उसे पसन्द किया है। प्रकाशको को बना दिया,जिस प्रकाशक ने उसके उपन्यास को छापा, लखपति बन गया। उसके उपन्यास पूरे भारत मे धडल्ले से बिकते हैं। आपने पढा होगा उसके उपन्यासो को। आप भी ऐसा लिखे, तो चमक जायेंगे।

मैं उसे कूडा-कचरा मानता हू क्योकि उनमे स्थायित्व नहीं है। एक बार पढा और उठा कर फेंक दिया। मु शी प्रेमचन्द, शरत को पढ़ा होगा। उनके उपन्यास चाहे कितनी ही वार पढे हमेशा आनन्द देते हैं। उनसे जी ऊबता नही।

आप सुरेश की लोकप्रियता तो देखिये।

वह केवल टीन ऐजर्स के लिये ठीक है। इस उम्र में सेक्स के प्रति एक उत्साह, जिज्ञासा की भावना रहती ही है और उनके मस्तिष्क में कई लुके छिपे प्रणय के स्वप्न रहते हैं और वे अपने को इन उपन्यासो से साम्य मानकर इन्हे पढते हैं। उनके लिये ठीक ही है। आप जैसे जो इस दौर से गुजर चुके हैं। मैं नही समझता कि वे इस प्रकार के साहित्य को अच्छा मानेंगे।

यही बात तो आपके सामने रखने वाला था कि उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया जाये। उसमे भी ऐसी रुचिकर बातो का समावेश किया जाये जिसे

हिन्दी मे करने के बजाय आप किसी और सब्जेक्ट में करते तो अच्छा होता। हिन्दी की उतनी डिमाण्ड नहीं है।

जी, शुरू से ही हिन्दी के प्रति बडा लगाव था। धीरे धीरे साहित्यिक क्षेत्र म भी रुचि बढने लगी। बाद में हिन्दी मे ही कर लिया। मेरा तो यह ख्याल है कि जिसम रुचि हो उसी मे एम ए करना चाहिये।

यह तो ठीक है लेकिन आपको अपना शौक ही तो पूरा नही करना है। नौकरी करके अपना काम भी चलाना है। इस दृष्टिकोण से मैंने कहा। वैसे हमार यहा बबई मे तो हिन्दी वालो की कमी सी महसूस की जाती है।

क्या प्रकाशित हो रहा है इन दिनो।

इन दिनो तो मेरा एक उपन्यास आने वाला है। आपके पत्रों मे काम करके मुझे प्रसन्नता होगी। मैं समझता हू कि मेरी रुचि का काम मुझे मिलने वाला है। अपनी पूरी शक्ति के साथ आपक पत्र मे काम करूगा।

मुझे आशा है आप मेहनत से पत्र को और सुन्दर बनाने का प्रयास करेंगे। हमे तो आप जैसे उत्साही नवयुवको की जरूरत है जो ढग से अच्छा काम कर सकें। मेरे पास जो एडीटर्स हैं वे भी काफी क्वालिफाइड हैं।

मेरी पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी अच्छी नही है। इसलिये नौकरी के बिना गुजारा नही चलाया जा सकता। आपका पत्र कैसा है। मेरा मतलब मासिक है या साप्ताहिक।

साप्ताहिक ही निकालते हैं। वैसे तो इसमे सब क्षेत्रासे सबधित मैटर होता है लेकिन विशेषकर है साहित्यिक ही। अब तो आप आ गये हैं तो इसको और भी साहित्यिक बनाया जा सकेगा। आपने क्या पहिले किसी पत्र का सम्पादन किया है?

नही ऐसा कभी मौका मिला नही। वैसे कालेज मे छपने वाली मैगजिन्स जरूर देखता था।

मैगजिन्स की बात अलग है अपने इन बडे पत्रो की बात अलहदा है। मैंने इसी वर्ष डाक्टरेट लिया है बडौदा से। गये साल थीसिस पूरा हो गया था। थोडा सा बाकी होने के कारण सबमिट नही कर पाया। नही तो गये साल ही डाक्टरेट मिल जाती।

डाक्टरेट मैं भी करना चाहता था। लेकिन आपसे बताया ना कि मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण इच्छा रह गयी। आपकी शिक्षा से बडी रुचि है। इतने बडे प्रेस को सभालते हुए आपने इतना कर लिया। कठिन कार्य है। बहुत समय देना पडता है।

अजी प्रेस को तो यो ही सूना छोड देना पडा। महीनों बडौदा में रहना पडा। क्या करते। मेरे गाइड अच्छे आदमी थे। इन दिनो अमेरिका गये हुए हैं।

आपको बडौदा युनिवर्सिटी कैसी लगी।

शिक्षा के क्षेत्र मे करना है तो बडौदा भारत मे अच्छी है।

अभी पाँच साल तो क्या उम्मीद की जा सकती है? अभी नौकरी की शुरुआत ही है।

अभी तो आप कुछ साल मेहनत से काम करके अपना क्षेत्र बनाओ जब आप जम से जायें फिर करिये। आपकी उम्र कुछ भी नही है।

आप कहा के रहने वाले हैं।

जी, लखनऊ का हू। वैसे खास लखनऊ का नही। पूर्वज वहा रहने लग गये थे।

आजकल के लगभग सारे उपन्यासो का आधार सेक्स ही रहता है। जनता को यही पसन्द है।

सेक्स पर नहीं लिखता। मेरा विचार केवल दिल बहलाने वाले या समय गुजारने वाले उपन्यास लिखने का नही।

मेरे विचार से तो सेक्स का टच होना बहुत जरूरी है आप देखते नहीं सुरेश तनेजा के उपन्यास कितने चल रहे हैं। लगभग तीस उपन्यास उसने लिखे हैं। लोगो ने उसे पसन्द किया है। प्रकाशको को बना दिया,जिस प्रकाशक न उसके उपन्यास को छापा, लखपति बन गया। उसके उपन्यास पूरे भारत में धडल्ले से बिकते हैं। आपने पढा होगा उसके उपन्यासो को। आप भी ऐसा लिखें, तो चमक जायेंगे।

मैं उसे कूडा-कचरा मानता हू क्योकि उनमे स्थायित्व नहीं है। एक बार पढा और उठा कर फेंक दिया। मुशी प्रेमचन्द शरत को पढा होगा। उनके उपन्यास चाहे कितनी ही बार पढे हमेशा आनन्द देते है। उनसे जी ऊबता नही।

आप सुरेश की लोकप्रियता तो देखिये।

वह केवल टीन ऐजर्स के लिये ठीक है। इस उम्र मे सेक्स के प्रति एक उत्साह, जिज्ञासा की भावना रहती ही है और उनके मस्तिष्क मे कई लुके छिपे प्रणय के स्वप्न रहते हैं और वे अपने को इन उपन्यासो से साम्य मानकर इन्हें पढते हैं। उनके लिये ठीक ही है। आप जैसे जो इस दौर से गुजर चुके हैं। मैं नही समझता कि वे इस प्रकार के साहित्य को अच्छा मानेंगे।

यही बात तो आपके सामने रखने वाला था कि उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया जाये। उसमे भी ऐसी रुचिकर बातो का समावेश किया जाये जिसे

युवक समाज चाहे, प्रशंसा करे। मैं नही कहता युवक समाज तनेजा के साहित्य को पढे। मेरा मतलब यह था कि इस उम्र मे बच्चे रुचिकर साहित्य के अभाव मे जरूर सुरेश तनेजा को पढे गे क्योकि उसके स्थान पर कोई नये ढग से मोड देकर अच्छा लिखने वाला है नही। आप सब बातो के अलावा ये मानते ही हैं कि इस उम्र मे जो पाठक की एक आन्तरिक इच्छा है जिज्ञासा है वह इसी साहित्य मे वे पाते हैं लेकिन उसे अच्छे ढग मे तो प्रस्तुत किया ही जा सकता है। आप प्रकाशको की स्थिति पर भी ध्यान दीजिये। कितना पैसा लगाना होता है उन्हे।

इससे भी मैं एक सीमा तक ही सहमत हू। प्रकाशक पैसा लगाता है कमाने के लिये। उसका तो, डाक्टर साहब, केवल पैसा ही तो है बाकी सब कुछ तो लेखको का है। वे तो अपना पैसा लगा देते हैं जितना पैसा लगा देते हैं उसके अनुपात मे अच्छा कमा ही लेते हैं। शोषण तो लेखक का ही होता है जो मेहनत से लिखकर देता है उसको उसकी मेहनत का जो हिस्सा मिल पाता है वह नाम मात्र भी नही होता। प्रेमचन्दजी के उपन्यासो को छाप छापकर प्रकाशक लखपति बन गये लेकिन प्रेमचन्द वही के वही रहे। उन्हे उनकी मेहनत का क्या मिला कुछ नही। मैं तो साहब यह जानता हू कि कोई भी प्रकाशक कभी खतरा नही लेता। प्रकाशन के पहिले हजार बार सोचता है फिर छापता है। आप देख लीजिये न, यदि प्रकाशन करने से उन्हे हानि होती है तो ये इतने बडे-बडे सेठ कैसे बन गये। उनके पास कैसे कारें हैं, बडी बडी इमारतें हैं।

इस बात मे दो राय नही, भारत मे लेखको की स्थिति खराब है। लेखक तो प्रकाशक के हाथो मे खिलौना है। बाहर के दूसरे देशो मे तो लेखको को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिलता है उसे कर्णधार के रूप मे मानते है। महान लेखको का जो अत हमारे देश मे होता है वह कितना दुखदायी है। निरालाजी का अत, उधर मुक्तिबोध का जो हाल रहा वह भी आपसे छिपा नही। तारीफ की बात ये कि सरकार कुछ करती ही नही है या करती है तो लेखक की मौत के बाद। उसके मरने पर सरकार का ध्यान जाता है कि किसी लेखक ने बीमारी, भूख के कारण दम तोडा। फिर उसे पद्मभूषण, पद्मश्री की उपाधियो से अलकृत करके ज्यादा से ज्यादा किसी चौराहे पर उसकी मूर्ति खडी कर दी जाती है। इसको दूर करने का कोई तरीका नही है। आपका काफी समय लिया, क्षमा कीजियेगा।

ऐसी कोई बात नही है। सेक्स और हल्के साहित्य की तो मैं यो ही कह रहा था। देखना चाहता था कि आपकी क्या रुचि है और उसमे कितनी दृढता है। सुरेश तनेजा को दस साल बाद सब भूल जायेंगे। हा, तो कल से मि० रवीन्द्र जो कहानी विभाग मे हैं उनके साथ मे काम मे लग जाओ।

मकान कहा लिया है, अभी सात सौ रुपया दे पायेंगे हम।

अब दो चार दिन मे ही दूसरा मकान देख लूंगा। आपकी बहुत मेहरबानी। अच्छा डाकटर साहब।

ठीक है, नमस्ते।

१६

शाम से तेज बरसात होती रही है। वातावरण मे केवल तडतड-तड का स्वर ध्वनित हो रहा है। सारा यातायात ठप्प हो गया। सडको पर कही इक्के-दुक्के आदमी दिखायी पड जाते हैं। अपने सिर पर खाली टोकरिया उठाये बडे ही बोझिल पैरो से चले जा रहे है। दिन भर के काम से उत्पन्न आलस्य, थकान का प्रभाव उन पर स्पष्ट देखा जा सकता है। सडक के दोनो किनारो पर टैक्सियो की लम्बी कतार खडी है। उनमे बैठे ड्राइवर लोग सुस्त लग रहे है। शाम का समय ही ऐसा होता है जब वे कुछ कमा लेते है। लेकिन वर्षा बहुत देर से बरस रही हैं।

उसे भी होटल के नौकर के साथ मकान देखने जाना है। होटल का नौकर वही नीचे बैठा दिन भर की थकान के कारण नीद ले रहा है। बरसात कुछ धीमी पडी। रात्रि के साढे नौ बज रहे है। बरसात से बचने के लिये दुकानो के शेड, बस स्टेन्ड के शेड्स मे जो खडे थे वे लोग बरसात के कम हो जाने से बाहर निकल आये और अपने अपने रास्तो की ओर चल दिये।

राजेश भी चलने को तत्पर हो गया। उसने नौकर को जगाते हुए कहा- अरे भई चलो उठो कितनी देर हो गई।

ऐसा ही है इधर का हाल। बरसात तेज होती है, आओ चलें। ज्यादा दूर नहीं है। सामने पुल से नीचे उतर, थोडी दूर चलकर ही बस्ती है। अपने को मुश्किल से आधा घण्टा लगेगा, उधर पहुचने में।

सामान नाम को केवल एक अटेची, तकिया और दो चद्दर। उसने सामान उठाने को हाथ बढाया था कि कुली बोल उठा – हम किस मर्ज की दवा हैं बाबूजी। चिन्ता मत करो, हम उठा लेगा। आप तो ध्यान से नीचे उतर कर चलो। गटर का ध्यान रखना। आजकल तो बाबूजी खराब हालत है। बहुत जगह गटर का ढक्कन ही नहीं है। ध्यान नही रहा कि अन्दर। इधर होके चलो।

चुपचाप उसकी बातों को सुनता चलता रहा। भावी जीवन के बारे में विचार आ रहे थे। उसने निश्चय कर लिया कि गरीब लोगों की बस्ती मे रहेगा और उनके प्यार मे अपने को प्रसन्न रखेगा।

आप जैसा बडा आदमी उधर चाल मे कैसा रह सकता है ? उधर के लोगो मे पढाई नाम की कोई चीज नही है। हम तो सोचता उधर घबरा जायेगा।

नही, घबराने की कोई बात नही। मैं उसी जगह रहना चाहता हू। मुझे बडी बडी इमारतो मे कैद हो जाना पसन्द नही।

आप सोचता ऊचा है। आपका पगार कितना है।

नौकरी लग गई। रोज दादर जाना पडेगा। तुम्हारे को होटल वाला कितनी नौकरी देता है।

नही पूछो अच्छा होयेगा। कुल मिलाकर तीन सौ रुपल्ली। खुद सोचो हमारा भी दो-चार बच्चे हैं, मा है, बहिन है। कैसे गुजारा करते हैं। पैसा-पैसा हमारे वास्ते भगवान है हमारा बहन, घरवाली दोनो पास पडौस के लोगो का सिलाई करती है उससे थोडा पैसा मिलता है। अपना छोटा लडका है खार मे होटल पर काम करता है उसको भी दो रुपया रोज मिलता है। रात को एक दो बजे आता है। बहिन अभी कुआरी बैठी है। सादी करे तो कैसे, पास मे पैसा भी नही बचता। हम गरीब हैं। सादी मे लेओ-देओ नही तो क्या होता। चार नातेदार आने वाले को रोटी तो खिलाना पड़ेगा। हमारी मा बहुत बूढी हो गयी है। उसका पता नही कभी सास निकल जाये। उसको जलाने के वास्ते लकडी का पैसा भी नही हमारे पास।

अपनी इस बात को कहते कहते होटल का नौकर तेजी से रो पडा। उसका रोना तेज सिसकियो मे बदल गया।

अपनी बात जारी रखते हुए बोला— बाबूजी हमारी मा रोज हमारी जान खाती है बहिन का सादी करो। हम कमाता कितना, उसको क्या पता। बडा परेशान है हम। हमारा जिन्दगी हमारे वास्ते हराम हो गया है।

राजेश के हृदय मे गरीब लोगो के प्रति गहरी सहानुभूति का भाव प्रसव ले रहा था। उसमे देश मे व्याप्त गरीब और अमीर लोगो के बीच की गहरी खाई के प्रति एक जबरदस्त विरोध था, आक्रोश था।

इधर, उतर आओ बाऊजी। इधर का चाल मे तुम्हें कमरा मिल जायेगा।

कुछ सीढियाँ उतरकर एक होटल के पास रुक गये। जो नाले के साथ लगी हुई थी। एक छोटी लालटेन जल रही थी और एक नौजवान लडका चाय बनाने मे व्यस्त था। उसके चेहरे पर मस्ती का भाव था। ूं दिनभर की

थकान के बाद भी उत्साह था। वह अपने दोस्त से कह रहा था— अरे यार, शाम को रामू मेहतर की छोकरी इधर आई थी। हमने उसको चाय दिया तो बड़ा नखरा करने लगी। हमने कहा पी लो। यार, बड़ी फरवट है। देखता रह गया उसको।

तुम्हारे को तो हमने पहिले ही बताया। कोई प्यार-व्यार की चकल्लस तो नहीं।

यार चाय पीकर बड़ी अदा के साथ आने लगी। उसे रोका, कल आने का कह गयी है।

होटल के बाहर बैठे लोग चाय का आनन्द ले रहे हैं। छिपाते हुए से एक ने बोतल निकाली और अपने दोस्तों के कपों मे उडेल खुद बोतल से पीने लगा।

हम लोगों को खड़ा देखकर उनमें से एक ने फुसफुसाते हुए कहा— कोण आले आहे, पहा। समझ गया बैठे लोग मराठी थे। लेकिन जो उसने कहा मैं नहीं समझ पाया।

फिर किसी ने पूछा— तुम्हाला काय पहिजे।

होटल के बेअरे ने कहा— माफ करामी तुमच्चा कामांत व्यत्यय आणलो।

किसी ने कहा— नाही, नाहीं।

इठ कुठघर खाली आहे का? याना पाहिजे।

हां थोड्या दूरी वरव एक घर खाली आहे आनी मांड स्वस्त भी आहो बरंबरं भी याहना चेहन जातो।

चलो, उधर मिल जायेगा।

उसने बात की और साथ हो लिया।

उसका विचार था कि नौकर ने उन लोगों से मंहगा मकान दिलवाने को कहा है और उसमें से कुछ पैसा बचा लेना चाहता है। फिर उसे उसकी गरीबी और ईमानदारी का ख्याल आ गया। राजेश ने देखा उन लोगों के पैरों में बहुत मैल जमा हुआ था और शरीर पर भी पूरे कपड़े नहीं थे।

नौकर ने कहा— बाऊजी, उधर आखिर में मिलेगा। नयी बस्ती बनी है। उधर सस्ता भी पड़ जायेगा। इधर तो सारा लोग बीस-बीस सालों से रह रहा है।

जहां भी मिल जाये।

कुछ कीचड़ आने लगा था। आगे कीचड़ बढ़ता गया। राजेश के जूते कीचड़ में पूरे सन चुके थे। उसके हृदय मे एक अजीब सा प्रश्न घूम रहा था।

इस समय उसे अपनी लखनऊ वाली गली याद आयी जहां बरसात मे ऐसा ही दृश्य उपस्थित हो जाता था। पूरी गली को साफ करने मे एक डेढ सप्ताह लग जाया करता था।

एक छोटा पुल पार करके वे दोनों पुल के नीचे की ओर उतरने लगे। दो नालियां पार करके वे एक छोटे से मकान के पास पहुचे। नौकर वहीं रुक गया।

मकान के अन्दर से आवाज आई— कौन है? कहते हुए एक बूढा आदमी बाहर आया।

उसे देखकर नौकर ने कहा— बाबा, इधर कोई छोटा-मोटा कमरा खाली है क्या? बाऊजी को जरूरत है।

उसने कहा— साथ वाला कमरा है। इसका मालिक कल आयेगा। बात कर लेना। मकान अच्छा है इस बस्ती मे और कहीं नही मिलेगा, इससे अच्छा। सत्तर रुपल्ली लगेगा।

ज्यादा है। कम नहीं होगा।

भैया, धेला भी कम नही लेगा। जरूरतमदों को मालूम नही कि मकान खाली है नही तो कब का ही उठ गया होता। हमारा पडोसी जग्गुआ लेने को कह रहा था पता नहीं क्या विचार किया उसने। चाहिये तो कल ले लेना, नही तो हाथ से निकल जायेगा।

बाऊजी फिलहाल तो यही ले लो फिर दूसरा तपास कर लेना। ये ज्यादा महगा नही है। बस्ती भी ज्यादा खराव नहीं।

उसने मुडते हुए बुढ्ढे से कहा— बाऊजी को पसन्द है तुम्हारे पास इसकी कुंजी होयेगा?

हमारे पास है। आज से लेना है रुपया निकालो, चाबी लाता है और ध्यान से देखलो। पीछे पैसा मागोगे, नही मिलेगा।

उसने जेब से नोट निकालकर बूढे को दस दस के नोट थमा दिये। बुड्ढा अन्दर से चाबी ले आया। और राजेश को पीछे आने की कहकर कमरे की ओर बढा और कमरे का दरवाजा खोल दिया।

कमरे मे रोशनी तो है नहीं। माचिस जलाकर देखलो कोई बिच्छू कांटा नही होय। करा पास की दुकान से लालटेन खरीद लेना अपने इधर ही मिल जायेगी, भैया बाजार से भी सस्ती मिल जाती है।

नौकर ने सिगरेट लाइटर जलाया। सब दिखाई देने लगा। कमरे मे चार-पाच तार्के थीं। टूटी सी खाट पटी थी और कुछ सिगरेट के टोटे पड़े थे।

बूढा बोला।

बाऊजी थोडा गदा कर दिया है छोकरो ने। सारे दिन यहा बैठके तीन पत्ती खेलते है। चाबी दे देता हू बिचारे कहा जायें तेज धूप में। मेरा क्या है जब तक कोई नही आता बच्चे भले खेलें कूदें। पडोसी जग्गुआ से कहा ले न माना नही। कल आयेगा रोता पीटता। जब उसे मालूम पडेगा कि मकान उठ गया। तुम खुद ही सोचो, उसके दो जवान बेटे उनकी बहुए, जग्गुआ खुद उसकी लुगाई। सारे आदमी एक कमरे मे कैसे सोवें।

चुपचाप खडे सुनते रहे। बबई मे उसे बहुत गदी बस्ती म छोटे से कमरे के सत्तर रुपये देने पडे, उसका लखनऊ वाला मकान तेरह रुपये मे था। उसमे तो दो कमरे, रसोई भी थी। उसकी लखनऊ जैसी सब सुविधायें कमरे मे ही कही जा सकती थी, जो भी सुविधा असुविधा हा सकती थी वे सब उसी कमरे मे थी। उस बस्ती मे यदि सुविधा-असुविधा का ध्यान किया जाये तो रह नही सकते। राजेश ने जेब से रुपये निकाले और एक पाच का नोट होटल के नौकर के हाथो पर रख दिया। देखो एक दो दिन मे आकर मिल जाना। ऐसा है कि मैं यहा पर बिलकुल नया हू। यहा के लोगो के बारे मे भी जानता नही हू।

अच्छा बाऊजी, हम चलेगा, अभी। कल जब लौटेगा होटल से तो मिलता जायेगा। अच्छा चलता हू।

बूढे ने उसकी ओर देखते हुए कहा। भैया, कहा के रहने वाले हो।

बाबा, लखनऊ से आया हू। यहा नौकरी मे हू।

नौकरी का काम तो ऐसा ही है। सारे मुल्क मे कही भी मिल सकती है, करनी होवे तो करो। हालत खराब है नौकरी के मामले मे तो। हमारा खुद का बेटा सुक्खन पूरी ग्यारवी क्लास पास है। नौकरी मिलती नही। बडी मेहनत करके पढाई करी। एक साल हो गया हाथ पर हाथ धरे बैठा है। उसका मास्टर कह रहा था कि दो हजार के नोट गिनकर रख दो उसी स्कूल मे क्लर्की दिलवा देगा। दो हजार है किधर जो उस हरामजादे को दें। वो ये नही सोचता कि उसकी स्कूल का छोकरा है, गरीब है, जरूरत मद है, नौकरी दिलवा दो। आजकल तो हराम की खाने की चाट लग गई है। अरे बेटा सुक्खन अन्दर से दो मुढिया ला दे।

सुक्खन दो मुढिया हाथो मे लिये अन्दर से निकला। रग सावला था। बूढे आदमी ने राजेश का परिचय कराते हुए कहा-बेटा बाऊजी लक्की सेठ वाले कमरे मे आये हैं। नोट दे दिये हैं।

... सुखधन को हर्ष हुआ, वह पढ़ा, अच्छा एम. ए. पास हो। सारी बस्ती में अकेला हूं ग्यारवीं पास। बाकी जो मेरे साथ थे सबने आठवीं-नवीं में छोड़ दी।

सुखधन, भैया के लिए पल्ले वाले कमरे में से खटिया निकाल ला। इधर चूने में बिछा दे। अब भैया को सो जाने दे। कल उठकर बात करना। देर भी तो हो गयी है।

सुखधन खाट ले आया और उस पर एक दरी बिछा दी। राजेश उस पर लेट गया। उसे बहुत तेज थकान का अनुभव हो रहा था।

उसने सुखधन के पिता से कहा— अच्छा बाबा अब मैं सोता हूं। सुबह जल्दी उठा देना।

१७

वास्तव में दुःख की बात है। यहां आये तीन महीने से ऊपर बीत गये मां को पत्र नहीं लिख पाया। जी-तोड़ कर काम करता हूं, कार्य की व्यस्तता कुछ ऐसी है कि न कहीं आना होता है न जाना। सुबह से शाम तक 'बंधे' नीरस ढंग से कलम घिसते रहना ही जिन्दगी बन गयी है।

दो ही चीजें सामने हैं पहली सारे दिन सिर झुकाये काम करते रहना। दूसरी दो रोटी खा सो रहना। जीवन का सुख चैन प्यार सब स्वप्न है, विचार है, बातें है इससे अधिक कुछ भी नहीं।

पंखे के चलने से एक विचार मस्तिष्क में आता है कि जिस तरह पंखा चलता ही रहता है उसकी गति में जरूर थोड़ा अन्तर आता रहता है। जीवन भी ठीक वैसा ही है। चल रहा है कभी कभी मानसिक व्यथाओं के कारण जीवन चक्र में अवरोध रुकावट भी आ जाती है। कई समस्यायें मस्तिष्क को घेरे रहती हैं। सबसे बड़ी तो परेशानियां मस्तिष्क में रही हैं। आज की दोस्तियां हैं लगातार एक दिन रुके काम करने की, खाने की, इतनी दूर पैदल आने-जाने की। पास में रहने वाले बाबा और उनके लड़के की वजह से अक्सर दिल मन उदास है। सुना है बाबा की बड़ी लड़की स्कूल से आई हुई है और आज राजेश के कुछ छिन्न-भिन्न हुई है।

सुखखन ने बडी विनम्रता के साथ हाथ जोड लिये और कहा नमस्ते चाचा। उसके कहने मे बडी आत्मीयता के भाव थे। राजेश ने उसके पिता से कहा आप इसको टाइप करना सिखाओ। जल्दी नौकरी लग जायेगा।

रोज जाता है सीखने। आठ महीने हो गये। पूछो इसको कितना सीखा, मैं तो समझता नही इसमे।

राजेश कुछ पूछता उसके पहिले ही वह बोल उठा चाचा मेरी अभी चालीस की स्पीड है हिन्दी मे।

अग्रेजी भी सीखा होगा हिन्दी की तो ठीक स्पीड है।

अग्रेजी करता हू। उसमे मेरी पचास से ऊपर स्पीड है। मेरा प्रिन्सिपल कह रहा था कि कुछ दिनो बाद अपनी स्कूल म नौकरी दे देगा।

अच्छा है कही भी नौकरी मिल जाये। बैठना ठीक नहीं। वैसे कोई दूसरा काम नही करते हो क्या ?

नहीं चाचा जिल्द चढाने वालो से बिलों की किताबें,ले आता हू रात को दिन मे जब मर्जी होती है नबरिंग करता हू। अभी तो मशीन दुकानदार की दी हुई है जो ज्यादा पैसा नही देता है। मशीन का बहुत किराया लेता है। मैंने उन पैसो मे से थोडे पैसे बचाये हैं। एक मशीन खरीद लू गा।

ठीक है कितने रुपये रोज कमा लते हो ?

रोज चार-पाच रुपये मिल ही जाते हैं। मेरी मशीन हो तो रोज छ सात रुपये बन जायें। पिताजी पैसे देते नही। थोडे से पैसे और हो जायें फिर खरीद लाऊ गा तो मेरा काम अच्छा चलने लग जायेगा।

तुमने पूछा था कितने रुपये मे मिल जाती है नबरिंग मशीन।

हा, दादर मे देखी थी। दुकानदार दो सौ की बता रहा था। उसके पास विलायत की है उसके तो चार सौ रुपये मागता है। अपने को क्या करना है महगी लेकर।

दादर मे ही मेरी नौकरी है।

दादर मे किस जगह पर है नौकरी।

वहा एक प्रेस मे काम करता हू। शाम को पाच बजे छुट्टी हो जाया करेगी। एक दिन तुम्हे साथ ले चलू गा प्रेस दिखा दू गा फिर जब इच्छा हो आ जाना।

चाचा तुमने कहा तक पढाई करी है ?

एम ए कर लिया है।

सुखराम को हर्ष हुआ, वह पढ़ा अच्छा एम. ए. पास हो। सारी बस्ती में अकेला है ग्यारहवीं पास। बाकी जो मेरे साथ के सबने आठवीं-नवीं में छोड़ दी।

सुखराम, भैया के लिए पल्ले वाले कमरे में से खटिया निकाल ला। इधर खुले में बिछा दे। अब भैया को सो जाने दे। बस उठकर स्नान करना। देर भी तो हो गयी है।

सुखराम खाट ले आया और उस पर एक दरी बिछा दी। राजेश उस पर लेट गया। उसे बहुत तेज थकान का अनुभव हो रहा था।

उसने सुखराम के पिता से कहा— अच्छा बाबा अब मैं सोता हूं। सुबह जल्दी उठा देना।

१७

वास्तव में दुख की बात है। यहां आये तीन महीने से ऊपर बीत गये मां को पत्र नहीं लिख पाया। जो नौकरी कर रहा हूं, वहां की व्यस्तता कुछ ऐसी है कि न कहीं आना होता है न जाना। सुबह से शाम तक 'बंधे' सीमित ढंग से कलम घिसते रहना ही जिन्दगी बन गयी है।

दो ही चीजें सामने हैं पहिली सारे दिन सिर झुकाये काम करते रहना। दूसरी दो रोटी खा सो रहना। जीवन का कुछ चैन प्यार यह स्वप्न है, विचार है, चाहे है इससे अधिक कुछ भी नहीं।

पत्रों के पढ़ने से एक विचार मस्तिष्क में आता है कि जिस तरह पानी चलता ही रहता है उसकी गति में जरूर थोड़ा अन्तर आता रहता है। जीवन की दौड़ वैसा ही है। चल रहा है कभी कभी मानसिक उलझनों के कारण जीवन पथ में अवरोध पत्थर से आ जाते हैं। कई उलझनें मस्तिष्क को घेरे रहती हैं। सबसे बड़ी भी परेशानियां मस्तिष्क में नहीं हैं। आज भी परेशानियां हैं सामने समय पर बिना कहे काम करने की, खाने की, इन्हीं कुछ ऐसी उलझनों की। [illegible] मैं [illegible] और उनके लोगों को [illegible] से अलग दिन [illegible] जाता हूं। कभी तो [illegible] से बाबा की याद मन को बाहर से [illegible] हुई है और आज [illegible] है बहुत दिन [illegible] रही है।

सुक्खन की बहिन का नाम सुनदा है। वह अक्सर राजेश के कमरे मे बैठी घटो बातें करती रहती है। वह खुद नही समझ पाता कि सुनदा की बात का आदि क्या, अत क्या है। कहती जाती है और वह सुनता रहता है। वैसे उसको पडोस के लडको, लडकियो और नल पर खडी होकर बातें करने वाली औरतो की लम्बी चौडी बातो से कोई मतलब नही। लेकिन वह उसे कहना चाहते हुए भी कुछ नही कहता।

सुनदा की उम्र बाईस वर्ष। यौवन अपनी चरम सीमा को छू रहा है। उसकी शादी आज से पाच सात वर्ष पहिले ही हो जानी चाहिये थी। लेकिन पूर्ण यौवन, सुन्दरता, इच्छाओ से क्या हो जाता है। इसके लिये पैसा भी जरूरी है। ये ठीक है कि सुनदा की शादी मे ज्यादा पैसा नही लगेगा। उसका बाप अपने जैसा गरीब लडका देख लेगा। देखते देखते नौ साल हो गये। कभी लडका पसन्द आ गया तो उसकी ओर से रखी गयी मागो को सुक्खन का बाप पूरा नही कर सका, कभी लडका मिला तो ऐसा जो सुनदा की जोडी मे जचता नही। ये दोनों बातें साथ-साथ नही चल सकती।

पडौसी कहते हैं कि इसका बाप तो इसे घर मे ही रखेगा। वह भूल गया है कि उसका लडका नही लडकी है। तरह-तरह की बातें हुआ करती है। फूटी कौडी भी नही। क्या देगा अपनी लडकी को ये प्रश्न तो मस्तिष्क मे उसके हैं ही नही। उसको तो आने वाले मेहमानो के खान-पीने के प्रबध की जरूरत है।

राजेश को लगा कि ये राम कहानी अपने देश के घर-घर की है। उसे मीना के परिवार की याद आ गई। उससे ध्यान हटा तो होटल के बैरे की याद हो आई।

दरवाजे पर दस्तक ने उसे चौंका दिया।

खत लेना।

राजेश बाहर आया और उस पर लिखे लेख से समझ गया कि उसके पिता का पत्र है। लिफाफा खोला और पत्र पढने लगा—

,राजेश बेटे, चिरजीव रहो।

तुमने जाने के बाद कोई पत्र नही दिया। हमे चिन्ता हो गयी है। तुम शायद न समझो लेकिन तुम्हारी मा तो रोने लग जाती है उसे समझाता हू लेकिन सब बेकार। कभी दो चार लाइनो का पत्र लिख दिया करो। जानता हू तुम जरूर व्यस्त रहते होगे। आधे से ज्यादा समय तो घर से नौकरी और नौकरी से घर आने मे ही लग जाता होगा। कार्य ज्यादा रहता होगा। तेरी मां को तो मैं समझा नही सकता। उम्मीद है तुम स्वस्थ होओगे। पत्र का जवाब लौटती डाक से देना।

खुशी की बात यह है कि पवन अब अपने रास्ते आ गया है। पुरानी संगति छोड दी है। हा, उसने मीनासे शादी कर लेने की बात मानली है। इस बात से सोमू भी खुश है। कोई बुराई नही है, इनका संबंध हो जाये तो। हो सकता है शादी के बाद पवन कुछ काम भी करने लगे। इन दिनों तो बेकार बैठा है। हमारी आत्मा भी अब खुश रहती है। तुम दीवाली पर आओ, अच्छा रहेगा। तुम आओगे तब पवन और मीना की शादी कर देंगे। मोना ने जिस बच्चे को जन्म दिया है उसे लेकर वह कभी-कभी तुम्हारी माँ के पास आ जाती है।

तुम्हारा पिता
–शिवराज

बाहर बरसात के कारण जगह-जगह खड्डे हो गये। चलना फिरना बहुत कठिन हो गया है नालियो के किनारे छोटे-छोटे पौधे उग आये हैं। बरसाती पानी के कारण पानी कही-कही नालियो के ऊपर से बह रहा है। बच्चे घरो से निकलकर पूरी बस्ती में एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ लगा रहे हैं। छोटे बच्चे नंगे खडे हैं, उनके पास एक बच्चा खडा है जिसके शरीर पर कमीज है, उसके चहरे पर गर्व का भाव सहजता से देखा जा सकता है। वह अपने को शेष बच्चों की तुलना में श्रेष्ठ समझ रहा है। उसके हृदय मे वैसे उनके प्रति प्रेम का ही भाव है घृणा का नही इसका कारण उनकी कम उम्र है।

राजे चाचा, ओ, राजे चाचा।

अन्दर आ जाओ क्या बात है। आज तो खुश नजर आ रही हो।

हा, तुम्हारे लिये मैंने एक खास चीज बनाई है खाओगे।

क्यो नही, क्या खिलाने आई हो चाचा को।

बेसन की पूडी बनाई है साथ मे चटनी। मजा आ जायेगा, खाओगे तो। सुखन तो जल्दी-जल्दी चार पूडी खाकर अपने धन्धे पर चला गया। बाबा को दे दी है। सोचा चाचा भूखा मर रहा होगा उसे भी एक दो दे दूं।

अच्छा, तो बिना तुम्हारी पुडी के मैं भूखा ही मर जाऊंगा। कहती ऐसे हो जैसे मैंने कभी पूडी खाई ही नही। अरे रोज खाता हूं, समझी।

झूठ नही बोलना चाचा। कहा मिल जाती है, कौन है, बनाकर देती होगी। होगी कोई। छिपाना नही जो भी सच-सच है बता देना।

अरे पगली, कोई भी नहीं है चौपाटी पर निकल जाता हूं। खा लेता हूं। अपने को बनाकर देने वाला है ही कौन ?

मैं नही बनाकर देती हूँ ? जो कहता है कौन है जो बनाकर दे ।

नन्दा दरवाजा खुला पड़ा है मैं यों ही टहलकर आता हूँ ।

बाबा, आती हू अभी । ये लो जल्दी जल्दी खा लो, जाना है मुझे । घर पर कोई नही । बाबा बाजार जा रहे हैं ।

अच्छा चल जा ये थाली फिर ले जाना । बिल्कुल बेकार । सारे मुह का जायका खराब हो गया ।

खा भी रहा है । खराब भी कहता है वाह-रे वाह । मैं चली ।

ठीक है, जा ।

अरे चाचा, एक बात याद आयी । आज आफिस नही जाना तेरे को ।

जाना क्यो नही है, क्या टाइम हो गया है । ऐ, नौ बज गये । तुम खुद तो बातो मे लगा लेती हो । देखती नही कितना समय हो गया । अच्छा, चल भाग यहा से । अरे, ओ सुक्खी मामा, आज पानी नही लाओगे । कितनी मुश्किल हो रही है । देर हो जायेगी आफिस को ।

लाला, सुबह से तेज बरसात हो रही है कब लाता । अभी लाता हू, थोडी देर मे ।

देखो, शाम को ले आना । अभी तो मैं जा रहा हू । भूलना नहीं ।

सुनन्दा के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नही । जैसे-तैसे गुजारा चलता है । बाबा कोई काम नही करते । सुक्खन थोडा बहुत जो कुछ भी काम करता है उससेकाम चलता है फिर भी सुनन्दा मे कितना स्नेह है । घर मे जो कुछ भी बनाती है थोडा ले आती है ।

मध्यम श्रेणी वर्ग आज किस तरह अपने को जिन्दा रख पा रहा है वह स्वय जानता है । महगाई ने उसकी कमर तोड दी है । वह अपने दिन बहुत ही कु ठित हृदय से इसलिये निकाल रहा है क्योकि उसे बच्चो का पेट भरना है, उन्हें शिक्षित करना है । उसे अपने से कोई प्रेम हो या न हो लेकिन जिन्हे उसने जन्म दिया है उनेका उत्तरदायित्व तो उस पर ही है ।

राजेश ने जल्दी-जल्दी फाइलो को इकट्ठा किया और चल दिया । बस्ती के बाहर हो लिया । लोकल मे ज्यादा भीड थी । वह कही स्थान न पा दरवाजे के पास आकर खडा हो गया । सोचता है उसका क्या अस्तित्व है दुनिया मे । ससार एक भीड है जिसमे सब लोग चले आ रहे हैं और उसी भीड मे वह स्वय भी है । उसे लगा दम घुट रहा है वह ट्रेन रोक ले और नीचे उतर जाये । हो

सकता है नीचे उतर जाने के बाद भी ट्रेन की उकताहट, घुटन कम न हो। जिंदगी के सफर ने भी उसे कब कब ठोकरें नही दी, जिनसे आहत हो हमेशा उठता रहा। जिन्दगी गिराती रही वह उठता रहा।

ट्रेन रुकी और वह जल्दी से सडक पर आ गया।

सामने सविता के पिताजी को देखकर उन्हे नमस्कार किया।

जीते रहो।

आपकी मेहरबानी से यहा मेरा अच्छा काम लग गया। जीवन भर एहसान नही भूल सकता आपका।

वही से आ रहा हू। उसने बताया था कि उनके दोस्त की प्रेस मे हो। उन्होने शिकायत भी की है तुम्हारे लिये। ये तो ठीक बात नही।

जी, मेरी समझ मे तो कोई गलती नही हुई, क्या मैं जान सकता हू कि क्या बात हो गई।

कह रहा था कि नौकरी मिलने के बाद तुम कभी उनसे मिलने नही गये।

वाकई गलती हो गई। सुबह से शाम तक का सारा समय इतनी व्यस्तता मे गुजरता है कि कुछ हो नही पाता। तीन महीने निकल गये घर पर पत्र नही दे पाया। आज पिताजी का पत्र आया। वे भी इस बात से वडे नाराज है। आफिस मे जाकर, समय मिला तो लिख दू गा।

ऐसा है राजेश कि इन वडे लोगो से मिलते रहने मे तुम्हारा कोई नुकसान नही। अपने को यदि किसी से दो बात खुशी से कर लेने मे लाभ हो जाता है तो अच्छा है। हो सकता है तुम्हारे लायक उनके ध्यान मे कोई और अच्छी नौकरी हो जिसको वे तुम्हे देना चाहते हो इस हालत मे तुम नही मिलते हो तो उन्हे क्या मालूम कहा रहते हो।

अच्छा काम चल रहा है।

चलो अच्छा है।

सविता कैसी है, ठीक है ना।

अरे, हां याद आया। उसने भी तुमसे खासतौर से मिलकर लौटने को कहा था। मैंने श्याम से पूछा तो कहने लगा प्रेस से मालूम हो सकता है वहा फोन किया तो उस समय वहा कोई नही था। अच्छा रहा, तुम मिल गये। नहीं तो सविता नाराज हो जाती। उसने तुम्हारे लिये एक पत्र दिया है। मैं पहिले तो पत्र श्याम को देने वाला था। सोचा वह तुम्हे न जाने कब दे सो उसे दिया नही।

जब कभी तुम्हारा घर मे जिक्र चल जाता है तो तुम्हारी कविताओं की बड़ी तारीफ होती है। आज लखनऊ जाऊंगा। वाकी घर के कामो का ध्यान ही नही रहता।

जी हा, अवश्य लिखूंगा।

मकान की तो समस्या होगी।

जी नही, यहा इतने दिन रहने के बाद मकानो की समस्या के बारे मे समझ पाया हू। गरीबों का ईश्वर ही होता है। तारीफ की बात तो यह कि पगड़ी देने जैसी बात नहीं उठी। मकान तो क्या छोटा कमरा है। उसी मे रात को सो लेना, सुबह उठ कर चल देना।

यहां का तो यही हाल है तुम्हारा भाग्य ठीक रहा। खाने पीने का क्या प्रबन्ध है ?

एक ढावे मे इन्तजाम है, सवा सौ रुपये महीना देता हू खाना ठीक देता है।

अच्छा है, खुशी हुई मिलकर।

यहा रहना बिलकुल भी अच्छा नही लगता। सुबह निकलता हू रात को देर तक घर पहुचता हू। फिर सुबह से सारा रोज का सा कार्यक्रम शुरू हो जाता है।

देखो समय हो रहा है। तुम्हे प्रेस जाना होगा। मुझे भी दो चार जगह और मिलना है।

नमस्ते। सविता को मेरी नमस्ते कहियेगा।

बडी प्रसन्नता थी कि सविता के पिता से भेंट हो गई। प्रेस की मुख्य बिल्डिग मे आगया और लिफ्ट मे चढकर अपने कमरे की ओर चला गया। चुपचाप अपनी टेबल पर बैठ गया। उसकी नजर टेबल पर रखी डाक पर पडी, काफी डाक थी। पत्र खोलने को ही था कि उसके सहयोगी ने कहा —

आज तो यार बडे खुश दिखाई दे रहे हो। क्या कोई लाटरी निकल गयी है या किसी लडकी ने तुम्हारे से शादी की अनुमति दे दी है।

यार, अभी मत पूछो क्या हो गया है।

अमा यार, हम उस्तादों से छिपाना ठीक नही। चलो बता भी दो ना।

छोडो भी, देखो, न किसी महबूबा का खत है और न हो कोई लाटरी ही निकली है। कोई जान पहिचान वाले मिल गये थे, उन्होंने खत दिया था देखता हू क्या लिखा है।

अच्छा तो तुम्हारा मतलब है कि यह पत्र किसी लडके या आदमी ने लिखा है। चलो हमारे सामने पढो, देखते हैं किसका है ? हमसे छिपाते हो। मैं दावे से कह सकता हूं यह लड़की का पत्र है। तुम चाहो तो शर्त लगा सकते हो।

बेटे एडिटिंग तो पन्द्रह साल से करने लगे हैं वरना पहिले यार दोस्तो के प्रेम पत्रो की ही एडिटिंग करते थे। गाइड भी कर दिया करते थे। मजे की बात यह रही है कि जिन्दगी मे खुद ने किसी को एक पत्र भी नही दिया।

तब तो तुम्हे प्रेम पत्र एक्सपर्ट कह सकता हू। क्यों ठीक है ना।

अमा, एक्सपर्ट थे तो दूसरो के लिये, खुद के लिये तो कुछ नही। हमारी कलम ने हमारे कई यारो को प्रेमिकाए बख्शी। लेकिन खुद वही के वही और आज जमाना गुजरा है शादी हुए। चार बच्चे घर मे छोड रखे हैं। अच्छा पढो।

चल, अब जिद करता है तो तेरे सामने ही पढ देता हू।

कहता तो ऐसे है जैसे एहसान कर रहा है।

प्रिय राजेश मधुर स्मृति।

सुहानी ठडी हवा का झोका भी कहू तो क्या बुरा है तुम मेरे जीवन मे आये और न जाने कब, क्यो चल दिये। साथ बीते दिनो की यादें रह-रह कर दर्द दे जाती हैं। यही सब कुछ करना था तो क्यो इतना अधिक मेलजोल बढाया। तुम्हें मेरी याद आती हो या नही लेकिन मै अपने मे जो हुई हू उसको कहना नही चाहती।

मार, मर गई। सच कहू पूरे बेवकूफ ही हो।

चुप भी रहेगा, पहिले पूरा सुन तो ले।

पढ पढ।

सोचती हू तुमने जो कुछ भी वक्त अपनी जिन्दगी का मुझे दिया वह ही क्या कम है। सोचती हू इसमे कोई दोष नही है जीवन म जो जितना साथ निबाह दे उसे ही बडा समझ, उसके प्रति आभारी होना चाहिये। प्रेम मे दबाव नाम की कोई चीज नही है। तुम्हारी ओर से उदासीनता का भाव है। आपके बिना लगता है जिन्दगी मे कुछ नही। हर ओर से विरक्ति का भाव दिखाई पडता है। जिसे सहन कर पाना मेरे लिये कठिन है। आप न जाने कब लखनऊ आयेंगे। उस समय के इन्तजार तक कोई कैसे रह सकेगा मालूम नही। तुमने कहा था ना नौकरी लगने के बाद एक बार जल्दी ही आऊगा। बीतते समय के हर क्षण मे तुम्हारी यादे हैं।

स्वस्थ होगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिये मेरी शुभ कामनायें। पिताजी जल्दी कर रहे हैं। जब तुम जवाब के साथ अपना पता लिखोगे तो फिर विस्तृत पत्र लिख पाऊ गी। अच्छा पत्र लिखना।

आपकी ही – सविता

यार फिर कहूगा कि तुम बेवकूफ ही हो। क्यो नही बेचारी को शाति देता। क्या हाल है इसका। क्यो तुम्हारी समझ मे कुछ भी नही आती। लगता है, उसने अपने टूटे दिल से पत्र लिखा है। किसकी लडकी है।

जवाई बनो, बिलकुल नगद। तुम्हें नौकरी की क्या जरूरत। चैन की बासुरी बजाओ। अमा हमारा नसीब तो खराब है इस मामले मे।

तुम सुनकर आश्चर्य मे पड जाओगे कि इस लडकी को मैंने स्पष्ट रूप मे कभी प्यार नहीं जताया और न ही कभी चाहा। ये भी नही कि बहुत लम्बी चौडी दोस्ती रही हो। बहुत छोटे समय मे ही न जाने क्यों चाहने लग गयी। तुम खुद देख रहे हो या नही किस कदर प्यार है इसे।

अच्छी बात है ना कि तुमको जल्दी ही उसने पसन्द कर लिया।

ये बात तो है ही। इसके साथ तुम जानते हो मैं किस स्थिति मे हूँ और वह अमीर बाप की लडकी।

अमा, तेरा जैसा कवि नही मिल सकता।

कविता, कहानिया खाने को तो नही दे देती। यहा आठ नौ घटे मेहनत से काम करता हू तब कही जाकर थोडा सा पैसा मिलता है।

ये बात भी सच है। लेकिन शादी मे उसका पिता जरूर अच्छा पैसा देगा। इससे तुम्हारा गुजारा मैं समझता हू चल ही सकता है।

कमाल करते हो। हो सकता है फूटी कौडी भी न दे। उसकी इच्छा की बात है। इसलिये काम को समझ कर करने मे ही भला है भाई।

हिम्मत करो जिन्दगी मे कुछ तो खतरे उठाने ही पडते हैं।

पर गुरू जब जानते हो कि आगे खाई है, खतरा है तो उस दिशा मे बढना ही ना समझी है। जब जानता हू कि सविता के साथ अभी चाहे भावना मे बहकर शादी कर भी लू तो क्या होता है। पूरे जीवन भर उससे निबाह हो सकेगा ?

तुम गलती पर हो। यह सब कुछ आगे होगा, देखा जायेगा वाली बात से ठीक नही रहता। इन सब बातो को ही दूरदर्शी की दृष्टि से सोचने की आवश्यकता होती है।

ठीक है यार। तुम्हारी मर्जी। अपने को तो ऐसा मौका मिलता तो कभी छोडते ही नहीं। किये जाओ बैठे बैठे एडिटिंग और छ-सात सौ रुपल्ली मे घसीटते रहो गाडी को।

बात समझ की भी है। जीवन मे कुछ मन नही मानता। इसलिये मैं ऐसा काम करता हू।

यार ये ही तो दुख है तेरा मन नही मानता। इसलिये तुझे मौका मिलता है हमारा मन मानता है तो मौका नही मिलता। क्या दया है ईश्वर की। कहो क्या बात है। नारायण क्या खबर लाये हो।

राजेश बाबू को डाक्टर साहब बुला रहे हैं।

जाओ, भई कयामत आ गई।

देखते हैं क्या बात है। आ रहा हू।

लगता है कोई खास काम है। जल्दी आना चाय मगवा रहा हूँ।

मे आई कम इन सर

येस, कम इन राजेश।

जी आपने बुलाया।

हाँ, सुबह श्यामनारायण जी का फोन आया था। मुझे तो अभी बाद म आने पर पता लगा। वे तुम्हारे मकान के बारे मे जानना चाहते थे। उनके मित्र रघुवरदयाल लखनऊ वाले आये थे। तुमसे मिलना चाहत थे।

जी वे मुझे अचानक ही मिल गये। स्टेशन से उतर कर जैसे ही सडक पर आया वही भेंट हो गयी।

अच्छा हुआ वरना उन्हे बडी दिक्कत रहती। मैंने अभी श्यामनारायण को दुबारा फोन किया तो उन्होने बताया कि लखनऊ वाले मेहमान प्रेस की तरफ ही आ रहे हैं। वे आये तो नही अब तक।

जी आकर भी क्या करते, उनको मेरे से काम था मैं उन्हे मिल ही गया। उनको दो चार जगह और भी मिलने जाना था। वे आज शाम को ही लखनऊ लौट रहे हैं।

श्यामनारायण बता रहे थे अच्छी पैसे वाली पार्टी है उसकी बातो से लगा आदमी अच्छे हैं।

डाक्टर साहब उन्ही की दया मेहरबानी से लखनऊ से मैं यहा पहुचा और आपके यहा हू। बडे दयावान हैं। अच्छा साहब इजाजत हो।

हां ठीक है तुम जाओ। बस ये ही जानकारी करनी थी।

नमस्ते, डाक्टर साहब।

नमस्ते, राजेश।

१८

सारे दन मेहनत से डाक को देखा और उसमे से कुछ मैटर कला विभाग को भेज दिया। शाम का समय हो चला था। घडी ने पाच बजाये। खुशी थी काम समय पर हो जाने की। अन्य दिनो घर पहुचने मे देर हो जाया करती थी। कई बार ढाबे का मालिक सोहन कारा नाराज हो चुका था। उसने अपनी फाइलें उठाई और दोस्त के साथ नीचे उतर आया।

अच्छा, हम तो इधर निकलेंगे। कल शाम पिक्चर का प्रोग्राम बना लो।

कल की बात कल। अच्छा, भाभी को नमस्ते कहना।

ठीक है।

राजेश जल्दी से स्टेशन पहुचा। ट्रेन चल पडी थी। सोचा अगली से ही निकल जाऊ गा। लेकिन न जाने क्या सोच दौडकर ट्रेन मे चढ गया। उसको अपने इस काम पर दुख हुआ। हो सकता है हाथ छूट जाता और वह नीचे गिर जाता।

जेब से सविता का पत्र निकालकर पढने लगा। दिन भर छोटे से समय मे न जाने कितनी बार वह पत्र को पढ गया था। उसे अपनी गरीबी पर रह रह कर दुख हो रहा था। वह कभी सोचता कि सविता से हमेशा के लिये अपने सबध तोड ले। सविता के कोमल हृदय का ध्यान आता तो उसे उसकी स्वय की और नीरजा वाली कहानी मस्तिष्क मे घूम जाती। एक कहानी थी जिसे राजेश ने दुख के रूप मे हमेशा के लिये जीवन मे अपना लिया था। नही चाहता कि जिस तरह नीरजा ने उसका हृदय तोड दिया और उसी की टीस से समय ब समय वह तडफ उठता है, ठीक ऐसी ही टीस, ऐसा ही दर्द वह सविता से अपने सबध तोडकर उसे दे। क्या करे और क्या न करे। राजेश की समझ के बाहर है यह प्रश्न।

ट्रेन अपनी तीव्र गति से बढी जा रही है। हर रोज सुबह शाम ये लम्बा ट्रेन का सफर, घर की यादें, परेशानिया, आठ घण्टे लगातार बैठे आफिस मे काम करना जीवन है। यही सब कुछ है।

नम्रता को लखनऊ से एक पत्र लिखा था। गये दिनो भी लिखा था। उसका व्यवहार भी राजेश के लिये विस्मय सा है। कालेज मे साथ पढे। नम्रता

नीरजा की अच्छी सहेली थी। दोनों मे बहुत घनिष्ठता थी। नम्रता राजेश को बहुत चाहती थी। लेकिन उसने केवल नीरजा के कारण अपना प्रेम राजेश को प्रकट नहीं किया। उसका विचार था कि राजेश को नीरजा चाहती है और उसे राजेश। उसने अपने प्रेम को मौन बनाये रखा। लेकिन जबसे नीरजा ने स्पष्ट रूप से राजेश से अपने सबध तोड लिये तो नम्रता को अपना प्यार जताने का मौका मिला और उसने उस पर अपना प्रभाव जमाना शुरू किया।

नम्रता ने राजेश की बहुत दिनो तक सेवा की।

एकाएक ट्रेन रुकी।

स्टेशन से बाहर आ बस्ती की ओर तेज कदमो से निकल आया। भीड है चारो ओर। सब लोग घरो पर पहुचने की जल्दी मे है।

बस्ती मे पहुचने के लिये एक पुल पार करना होता है। तेजी से चला जा रहा है। सुखन के पिता रास्ते से लगी होटल पर बैठे चाय पी रहे है। राजेश को देखते ही बोले—

बेटा, तुम्हारे सुखन को नौकरी लग गई।

अच्छा बाबा, भगवान की दया है।

पूरा पता नही किसी ठेकेदार के साथ है। उसी को पूछ लेना। अभी अभी गया है। बता रहा था सेठ का रात को भी काम चलता है।

क्या तनख्वाह देने की कही है।

अभी तो अढाई सौ देगा।

चलो अच्छा रहा। घर चलें।

तुम चलो। अभी आया हू। तुम चाय पी लो।

बस बाबा।

तुम्हारा एक लिफाफा आया है। नदा के पास होवेगा। उसको डाकिया दे गया था जो मैंने सभालकर रख देने को घर पर ही दे दिया।

खाना खाने भी जाना है। रोज सोहन काका [illegible] है।

जानता हूँ। मजाक करता है दिल का खराब नहीं। [illegible] खालिस की रोटी। महगा भी नही देता है। कितने रुपल्ली लेता है तुमसे।

ससर लेता है।

बहुत ज्यादा है। अच्छा घी काम में [illegible]।

हा, खाना तो अच्छे घी का देता है।

तब तो सत्तर ठीक है।

मैं चलूं।

तुम चलो। मैं रुककर आऊंगा।

जेब से चाबी निकाली और कमरा खोला। उसे लिफाफे के बारे में याद आया वह मुड़ा और सुक्खन के दरवाजे पर जाकर सुनंदा को आवाज़ दी– सुनंदा।

आ गये। बड़ी जल्दी आ गये। कोई मिली नही क्या रास्ते में।

आज काम जल्दी हो गया, जल्दी चला आया। रास्ते में कौन मिलता है इतना बडा शहर है।

अरे मेरा लिफाफा आया था। कहा है। रास्ते में बाबा ने मुझे बताया था।

पास से भी नही बड़ी दूर से आया है। दार्जिलिंग से। लिखने वाली तो लडकी है तुम्हें बेचारी बडे प्यार से बुला रही है।

तुझे क्या मालूम, तू कौनसा पढना जानतीहै जो बढबढ कर बातें कररही है।

सुक्खन से पढवाया था।

ये बात अच्छी नही होती। किसी की चिट्ठी नहीं पढनी चाहिये। चलो, कोई बात नही पढ लिया तो, अब तो दे दो लिफाफा।

वह नही मिलेगा। लडकियो को चिट्ठी लिखने हो। अच्छी बात नही है।

देखती नहीं मैंने कहा लिखा है। उसने ही लिखा है, मै नही लिखता कभी।

तभी उसने लिखा है कि तुम्हारे दो पत्र मिले पर जबाब नही दे पायी।

सुनंदा, दे दो तंग नही करो।

क्यों आगे कहो ना, जी नही लगता वो ही लडको की रटी-रटायी बातें।

चलो ये ही सही।

सच याद नही आ रहा कहा रख दिया। सुबह दे दूंगी।

देखो आखिरी बार कह रहा हू दे दो।

कहा नही, दे दूंगी इतनी भी क्या जल्दी है। गुस्सा होने, आखें लाल-पीली करने से तो हो सकता है कल भी न मिले। तुमने ये कैसे मान लिया कि मैं गुस्से से डरती हूं। मुझे किसी का डर नही लगता। क्यों डरें किसी से। कोई खाने को तो नही दे जाता।

ठीक है ठीक है। चलता हूं मुझे नहीं चाहिये। अपने पास ही रखलो।

बडी जल्दी गुस्सा आता है। इस उम्र मे गुस्सा करना अच्छी बात नही। इस उम्र मे तो प्रेम से काम लेना होता है। तुम तो नाराज हो गये, चलो दे देती हू।

लाओ देओ। हुआ या नही गुस्से का असर। वैसे तो तुम देती भी नही।

दे दिया, इसलिये। वर्ना यही खडे रहना पडना घटो। रोटी खा ली तुमने।

हा खाली, तुम्हारे को मतलब।

अच्छा जी। चिट्ठी क्या आ गई है हमको मतलब ही नही रहा। अभी तो चिट्ठी मे ही इतना घमड है तो आगे क्या होगा।

ठीक है चलता हूँ उधर दरवाजा खुला पडा है।

राजेश जल्दी से अपने कमरे मे आया और नम्रता क पत्र को पढने लगा। पत्र से उसका ध्यान बार बार बाहर हो रही बातो की ओर चला जाता था। पहिल तो वह समभ नही पाया कि क्या बात है लेकिन जब ध्यान से सुना तो उसे लगा कि बाहर बैठे बीडी पी रहे लोग उसी के बारे मे बातें कर रहे थे। उनकी आवाज बहुत धीरे थी। लेकिन राजेश उनकी बातो को सुन सकता था।

गुरू चार दिन आये नही हुए बाबू को वस्ती मे और बाबा की लौडिया पर नजर डाल रहा है। देखा नही अभी कितनी देर तक हसी ठिठोली कर रहा था उसके साथ घर मे।

बुड्ढा तो चाय पी रहा है उधर नुक्कड की भोपड पट्टी म– इधर दोनो गुलछर्रे उडा रहे हैं। बाबू ने तो धूल भोक रखी है उसकी आखो मे।

गुरू जवान लडकी और लडका अकेले म दुनिया से छिपकर बातें करे तो क्या मतलब होता है ? जानता ही है।

हमको पढा रहा है भैया, जिन्दगी गुजारी इसी हेराफेरी मे। जानता हू लोगो के बारे मे।

उस्ताद, हम क्या बुरे हैं। बस्ती मे बडे हुए, खेले। सुनदा के साथ तो गुड्डे-गुडियो की शादिया करवाई। अगली आख भी नही मिलाती। जोबन जो चढ बैठा है उसमे। हम उसके काबिल ही नही रहे।

इन बातो से राजेश को बुरा लगा। उसे तेज गुस्सा आ रहा है चाहता है कि बाहर बैठे लोगो की मार लगाये। लेकिन बाहर तो बस्ती का गुण्डा फकीरा बैठा है। बस्ती मे दादा के नाम से जानते हैं। उसके आगे बोलने की कोई हिम्मत नही करता। सोच, उचित सही समभा कि उनसे कुछ कहा जाने। मस्तिष्क मे बडी उथल पुथल मच रही थी वह सुनना चाहता था कि और क्या क्या बातें सोचते हैं उसके बारे मे।

अरे भैया, बाबा को साफ साफ बता दो कि अभी तो टैम है लडकी को सभाल ले फिर हाथ से चिडिया की तरह निकल जायेगी।

तुम सही कहते हो। बाबू का क्या है आज है कल नहीं। नौकरी पेशा है कब चल दे। हमको तो यही बस्ती मे जीना मरना है। हमारी भी इज्जत है, क्यो ठीक नही कह रहा।

भैया, तुम इज्जत की बात करते हो। अरे, हमारी मा-बहनो को क्या सबक मिलेगा। आज ही उधर चलकर बुड्ढे को सारी बातें समझा देते हैं।

सोचता हू दो चार दिन ठहर जाओ। उस्ताद थोडी और रगीनी देखो। फिर कभी अच्छा मौका देख के बाबू का गट्टा पकड लो और लगाओ धोल। तमाशा मजेदार रहेगा। अभी तो इनकी रगरेलियो का चिराग रोशन हुआ है।

तुम पेलवान, सही कहते हो। अभी कहना अच्छा नही। न मालूम बाबा को विश्वास भी आये या नही। तुम तो जानते हो सठिया गया है। अच्छा सा मौका देखो और उसको आखो से दिखा दो। फिर बाबू की रगत देखना, अच्छी रहेगी।

इतना पढा लिखा ऐसी गदी बस्ती मे क्यो रहेगा। मुझे पहिले ही शक था कि कोई न कोई गुल जरूर खिलायेगा। पढे लिखे बाबू, यारो, तुम ही सोचो यहा क्यो रहने लगे। अपने इधर सफाई नही, मकान अच्छे नही, पानी की जोरदार किल्लत। बाकी तो समझने की बात है।

हमने तो गुरु, बाबू को बडा शरीफ आदमी समझा था। बिचारा मिलता है अदब से हाथ जोडता है। ऐसा होना तो नही चाहिये।

सतू बेटे, तुमने जमाना देखा कहा है। अभी तो दो कदम भी नही चले हो। हमसे पूछो जमाने मे क्या नही होता। बेटे, बाबू की तरफदारी करनी अच्छी नही। जमाने की चोट खाओगे तो अकल आयेगी।

मेरा मतलब बाबू की तरफदारी से नही। मैं कह रहा था कि हो सकता है अपने को गलतफहमी हो गई होवे।

गल्तफहमी और हमको। आदमी को एक नजर मे पहिचान लेता हू। बाबू जो है मीठी छुरी है। देखता नहीं। इस बाबा की छोकरी को, आये चार दिन हुए नही कि अगले ने फुसला लिया तबियत से।

उस्ताद अपन ये जानते हैं कि लगाओ साले को धौल। अपने को हुकम तो देकर देखो। कल ही बाबू का टीन-टिपारा बस्ती के बाहर नजर आयेगा।

अभी बताया नहीं जल्दी नही करनी है। जब जरूरत होगी तुम्हे भी बुलायेंगे। तुम्हे भी करतब दिखाने का मौका मिलेगा।

अपनी मां-बहन होती तो अब तक बाबू को खड्डे मे गाड देता।

ज्यादा जोर से नही बोलो पेलवान, बाबू सुन लेगा बगल मे ही तो है कमरा।

अपना क्या उखाड लेगा। अपने से ची-चिपड करेगा तो देख लेना क्या पलस्तर बनाना हू उसका।

थोडी देर पहले तो कह रहे थे हमे काम सोच समझ के करना चाहिए।

गुस्सा आ जाता है, यार ऐसी बातें सुनकर।

राजेश को इन सारी बातो से जोरदार धक्का लगा। उसने सोचा भी न था कि लोगो के दिमाग मे ऐसी बातें भी आ सकती हैं।

सारी बातो से राजेश की भूख खतम हो गई। उसे ध्यान नही रहा कि सुबह से कुछ भी नही खाया है। दिन मे दफ्तर मे जरूर थोडा नाश्ता किया था।

सोचने लगा अशिक्षित लोगो मे डर की भावना बडी जल्दी घर कर लेती है। उन्हे जो कुछ भी कह दिया जाये, मान लेते है। उनमे स्वय विचार करने की क्षमता नही होती। यथार्थ से बहुत दूर रहते हैं। केवल सुनी सुनाई बातो, आपसी तर्कों पर विश्वास कर बैठते हैं।

बाहर से किसी की आवाज सुनाई पडी। आवाज को राजेश ने पहिचान लिया और वह बाहर निकल आया।

आओ बाबा।

खाना खा आये ? तुम तो बहुत देर पहिले चले आये थे।

राजेश को लगा कि उन्हो ने भी उसके इतनी देर से यहा रहने का न जाने क्या आशय लगाया हो। हो सकता है फकीरा और उसके साथ बैठे लडको ने उनसे कुछ कहा हो। उसके हृदय मे एक वेदना सी उठी उसने सोचा इन अशिक्षित लोगो का तो क्या है, कुछ भी कर सकते है। लेकिन बाबा तो उस पर पूरा विश्वास रखते हैं। उसने सयत ढग से कहा—बाबा कुछ भूख नही है। तबियत भी अच्छी नही सो आज सोहन की तरफ जाने का जी नही कर रहा है।

कोई बात नही। सुनन्दा से थोडी खिचडी बनवा लो हल्का खाना ठीक रहेगा। मैं खुद जिस दिन खाने की मर्जी नही होती तो खिचडी बनवा लेता हू।

इस बात से उसे बडी शाति मिली। उसने सोच लिया कि बाबा के व्यवहार मे कोई परिवर्तन नही है और न ही उन लडको की बातो की भनक ही है।

खिचडी तो मैं पसन्द नही करता बेकार ही सुनन्दा को कष्ट होगा। ऐसी कोई विशेष भूख है नही। अभी शाम को नाश्ता बडा कर लिया था।

बेटा, इस घर को अपना ही घर समझो। इतने दिन हो गये हैं फिर भी तुम मेरा स्वभाव नहीं समझ पाये। मैं तो सुखवन की तरह मानता हू तुम्हें। जब जो मर्जी हो बनवा लिया करो। अरी, सुनन्दा बेटी सुनना।

आई, क्या है बाबा।

देख, बाबू के लिये जल्दी खिचडी बनादे। इसकी तबियत ठीक नही है।

अच्छा।

राजेश ने बात को बदलने के विचार से सुखवन की बात छेड दी।

बाबा सुखवन की नौकरी लग गयी बडी अच्छी बात है।

हा पूरे साल से बेकार बैठा रहा। भगवान ने सुन ली। पगार तो कोई ज्यादा नही है पर बेकार से बेगार ही भली।

अच्छा है, जो भी थोडी बहुत आमदनी हो जाय। ठेकेदारी का काम है। धीरे धीरे तनख्वाह भी बढ जायेगी।

देखो। अब तो इसकी ज्यादा चिंता नहीं रही। खा कमा लेगा। बेटी को भी निकालना है। अब उम्मीद बनी है सुखवन थोडा बहुत कमाले तो यह काम कर डालू जिन्दगी मे और कोई काम बचा नहीं है। एक बात पूछू यदि बुरा न मानो। वैसे मुझे पूछना नहीं चाहिये। लेकिन यो ही विचार आ गया है।

जरूर पूछो सकोच की बात कोई नही।

बाबा आपकी उम्र भी काफी हो गयी, अभी सुखवन बडा भी नही कहा जा सकता। हा सुनदा तो बडी है। लेकिन क्या आपने अपनी पूरी जिन्दगी मे कुछ भी नहीं बचाया जो आज आपको इस हालत का सामना करना पड रहा है। जिन्दगी भर आपने कमाया ही होगा।

बाबा के स्मृति पटल पर गत जीवन के चित्र स्पष्टत उभरते जा रहे थे। उनके ललाट पर कभी बल पड जाते कभी हल्की सी हसी की लहर सी दौड जाती। राजेश इन सबको बडे ध्यान से देखता रहा था। कुछ देर वातावरण मे शांति सी छाई रही। यादो को एकत्रित करते हुए वे बोले–तुम्हारी जिन्दगी तो अभी शुरू ही हुई है। तुम नही जानते कि मुसीबतें आदमी को कितना मजबूर, लाचार बना देती है। मेरे जीवन की कहानी भी कुछ ऐसी ही है, ये बात नहीं कि मैं किसी गये गुजरे खानदान से हू। मेरे बाप की यही कालबा मे कपडे की बडी दूकान थी। खूब पैसा आता था। हमने जिन्दगी को महज तमाशा समझा और घूमते रहे। हमारे बाप ने हमे हर तरीके से समझाया हम माने नहीं। ज्यादा कब सुना, नोट जेब मे डाले और भाग जाते। सगति बिगडती गई। हमने जुआ खेलना शुरू कर दिया।

बाप गुजर गये। दुकान का काम सभला नही। नौकरो से कब तक चलती। हमने उठाकर बेच दी और तीस हजार जेब मे डाल लिये। हमारे बाप ने अपने जीते जी शादी कर दी थी। उन्होंने सोचा लडका सुधर जायेगा। हमको पैसे की चिन्ता तो थी नही। खूब जुआ खेलते, शराब पीते। पैसा धीरे धीरे खतम होने लगा।

हमारी घरवाली ने बहुत समझाया पर हमने एक न सुनी। हालत यहा तक बिगडी कि दाने-दाने को मोहताज रहने लगे। फिर तुम जानते हो खूब मस्ती से बिताई आधी जिन्दगी के बाद कमाने का ढग भी नही आता और न ही हमसे दो पैसे की मजदूरी होती। सुबह से शाम तक घूमते रहने के बाद मुश्किल से पाच सात रुपल्ली हाथ लगती। तीन चार रुपल्ली घर मे देते, बाकी शराब पी जाते। आदत जो पीने के पड गयी थी, रोटी चाहे मिलती न मिलती पर दारू तो बहुत जरूरी थी। इधर आमदनी नही थी उधर घरवाली ने खाट पकडली। फिर भी गाडी जैसे, तैसे रोते पीटते सात महीने तो चलती रही। फिर बेचारी ने तग आकर दम तोड दिया। जब तक बेचारी जी तब तक उसने दुख ही पाया। पैसे की शुरु में तकलीफ नहीं थी। लेकिन सारी सारी रात घर से बाहर रहने, जुआ खेलने और शराब पीने की मेरी आदत से तग थी। बाद मे पैसे की दिक्कत थी। सुनदा भी जब पैदा हो गई थी तो इसका भी खर्च। इसकी माँ इसे चार साल की छोडकर गुजर गयी। मैं इस हालत मे नही था कि बच्ची को सभालता, बच्चे के लिये मा का होना तो जरूरी होता है।

इन बातों के साथ सुनदा के पिता की आखों से अश्रु बह निकले। राजेश बहुत देर से समझ रहा था कि वे बार बार डबडबा आयी आखो को अपने प्रयास से छिपा लेते थे। जीवन की स्मृतिया और वे भी दुखपूर्ण, उनसे मानव का हृदय रो पडता है। बाबा की सहनशीलता का बाध लगता था ढहने लग गया। उन्होने अश्रुपूरित नेत्रो से अपनी बात जारी रखी।

मेरे हृदय को सुनदा का प्यार नहीं हिला सका। नही चाहते हुए भी शराब पीता रहता। नशे मे कई घटे पड़ा रहता। बेचारी रोती रहती। पडोसी रोटी दे देते और उन्ही के सहारे ये बडी होती रही। भगवान तो बेसहारो का भी होता है फिर मेरे पडसियो ने समझाया कि मैं दूसरी शादी कर लू। मैंने भी बच्ची की जिन्दगी का ध्यान रखते हुए एक विधवा से शादी कर ली। अपनी आदतो मे सुधार करने की कोशिश की। चौपाटी पर खोमचा लगाने लगा। उससे जरूर मेरी आमदनी बढ गई। पैसा हाथ मे आने लगा तो शराब की लत वापस पडने लगी। पर नई घरवाली ने मुझे बडा बदिश में रखा। बाद मे

समझने लग गया। फिर सुक्खन पैदा हुआ। जिम्मेदारियां बढ़ती गयी और मेरा फालतू खर्च कम हो गया। वैसे पैसा भी खूब कमाया। अब मेरी उम्र ढल गई। काम छोड दिया। आज चार साल हो गये।

मैं यदि शुरू से ही पिता के साथ दुकान पर जमकर काम करता तो आज लखपति होता। सुक्खन की उम्र ही क्या है। दुकान होती तो क्या जरूरत थी कि वह किसी की गुलामी करे लेकिन उसका भाग्य ही नही था।

आज देखते हो ना कैसे घर म रहते हैं। बडे दुख उठाये हैं। खुशी तो बेटे इस बात की है कि हमारी नन्दा ने इन सब के होते हुए भी घर से बाहर कदम नही रखा। इसने तो घर की इज्जत बनाए रखी। सुक्खन भी थोडा बहुत पढ गया। मैंने तो मना भी कर दिया था। लेकिन इसकी इच्छा थी। इसके मास्टर ने भी कहा कि इसे आगे पढाओ।

आपने जिंदगी म बहुत कुछ देखा है। बहुत अनुभव लिये हैं। आपने जहा हजारो रुपया खर्च किया है वहा एक एक समय का आटा भी ला कर खाया है। लेकिन एक बात यह कि आपने सारी जिन्दगी का क्या साराश निकाला। आपको सारी जिन्दगी मे कैसा महसूस हुआ।

जिन्दगी मे सब कुछ अपनी मेहनत स होता है। पराया पैसा दो चार दिन सुख देकर साथ छोड देता है। मैंने जब तक बाप का पैसा था कोई चिन्ता नही की। पानी की तरह बहाया। जहा एक रुपया बहुत था दस रुपये फेंके लेकिन उससे कुछ भी नही हुआ। अब सोचता हू तो लगता है जिन्दगी मे सभलकर चलना होता है। जहा कदम चूके और फिर उठना बहुत मुश्किल हो जाता है। थोडा और चलना है सो चल रहा हू। बस एक इच्छा है नन्दा की शादी हो जाये।

ऐसी कोई बात नही है बाबा सब समय की बात है। अब सुक्खन कमाने लगा है। ऐसा कई लोगो की जिन्दगी म होता है।

क्या फायदा ऐसी अक्ल का। अब कुछ भी नही कर सकता। बैठा दिन गुजार रहा हू।

आदमी कुछ भी करता है अपनी जवानी मे वह अन्धा होकर करता है। उसको आगे की कोई चिन्ता नही होती। वह नही सोचता जो कुछ भी कर रहा है उसका भविष्य पर क्या प्रभाव पडेगा। आने वाली पीढियां क्या कहेगी समाज क्या कहेगा। करता जाता है। पश्चाताप करने से होता कुछ भी नही है। इसी बात को अपनी युवावस्था में सोचे तो इस प्रकार की नौबत ही सामने नही आये। मेरा एक छोटा भाई है बाबा। नाम पवन है। अभी तो अटठारह बीस साल का ही है। शराब पीता है। सारे शहर मे झगडे करता है और जुआ भी खेलता है।

खराब बात है। बाप के नाम के साथ खुद की जिन्दगी खराब कर लेगा। तुम उसे अपने पास रखलो, सुधर जायेगा दो पैसे कमा खायेगा। अभी बच्चा ही है।

वैसे बाबा, पिताजी का पत्र आया उन्होने लिखा है अब वह अपने कामसे काम करता है। दो चार साल मैं घर पर रह नही पाया। बाहर ही होस्टल मे रहकर पढा। घर पर सभालने वाला कोई था नही सो वह धीरे धीरे बिगडता रहा। सुधर जाये अच्छा है, नही तो उसमे मेरी कोई ज्यादा रुचि नही।

दिल टूट जाता है फिर भी भाई ही तो है वह बुरा है तो तुम्हारा है, अच्छे काम करता है तो तुम्हारा। सुधर गया तो जिन्दगी भर तुम्हारे गुण गायेगा कि बडे भैया ने उसे नरक के रास्ते से हटा लिया।

उसकी जो किस्मत होगी वही होगा।

भगवान अच्छा ही करेगा। एक मिनिट आया। अरे नन्दा, ओ नन्दा।

बाबा, आ जाओ बन गयी।

आओ बेटे, खिचडी बन गयी। नन्दा बुला रही है तुम्हारे को।

राजेश बिना इच्छा के होने हुए भी बाबा के साथ चला और बोला, बाबा बेकार ही तकलीफ दी सुनन्दा को।

नही बेटे उसमे क्या बात है।

१६

पूरी रात न जाने क्या क्या विचार आते आते रहे। एक पल को भी राजेश सो नही पाया। हर क्षण लगता था कि उसका अपमान करने की तैयारी मे हो। रह रहकर पूरी रात उसे कमरे के बाहर लोगो की बातें याद आती रही। गयी रात की बातों मे एक डर था बदनामी थी और फिर अपमान। जिनको वह किसी भी हालत मे अपने पास नही फटकने देना चाहता था। रात भर आंखे तारे गिनती रही, हृदय डर से धडकता रहा। राजेश सुबह जल्दी ही घर से निकल पडा था। क्या करता वहा बैठे बैठे। सुनन्दा आती, बातें, हसी मजाक करती फिर ये दुनिया वाले उगली उठाते ताने कसते। इन सबसे बचने के लिये घर से जल्दी निकलना ही उचित समझा। वह पैदल चलता चलता बहुत दूर आगया। लेकिन पैदल चलने वाले के लिये बहुत चल लेने पर भी मजिल दूर ही लगती है। महानगर मे ऐसाही है।

महानगर ने अपनी अंधेरे की चादर को उतार फेंका था और उसमे रहने वाले लोग अपने अपने कार्यो से घर से निकल पडे थे। सडको पर धीरे धीरे चहल पहल हो चली थी। पहिले का दृश्य लगता था महानगर मे रहने वाले लोगो की, कारो की, बसो की दिन मे होने वाली तेज आवाजें कहा चली गयी। एक बिलकुल शात वातावरण और दूर तक बुना हुआ सन्नाटा। बिना आवागमन के सडकें लगता था खाने को दौड रही हो। चौडी चौडी सडकें। कही कही लोग किनारे पर रात गुजारने के विचार से सो रहे थे - आसपास कुत्तो ने भी अपना स्थान बना रखा था। थोडी थोडी देर बाद जरूर कोई कार तेजी से पास से गुजर जाती थी। होटलो से आरकेस्ट्रा की हल्की हल्की सी आवाजें आ रही थी। आवाज मे जादू था। जिसने अमीर लोगो को मनचलो को रात देर बाद तक घर जाने की इजाजत नही दी। वे बैठे सगीत की स्वर लहरियो और सुरा के सहारे अपना समय बिता रहे थे। अमीर लोगो के लिये समय भी एक समस्या होता है उसको वे बिताना चाहते हैं लेकिन वह बीतता नही।

इसके विपरीत गरीबो के साथ भी ऐसा ही है। वे समय को व्यतीत करते है आसुओ के सहारे, भूखी, नगी जिन्दगी के सहारे। लेकिन अमीर और गरीब दोनो की एक सी समस्या मे बडा अन्तर है।

राजेश अन्य दिनो के समय से पहिले ही कार्यालय पहुच गया।

नौकर को आश्चर्य हो रहा था। उत्सुकता नहीं रोक सका और पूछ बैठा- नमस्ते, बाबूजी। जल्दी आ गये। और बाबू लोग तो देर तक आते हैं।

हा ऐसे ही कुछ तबियत बेचैन थी। सो घूमता फिरता चला आया। घर पर भी क्या करता। यहा बैठा कुछ काम कर लूगा।

घर पर कोई नही है क्या ?

घर पर कौन। मैं और मेरा कमरा भला। शादी की नही। वहा रहना न रहना बराबर है। अच्छा देखो, तुम नीचे जाकर दो प्याले काफी ले आओ और अपनी चाय वहीं पीकर आ जाना। कुछ नाश्ते के लिये भी ले आना।

अभी ले आता हू।

राजेश नौकर के जाने के बाद विचारो मे खो गया और देर तक सोचता रहा उसे अनुभव हो रहा था कि बाबा उसे डाट रहे हो। उन्हो उन लोगो की बातो पर विश्वास कर लिया हो। स्वाभाविक है बस्ती मे शुरू से रहने वालो पर अधिक विश्वास करेंगे या मुझ पर जिसे आये तीन चार महीने ही हो पाये हैं। उसके मस्तिष्क मे इन बातो के अलावा और कोई बात थी ही नहीं, कभी सोचता मकान कही और लेलूं। लेकिन कहा मिल पाता है न जाने कैसे भाग्य से कमरा मिला था।

ले आया, बाऊजी।

यहा रख दो। तुमने चाय पी ली।

जी, आप लीजिये सुबह से कुछ खाया नही है। दफ्तर का टाइम हो गया।

हा, दस बज रहे हैं। अब लोग आ ही गये होंगे। मेरा भी जी लग जायेगा। मेरी तबियत अच्छी नही है। क्या मेरी कोई डाक आयी ?

हा आपकी एक पार्सल और रजिस्ट्री आई है। मैं भूल गया।

देखें क्या है ?

अभी लाया।

राजेश ने नाश्ता लिया और गये दिन के बचे कामो को देखने मे लगगया।

ये लो बाउजी।

दिल्ली से आयी है। किताबें छपकर आ गई है। इसे खोलो। अरे चैक भी। चलो अच्छा हुआ। हा, देना देखें।

हलो, राजेश, गुड मानिग।

गुड मानिग, बॉस।

बैठो-बैठो। आज जल्दी।

जी हा, ऐसे ही कुछ काम था नही घर पर, सो चला आया और आजकल काम भी काफी रहता है।

अच्छा है दिल लगाकर काम किये जाओ। देख रहा हूँ अच्छा काम करते हो। मुझे जैसी आशा थी वैसे ही तुम हो। हा– एक काम था तुमसे।

जो कहिये।

मैं घर से चला था तो वाइफ ने कहा था उन्हे पाच हजार रुपये की जरूरत है सो मैंने शाम को बैंक से निकलवाकर देने की कही थी। लेकिन मुझे जरूरी काम से पूना जाना है। हो सकता है कि शाम तक नहीं लौट पाऊ। कोई कान्फ्रेन्स है वहा से कल सुबह तक आना होगा, ये चैक लो घर पर दे देना। पते के लिये काड रखलो। अभी ग्यारह बजे प्लेन से जा रहा हू। सोचता हू काम जिम्मेदारी से कर दोगे।

जी, आप फिक्र न करें। घर पहुचा दू गा।

अपने प्रेस के कार्यकर्ताओं से ऐसे काम नहीं करवाता हू क्योंकि तुम जानते हो आजकल किस पर भरोसा करें किस पर नही। जमाने की हवा ही ऐसी है। कोई अपनी जिम्मेदारी, ईमानदारी से समझता ही नही।

तुम काम कर देना। थैंक-यू।

अच्छा बॉस। अभी चला जाता हूं।

अरे, ये आपकी बुक्स हैं।

जी आज ही आई हैं। आपसे मैंने बताया था ना। ये ही हैं।

बहुत सुन्दर। बहुत अच्छे। अच्छा इनमें से एक किताब मैं ले जाता हूं, वहां समय मिला तो पढ़ूंगा।

जरूर बॉस।

सुनन्दा और उसको लेकर लोगों द्वारा बनाई गयी बातों के कारण, वह बेचैन था सो उसका मन कार्य में नहीं था। जल्दी से नीचे उतर आया और टैक्सी वाले को रोका – टैक्सी, टैक्सी।

जी कहा।

मालवा रोड अगारी लेन पर रोक लेना।

जी, हजूर।

बाबूजी, उधर सामने चले जाइये।

अच्छा भाई। ये लो।

रुपये देकर राजेश चल पड़ा। उसने डॉ० मनीश की नेम प्लेट देखी। दूसरे माले पर मकान था। लिफ्ट से ऊपर पहुंचा। घंटी बजाने पर नौकर आया।

कहिये।

डॉ० साहब के घर में है कोई।

मेम साहब है। आइये आप बैठिये, बुलवा देता हूं। अभी दो मिनिट में।

राजेश करीने से सजाये सोफे पर बैठ गया। कमरे में देश के बड़े बड़े नेताओ, साहित्यकारों के साथ डा० मनीश के चित्र लगे थे। कमरा सुन्दर ढंग से सजाया हुआ था। फर्श पर बड़ा कीमती कालीन लगा हुआ था। राजेश को लगा कोई आ रहा है। वह सावधान होकर बैठ गया। जैसे ही आगन्तुक ने कमरे में प्रवेश किया। राजेश को लगा कि कहीं वह स्वप्न तो नहीं देख रहा। नीरजा उसकी आंखों के सामने थी।

हलो, राजेश, कैसे हो ?

राजेश,से कुछ भी जवाब नहीं बन पड़ा। चुपचाप नीरजा को देखता रहा। उसे लगा उसका मस्तिष्क घूम रहा है उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है।

हलो, राजेश, क्या देखे जा रहे हो।

हां अच्छा हूं, देख नहीं रही आप। आप कैसी हैं ?

ठीक हू । तुम तो कुछ चौंक से गये ।

नही तो, यो ही अचानक आपको देखकर कुछ सोचने लगा था ।

बम्बई कब आये ।

ज्यादा समय नही हुआ । लेकिन क्या तुम्हें कोई आश्चर्य नही हुआ मुझे यहा देखकर ?

आश्चर्य जैसी कोई बात नही । तुम कोई जादू का खेल या अजूबा तो नही । डाक्टर साहब ने तुम्हारे बारे मे कुछ दिनो पहिले बताया था तो मैं समझ गयी थी। इसलिये आश्चर्य जैसी कोई बात नही । प्रेस का काम कैसा चल रहा है ।

जी, अच्छा ही चल रहा है । अब तो नीरजा जी कहना पडेगा । उनके नौकर हैं । तुमने कभी डाक्टर साहब से मेरे लिये अधिक जानकारी नहीं की ।

क्यो इसकी जरूरत ही क्या है जब मैं जानती हू कि डाक्टर साहब के प्रेस के आदमी हो तो इससे ज्यादा और क्या जानकारी बच जाती है ।

नही मेरा मतलब था कि तुमने कभी मुझ से मिलने की सोची भी नहीं ।

एक बार जरूर कहा था उनसे । फिर दुबारा मैंने [illegible] सोचकर उनसे कहा नही और काम कोई था नही तुम्हारे से ।

एसी तो कोई बात नही थी जो तुमने [illegible] भी नहीं ।

सोचने की बात क्यो नही ? हो सकता है [illegible] और कुछ भी झूठी सच्ची उनसे कह बैठो । कई [illegible] तो अपने प्रेम में असफल हो जाने के बाद अपनी प्रेमिका का [illegible] आत्म सम्मान मानते हैं ।

राजेश की आखें डबडबा गयीं । [illegible] कोई चीज नही । अपने को [illegible] आखो से आसुओ की दो चार बूदें [illegible] गयी । स्वर मे स्थिरता लाते हुए [illegible] जो ऐसा सोचती हो ।

मैंने तुम्हारे [illegible] मे कह रही थी । [illegible]

दार्शनिक । [illegible] विश्वास नहीं है मुझ पर ।

[illegible]

नही धन्यवाद। अभी काफी पीकर चला हू। ये चैक डॉ साहब ने भेजा है।

अच्छा किया उन्होने। वे कब आ रहे हैं।

आज पूना गये हैं। कल तक वापस लौटेंगे।

इस प्रकार का कोई कार्यक्रम नहीं था फिर कैसे।

पूना मे सम्पादको की कोई कान्फ्रेंस है।

कोई बात नही। अच्छा काफी लो।

बस, धन्यवाद।

नही नही काफी तो पीनी ही होगी।

यह लो।

राजेश ने बे मन से जल्दी जल्दी काफी पी और उठ खड़ा हुआ

अच्छा नीरजा। चलूगा।

अच्छा।

राजेश तेजी से उतर आया और टैक्सी से प्रेस को चल दिया।

उसका हृदय नीरजा के व्यवहार से तड़फ उठा था। उसे लगा कि दुनिया मे प्यार नाम की कोई बात नहीं है। जो कुछ है स्वार्थ, चालाकी, बेईमानी।

उसको बाहर पीछे की ओर भागती इमारतें बडी भयानक, घृणापूर्ण लग रही थी। जी कर रहा था कि वह उडकर ऐसी जगह पहुँच जाये जहां उसे शांति मिल सके। लेकिन कहां ऐसी जगह है उसे नौकरी तो और नही मिल सकती। कहा जाये? क्या करे? टैक्सी रुकी और वह प्रेस मे ऊपर चला गया।

कहो क्या हाल हैं। आज तो पिक्चर देखेंगे होटल मे ही खाना खायेंगे। नौकर ने बताया तुम्हारी किताबें छप गयी। कहो छुट्टी ले लू।

अरे मेरे यार, क्या बात हो गई? सीरियस है।

नही यार, जिन्दगी मे हर ओर परेशानियां ही परेशानिया। पता नही जिन्दगी मे साली शांति मिलेगी भी या नही।

अरे, गुरू बात भी बतायेगा या यो ही बके जा रहा है।

बताऊ। पहिले नौकरी नौकरी रोता था। नौकरी मिल गयी फिर भी परेशानिया वैसी की वैसी।

तेरे से क्या पूछें और तू बतायेगा भी क्या। पूछ रहा हू, बात क्या है हो सकता है तेरी मदद करें। कोई लफड़ा हो गया है क्या?

नहीं यार। अभी-अभी बॉस के घर गया था। उनकी वाइ फ।

राजेश को एकदम खयाल आया कितनी बडी भूल कर रहा है। एकाएक चुप हो गया।

क्या हुआ, बॉस की वाइफ ने कुछ कहा क्या।

नही यार। ये बात नही। चलो छोडो।

राजेश ने जल्दी जल्दी कुछ लिखा और अपने सहकर्मी को देते हुए कहा।

ये एक काम कर देना भाई। डॉ साहब आये तो मेरा ये इस्तीफा दे देना।

इस्तीफा, आखिर क्या क्या बात हो गई। गये दिन तो ठीक थे। पागलपन का दौरा आ गया है क्या ?

हा कुछ ऐसा ही मान लो।

ऐसे नही सोचते। जल्दी मे कोई काम नही करना चाहिये। सोच समझ कर करना चाहिय। ऐसी नौकरी कैसे छोडी जा सकती है। पागलपन मत करो।

नही यार। जी नही करता यहा रहने का। बाहर जाऊगा।

पर गुए आये चार महीने पूरे नही हुए और दिल नही लगता। लगता है घर वाली की याद तडफा रही है।

शादी किसने की है और अपना इरादा भी नही है।

फिर भी, ऐसी क्या बात हो गई।

यार, मत पूछो। नही बता सकता।

हमे नही बतायेगा।

तुम्हारे काम की बात नही। बेकार है तुम्हे बताना।

चल छोड, चाय पीले। अभी काफी पीकर आया हू डॉ साहब के यहा।

बॉस के यहा, उनकी वाइफ से पीकर आया है। सुना है अच्छी है।

अच्छी है, बहुत अच्छी है।

तो क्यो नही कहते कि उसकी याद आ रही है।

बेकार बात न करो। अपना बॉस है उसके लिये ऐसा नही सोचना चाहिए।

ज्यादा हिमायती बनना ठीक नही। नहीं तो रवि बाबू को जैसे बास का चमचा कहते हैं, तुम्हें भी कहने लगेंगे।

अच्छा यारो, छोडो मुझे माफ करो।

राजेश चुपचाप अपनी टेबल पर बैठ काम करने लगा। मस्तिष्क मे बार बार नीरजा, सुनन्दा, नम्रता के चित्र एक के बाद एक आते रहे।

२०

राजेश का मस्तिष्क केन्द्रित था नम्रता पर। जल्दी से बबई छोड देना चाहता था। दार्जिलिंग मे सिन्हा साहब के टी गार्डन्स मे नौकरी मिल ही जायेगी।

अरे, राजे बेटे।

हा बाबा। कहा थे। देर हो गई।

आज सुक्खन को पगार मिली थी। नदा कह रही थी उसे बाजार से कोई साडी-वाडी खरीदनी थी। ले आई है।

अच्छी बात है।

नदा, घर चलो। मैं बाबू के पास बैठा हू। उनका खाना भी बना लेना।

अच्छा बाबा।

अन्दर आओ ना बाबा।

बाहर अच्छी हवा आ रही है। यही बैठ जाओ।

बाबा आज चार बजे वाली गाडी से मैं बाहर जा रहा हू। कही से दो हजार रुपये आये है एक हजार रुपया आपको दे देता हूं। सुनदा की शादी कर देना।

नही। बाबू मुझे नही चाहिये रुपया। कहा से लौटा पाऊंगा। सुक्खन की पगार भी इतनी नही जो आपको दे देगा। शादी के लिये मैंने एक नेक लडका देख लिया है। अच्छे घर का है। फूटी कौडी की भी माग नही कर रहा। जैसे तैसे दो पैसे का जुगाड हो जाये तो नदा बेटी के हाथ भी पीले कर दू।

बाबा आपको मैं उधार तो दे नही रहा। आप पिता के समान हैं। क्या पिता को दिया रुपया वापस लिया जाता है।

इतनी रकम कैसे लेलें। एक बात बताओ, वापस कब आओगे।

पता नही कब लौटना हो? क्योंकि मैं नही लौटने के लिये ही जा रहा हू। आपकी याद, जिस दिन आपसे मिलने की इच्छा होगी चला आऊंगा।

जा क्यो रहे हो। समझ में नही आया। कल तक कोई बात नही थी। फिर अचानक जाने की इच्छा कैसे हो गई। तुम्हारे साथ अभी कोई ज्यादा समय

नही हुआ। प्रेम हो गया है जाने का विचार दिमाग से निकाल दो। नौकरी छूट गयी है क्या ?

मैंने उसे छोड दिया है। बाबा जहा तक यहा रहने का प्रश्न है मेरे लिये मुश्किल है। मैं किसी भी हालत मे नही रह सकता। नौकरी का क्या है बाबा लगन मेहनत, हिम्मत होनी चाहिये हजार रास्ते खुले है। बाबा, सुनदा की शादी कर देने से आपका काफी भार उतर जायेगा।

मेरी इच्छा है जल्द से जल्द शादी हो इसकी, अपने घर जाये।

रुपये पैसे की चिन्ता नही करो।

बेटे, एक सप्ताह ठहरना पडेगा, यहा से मैं गाव जाऊ गा और फिर लडके के बाप से सबध पक्का करके आऊ गा। फिर शादी कर देंगे। तुम भी शादी के मौके पर रहोगे तो बडी शोभा रहेगी।

शादी मे रुक नही सकू गा। मुझे आज ही जाना है। आपके, सुनदा के साथ मेरी शुभ कामनायें हैं। सब काम शुभ हो जाये, ढग से हो जाये।

नही बेटा तुम यहा नही रहोगे तो समझो शादी नही करेंगे।

यदि मुझे अपने बेटे की जगह मानते हो, तो आपको मेरी सौगन्ध है, मैं नही रुक सकता। आप खुशी के साथ शादी करिये। बस्ती मे रहते इतने दिन हो गये। किसी ने आकर ये नही पूछा कि मैने खाना खाया भी था या भूखा ही सो रहा था रात।

लगता है सुनदा आवाज लगा रही है। खाना बना लिया होगा। चिल्लाती है तो रुकती नही। जब तक कि उसके पास न पहुचे। अरे नदा बेटे आ गये हम।

पहिले हाथ धोकर आ जाओ।

उसके पिता कहने लगे- बेटी बाबू तो आज बाहर जा रहे हैं।

तो मैं क्या करू जा रहे हैं तो कौन रोकता है।

अरे बात तो सुनले पूरी। कहते है अब वापिस हो सकता है नही आयेंगे।

क्या वापिस नही आयेंगे ? आखिर क्यो ? दो चार दिन के लिये समझ रही थी मैं तो। लेकिन क्यो क्या बात हो गई जो जाना चाहते हैं। मैं तो समझी थी मजाक कर रहे हो तुम।

नही, नही सचमुच ही आज जाने की कह रहे हैं। मैं तो अब इनको रोक नहीं सकता। कहते हैं अब बम्बई से जी उचट गया है।

क्यो ? बाबूजी । क्यो उचट गया है जी यहा से । चिट्ठी आई थी ना अभी थोडे दिन पहिले । जरूर उनके पास जाने की सोची है तुमने ।

तुमने कही सच है कि मैं वही जाऊगा । मुझे उनके पिता की कम्पनी मे निश्चित ही नौकरी मिल जायेगी । चाय के बगीचे हैं उनके ।

यहा के लोग पसन्द नही आये क्या ? बस्ती सचमुच बहुत गन्दी है । तुम बाबू लोगो के लायक है कहा ।

मुझे इन बातो से कोई फर्क नही पडता । जहा मैं काम करता हू वह खुद मुझे अच्छा सा मकान दिलवा रहा था । मैंने लिया नही । मुझे गरीबों के बीच प्रेम के साथ रहने मे मजा आता है । मैने जानकर ही यहा मकान लिया था ।

हो क्या गया, अब मन भर गया । चल दिये ।

मेरे से सबधित कोई बात है और कोई खास बात नही । तुम्हारा बडा प्रेम रहा मेरे पर । तुम्हारे बनाये बेसन के पराठे तो कभी भूल नही सकता ।

राजेश ने देखा कि सुनन्दा की आखो से न जाने कब से आंसू गिर रहे थे । रोशनी की कमी के कारण वह देख नही पा रहा था अब तक । राजेश के हृदय मे प्रेम का सागर उमड पडा ।

राजेश ने सुनन्दा की आखो मे आसू देख उसे प्रसन्न करने के विचार से कहा वैसे मैं कुछ दिनो बाद तुमसे, बाबा से मिलने आ जाऊगा । जब यहा मन नही लगता तो क्या करूं । तैयारी करना है ।

आओ चलें । बेटी तुम खाना खालो । सुक्खन के लिये ढक कर रख देना ।

राजेश और सुक्खन के पिता दोनो बाहर आ गये । राजेश ने कमरा

खोला और मोमबत्ती जलाई ।

बाबू लखनऊ जाओगे, वापस ।

हा फिर दार्जिलिग । वहा मुझे नौकरी मिल जायेगी ।

ये लो बाबा रुपये समझता हू बहुत होगे ।

बहुत है । बेटा तुम्हारा भगवान भला करेंगे । तुम्हे आये कुछ समय नही हुआ और चल भी दिये । जब मैं पैसे वाला था तब तुम आये होते तो देखते कितना बडा दिल है मेरा । तुम आये ही ऐसे समय जब मैं हर ओर से बर्बाद, निराश हो चुका हू । बेटा सुनन्दा का भार जो मेरे सिर पर था । उसकी वजह से तो मैं कुछ भी नही कर पाने के कारण निराश हो चला था । अपनी जिन्दगी के दिन जैसे तैसे गुजार रहा था । तुमने मेरा दुख दूर करके मुझे नयी जिन्दगी दे दी है ।

ऐसी कोई बात नही आप फिजूल ही दिल छोटा कर रहे हो। भगवान सब देता है।

यह बात भी ठीक है।

क्या कर रहे हो चाचा।

सुक्खन आ गया है।

आओ सुक्खन।

कहा की तैयारी हो रही है। आज आने मे देर हो गई। सेठ का हुकम था काम मे लगा रहू सो वही काम करता रहा।

बाबू लखनऊ जा रहे हैं।

लेकिन क्यो ?

ऐसे ही जा रहा हू सुक्खन। कुछ काम था।

काम, तो सामान ले जाने की क्या जरूरत है।

वहा नौकरी मिल गयी है। इससे भी ऊंची नौकरी।

चाचा, यहा भी क्या कम अच्छी नौकरी है तुम्हारी।

बात ही कुछ ऐसी है।

बाबू मानेगा नही। तू जा कोई टैक्सी वाले को बुला ला। पुल के पास ही रुकवा देना। हम अभी आ रहे है।

बाबा, इस महीने का किराया लो। सेठ जब आये तो उसे दे देना।

ठीक है। मैं टैक्सी को रोकता हू। तुम जल्दी आ जाओ।

आओ सुनन्दा। हमारी तैयारी हो गई चलने की। बाबा, तुम्हें भी जल्दी ही कही भेज देगे। क्यो बाबा ठीक है ना।

हा, भगवान ने चाहा तो जल्दी ही ब्याह हो जायेगा।

अच्छा सा दूल्हा लाना, इसके लिये।

राजेश ने देखा कि सुनन्दा पर इन बातो का कोई असर ही नही था। चुपचाप नीचा मुह किये खडी थी। उसमे कोई गति नही थी।

सुनन्दा सोचना चाहिये मैं एक राहगीर था। आज नही कल या फिर और कभी यहा से जाना तो था ही। जिन्दगी भर तो यहा रहना नही था। राही का क्या, दो मिनिट बैठे, नींद ली और आख खुलते ही चल पडे। इसलिये ऐसा नही सोचते।

इसका दिल कमजोर है। नन्दा बेटे, ऐसे नहीं।

सुनन्दा की आखो मे राजेश ने हल्की हल्की रोशनी मे प्रेम का उमडता सा सागर देखा। हल्की रोशनी मे उसे लग रहा था मानो डूबता सूर्य हो और वह सागर के किनारे बैठा उसकी गिरती उठती चचल लहरो को देख रहा हो लेकिन उसकी आखो मे समुद्र लहरो की सी चचलता के स्थान पर एक गहन निस्पन्दता थी, स्थिरता थी जिसे बडी सरलता से सुनन्दा की आखो मे देखा जा सकता था। राजेश भी अपने को सयत नही कर पाया। उसकी आखो से भी दो बूदे बह निकली। उसे लगा कि वह भी इन लोगो के बहुत ही निकट है।

आओ, सुखन इन्तजार कर रहा होगा।

हा, बाबा। अटैची मुझे दे दो।

कोई बात नही। नन्दा, मैं बाबू को पहुचा कर आता हू। तुम घर बैठना।

अच्छा बाबू। कब आओगे।

पगली, रोना बन्द कर, फिर बताऊगा।

चलो बताओ।

जितना जल्दी हो सकेगा आऊगा। अच्छा मैं चलू।

जल्दी आना।

खुश रहना, जल्दी ही आऊगा। चलें। बाबा।

राजेश ने सुनदा की ओर देखा और आगे बढ गया। सुनदा उसे देखती रही।

राजेश उसके लिये राहगीर था, जो दो क्षण उसके पास ठहरा और चल दिया वह घर की सीढी पर बैठ गयी।

२१

ट्रेन पूरी गति से दौडी जा रही थी।

डिब्बे मे सब लोग जो बहुत रात तक जागते हुए ट्रेन का इन्तजार कर रहे थे निद्रामग्न बिना किसी प्रकार की परवाह किये सो रहे थे। उनके चेहरे पर किसी भी प्रकार की चिन्ता का भाव नहीं था। ट्रेन अपने नियत समय पर चलदी।

राजेश को नींद नही आ रही थी। वह खिडकी के सहारे अपनी गर्दन लटकाये बडे ही आराम से लेटा हुआ था। लगातार बिजली के जल रहे बल्ब को देख रहा था। कभी अनायास भाव से अपने डिब्बे मे सो रहे लोगो की ओर एक दृष्टि डाल देता था। ट्रेन के चलने की छुक्-छुक् छुक् के अलावा किसी और चीज की आवाज नही थी। हवा के झोके तेजी से उसके सिर पर लग रहे थे।

सूर्य की प्रथम रश्मियो ने पृथ्वी पर अपना ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया। उठकर बाहर की ओर देखा। खेतो मे दूर तक मखमली हरियाली फैली थी और उसकी उषाकालीन रक्तिम रश्मिया अपना अलग ही सौंदर्य बिखेरे थी। लगता था सूर्य की रश्मिया बडे दुलार के साथ हरे भरे खेतो को एक लम्बी रात के बिछोह के बाद अपने अक मे ले रही थी। दूर तक दिखाई देने वाले हरे खेत बडे ही मनमोहक प्रतीत हो रहे थे।

उसे याद हो आया सुनन्दा के पिता ने उसके दिये रुपयो और आदर का कितना आभार माना। उन्हें जब कई बार कहा तब जाकर वे घर जाने को तैयार हुए। जाते-जाते उनके हृदय मे कृतज्ञता के तूफान ने उन्हे न जाने क्या प्रेरणा दी, वे राजेश के चरणो मे झुक गए। तब उसने उन्हे उठाया और गले से लगा लिया।

राजेश को नींद सी आने लगी उसने खिडकी डाल दी और सो गया।

राजेश की नींद खुली तो रात का समय हो चला था। दिन भर यात्री चढते उतरते रहे थे लेकिन उसकी नींद मे कोई बाधा नही आई। स्टेशन पर जब गाडी रुकी तो उसने चाय पी। रात बढती रही अगले स्टेशन पर एक लडकी डिब्बे मे चढी और राजेश के पास आकर बैठ गयी। उसे राजेश ने जगह दे दी।

उसने आगे होकर पूछा- आप कहा जा रहे हैं।

लखनऊ जा रहा हू और आप।

खुशी है हमसफर ही हू। वक्त अच्छा कट जायेगा।

आप कैसे जा रही हैं।

मेरी बडी बहिन वहीं रहती हैं। उनकी शादी वही हुई है। मेरे जीजा जी एक कॉलेज मे लेक्चरार हैं।

आप क्या करती है ?

मैं बडौदा मे एक किंडरगार्डन स्कूल मे पढ़ाती हू।

कैसा रहता है वहां बच्चो को पढ़ाना।

यह तो साधारण बात है बहुत अच्छा रहता है। यह जरूर है थोडा महगा पडता है। बाकी तो बडी सुविधायें दी जाती हैं। मैंने बडौदा से ही चाइल्ड साइकोलोजी

म एम. ए पास किया। बाद मे एक ट्रेनिंग ली। इसके बाद नौकरी मिल गयी।

साइकोलॉजी मे किया है आपने एम ए।

शुरू मे फिलासफी मे बड़ा इन्टरेस्ट था। बाद मे कहिये शौक रहा नही इसलिये मनोविज्ञान मे ही एम ए. करना उचित समझा।

और क्या हॉबीज हैं आपकी।

कोई खास नहीं। उर्दू की शेरो शायरी म दिलचस्पी रखती हू। हिन्दी लिटरेचर म भी शौक है।

तो आप शायरी मे शौक रखती हैं तो जरूर कुछ लिखती भी होगी।

कुछ लिखा है। लेकिन लगता है जो कुछ भी लिखा वह दिल को ज्यादा सुकून नही दे पाया है। अब तो जी करता है और कुछ लिखा जाय जिसम एक कशिश एक जबरदस्त दर्द हो।

कहने का मतलब कि अब आपको रोमांटिक शायरी म शौक नहीं रहा।

हा ठीक है। आप क्या करते हैं।

बेकार हो मे फर्स्ट डिविजन हिन्दी म एम ए किया। नौकरी करन की इच्छा नही है। दार्जिलिंग जा रहा हू।

दार्जिलिंग किसलिये। वहा कोई बिजनस है आपका।

आपने अच्छा मजाक किया। बिजनेस होता तो नौकरी करने की नौबत ही क्यो आती।

आप पहिले कभी दार्जिलिंग गये हैं।

कुछ समय वहा रह चुका हू।

आप जायें तो मेरी एक दोस्त हैं, उससे मिलियेगा। वहा मि० सिन्हा हैं।

अच्छा, सिन्हा साहब। उन्ही के यहा पन्द्रह बीस दिन रह चुका हू। उनकी लडकी है ना नम्रता।

वह मेरी क्लासफेलो रह चुकी है। आप कैसे जानती हैं उन्हे।

मेरे पिताजी का काटेज है वहा। किसी किसी वर्ष हम वहा गर्मी मे चले जाते है। वही उससे जान पहिचान हुई थी बडी तेज लडकी है।

हा अच्छी है। तेज से क्या मतलब।

कुछ नही यो ही। नेचर अच्छा है इस बार जाना नही हुआ। एक दो महीने बाद देखो जाना हुआ तो आऊगी। मेरा सलाम कहियेगा।

बिना नाम के कैसे कहूगा। आपका शुभ नाम क्या है आपने बताया नहीं।

नीलिमा। आपका ?

राजेश कहते हैं।

आप हैं नहीं, लोग कहते हैं। यदि लोग कहते हैं तो आप मान कैसे लेते हैं।

मैं राजेश हू इसमे कोई शका नही है, लोग कहते हैं।

आप भी अच्छा-खासा मजाक कर लेते हैं।

नेचर ही कुछ ऐसा है। पहिले खूब हसता था। फिर कुछ दो चार बातें ऐसी गुजरी हैं कि हसना हसाना कम हो गया। कभी-कभार जब मूड बन जाता है जी करता है दिल खोल के हस लिया जाये। पता नही फिर कितने दिन हसने की इच्छा ही न हो।

ये बात भी कम मजाक नही। न जाने कितने दिन हसने की इच्छा न हो।

खैर छोडिये इन बातो को आइये कुछ खाना खा ले।

धन्यवाद। आप खाइये।

आप तकल्लुफ कर रहे हैं।

आप कहती हैं तो ।

दार्जिलिंग मे मेरा जरूर नमस्ते कहिये। उससे मिले समय हो गया। क्या आपका इरादा वहीं सर्विस करने का है ?

हा कुछ ऐसा ही है। देखते हैं वहा भी मन लगता है या नही। मुझे किसी के अधीन काम करने की आदत नही।

अच्छा तो जो नौकरी करते हैं उनकी आदत होती है।

नही मेरा मतलब था कि मेरा स्वभाव कुछ ऐसा है कि मै नौकरी करने के पक्ष मे नही। स्वतत्रता अच्छी लगती है। पत्रो म लिखने से जो थोडा बहुत मिल जाता है वह मेरे लिये पर्याप्त रहता है। मेरा विशेष खर्च भी नही है।

स्वतत्र स्वभाव वाले लेखक को क्या परेशानियां हो सकती है।

ऐसी ही जिन्दगी है। कुछ न कुछ चलता रहता है। लगता है नीद आने लगी है। मैं सामने वाले बर्थ पर बैठ जाता हू।

नही, ठीक है।

लेट जाइये। अभी कोई समय भी नही हुआ है। मै तो दिन भर सो रहा था अब देर तक नींद नही आयेगी।

नीलिमा को नीद आ गई।

२२

शाम हो चली, सारे दिन वर्षा हुई थी। कोहरा छाने लगा, एक धुंधलका सा बन गया जिसमे दूर की चीजें छिप गयी। पास की चीजें भी बड ध्यान से देखने के बाद दिखाई पडती थी।

राजेश दिन से नम्रता का इन्तजार कर रहा था। बाहर कार के रुकने की आवाज आई। निश्चित था नम्रता ही है।

उसे देखते ही नम्रता बोल पडी–हलो कब आये।

सुबह ग्यारह बजे यहा पहुँच गया था। पहिले दोस्त के बगले पर पहुँचा। दिन मे करीब दो बजे यहा आ गया था और तुम्हारा इन्तजार कर रहा था।

आज शरद की बथ–डे थी। पिकनिक का प्रोग्राम था। सो सुबह से ही गई हुई थी। मम्मी और डैडी देहली गये हुए हैं।

मुझे नौकर ने बता दिया था और क्या हालचाल हैं?

हमारे हाल तो अच्छे हैं जी रहे हैं। अपने कहो। मेरा पत्र मिला था।

उसी पत्र ने तो मुझे यहा तक ला छोडा है।

कैसे रहे बम्बई मे। नौकरी तो अच्छी थी।

नौकरी तो बहुत अच्छी थी। लेकिन जिनके यहा नौकरी करता था उनकी घरवाली नीरजा थी। सो मन नही लगा और नौकरी छोड आया।

अच्छा। नीरजा की शादी वहा हुई है। कमाल है अच्छा लडका फास लिया। कुछ कह रही थी मेरे लिये।

कोई खास नही ऐसे ही पूछा था कैसी है। और भी कुछ। मेरा मन *लगना बडा मुश्किल था वहा। तुम तो मेरी हालत जानती ही हो।* दिल भी भर गया था बम्बई से। रोज रेलमे यात्रा कभी बसमे कभी टैक्सीमें। यांत्रिक जिन्दगी। पूरी तरह से घबरा गया था वहा से।

नीरजा से जब कोई सम्बन्ध नहीं। जब कोई बात नही तो न जाने तुम क्यो उसके लिये सोचते हो। यदि वह तुम्हारे प्रेस के मालिक की पत्नी थी तो उससे

क्या होता है। तुम अपनी मेहनत का पैसा लेने थे कोई दान तो नही। तुम समझने की कोशिश क्यो नही करते। ठीक है तुमने उसे चाहा अब उसकी शादी हो गई बात खतम हुई।

ये सब बातें नम्रता, कहने मे दूसरों के लिये बडी सरल लगती हैं जब स्वय इस अनुभव से गुजरोगी तब जान पाओगी कि क्या हालत होती है।

मैं तुम्हारी तरह ऐसी बातो की चिन्ता नही करती। मुझे किसी के प्यार बन्धन मे बधा रहना भी पसन्द नहीं, चाहे वह मेरा पति ही क्यो न हो। सबकी अपनी-अपनी सीमायें हैं, सब को अधिकार है कि वह अपने जीवन को सुख से बिताए। इन सब चीजो मे किसी का भी बन्धन नही होना चाहिये।

नीरजा के प्यार मे मैं बधा हुआ नही हू। ये जरूर है कि उसे देखने के बाद मेरा मन अशान्त हो जाता है, मुझे कुछ भी समझ नही आता।

यही कह रही हू जो कुछ तुम सोचते हो गलत है, बेकार है। तुम्हारा सोचना न सोचना सब बेकार है। जिस राह पर तुम्हे जाना ही नही उसके लिये क्या सोचना। अच्छा यही है कि प्रसन्न रहो। क्या रखा है बेकार की बातो मे।

तुम्हारी मित्र मिली थी। नीलिमा।

अच्छा—कैसी है।

ठीक है। तुम्हे याद किया है। प्रशंसा कर रही थी तुम्हारी।

अपने बगले के बाहर जो कॉटेज है न, उनमे से एक उनका है। अच्छी लडकी है उसकी शादी-वादी हो गई या नहीं।

क्या मालूम। मैंने जानना भी नही चाहा।

ठीक थी ना।

हा बिल्कुल ठीक। आने को भी कह रही थी।

अच्छा, लखनऊ मे क्या हालचाल हैं। माताजी-पिताजी ठीक हैं।

हां, अच्छे हैं। पिता रिटायर होने वाले हैं। भाई है वह पढता है उसकी शादी भी कर दी है। जब लखनऊ मे ठहरा था तब मुहुर्त भी था सो करवा दी।

कमाल है छोटेभाई की शादी भी होगई और बडेभाई कुआरे घूम रहे हैं।

बडे भाई को किसी लडकी ने पसन्द नही किया। उसे पसन्द कर लिया एक सुन्दर सी लडकी ने। सो शादी कर दी।

हा तुम्हे किसी ने पसन्द नही किया। यदि तुम्हे कोई लडकी पसन्द करले तो क्या तुम उससे शादी कर लोगे।

ये सोचने की बात है। लडकी कैसी है पढी लिखी भी है या निपट गवार, सब कुछ दखकर यदि समझ मे आ जाये तो जरूर कर लू गा।

और मानलो लडकी हर दृष्टिकोण से अच्छी हो। तुम्हे चाहती हो, पैसे वाली हो, सुन्दर हो तो फिर।

पैसे वाली हो न हो दिल अच्छा होना चाहिये। मुझे क्या लेना दूसरो की सम्पत्ति से। मुझे अपने कर्म, मेहनत पर विश्वास है।

फिर वही आदशवादी बातें।

आदर्श की बात नही। बात पैसे की है। मान लो कोई लडकी पैसे वाली हो और दिल अच्छा न हो तो किस काम की।

एक बात बताओ। मानलो वह लडकी मैं हीहूँ तो तुम्हारा क्या विचार है।

तुम म एक शिष्टता है, अच्छी बातें हैं। मेरे विचार मे उचित समझू गा।

धन्यवाद, आपने पास तो कर दिया। मैं सोच रही थी कि न जाने क्या बोलने लगोगे।

तुम मे एक कोमल हृदय है। तुमने जानते हुए भी कि मैं नीरजा को प्यार करता हू हमेशा मुझे चाहा। यहा तक कि अपने बगले मे रखा। ये सब बातें किसी छोटे दिल वाली से उम्मीद नही की जा सकती। ये सब वही कर सकता है जिसके हृदय मे प्रेम हो आस्था हो।

राजेश, आस्था, प्रेम तुम्हारे लिय मुझ मे बहुत पहिले से था और वैसा ही आज भी है। नीरजा को तुम बेहद चाहते थे। मेरी मित्र थी वह, यही सोच मैंने अपने प्यार को कभी तुम्हारे सामने नही रखा। मैं जानती थी क्या होगा। बहुत पहिले से तुम्हारे लिये प्यार था ये बात आज कह रही हू। यह भी जानती थी कि नीरजा तुम्हे नही चाहती। लेकिन तुम्हे कभी नही कहा क्योकि तुम्हे मेरे कहने से धक्का लगता और हो सकता है मेरे को गलत समझते। इसलिये कभी कहा नही।

राजेश चुपचाप नम्रता की बातें सुने जा रहा था। उसमे एक तेज उथल पुथल सी मची हुई थी। वह विचारो मे डूबा हुआ था नम्रता आगे कहती जा रही थी।

हा यह जरूर है कभी कभी मैंने अपने प्रेम का सकेत तुम्हे दिया। लेकिन तुमने मेरे सकेतो को समझने की कोशिश नही की। तुम्हे शायद याद हो। कॉलेज के जलसे म मैंने एक गजल सुनाई थी उसमे साफ तुम्हारी ओर इशारा था। नीरजा मेरे कहने का अर्थ समझ गयी उसने इस बार मे मजाक भी किया। बाद मे मैं यह सोचने लगी, हो सकता है मेरा प्यार तुम्हे ठीक नही लगता हो। मैंने बाद मे कभी कोशिश नही की।

नम्रता अपने पागलपन पर हसी आती है।

समझती हू कभी भी तुमने मेर बारे म नही सोचा होगा।

सच कह रही हो कभी सोचा तक नही। मुझे हमेशा हर ओर नीरजा ही नीरजा दिखाई देती रही।

और ये क्यो नही कहते कि आज भी दिखाई देती है।

य भी सच है। बताओ तुमने मेरे मे क्या देखा जा मुझे चाहने लगी। मैं कोई पैसे वाला नहीं, कोई बडा आदमी नही।

य बातें मैं नही नीरजा सोचती होगी। तुम्हारी कवितायें, तुम और तुम्हारा नेचर बहुत पसन्द है मुझे।

चलो है कोई जरूर जिस मेर साथ सहानुभूति है। लगता है जो कुछ अपना खो गया था उसे पा जाऊ गा। नम्रता,यह जरूर है कि कही यह न हो कि मेरा तुम्हारा सम्बन्ध किसी छोटी सी गलती स ही टूट जाये। तुमन मुझ चाहा है, खुशी है। यह न हा कि जिन्दगी मे जिस दद को कुछ भुला पाया हू उसकी और भी तेजी से मेरे जीवन म पुनरावृत्ति हो और मैं जो अब थोडा खुश रहन का प्रयास कर लेता हू वह खुशी भी कही मेरा साथ छोड दे।

ऐसा मत सोचिये। मेरे हृदय म जो बड लम्बे समय से गुबार भरा था मैंने निकाल दिया। पहिले भी सोचा था कहूगी लेकिन कह न पायी। तुम लखनऊ, फिर बम्बई चले गये। खुशी है तुम आ गये। चाहती हू तुम्हारा प्यार मुझे मिले।

पता नही खुशी मिले न मिले। मुझे अपने जीवन मे किसी खुशी की कोई आशा नही। देखो रात ज्यादा हा गई मै चलू गा।

यही रह जाओ ना। क्या करोगे जाकर ?

नही नम्रता अच्छा नही लगता। तुम्हारे डैडी मम्मी भी यहां नही है। हा सकता है उन्हे पसन्द न हो।

वे कुछ भी नही कहग। इतने पुराने विचारो के नहीं हैं वे।

फिर भी। कल दिन म आ जाऊ गा। अच्छा मैं चलू गा। नमस्ते।

नमस्त।

ड्राइवर देखो, इन्ह बगले पर छोड आओ। उस दिन की तरह रास्त मे ही नही उतर जाना फिर और कहीं . ।

अच्छा।

२३

अचानक उसे लगा किसी ने पीछे से दोनों हाथों मे आखे बद कर दी हैं।

कौन नम्रता।

जल्दी पहिचान जाते हो।

अरे, आखें तो खोलो। हमने बता दिया कि कौन है।

सोच रही थी पहिचान नही पाओगे। देखते नही कितनी सुबह चली आई हू।

चलो अच्छा किया। जहा तक पहिचानने की बात है नरम, कोमल अगुलियां और वे भी जिनमे हल्की हल्की खुशबू आती हो तो कोई पागल भी समझ सकता है कौन हो सकती है।

एक बात तो मालूम पडी कि आप पागल हैं। आप ही ने कहा था कि कोई भी पागल पहिचान सकता है।

अब तक तो नही था। डर लगता है कही हो न जाऊ। पहिले ही कम पागलपन कहा है मुझमे। थोडा सा भुलावा तुम पागलपन का दे दो, बस फिर तो पूरे हो जायें। इसमे भी मजा आता है।

व्यर्थ सी बातें करते हैं।

आपको शर्म और गुस्सा दोनो आरहा है। देखिये ना दूसरे पागल का चित्र।

तो मैं पागल हूं। कब बनाया। पहिले तो कभी नाम भी दिमाग मे नही आया होगा। आज ही इतना परिवर्तन कैसे हो गया।

देखती नही मेरी आखें कैसी हो रही हैं। रात भर बैठा तुम्हारे खयालो मे डूबा चित्र बनाता रहा। रात को आते समय मूड बन गया। सोचा शाम तक आओगी तब तक पूरा कर दू गा। खैर तुम्हारे सामने ही बनाता हू। बैठो, हा, मेरी ओर देखो ठीक ऐसे ही। थोडा हाथ नीचे, नही थोड़ा ऊ चा, बिलकुल ठीक।

कब तक ऐसे ही बैठना होगा।

जब तक कि तुम्हारी ठीक तस्वीर मेरे दिमाग मे नहीं जम जाती। ज्यादा देर नही। देखो हिल रही हो। हाथ थोडा ऊपर।

जरा खयाल रखिये। बोर हो गयी तो उठ जाऊंगी।

नीरजा का मालूम नही तुम्हे। घण्टो मेरे सामने एक ही मुद्रा में बैठी या खडी रहती थी और तुम हो कि।

नीरजा का चित्र कहां रख दिया। पूरा हो गया कि नही।

नहीं, पूरा नही हो पाया। उतार कर मैंने उधर बाहर वाले कमरे मे डाल दिया है। अब तो तुम्हारा चित्र बना रहा हू। नीरजा के साथ रहे असफल इकतरफा सबधो के प्रेम की किताब के पृष्ठो को पीछे छोड देना चाहता हू। यही निश्चय करके उसके चित्र को रोल कर दिया। उसे मैं पूरा कर भी नही सकता। दूसरा चित्र जो बनाने लगा हू, देखता हू कब पूरा बन पाता है।

जल्दी बना लो देर कैसी।

जल्दी साहब बहुत जल्दी। पास रहो तो और भी जल्दी होगा।

क्या मतलब आपके पास रहू।

हा हां क्यो नही। मेरा मतलब सामने बैठी रहो। मै चित्र बनाता रहू। जल्दी बनाने के लिये तुम्हारा सहयोग आवश्यक है।

राजेश के कधो पर झुककर बोली–कब तक तुम्हारे सामने रह सकती हू चित्रकार, आप आदेश तो करिये अपनी नम्रता को।

आदेश क्या दें।

यह बात तुम्हारी अच्छी नही, आज तुमने शेव क्यो नही बनाई ?

कलाकार तो बडी बडी दाढी मूछ रखते हैं।

नही, आप कलाकार ही नही हैं कुछ और भी है।

अभी सुबह ही हुई है। पूरा दिन सामने है बना लेंगे।

नही रोज किया करो।

कोई अन्य आदेश।

फिलहाल कुछ नही। यही मानलो क्या कम है। हेल्थ भी ठीक नही है।

देखो, इतना ज्यादा कन्ट्रोल अभी से ठीक नही।

क्यो ठीक नही। बिलकुल ठीक है। आप मानने वाले हैं कहा। देखते हैं कितनी बातें मानते हैं मेरी। नीरजा की बातें जरूर मानते होंगे।

नही मैं किसी की नहीं मानता। उचित बात सबकी मानता हूँ।

मान ही नही सकती।

कैसे विश्वास दिलाया जाये ।

मैं, नही मानती ।

चलो छोडो भी इस बात को । जरूरी नही कि आप मेरी सब बातें मानें ही या उनका विश्वास करें ।

नाराज न होओ काफी आ गई ।

नीरजा का नाम मेरे सामने नही लिया करो । बताया ना अब मेरी कल्पना से वह दूर है । क्या अधिकार था मेरे जीवन को दुखी बनाने का उसे । अच्छी बनी है काफी ।

धन्यवाद । आपको पसन्द आयी ।

बहुत पसन्द । इससे क्या होना है । दुनियां मे कई चीजें होती हैं जो बहुत पसन्द होती हैं । लेकिन वे सब नही मिल पाती ।

पसन्द तो बहुत कुछ हो सकती है । आप तो चाहेंगे रेलें, हवाईजहाज या और भी कुछ ।

मेरा मतलब भौतिक वस्तुओ स नही है ।

क्यो नही । सतुष्टि के लिये ये भी जरूरी हैं । आपने पढा ही होगा पश्चिम के लोग इच्छाओ की तुष्टि करने मे आ म-शांति मानते है । वे भौतिक क्षेत्र मे विश्व मे आगे हैं । जबकि हम लोग अपनी आवश्यकताओ की सीमितता पर बल देते हैं । एक भारतीय अर्थशास्त्री के विचार देखे ही होगे । कहते हैं आवश्यकतायें सीमित होनी चाहिये ।

फिर उनका अर्थशास्त्र ही क्या बच जायेगा ।

यही बात उनके किसी आलोचक ने लिखी थी कि आवश्यकतायें बहुत सीमित कर दी जायेंगी तो अर्थ शास्त्र ही मर जायेगा ।

बिलकुल ठीक ।

उनका उत्तर उचित था । वे कहते हैं कि मेडिकल साइन्स मे अनुसन्धान करना क्या केवल इसलिये बन्द करदें कि हो सकता है उससे सारी बीमारियां ही समाप्त हो जायेंगी । तो फिर मेडिकल साइन्स ही खतम हो जायेगी या दूसरे शब्दो मे मर जायेगी । कहते हैं यदि लोग ऐसा सोचते हैं तो सोचें क्योंकि यह हो नही सकता । मैं भी इसी पक्ष का हू कि आवश्यकतायें सीमित होनी चाहिये । ये बात अपने को मानसिक शांति प्रदान करती है ।

हा ठीक है । हम देखते है कि हर वर्ष हजारों लाखों लोग इन्ही भौतिक साधनो की पूर्ति या इनसे घबरा कर अपने मे फ्रस्ट्रेशन पैदा कर लेते है और आत्म

हत्याए । अपने देश मे आत्म हत्याए तुलनात्मक दृष्टि से कम होती है और उसका कारण भी ऊपर कही बात है । हा रात को डैडी का ट्रक आया था । बम्बई जा रहे है देहली से । मैंने तुम्हारे लिये बता दिया कि तुम यहा पहुँच गये हो । खुश हुए ।

बम्बई होगे ।

बता रहे थे इस महीने तो वहा है । आगे क्या कार्यक्रम हो, पता नही ।

किसी विशेष काम से जाना पड़ा है क्या ?

नही कोई विशेष नही । मम्मी गयी ना साथ तो बम्बई भी हो आयेंगी । मम्मी इस वर्ष कही गयी नही सो घूम लेगी । एक्सपोर्ट अच्छा हुआ है इस साल । वहा अपने आफिसेज है सो हिसाब-किताब देखते लौटेंगे । पूरे बगले मे अकेली ही रहना पडेगा तब तक । शरद भी आज गया है टाटानगर ।

तुमने कभी मिलवाया नही उनसे ।

वे तो इन्जीनियर साहब है । दो दिन के लिये आते हैं फिर चले जाते हैं । तुम्हारा उनसे मिलाने का मौका नही हुआ । जब आयेगा तो मिलवायेंगे । जर्मनी से इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा लेकर आया है । साहित्य मे रुचि नही उसे । आपकी पेंटिंग की तारीफ कर सकता है उसे पेंटिंग का जरूर शौक है । जर्मनी मे जो थोडी बहुत पेंटिंग्स बनाई है वह उसने घर पर लगा रखी हैं । आज शाम को ही उसके घर चलें । अकल नारग से मिलकर खुशी होगी तुम्हे । उन्हे शेरो-शायरी का बडा शौक है खुद भी करते हैं । यहा जब कभी मुशायरे होते है तो वे भी हिस्सा लेते हैं ।

पूरे परिवार का परिचय दे दिया है । धन्यवाद । थोडा उनकी मा, उनकी पत्नी, बच्चो के लिये भी बतादो । ताकि मैं पूरी तरह समझ लू ।

बोर हो गये उसकी बातो से । हम नही मिलवायेंगे । उसके घर भी नही चलेंगे आज ।

ओ हो गुस्सा हो गई । कौन बोर हो गया । मैं तो बडा खुश हुआ सब कुछ जानकर । आज शाम चलेंगे ।

नही नही चलेंगे ।

ये बात अच्छी नही लगती । बात बात मे गुस्सा हो जाना । प्लीज, वहा चलोगी ना ।

चलेंगे ।

धन्यवाद । कलर्स कैसे उभरकर आये हैं चित्र मे कि बस ।

क्या बस ।

चूम लोगी।

बदतमीज हो, तुम।

ओहो तुम खुद ही उल्टा समझती हो और खुद हो नाराज होती हो। मतलब था चित्र को चूम लोगी।

बातें बनाना कोई तुमसे सीखे। कितनी जल्दी बात बदलते हो। तेज हो।

चलो, हमने जो कहा नहीं बदलते।

फिर वही मजाक।

तुम ही बताओ क्या करू ? जब अपनी बात साफ करता हू तो कहती हो बात बदलते हो और जब कहता हू कि जो कहा ठीक है तो गुस्सा।

आप कुछ नही करिये। चित्र बनाना शुरू करो। फिर कही अधूरा रह गया तो सामने वाले कमरे मे रोल करके डाल आओगे, तुम्हारा कोई भरोसा नही।

राजेश को अन्तिम वाक्य से आघात लगा। उसने एकदम अपना हाथ नम्रता के मुह पर रख दिया। उसकी आखो के सामने बरबस ही नीरजा के चित्र का अधूरा हिस्सा आ गया। उसकी आंखो ने दो आंसू गिरा दिये। उनमे कितना दर्द था, कितना प्रेम, त्याग की भावना थी, कलर डिश पर पडी आसू की नन्ही सी बूद सकेत कर रही थी।

नम्रता अब तक बाहर रेलिंग पर आ गई थी। राजेश की आंखो ने हृदय की पीडा को हल्का करने के विचार से और भी आसू गिराये, जिनमे अधिकाश कलर डिश पर गिरते रहे। नम्रता ने राजेश के गिरते आंसुओ को देखा था और बाहर चली आयी।

उसने धीरे से कमरे मे प्रवेश किया। राजेश के कधे पर हाथ रखते हुए बोली – क्या बात है कितना समझाया। अभी कह रहे थे कि तुमने उसकी याद को पीछे छोड दिया है। क्या पागलपन है।

नम्रता ये आसू बने ही इसलिये हैं कि किसी की याद मे बहते रहे। आखें बनी ही इसलिए हैं कि इनसे यादो के आसू बहाये जायें। यही मेरे जीवन मे लगता है। इन आसुओ को देखकर मैं प्रसन्न होता हू। प्रणय के सबसे सच्चे गवाह ये ही हैं जो कहते हैं कि नीरजा को मैंने कितना चाहा है, कितना प्यार किया। मुझे बडा सुकून सा मिलता है जब बैठा हुआ बहते आसुओ को देखता ~।

ऐसे नही करो, राजेश। जिन्दगी कितन [illegible] कभी ह[illegible] सोचा है। जीवन का रास्ता इन भावनाओ, आसुअ[illegible] ।। अ[illegible] वह भी हर वक्त, हर लमहे अच्छी बात नही। ९५। [illegible] ने[illegible]

नम्रता, जीवन के बारे मे सोचा ही किसने। माझी समुद्र मे बढता है तो वह उत्ताल तरगो और तूफानो के तेज थपेडो से कहा डरता है वह बढता जाता है उसके हृदय मे लक्ष्य होता है।

विकराल समुद्र ही उसे अपने मे छिपाले तो क्या होता है उसके साहस का।

ऐसा हो भी जाए तो माझी भी क्या कर सकता है। वह निराश हो पतवार छोड देता है। जब देखता है की समुद्र की लहरें उसके वश मे नही हैं। तो इस स्थिति मे वह अपनी आहुति भी दे दे, तो मैं नही समझता कि माझी अपने लक्ष्य मे गलत था या उसका दोष था।

दोष उसका ही अधिक है। जब देख रहा है कि तेज तूफान सामने है, समुद्र अशात, लहरें विकराल रूप मे हैं और सब कुछ जानते हुए भी वह अपनी भुजाओ और डोगी पर विश्वास करके समुद्र मे चल पडे तो क्या उसका दोष नही। ठीक इसी प्रकार का माझी हो जो न जाने क्यो छोटे से विश्वास को बडा सहारा मान नीरजा के प्यार मे निमग्न हो गये।

नम्रता, विश्वास ही सब कुछ होता है विश्व मे। सारा विश्व विश्वास है, एक आस्था है। देवता भी विश्वास है कुछ और नही। तुम क्यो नही हरेक पत्थर को देवता मान लेती। क्यो केवल मन्दिर मे रखे तरतीब स बनाये, भगवान का रूप दिये पत्थर को ही देवता मानती हो। वह देवता नही पत्थर है। जिसमे कोई क्रिया नही, स्पन्दन नही, कोई भावना नही, आवाज नही। हर बात, हर चीज कुछ नही विश्वास है। आज तुम हो। मेरे से सहानुभूति रखती हो प्रेम रखती हो। ये और क्या है ? क्यो नही तुम हरेक मनुष्य के साथ प्रेम रखती हो। विश्व मे और भी कई लोग हैं ?

लेकिन विश्वास, विश्वास न होकर भ्रम हो, तो फिर। जैसा कि तुम्हारा नीरजा के लिये था। क्या हुआ तुम्हारा विश्वास। कहा गयी तुम्हारी अस्था ?

ये रही मेरी आस्था, ये डिश पर गिरे मेरे आसू। जो मेरे रक्त के बदले आखो से बाहर आये हैं और चिल्ला रहे है उन्हे कोई क्यो नही रोक लेता। कौन था जिसने उन्हे बाहर आने पर विवश किया ? मेरी आस्था आज जरूर ही रो रही है लेकिन मेरे प्यार पर नही, नीरजा पर जिसने इसके साथ न जान क्यों विश्वासघात किया ? नम्रता जीवन मे लगता है तुमने इस दर्द को कभी अनुभव नही किया। वरना अवश्य तुम इन आसुओ की कीमत समझती।

शर्मिन्दा न करो, ये कहकर कि मैं तुम्हारी भावना को नहीं समझती। तुम्हारी इस बातने दर्द दिया है। क्या सब हृदय एकसे ही होत हैं ? ऐसी बात नजाने क्यो तुम अपने पवित्र, स्वच्छ मन मे ले आये। तुमने जो कहा कि ये आखें बनी ही

इसलिये हैं कि इनसे यादो के आसू बहाये जायें। कितनी पैथेटिक पक्तिया है। जीवन का हर खुशी का क्षण आसू ही का रूप है।

जानता हूँ मेरे प्रेम का अपमान होगा जितना रोया हू जितने आसू मेरी इन आखो ने न जाने कब-कब बहाये है उतने से खुशी के क्षण भी मुझे नीरजा दे पाती तो भी खुशी की बात होती। मैं भी स्वाभिमानी हू, इसलिये कभी मैंने नीरजा के आगे याचना नही की। असफलता पर सोचा, मेरे प्यार मे अवश्य ही कही कमी थी। यही सोच अब भी याद आ जाती है तो बैठा आसू बहाता रहता हू। कभी कभी विचार आता था कि हो सकता है उसे भी मेरे दूर चले जाने की कसक दिल म जरूर होती होगी लेकिन मेरा भ्रम था। अभी गये दिनो मे उसके घर मुझे उसके ही पति के काम से भेजा गया था। तब मुझे देखकर उसे कोई प्रसन्नता नही हुई। बजाये दो शब्द सहानुभूति क कहने के मेरे हृदय को चोट पहुचाने की बात की। उसी दिन मुझे लगा यदि बम्बई मे एक दिन भी और रह गया तो घबराकर आत्म-हत्या कर बैठूगा। उसी रात को बम्बई को हमेशा के लिये छोड आया।

उसे सुखी भी देखना चाहते हो, दूसरी ओर उसे बुरा भी कहते हो। समझ नही आया।

कभी बुराई नही की नीरजा की। कभी गुस्से मे कुछ कह गया होऊगा। लेकिन उसके लिये मैं कभी बुरा नही सोचता। वह सुखी है, मैं खुश हू। मैं ईश्वर तो नही या पत्थर तो नही जिस पर कोई प्रभाव न पडता हो। सब कारणो से अवश्य कभी बुरे विचार आते हैं। जहा तक हुआ मैं नियत्रण करने का प्रयास करता हू और अधिकाशत मैं उसम सफल भी रहा हू। लेकिन इन्सान हू ना इसलिये बुरा भला कह बैठता हू। फिर दुख होता है जिस मैं बहुत कठिनता स भुला पाता हू। मेरा मस्तिष्क असन्तुलित, सुन्न सा हो जाता है।

कोमल हृदय के हो। कभी ऐसा नहीं सोचती थी।

मैंने कहा ना जिन्हे दुख उठाने है वे हमेशा उठाते रहेंगे उन लोगो म से मैं भी एक हू। भविष्य म भी न जाने सुख है कि नही, इन भाग्य की रेखाओ को बदलते क्या देर लगती है सब कुछ पलक झपकते हो जाता है, सोच रहा हू तुम मुझ अपना प्यार दे रही हो। क्या आशा कर सकता हू कि हमेशा तुम्हारा प्यार मेरे साथ रहेगा।

क्यो नही ? मेरी शुभ कामनायें। मेरा प्यार, मेरा सर्वस्व तुम्हारा है और इसके बदले मुझे तुम्हारा प्यार चाहिय।

प्यार का क्या है। जिसे मैंने चाहा है उसक लिये अपने जीवन को व्यर्थ हो म बर्बाद कर दिया और अच्छे सहृदयी साथी के अभाव में न जाने कब तक नष्ट होता रहूगा, टूटता रहूगा।

नही वह दिन अधिक दूर नही लगता मुझे। जब मैं तुम्हारे जीवन के सारे दुख को अपने आचल मे ले लू गी। पता नही वह शुभ दिन कब आने वाला है मैं बडी उत्सुकता से राह देख रही हूं।

इस कार्य मे शीघ्रता उचित नही। बहुत सोच विचार करना चाहिये पहिले, तुम्हें भी मुझे भी।

तुम क्या सोचते हो।

स्पष्टत कहना उचित होगा। मैं अभी भी किसी निर्णय पर नही पहुँच पाया हू। जो कुछ है तुम्हारे सामने कह दू गा। व्यर्थ की बातो से मेरा जी घबराता है।

तुम्हारा कोई निर्णय नही हुआ। कोई बच्चे नहीं हो कि किसी को राय लो।

सलाह मशविरे की कोई बात नही फिर भी सोचना पडेगा। तुम्हारा कृतज्ञ हू कि तुमने इस योग्य समझा। देखा जाय तो तुम मे और मेरे मे बडा अतर है।

यही अन्तर तो मैं खतम कर देना चाहती हूँ जिससे तुम, तुम न होकर हम हो जायें।

मैं तो सबसे बडी बात अपने बारे मे यह जानता हू कि मुझे कोई भी स्वार्थ नही है किसी से।

जीवन मे यदि कभी कोई गलती हुई तो आशा है क्षमा कर दोगे। क्यो ?

देखो तुम्हारे चित्र मे सजीवता आ गई है, सुन्दर बनेगा। उत्साह से, नयी प्रेरणा से बना है और सबसे बडी बात बहुत समय बाद बना रहा हू तो रह रहकर डर लगता है कि कही कोई कमी न रह जाये। इसलिये अच्छा बनता जा रहा है। तुम्हारे डैडी को भी यह चित्र पसन्द आयेगा।

कमिया निकाल कर रख देंगे।

खुशी ही होगी। अगले महीने जब आयेंगे तब उन्हे कभी यहा लाऊंगा। मैं लखनऊ चला गया था, इन्हे यही छोड गया था। सोचा कौन सी खराब ही हो जाती हैं। बिल्कुल वैसी की वैसी है, कमरा भी वैसा ही है। बगले को अपना कहू तो भी क्या है, चाहे दोस्त का है।

चलो मान लिया आपका है। अब मूड नही क्या चित्र बनाने का ?

मूड तो कुछ और है।

क्या है आपके मूड मे इस समय।

एक प्याला काफी यदि अपने आर्टिस्ट को दे सकें।

बनाकर लाती हू।

अरे, तुम क्यों जा रही हो नौकर से कह दो। ले आयेगा।

अपना काम करिये, मैं ही ले आती हू।

ठीक है। आपकी इच्छा। हम भी चित्र बाद मे बनायेंगे। पहिले तुम अपना काम करलो।

ला रही हू।

इतने मे नम्रता ट्रे ले आयी और उसके पास सोफे पर बैठ गयी। राजेश के बालो मे अपनी पतली अगुलिया जिन पर पोलिस की हुई थी, फिराने लगी। राजेश चौंक सा गया। जागते ही उसने नम्रता को अपनी बाहो मे समेट लिया। प्रतिरोध की भावना उसमे थी नही। राजेश ने अपने हाथ ढीले छोड दिये।

नम्रता शरमाती सी बोली – छोडो, ऐसे नही करो, कोई देखेगा।

कौन देखेगा ? बगले मे कोई क्यो आयेगा ?

अच्छा नही लगता ऐसे। चलो काफी पियो और काम मे जुट जाओ।

कैसी है।

अच्छी है। जी करता है कि ..

क्या करता है ? आपका जी।

कुछ नहीं। अभी सुनोगी तो शरमा नही, नही नाराज हो जाओगी। जी करता है धन्यवाद दू काफी के लिये।

बस बना दी ना बात।

कहू गा तो नाराज हो जाओगी। चलो कह ही देता हू, हा तो .

बस बस रहने दो सब समझ गयी। और लेनी है।

नही, अब तुम ही लो। एक का कोटा है अपना, ज्यादा की आदत नहीं हैं।

चलो अच्छा है नहीं तो .. ।

क्या।

क्योंकि पहिला फायदा खर्च कम, दूसरा मेहनत भी अधिक नही होगी।

कहो तो बिल्कुल छोड दू, बेचारा आदमी। गयी पूरी रात के बाद तो ये दूसरा प्याला मिला है और छुड़या देना चाहती हो।

मेरा अभी से नहीं आगे से मतलब है। डैडी और मम्मी तो अगले महीने आयेंगे। वही खाना खा लिया करो।

माफी चाहता हू।

इसका मतलब हुआ कि मैं दोनो टाइम अकेली खाना खाया करूं। कहती हू तुम भी वही चलकर रहो ताकि बगले मे।

खैर, सोचेंगे।

हर बात सोचेंगे। आपके अलावा तो दुनिया मे कोई सोचता ही नही होगा। अच्छा देखो समय हो गया है ग्यारह का। तुम चार बजे घर आ जाओ नारग अकल के यहा चलेंगे।

आप वहा चलने की सोचने लगी। बैठो भी। घर क्या काम है।

नही देखो, सारी पोस्ट देखनी होती है। उनके जवाब देने होते है। सेक्रेटरी डैडी के साथ गया हुआ है। काम करना है जाकर।

अच्छा जी चल भी दिये। चार बजे पहुच रहा हू। कुछ देर भी हो जाये तो माइन्ड नही करना। तुम्हारा ही चित्र बना रहा हू। मूड की बात है बन गया तो चार से थोड़ा ज्यादा समय भी लग सकता है। गाडी लाई हो।

बिलकुल, तुम्हारा बगला है दूर कितना, पैदल चलकर क्या करना है।

रईस लोगो की बात है। पर आवाज हो नहीं आई।

क्योंकि,तुम चित्र बनाने मे मशगूल थे, खयाल कही और था। अच्छा चलू।

शाम चार बजे पहुच रहा हू।

२४

नम्रता का राजेश पर गुस्सा आ रहा है। अजीब सी परेशानी अनुभव हो रही है। चार बजे पहुच जाने के बजाये छ बज गये और वह है कि पहुचा नही। उसे बाहर किसी के पैरों की आवाज आयी।

राजेश को देखते ही गुस्से से बोल पडी–चार बज गये ?

हा, सुबह ही कह दिया था कि चार बजे आ जाऊ गा लेकिन हो सकता है देर हो जाये गुस्सा छोड़िये और यह लीजिये देखिये तस्वीर। अजी इस कम्बख्त तस्वीर ने ही तो देर करवा दी। वरना कभी का पहुच गया होता।

इसे खोलो तो सही। क्या ढेर सारे कागज लपेट रखे हैं।

फ्रेम भी करवा लाये। सुन्दर, बहुत सुन्दर। चलो इसकी खुशी में तुम्हें लेट आने के अपराध से माफ कर दिया।

धन्यवाद। कहिये कैसी लगी।

कहा नही ! बहुत सुन्दर, अति सुन्दर। डैडी वाकई खुश होंगे इसे देखकर मजा आ गया चित्रकार साहब।

आप तो नाराज हो रही थी देर से आने पर।

बहुत देर हो गई। आज नारग अंकल के यहा चलना ठीक नही। क्योकि अब वे अपने काम मे लग गये होंगे। इस समय अपने क्लाइन्ट्स से बातचीत करते हैं। अब उन्हे डिस्टर्ब करना ठीक नही।

जैसी इच्छा। फिर कभी सही।

आओ आज बाहर घूम आयें। डिनर आने के बाद।

यह तो बताओ जब तक तुम्हारे डैडी बम्बई से नही लौटते तब तक मुझे यो बेरोजगार ही रहना पडेगा क्या ?

क्या मतलब मैं समझी नही।

हुजूर, आपने ही तो लिखा था कि बम्बई मे रहने के बजाये मैं यही दार्जिलिंग मे रहू।

तो क्या गलत लिखा था। क्यो यहा दिल नहीं लगा ?

बात दिल की नहीं नौकरी की है।

ये बात है। आये चार दिन नही हुए और सोचने लगे काम की। आपको क्या करना है नौकरी करके।

तुम्हे साफ कहू कि बम्बई से जब लखनऊ पहुचा तो भाई की शादी करनी थी सो उसमे जो कुछ थोडा पैसा था खर्च हुआ। फिर आते समय कुछ रुपये मा को दे आया। बस, किराया और कुछ रुपये लेकर चला था, अब बताओ तुम्हारे डैडी महीने भर बाद आयेंगे तब तक खर्च कहा से चलेगा।

कितने रुपये की जरूरत है। सारे दिन पैसे की सोचते रहते हो। इसके सिवाय और भी बातें है

माफ साफ कह दिया तो मुह चढ गया।

बस डर गये, इतने से गुस्से से देख रही थी कि क्या असर करती हैं मेरी बात। चलो ठीक है। विश्वास हो गया कि आप,मेरी बात मानते हैं।

अब तुम्हारी बारी है। मेरी बात मानो और बाहर घूमने चली चलो।

नही चलती । ये क्या ? कुछ तो सर्दी के कपडे पहिन कर आते । रात को सर्दी लगेगी तो होश उड जायेंगे ।

चिन्ता मत करिये इस बात की । मुझे कुछ भी नही होगा । बेकार ही ज्यादा चिन्ता नही किया करो ।

कहते कैसे है ? चिन्ता नही किया करो । जब बीमार हो जाओगे तो यहा है कौन आपको सभालने वाला । ठहरो, मैं डैडी का कोट लेकर आती हू ।

ये लीजिये ले आई । सोचती हू आ जायेगा । हा, ठीक पहनो । नाइस, पूरा आ गया । तुम्हारा सादगी से रहना पसन्द नही मुझे । क्या कुर्ता, पाजामा ।

सादगी से शुरू से लगाव रहा है । शुरू से ही ऐसे लिबास मे रहा सो मुझे बुरा नही लगता ।

सुरमई हल्का प्रकाश पश्चिम मे था । क्षितिज ने सूर्य को अपने मे डुबा लिया था । हवा मे ठडक थी । राजेश, नम्रता दोनो सडक के किनारे किनारे धीरे-धीरे चले जा रहे थे । नम्रता ने कहा—ठडी हवा है ।

हू ।

तुम मानही नहीं रहेथे । मालूम होजाता बिना कपडोके बाहर निकलना ।

हू ।

कहा खो गये ।

यो ही विचारो म खो गया था । सोच रहा था कि तुम्हारे डैडी के यहा मेरी कौनसी सर्विस हो सकती है । बिजनेस के क्षेत्र मे मेरा कोई अनुभव नही ।

सब आ जाता है । कोई टेक्नीकल चीज तो है नही । मैनेजमेन्ट का काम तो जल्दी ही सीखा जा सकता है । डैडी, को इस काम के लिये आदमी की जरूरत है खुशी से तुम्हे रख लेंगे । उन्हे तो काम से मतलब है फिर देखा जायेगा । अभी तो काम शुरू भी नही किया और चिन्ता पहिले ही ।

चिन्ता करनी ही पडेगी नौकरी करनी है तो ।

देखो कितनी तेज सर्दी है । मेरा हाथ छूकर देखो कितना ठडा हो गया है ।

वाकई, बडी ठड है ।

आपके हाथ तो लग रहे हैं गर्म है ।

राजेश को सिरहन होने लगी । उसने जल्दी से उसका हाथ छोड दिया ।

सामने वाले बागान पर जल रही लाइट के पास चलते हैं । वही बैठेंगे । इधर नीचे उतर आओ । कल यहा के बडे क्लब मे चलेंगे । मैं बताना ही भूल गयी ।

मेरा कल डास शो रखा गया है। यहा हर साल अच्छे कार्यक्रम होते रहते हैं। अच्छा रहता है। तुम भी ठीक आठ बजे के पहिले घर आ जाना।

कोशिश करूगा आने की। वैसे मुझे कोई रुचि नहीहै क्लब और डास मे।

चले चलना,मनोरजन रहेगा। वहा का नजारा भी देखने लायक होता है।

चलेंगे केवल इसलिये कि तुम्हारा कार्यक्रम होगा। आओ बैठें। बडा सन्नाटा सा छाया हुआ है। मुझे ऐसी जगह अच्छी लगती है। आज चादनी अपने निखार पर नही। हल्की रोशनी है।

जी हा। हा,आपको कल जो एक बात कही थी उसके बारे मे क्या सोचते हैं।

किसके बारे मे ? समझा नही।

आपकी शादी के बारे मे।

आपकी नही ? बात यह है कि तुम्हारे डैडी कितने रईस हैं। उन्हें कब पसन्द आयेगा कि शादी मेरे साथ कर दें।

डैडी की बात छोडो। पहिले जो पूछा है जवाब दो। उनसे मैं बात कर लूगी। जहा तक होगा वह मेरी बात नही टालेंगे। तुम मान लो समझो मैंने उन्हे मना लिया।

देखती नही कितना अन्तर है। तुम्हे दो कदम चलन के लिये कार की जरूरत। मेरे पास कहा। सारी और सुविधाए कहा।

मुझे उनकी जरूरत नही।

फिर भी तुम्हे यही कहना है कि जो करो सोच-समझकर। क्योकि ये न हो कि मेरा पहिले से टूटा हुआ हृदय और टूट जाये। कही तुम्हारे डैडी मुझे बेइज्जत न करें। मेरी ओर से स्वीकृति है।

मान गये ना। डैडी को आने दो। सारी बात उनसे हो जायेगी। तुम भी इस बारे में उनसे बात करना। क्यो ठीक है ना ?

जो भी करना, तुम खुद ही बात करोगी। बडे लोगो से डर लगता है क्योकि उनके पास सच्चे प्रेम, हृदय नाम की कोई चीज नही होती। उनके पास होता है पैसा जिससे हर चीज की कीमत आकी जा सकती है।

डैडी का नेचर ऐसा नही। उनके भी दिल मे प्यार है। उनके लिये ऐसा नही सोचना चाहिये। वे हमेशा तुम्हारी तारीफ करते हैं। दिल्ली जब गये थे तो पूछा था तुम्हारे लिये और तुम्हें पत्र लिख देने को भी कहा था। बम्बई का तुम्हारा पता उनके पास प्रेस का है।

फिर भी बातचीत तुम कर लेना। कहीं वे प्यार की कीमत पूछ बैठे तो मुझे कितना दुख होगा। मुझे तुम्हारी बात पर पूरा विश्वास है लेकिन ये सारी बातें दूसरो तक ही सीमित रहती हैं। जब अपने पर आती है तो आदमी कुछ अलग ही सोचने लगता है।

खैर, मुझे ही करनी होगी। शादी के बाद क्या करने का इरादा है।

कोई नया इरादा हो सकता है? जो चल रहा है ठीक है। उसमे क्या परिवर्तन किया जा सकेगा। नौकरी करते रहेगे।

मजाक सी बात करते हो, तुम भी।

हसने की क्या बात है।

जब शादी हो जायेगी उसके बाद भी अपने ही घर मे नौकरी करोगे। है या नही मजाक। अच्छा लगेगा नौकरी करते हुए।

उसमे बुराई ही क्या है। जो भी थोडा बहुत पैसा मिलेगा क्या वह काम नही लिया जा सकता।

फिर वही बात। नौकरी अच्छी से अच्छी भी हुई तो एक हजार से क्या ज्यादा हो सकती है उसमे क्या काम चलाया जा सकता है। महगाई कितनी है। दोनो गाडियो का महीने मे पेट्रोल ही दो अढाई हजार आ जाता है। डैडी बागानो मे जीप लेकर आते जाते रहते हैं। सारे दिन गाडिया चलत रहती हैं क्या होगा आपके हजार से।

मजाक नही करो, खैर मैं अपनी तनख्वाह बैंक मे दे दिया करूगा। बैठे हुए भी क्या करना है। समय भी आराम से कट जाता है और अपने प्रति भी न्याय बना रहता है।

ठडक हो गयी है।

हा। तुम्हारे बदन से बडी खुशबू आ रही है। अब तो बस जीकरता है..

अच्छा जी, खुशबू भी आरही है और जी भी करता है। हम भी तो सुनें।

राजेश ने अपना सिर नम्रता के कधे पर रख दिया और उस पर झुक गया उसे बडा अच्छा लग रहा था, इस तरह बैठे रहना।

नम्रता ने शाति तोडते हुए कहा– राजेश लगता है कोई कविता दिमाग मे घूमने लगी है तब ही गुमसुम बैठे हो।

मस्तिष्क मे नही मेरे पास जरूर बैठी है। जो बात तुम्हारे मे दिखाई दे रही है वैसी बात लिखी हुई कविता मे कहा से आ सकती है। अब तो जी कर रहा है रात भर यही बैठा रहू और कभी चाद को, कभी तुम्हे देखा करू।

कविता बन गई और क्या। जहा कुछ खोये से विचार उमड़ पडे और कविता का जन्म हो गया। क्यों ठीक है न ?

ठीक है। अच्छा वातावरण है। लेकिन ऐसा होता कहा है। आज दो घडी इन चाद-तारो से भरी रात मे हस भी लिये तो क्या। बाद मे तो जिन्दगी भर रोना है।

क्यो, रोना है।

नीरजा की बात कर रहा हू। उसके साथ कुछ क्षण हसी से बिताये थे। फिर लम्बे समय तक आसू बहाने पड़े हैं और न जाने जिन्दगी मे क्या क्या हो, न मालूम !

शादी हो जाने दीजिये। किसी बात की फिक्र ही नही रहेगी। कितना समय हो रहा है।

विशेष नही, नौ बजने वाले हैं।

आओ फिर चलें। खाना भी खाना है।

इतनी भी क्या जल्दी है। चले चलेंगे।

राजेश ने नम्रता को अपनी ओर खीचते हुए बिठा लिया। इस तरह करना नम्रता को अच्छा लगा। सोचने लगी कि राजेश मे अब उसके प्रति अपनेपन के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे हैं।

राजेश पूछ बैठा— कहा की कल्पना की जा रही है बडी शर्म आ रही है।

कुछ नही। कहां क्या कल्पना।

लग तो ऐसे ही रहा था। हमे नही बताओगी क्या सोच रही थी।

बस यों ही भविष्य के जीवन के बारे में सोच रही थी। अपने सुखद जीवन के चित्र खीच रही थी।

हमें कोई ऐसा विचार नही आता कि हमे भी शर्म आये, हंसी आये। तुम नहीं बताती तो अपने को क्या मालूम पड़ सकता है कि क्या सोच रही थी।

आपको शर्म क्यो आयेगी। आदमी ठहरे। चलो छोड़ो ऐसी बातें नही करते अभी से।

डैडी को रात के समय इस ओर निकलना बिल्कुल पसन्द नही।

यहा डर तो किसी बात का नही है। फिर क्यो ?

डर की बात क्यो नही है। कोई जानवर ही हो [illegible] जाये। अच्छी बात भी नही है रात के समय इस ओर घूमने निकल[illegible] इतना पड़ता है अपने घर से।

जल्दी खाना खाकर अपने बगले जाऊंगा। आज तो तेज नीद आयेगी जो सुबह तक सोता रहूगा क्योकि गयी रात भी जागता रहा दिनमे भी सो नही पाया।

चलते ही खाना खालेंगे। रात को यहीं सोजाना। क्या करोगे वहा जाकर।

चलो पहिले चलें।

२५

सुबह सुबह कहा ?

तुम्हारे पास ही आ रहा हू और तुम ।

जी मैं, सहेली के यहा जा रही हू। हो सकता है यह सुबह शाम मे बदल जाये, याने शाम तक आना हो। और खुद की तो कहिये किधर निकल आये, इतनी जल्दी।

बस योही घूमने निकला था। सोचा तुमसे मिल लिया जाये। फिर अच्छा, आज्ञा हो मुझे।

आइये आपको उधर रास्ते मे छोडती हुई आगे निकल जाऊंगी। थोडी दूर का साथ हो जायेगा।

तो फिर हम नही चलते साथ मे। साथ हो तो पूरा कुछ दूर का नही। क्यो ठीक है कि नही।

ये साथ केवल रास्ते का ही है जिन्दगी का नही। जिन्दगी के रास्ते मे तो हमेशा तुम्हारे साथ हू और रहूगी। आपका उपन्यास पढ लिया है। अच्छा लिखा है लेकिन एक बात अखरी भी है। उपन्यास का नायक शुरू से निराशावादी ही रहा है उसमे अन्त तक जीवन के प्रति अविश्वास ही दिखाई पडता है। ये बात भारतीय ढग को देखते हुए थोडी अखरती है। उसका अन्त भी दुखपूर्ण, बडा बोझिल है।

जिन्दगी मे देखा है, अनुभव किया है सब कुछ। कलम के सहारे वैसा का वैसा कागज पर उतर आया। जब देखता हू उपन्यास को और बीते समय को तो उसमे कम अन्तर दिखाई देता है। नीरजा से अपने सबंध मानना था तो भी उपन्यास लिखने की इच्छा थी। लेकिन समय नही मिला। लेकिन उसमे सम्बन्ध विच्छेद हो जाने के बाद मेरी अन्त प्रेरणा ने नया मोड लिया और उपन्यास मे आ गई। सब

कुछ मेरी पहले की योजना से बदला हुआ है। शेष कुछ तो केवल यही कि कभी उसे चाहा था। यदि नीरजा को अब भी कोई स्थान अपने हृदय मे दे पाया तो उससे कहूगा कि उसके थोडे से खराब व्यवहार ने मेरी सारी विचारधारा को ही नष्ट कर दिया। मेरी सारी कल्पना को कुठित कर दिया।

हो सकता है आप उपन्यास मुझ पर भी लिख मारे।

लिखा जा सकता है थोडी देर लॉन मे बैठा जाये। कैसा रहेगा।

हां, क्यो नही।

आपको मैं पुल के आगे छोड दूगी। उसके पास ही मेरी मित्र का मकान है। आप चले जाना।

सिन्हा साहब कब तक लौट रहे है ?

परसो उनका फोन आया था। आपको याद किया है वे आ जायें तो उनसे बात कर लेना।

हा कितने दिन हो गये।

किसके लिये बात करने की कह रहे हो नौकरी के लिये ना ?

हा और

मैं तो शादी के लिये ... ।

तुम खुद ही कर लेना। निश्चित ही इन्कार करेंगे और मुझे शर्मिन्दा होना पडेगा। इससे अच्छा है कि उनसे इस विषय मे बात ही नही की जाये।

बताया या नही, डैडी का नेचर बहुत अच्छा है कुछ हिम्मत रखो और सीधे बिना हिचके उनके सामने पहुँच जाओ। मैं अच्छी तरह जानती हू उनको।

ऊ, हू, अपने बस की बात नही।

ठीक है मैं ही बात कर लूगी फिर। तुम्हारी तरह डरती नहीं हू। कैसी लड़कियो की सी बातें करते हो। तुम्हारे पर डैडी भी हसेंगे, देखना।

हसने दो। इससे ज्यादा क्या होगा। मैं तो कहता हू तुम भी बात न करो तो अच्छा है।

ठीक है, मैं भी उनसे बात नही करूंगी। बस अब तो सुन। मैंने तुम्हारी भेंट की हुई तस्वीर अपने कमरे मे लगवा ली है। बडी अच्छी लगती है। गाय हांकने का उपन्यास पढा। बहुत ही अच्छा लगा।

है ही। उसके सारे उपन्यास पढ जाओ तो देखो कितना अच्छा लगता है। ठीक उसके से विचार बन गये हैं मेरे भी कि यदि हम अपने आदर्शों के अनुसार

जीवन नही व्यतीत कर सकते तो व्यर्थ है। वह कहता ही नही था, उसने करके भी दिखा दिया। जब वह साहित्य सृजन मे शारीरिक दृष्टि से मजबूर हो गया तो उसने आत्म हत्या कर डाली।

आत्महत्या थोडे ही की थी।

कहा जाता हैं। वे सोचने लगे थे कि जो उद्देश्य उनका है उसे वे पूरा नही कर पा रहे हैं और शरीर भी असमर्थता प्रकट करने लगा है। यह सब कुछ उन्हे स्वीकार्य नही है और स्वय ने गोली मारली।

'द ओल्डमैन एण्ड द सी' मे उनके साहित्य ने चरमोत्कर्ष की स्थिति प्राप्त की और इसी पर उन्हे नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गये दिनो जब डैडी यही थे तब वे इन्ही का 'डेथ इन द आफ्टर नून' पढ रहे थे। जाने कहा रख गये हैं। मैं पढना चाहती थी। आओ चलें, देखो बहुत समय हो गया। मेरी दोस्त इन्तजार कर रही होगी। जब भी उसे समय देती हू अक्सर देर हो ही जाती है। कभी कभी तो बडी नाराज हो जाती है वह। मैं आपको उधर ही रास्ते मे छोडती जाऊंगी।

चलिये। मुझे तो पुल पर छोड देना। उधर से पास के रास्ते से निकल जाऊंगा। आओ बैठो। मुझे भी ड्राइविंग सिखा दो।

क्या करोगे सीखकर और एक दो ड्राइवर्स की छुट्टी करवाओगे। फिर कभी सिखायेंगे। इन दिनो क्या कर रहे हो ?

बताया नही ? एक उपन्यास शुरू किया है। उसे पूरा कर रहा हू।

पहिले तो बताया नही कभी आपने ?

अभी लिखना शुरू ही कहा किया है। कहने का मतलब है कि अपनी जिन्दगी की कहानी अब चल ही रही है। ये ही उपन्यास है। देखते हैं आगे आगे क्या क्या होता है वही एक कहानी होगी, वही बडे रूप मे एक उपन्यास।

तो मेरे साथ प्यार करके प्लाट बनाया जा रहा है चलो ये भी मंजूर है। सामने देखिये पुल आ गया है। हां, इजाजत दो। घर जाकर उपन्यास का मूड बनाये रखियेगा। शाम तक मैं लौट आऊंगी और आपके पास होनी हुई घर पर।

धन्यवाद। लीजिये उतरें आपकी कार से। शाम को आ रही हो।

हां, कहा ना। अच्छा, शाम।

ठीक है।

राजेश दूर जाती हुई कार को देखता रहा। पैरो मे लगता था चलने की शक्ति ही नहीं रह गयी हो। उसे लगा राह के बीच जिस तरह नम्रता उसे छोडकर

कमाल है इतना व्यस्त रहता है फिर भी बड़ा ध्यान रखता है।

आदत तो तुम्हारी ही बिगाडी हुई है। खूब कवितायें, कहानिया सुनाया करता था फिर क्या आदत क्यो न बिगडे।

अच्छा, तो आदत बिगड गयी है।

और क्या ? रात को दस ग्यारह तक बिजनेस का काम, फिर एक दो घटे पढना पडता है। खुद ही सोचले कब सोना होता है। सोचता हू कोई बुराई नहीं।

पर ज्यादा आदत मत बिगाड लेना नही तो बिजनेस भूल जायेगा।

नौकरी का कोई प्रबन्ध हुआ ?

अभी तक तो नही। सिन्हा साहब के आने के बाद हो जायेगा।

कौन ? चाय बागान वाले सिन्हा।

उनकी ही तो लडकी थी, जो तेरे को मिली।

अच्छा। मैंने थोडा थोडा पहिचान लिया था। पहिले एक दो बार देखा था सो पूरा ध्यान नही रहा। तब तो तेरी किस्मत बनी यार। सिन्हा साहब की प्रापर्टी कितनी है ? क्या जादू कर दिया उस पर।

कोई जादू नही। खुद चाहती है अपने को। देख सामने ध्यान से।

बबई मे रहता हू। तब भी शादी कहा हो रही है ? भैया ऐसे मामलो मे देरदार ठीक नही। कल होती हो तो आज, अभी कर लो। बातचीत हो गई ना।

बातचीत कल जब सिन्हा साहब आयेंगे तब होगी

गयी भैंस पानी मे, समझा अब तो। सिन्हा तेज आदमी है। कम उम्मीद है वह तैयार हो जाये।

मुझे तैयार करने की जरूरत नही है उनको। उनकी लडकी को मैंने साफ मना कर दिया। उसके पिता से शादी के बारे मे कोई बात नही करू गा। फिर जो होगा देखा जायेगा। देख विकास, मेरे को सिन्हा साहब के पैसे से कोई लालच नहीं। तुम तो जानते हो मेरे पास है तो भी खुश हू, नही है तो भी दुख नही।

बिना पैसे के आज कुछ नही होता। जो कुछ है पैसा है, भगवान पैसा है।

देखा जायेगा गुरु। कोई दूसरी बात कर। पिताजी-माताजी कैसे हैं।

ठीक है, तेरे को आर्शीवाद कहलवाया है। प्रसन्नता की बात सुनकर बडी खुशी हुई सिन्हा साहब के नगद जवाई।

यार, फिर वही बात। चलो बगले पर ही बातें होगी।

चली गयी गयी। कही ऐसा न हो कि जीवन के दोराहे पर भी ऐसा ही हो और वह खडा देखता रह जाये। नीरजा का विचार आ गया और उसकी आखें भर आयी। प्रेम का दर्द, घावो को भरने के लिये समय अवश्य सहायता करता है लेकिन कई दर्द इतने तीव्र होते हैं जो समय समय पर टीसते रहते हैं। प्रेम के बाद दर्द और फिर वही जीवन बन जाता है। ऐसे दर्द की टीस मे भी जो आनन्द आता है वह स्वय मे बडा अनोखा होता है।

वह सडक के किनारे चल रहा था एक कार एकदम उसे छूती हुई रुकी। पीछे मुडकर बडे गुस्से मे कहा– क्या बदतमीजी है। मार देने की ही सोचली है कार वालो ने ? जब उसने कार म बैठे मित्र को देखा तो दौडकर कार तक पहुँचा।

अरे विकास क्या यार मार ही डालने की सोचली थी आज ? और आया कैसे बिना किसी कार्यक्रम के।

लेखक महोदय, जो खुद ही मरा हो वह किसको मार सकता है ? क्या चीज बनाई है ईश्वर ने भी। लगता है अपने हाथो से बनाई है।

आखिर हो क्या गया है तेरे को। तुम जिन्दा तो हो, मरे कहा हो।

तुम नही समझे छोडो इस बात को। अच्छा बता देते हैं। अभी रास्ते मे कार मिली थी और उसको चलाने वाली जो थी उसी की बात कर रहा हू। सच यार, मर गये हम तो।

विकास बाबूजी यदि वह कार नीले रग की थी तो उसको चलाने वाली लडकी से तुम्हारे दो रिश्ते ही होंगे या तो तुम्हारी बहन या भाभी। समझे। वह मेरी मित्र है और मैं उससे शादी करने वाला हू।

बधाई हो। चलो हमने भाभी मान लिया, अब खुश। चलो बैठो गाडी मे। हो कैसे। कोई तकलीफ तो नही बगले म। पिताजी ने अचानक बिजनेस के काम से मुझे भेज दिया। आना पडा। दो चार दिन बाद वापस चला जाऊगा। उम्मीद है काम जल्दी हो जायेगा। तुम्हारी कलम चल रही है या नही।

थोडी बहुत चल रही है विशेष नहीं।

तेरी कलम तोजब दौडनी चाहिये। क्या जीवनसाथी चुना है कार वाला।

मैं तो उस मना कर रहा हू लेकिन वह ही पीछे पड रही है।

क्या विशेषता आ गई तेरे मे जो लडकिया तेरे पीछे पडने लगी।

ये तो देख लेना जब शादी हो जाये। अभी से क्या कहें।

तेरा एक उपन्यास देखा, अच्छा लगा।

कमाल है इतना व्यस्त रहता है फिर भी बड़ा ध्यान रखता है।

आदत तो तुम्हारी ही बिगाडी हुई है। खूब कवितायें, कहानिया सुनाया करता था फिर बता आदत क्यो न बिगडे।

अच्छा, तो आदत बिगड़ गयी है।

और क्या ? रात को दस ग्यारह तक बिजनेस का काम, फिर एक दो घंटे पढ़ना पडता है। खुद ही सोचले कब सोना होता है। सोचता हू कोई बुराई नही।

पर ज्यादा आदत मत बिगाड लेना नही तो बिजनेस भूल जायेगा।

नौकरी का कोई प्रबन्ध हुआ ?

अभी तक तो नही। सिन्हा साहब के आने के बाद हो जायेगा।

कौन ? चाय बागान वाले सिन्हा।

उनकी ही तो लडकी थी, जो तेरे को मिली।

अच्छा। मैंने थोडा थोडा पहिचान लिया था। पहिले एक दो बार देखा था सो पूरा ध्यान नही रहा। तब तो तेरी किस्मत बनी यार। सिन्हा साहब की प्रापर्टी कितनी है ? क्या जादू कर दिया उस पर।

कोई जादू नही। खुद चाहती है अपने को। देख सामने ध्यान से।

बबई मे रहता हू। तब भी शादी कहा हो रही है ? भैया ऐसे मामलो मे देरदार ठीक नही। कल होती हो तो आज, अभी कर लो। बातचीत हो गई ना।

बातचीत कल जब सिन्हा साहब आयेगे तब होगी

गयी भैस पानी मे, समझा अब तो। सिन्हा तेज आदमी है। कम उम्मीद है वह तैयार हो जाये।

मुझे तैयार करने की जरूरत नही है उनको। उनकी लडकी को मैंने साफ मना कर दिया। उसके पिता से शादी के बारे मे कोई बात नही करू गा। फिर जो होगा देखा जायेगा। देख विकास, मेरे को सिन्हा साहब के पैसे से कोई लालच नही। तुम तो जानते हो मेरे पास है तो भी खुश हू, नही है तो भी दुख नही।

बिना पैसे के आज कुछ नही होता। जो कुछहै पैसा है, भगवान पैसा है।

देखा जायेगा गुरु। कोई दूसरी बात कर। पिताजी-माताजी कैसे हैं।

ठीक है, तेरे को आर्शीवाद कहलवाया है। प्रसन्नता की बात सुनकर बडी खुशी हुई सिन्हा साहब के नगद जवाई।

यार, फिर वही बात। चलो बंगले पर ही बातें होगी।

२६

सध्या का समय हो रहा है । सूर्य दिन की तपती हुई किरणो मे आलस्य और क्षीणता का भाव लिये पश्चिम मे लटक गया है। पृथ्वी पर सुबह से डाले गय रश्मि जाल को समेट रहा है। पेडो पर अब भी सुनहरी हल्की हल्की रोशनी दिखाई दे रही है। गये दिनो से वर्षा नही हुई। चाय बागान म काम करने वाले मजदूर बोझिल पैरों से, पैरो को लगभग घसीटते से चल रहे हैं। यही सब कुछ उनके जीवन का एक बडा भाग है। उनके जीवन मे उत्साह प्रसन्नता का भाव ही मानो शून्य हो गया है। दैनिक जीवन क्रम एक मशीन की तरह है जो स्वत चलता रहता है। सूर्य लगभग डूब चुका है।

नम्रता की एकाग्रता को उसके पिता ने भग कर दिया– कहो, बेटे क्या पढा जा रहा है ?

नमस्ते डैडी, बस आज मूड बन गया। दिन से ही यह उपन्यास पढ रही थी। लाइफ मे क्या न हो जाये कुछ ऐसे ही सवालो को दिया है इसने।

हा, मैंने पढा है वाकई खूबसूरत है। कोई आया था दिन मे।

कोई नही आया।

जबसे बबई से आया हूँ तुम्हारे दोस्त राजेश से मिलना नही हुआ उसे कहना उससे मुझे बहुत काम है मेरे से मिल ले। दूसरी बात मैंने तुम्हारा लिखा पत्र पढा है। तुमने अपनी इच्छा जाहिर की है तुम राजेश से शादी करना चाहती हो। मैंने बहुत कुछ सोचा है जिन्दगी के हरेक पहलू से सोचा है, समझा है पर हम इस नतीजे पर पहुचे हैं कि तुम्हारा और उसका साथ कुछ ठीक नही। तुम्हारी अब तक की जिन्दगी जिन खुशियो और आराम के साथ बीती है मुझे विश्वास नही होता कि राजेश भी तुम्हे वह दे सकेगा और तुम्हे खुश रख पायेगा।

जहां तक लागो का प्रश्न है लोग यो ही कहते रहते हैं। समाज को, उसके रीति रिवाजो को बनाने वाले आप हम ही हैं। ठीक है लेकिन जहा तक समाज की मर्यादा है हम अपने को उससे थोडा स्वतत्र बना सकते हैं। लेकिन उन्हें छोडकर तो आगे नही बढा जा सकता। तुमने अब तक जो कुछ देखा है, सीखा है वह सब कुछ ठीक वैसा ही नही है। तुमने जो निर्णय किया है भावुकता से अधिक

कुछ नही। हम तुम्हारी शादी कर भी दें। कुछसमय बाद तुम्हारे दिमागमे भावुकता का प्रभाव समाप्त होजाये और जीवनकी वास्तविकता का सामना करना पडे तब हो सकता हैं तुम्हें अपने इस फैसले पर दुख हो। खैर, फिर भी तुम और सोच लो।

पूरी तरह सोच लिया है। मेरी जो इच्छा है मैंने आपके सामने रख दी।

बेटी, जब हम जवान थे तो ऐसा ही सोचा करते थे जैसा तुम सोच रही हो। तुम्हारी जैसी हालत हमारी भी थी। लेकिन आज जब हम उस समय के बारे मे सोचते हैं तो लगता है वह सब कुछ नहीं थोथी भावुकता थी, बबई में एक बडे सेठ के लडके से तुम्हारे लिये बात हुई। लडका अच्छा है पैसे वाला है, मेरी तो यही इच्छा है कि तुम्हारी शादी वही करू। लेकिन हमारे दिल मे तुम्हारे लिये बहुत प्यार है। तुम्हारी हर इच्छा को हमेशा पूरा किया। लेकिन आज जो तुम चाहती हो उसके बारे मे सोचने पर एक हिचक सी होती है। मुझे तुम्हारी पसन्द से कोई विरोध नही लेकिन तुमने राजेश को किस रूप मे पसन्द किया? क्या तुम्हारा चुनाव सही है, स्थायी है। कुछ ऐसे प्रश्न जब मेरे सामने आते है तो सोचने पर मजबूर हो जाता हू कि सही क्या है और गलत क्या है?

डैडी मैंने राजेश को जिस भी दृष्टि से देखा है वह नेक और अच्छा इन्सान है। पूरा विश्वास है कि उसके साथ रहकर मुझे कोई दिक्कत नही होगी। आप यदि यह सोचते हैं कि हम उससे अधिक पैसे वाले है, अधिक इज्जत वाले हैं। यदि आप राजेश को मेरे लिये पसन्द करते है तो वह भी बडा आदमी बन जायेगा फिर ये सारी बातें सामयिक हैं।

फिर भी हम सोचेंगे कि तुम्हारे लिये क्या अच्छा होगा। राजेश से मैं मिलना चाहता हू। देखो बेटा, खाना जल्दी बनवालो। मुझे नारग के घर जानाहै।

अच्छा डैडी, मैं अभी जल्दी ही तैयार करवा देती हू।

अरे, राजेश। आओ-आओ। हम तुम्हारे बारे मे ही बात कर रहे थे। अच्छा हुआ तुम भी आ गये।

नमस्ते।

आओ ऊपर बैठेंगे। बबई से लौटे करीब एक सप्ताह हो गया। इन दिनो तुम भी घर की ओर आये नहीं।

जी हा, ऐसे ही आना नहीं हुआ। कुछ व्यस्तता रही। मेरा एक मित्र आया हुआ था। आपका प्रोग्राम कैसा रहा।

बिजनेस का कार्य था और नम्रता की मा का घूमने का। कुल मिलाकर अच्छा रहा। बबई मे नम्रता के लिये एक लडका देखा था, भई हम तो पसन्द आ गया। अब तो नम्रता की पसन्द जानना बाकी है। आओ बैठो।

धन्यवाद। आप बैठियेगा।

हा मैं कह रहा था नम्रता के लिये बबई मे एक लडका देखा है। बहुत बडे सेठ का लडका है, सुन्दर भी है। हम चाहते हैं अब बहुत जल्दी शादी कर दें। अब नम्रता बडी भी हो गई हैं। तुम जानते हो ये लडकी धन अपने पास कब तक रखा जा सकता हैं। सो जल्दी से जल्दी शादी हो जाये, मेरी और नम्रता की मा की इच्छा है। अरे किस विचार मे खो गये राजेश।

जी, जी ''। कुछ नही। ऐसे ही कोई विचार आ गया था। जी हा, जल्दी शादी कर देनी चाहिये।

तुम्हारे दिमाग मे जो विचार आ रहे हैं मैं समझ रहा हू। चलो कोई बात नही। एक बात कहना चाहता हू। मेरी इच्छा है कि नम्रता की शादी तुम्हारे साथ कर दू। तुम्हारा क्या विचार है।

आपसे इस बारे मे मैं भी बात करना चाहता था। इस सबध मे आप जैसे बडे आदमी की मेरे साथ कोई बराबरी नही हो सकती है। यही सोच मैं अपनी इच्छा को आपके सामने रखना नही चाहता था।

तुम्हे कहने की आवश्यकता नही है। नम्रता से मेरी बातचीत हो चुकी है। सारी बात मैं पूरी तरह समझ गया हू। तुम जानते ही हो मेरा जो कुछ है व सब कुछ नम्रता का है इसलिये मेरे लिये सब कुछ वही है। उसकी इच्छा, खुशी सब स्वीकार है मुझे। तुम्हारा आगे क्या करने का विचार है मैं यह जानना चाहूगा।

कालेज मे लेक्चरर का अवसर मिल जायेगा।

अच्छा है। नम्रता के लिये क्या विचार रखते हो?

जी, आपका मतलब नही समझा।

मतलब सीधा सा है नम्रता तुम्हारे विचारो म कैसी है?

जी ठीक है।

यहा बैठो, नम्रता। राजेश से उसी विषय म बात कर रहा था।

मैं चलती हू आप जो कुछ ठीक समझें।

राजेश, मैंने सोच लिया है कि नम्रता के जीवन साथी के रूप मे तुम उपयुक्त हो। मुझे यदि कुछ कहना है तो यह कि तुमने उसके जीवन को देखा है, उसे कोई दुख न हो। एक और बात यह कि तुम और नम्रता यही रहो। तुम बागानो का काम देखो। नम्रता एक ही बेटी या बेटा कहलो है उसे मेरी आखो से दूर रखना कठिन होगा। सोचता हूँ इसमे तुम्हे कोई आपत्ति नही होनी चाहिये।

२७

हलो, नम्रता।

हलो, शरद।

मुबारक हो शादी।

तुमसे बात नही करती । तुम क्यो नही आये शादी पर।

नही चाहता था कि अपनी आंखो के सामने ही तुम्हारी शादी किसी दूसरे के साथ हो और मैं चुपचाप बैठा रहू। तुमने कवि मे क्या देखा जो उससे शादी कर बैठी। उसका खाने कमाने का पता नहीं। तुमने ये नही सोचा कि मेरे दिल पर इसका क्या असर पडेगा। तुम्हे मैं बेवफा भी कहू तो क्या कम है। तुम पर विश्वास करके मैंने खुद को ही धोखा दिया है।

तुमने जो कुछ कहा उसमे सब कुछ सच है,मैं बेवफा हू। मैंने प्यार तुम्हे किया और शादी राजेश से। शरद मैंने वास्तव मे न जाने किस विचार मे पडकर शादी करली।

तुम्हारी शादी की सूचना पिताजी ने मुझे दी और तुम्हारा कार्ड मिला उस समय मेरी जो स्थिति थी उसे तुम न जानो तो अच्छा रहेगा। तुम्हारे पर मुझे कितना गुस्सा आया कह नही सकता। तुम्हारे लिये पिताजी ने एक दो बार मुझे कहा था। तब मैंने यो ही सकोच के कारण कहा नही लेकिन अचानक ही तुमने शादी का निर्णय कर लिया और शादी कर भी ली।

वैसे शरद, राजेश बडे अच्छे हैं। डैडी के मारे कामो को वे ही सभालने लगे हैं। लेकिन मुझे उन बातों से कोई मतलब नही। मैंने उनसे दो तीन बार क्लब मे चलने को कहा, उन्होंने साफ मना कर दिया। दो तीन पार्टियो मे ले जाना चाहा, काम का नाम लेकर टाल दिया। ये कोई लाइफ हुई। तुम तो मेरा नेचर जानते हो।

अच्छा तो उनको क्लब मे आना-जाना पसन्द नही वैसे दिखने मे अच्छा लम्बा चौडा है। तुमने भी न जाने क्या देखा उसमे।

तुम क्लब की बात करते हो। अब तो वे डैडी के कामों में इतना इन्टरैस्ट लेने लगे हैं कि मैं तो उनके लिये कोई मायने ही नही रखती। जब देखो तब फाइलें उठाये चले आ रहे हैं घर पर। रात को जब मैं सो जाती हू उसके बाद तक काम करते रहते है। शादी से पहिले फिर भी उनके साथ घूमना फिरना हो जाता था अब वह भी हाथ से गया। सच शरद मैं दो चार महीनो म ही बोर होने लगी हू ऐसी जिन्दगी से। क्या करे ऐसी जिन्दगी को जिसमे खुशी न हो, आनन्द न हो।

सही बात है। लगता है राजेश माडर्न कल्चर से बिलकुल अनजान है।

हा, ऐसा ही है।

तुम चाहो तो सब ठीक हो सकता है। धीरे धीरे उसे क्लब मे ले जाओ। जब वह वहा का वातावरण देखेगा तो सब सीख जायेगा। तुम तो बेकार ही चिन्ता करती हो। अभी उसने जिन्दगी मे ऐसा सब कुछ नही देखा है ना इसलिये उसे पसन्द नही है।

शरद, उन्हे बिलकुल पसन्द नही है क्लब मे आना जाना। वे चाहते हैं कि मैं भी बन्द कर दू। लेकिन यह कठिन है। मेरी एक सोसायटी है, एक फ्रैंड सर्किल है उसे एकदम कैसे छोडा जा सकता है?

अपने-अपने विचार हैं। वह ऐसे माहौल मे रहा नही है इसलिये उसे यह पसन्द नही है।

शरद, क्लब की बात छोड दो वे मेरे पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाना चाहते हैं। ठीक है मैं उनकी पत्नी हू कोई गुलाम नही, जैसा चाहे रखें।

तो इन दिनो तुमने क्लब जाना छोड रखा होगा।

नही छोडा है। हा थोडा कम जरूर कर दिया है। इस पर भी उन्हे सन्तोष नही।

अच्छा ड्रिंक करने पर तो कोई कन्ट्रोल नही है।

खास बात यही है। उन्हे मैंने चार छ बार खाना खिलवाया घर पर लेकिन कभी ड्रिंक दिया नही। इस वजह से उन्हे ये मालूम नही कि मैं ड्रिंक करती हू। एक बार मैं क्लब से लौटी तो वे दरवाजे पर ही खडे थे। मैं कार से उतरकर दरवाजे पर गयी तो उन्होंने मुझे बाहो मे ले लिया। वे समझ गये कि मैंने उस दिन ड्रिंक किया था। उस दिन तो उन्होने मुझे कुछ नही कहा। लेकिन एक दो बार और देखा तो कह दिया उन्हे मेरा ड्रिंक करना बिल्कुल पसन्द नही है। मजाक की बात तो यह कि वे दो चार दिन मुझसे बोले भी नही।

तो तुमने इस बारे मे डैडी को कुछ नही कहा।

शिवरत डैडी की भी तो है। उन्हें भी मेरा डिफ करना पसन्द नहीं है। वैसे वे सब जानते है। इस बारे मे उन्हे क्या कहा जा सकता है। कहूगी तो मेरे पक्ष की बात तो उनसे होगी नही। सच शरद, अब लगता है लाइफ शादी के बाद कितनी परतन्त्र और बोर हो जाती है।

लेकिन तुम परतन्त्र कहा हो जब राजेश की बात ही नही मानती हो।

अब क्यो नही जब कही बाहर जाती हू तो उन्हें कहना तो पड़ता ही है। आती हू तो वे जागते हुए मिलते है। कुछ झिझक तो होती है। राजेश को इतना कजरवेटिव नही समझती थी। इनकी बातचीत मे भी ऐसा कुछ मालूम नही पडता था। लेकिन अब तो शादी हो चुकी है। डैडी को वैसे इन बातो मे से कोई भी बात मालूम नही है। उनकी नजरो मे हम खुश है। डैडी न ठीक ही कहा था कि मैं राजेश से शादी करने के पहिले दोबारा सोच लू। वाकई मेरे मे उस समय न जाने राजेश के प्रति क्या प्यार का तूफान था कि मैं उसमे बह गयी और उससे शादी कर बैठी वह केवल भावना थी जो मुझे आज काट रही है।

यही दुख है तुमने मेरे बारे मे कुछ भी नही सोचा। क्या मेरा तुम्हारे पर कोई अधिकार नही था।

तुम ये बातें सोचते हो कि मेरे दिल मे तुम्हारे लिये कोई जगह नही है। मुझमे तुम्हारे लिये पहिले जितना न सही प्रेम तो है। तुम्हारा प्यार आज खुद मेरे से प्रश्न कर रहा है जिसके साथ मैंने न्याय क्यो नही किया। लेकिन अब जब मैं सामाजिक रीति से शादी कर चुकी हू तो वे सारे के सारे प्रश्न व्यर्थ हो गये हैं। उनके लिये अब क्या सोचा जा सकता है और अगर सोचू भी तो कोई लाभ नही होगा क्योंकि अब मैं दूसरों की हो चुकी हू। मुझ पर पूरा नहीं तो किसी सीमा तक राजेश का अधिकार है।

लेकिन नम्रता जो कुछ भी तुमने किया अच्छा नही किया। मैंने अपनी कंपनी मे छ महीने की छुट्टी ले ली है यही रहूगा। पिताजी की तबियत ठीक नही रहती। सो उन्होंने बुलवा लिया। मेरी आने की यहा बिलकुल इच्छा नहीं थी पर कर क्या सकता था। एक बात तो बताओ तुमने राजेश को पसन्द कैसे कर लिया?

राजेश मेरी ही क्लास मे था। मेरी फ्रैंड नीरजा, उसको ये बहुत चाहते थे। मुझे सब मालूम था। कालेज मे कार्यक्रम हुआ करते थे उन सबमें इनका नाम अवश्य होता था। इनकी साहित्यिक रुचि भी थी। इस वजह से मैं प्रभावित थी। कुछ समय बाद मुझे मालूम पडा कि मेरी फ्रैंड नीरजा के द्वारा इनसे प्यार न होने की बात जानकर इन्हें बहुत सदमा सा लगा है तो मुझे थोडी और

सहानुभूति हो गई। आकर्षण धीरे धीरे बढ़ता गया और बाद मे प्रेम के रूप मे बदल गया। उसी प्रेम को सब कुछ मानकर मैंने इनसे शादी कर ली। शुरू मे तो ठीक रहा। लेकिन गये दिनो मे तो हमारे बीच कुछ दूरी सी होने लगी है। इन सब बदली हुई परिस्थितियो की मुझे विशेष चिंता नही लेकिन बेकार का मानसिक भार हो गया है ना ? डैडी आ रहे है अभी इस बात को बन्द करो।

अरे शरद बेटे, कब आये ?

नमस्ते अंकल, गयी रात ही पहुँचा हू।

मेरा पत्र मिला होगा। छुट्टी मिल गयी या नही।

मिल गयी है, छः महीने की ले आया हू। फिर आगे बढा लू गा या नौकरी छोड दूंगा।

अरे बेटे नौकरी क्यो छोडो। नारग जल्दी ठीक हो जायेगा।

आपका पत्र भी मिला था।

नम्रता, शरद को कुछ खिलाओ-पिलाओ।

बस अभी तकलीफ नही करना, नम्रता। अकल अभी नाश्ता करके ही चला था। आपकी तबियत ठीक है ना।

हा यो ही है। अब हमारी उम्र भी तो देखो। थोडा बहुत जो भी कर लेते हैं बहुत कर लेते है। भई हमे तो जवाई अच्छा मिल गया। बिलकुल लडके के समान कार्य करता है। मेहनती है। अपना सारा काम उसी पर छोड दिया है क्यो अच्छा किया न ?

हां बिलकुल ठीक ही किया। वैसे सारा काम उसे दे देना मैं ज्यादा ठीक नहीं समझता।

अरे बेटे, वह तो नाम का है। मेहनत करता है काम में। चलो, ऊपर चलकर बैठो।

यही अच्छी धूप आ रही है अकल।

अच्छा मैं चलूंगा। थोडा घूम आता हू।

आओ शरद, ऊपर ही बैठेंगे।

यहीं अच्छा है।

नहीं, ऊपर चलते हैं।

जैसा तुम कहो।

२८

रात आधी से भी अधिक बीत गयी। हवा मे बड़ी ठडक है। हवा के तेज भोको से उत्पन्न सर्र सर्र की आवाज के अलावा अन्य कोई आवाज सुनाई नही पड रही। राजेश टेबल पर बैठा कार्य कर रहा है। कभी उसकी दृष्टि खिडकी से बाहर नीचे पोर्टिको और सुन्दर ढग से बने बगीचे की ओर चली जाती है। राजेश के चेहरे से परेशानी लगती है। उसके चेहरे पर परेशानी के भाव आसानी से पढे जा सकते हैं। जिन्दगी मे कई तरह के दुख है, कठिनाइया हैं।

राजेश का ध्यान नम्रता की ओर आकृष्ट हो जाता है जो दरवाजे पर खडी रहस्यमयी आखो से राजेश की ओर देखे जा रही है। राजेश सक्षेप मे ही कहता है।

जल्दी आ गई आज तो

हू। आपको ।

अभी तो रात के तीन ही बजे हैं। जल्दी डास खतम हो गया।

नही अभी चल रहा है लेकिन नीद सी आने लगी सो चली आई।

थोडा और रुकना चाहिये था रात बाकी है अभी।

नम्रता के चेहरे पर कुछ भु भलाहट सी फैल गयी और बोल उठी साफ-साफ क्यो नहीं कहते कि मैं देर से आयी हू।

कहने की कोई जरूरत नही है। जब तुम खुद जानती हो। कितनी बार कहा है नम्रता, मुझे ये सब कुछ बिलकुल पसन्द नही। तुम न जाने क्यों मेरे को, मेरे विचारो को समझने की कोशिश नहीं करती हो। यदि तुम इसी को जिन्दगी मानती हो तो यह तुम्हारी भूल है।

मुझे तुम्हारी राय जानने की जरूरत नहीं कि जिन्दगी क्या है या क्या होती है। मैं कोई नासमझ दुधमु ही बच्ची नही जो मुझे शिक्षा दी जा रही है।

मालूम नहीं था कि तुमसे शादी करने के बाद मैं जिन्दगी में बध जाऊ गा। तुमसे मुझे इस तरह की कभी स्वप्न मे भी आशा नही थी, तुम में इतना परिवर्तन आ जायेगा मुझे नहीं मालूम था।

क्या बदल गया है अब मुझमे । मैं पहले जैसी ही हू । क्लब मे शादी के पहिले भी जाती थी, शादी के पहिले भी डाम करती थी आज भी करती हूं । ड्रिंक पहले भी करती थी और आज भी । राजेश, तुम्हारे और मेरे विचारो मे जमीन आसमान का अन्तर है । तुम आज जमाने के साथ चलने वाले इंसान नहीं, वही पुरानी पीढी जो आज से सौ साल पहिले ठीक समझती थी, करती थी उन्ही मे से एक हो । आज बदले समय के अनुसार तुम बहुत पिछडे हुए हो ।

बदला जमाना तुमसे यह नही कहता कि शराब पियो, क्लब मे गैर लोगो की बाहो मे झूलती डास करो, घर में रात को तीन-तीन बजे लौटो । तुम किसी की बीबी हो कोई आवारा लडकी नही ।

राजेश, मैं तुम्हारी बीबी हू कोई गुलाम नही । मेरी भी स्वतत्रता है, मेरे अपने विचार हैं, तरीके है, सोसाइटी है । सोसाइटी कैसे मूव की जाती है तुम क्या जानो । मनोरंजन के लिये यदि क्लब मे थोडे समय के लिये चली गयी तो तुम्हारा क्या बिगड गया, किसी के साथ डांस कर लेना कोई चोरी तो नही । तुम यदि क्लब मे जाते तो क्या किसी दूसरे पार्टनर के साथ डास नही करते । न जाने क्या बुराई है इन सबमे ।

हमेशा, हर बार तुम्हारे से यही सुनता हू कि इसमे क्या बुराई है, उसमें क्या बुराई है, तुम कोई ऐसी बात तो बताओ जिसमे बुराई है । तुम्हारे से मुझे बहुत निराशा हुई है । तुम यह नही सोच सकती कि सही क्या है, गलत क्या है ?

गलत कुछ भी नही है और यदि कुछ है तो यह कि तुम्हारे विचार बडे छोटे हैं, शक करते हो मुझ पर ।

शक की कोई बात हो तो कहू भी, जो कुछ है मैं देख रहा हूँ आखो के सामने है । तुमको अभी शरद अपनी कार से छोडकर नही गया, क्लब मे शरद के साथ तुम डास नही कर रही थीं ।

फिर वही शक की बात । शरद और मैं बहुत पहिले से ही मित्र हैं । यदि मैं उसके साथ चली भी गयी तो क्या गजब हो गया । वह हमेशा तुम्हारी तारीफ करता रहता है और एक आप हैं कि उसके नाम से भी नफरत करते हैं ।

मुझे शरद से कोई नफरत नही । लेकिन यह सच है कि जो कुछ मैं सोचता हू, देखता हूं उसे मैं शक नही मानता यह सच है । अच्छे घराने की बहू बेटियां, रात को तीन चार बजे तक घर के बाहर क्लबो मे नाचती, थिरकती रहें क्या यह सब कुछ शोभा देता है । तुम्हारी स्वतत्रताएं हैं लेकिन उनकी अपनी सीमाएँ हैं जिनमे रहकर तुम चलो । हरेक चीज जब सीमा के अन्दर होती है तो अच्छी लगती है । तुम्हारे डैडी को यह सब कुछ मालूम नही है ना ।

मालूम है। वे मुझे कुछ भी नहीं कहते।

वे कहना चाहते हैं तो भी चुप हो जाते हैं। वरना उनसे सच्चे दिल से पूछो कि क्या उन्हे यह सब कुछ पसन्द है। नम्रता, यदि तुम जीवन मे शांति का, सुख का अनुभव चाहती हो तो तुम्हे यह सब कुछ छोडना होगा। व्यर्थ की बातें हैं। जिसे तुम सोसाइटी मानती हो वह सब इस पैसे की माया है इसी पर आश्रित है। आज तुम्हारे पास पैसा न हो तो कौन तुम्हारा साथ देगा, कौन चाहेगा तुम्हारे से मित्रता रहे। जीवन का वास्तविक आनन्द आपसी व्यवहार की सन्तुष्टि मे है जिससे तुम बिलकुल अपरिचित हो, बहुत दूर हो।

।

मुझे नीद आ रही है। तुम जमाने से इतने पीछे चल रहे हो, मालूम नही था। मैंने जब भी क्लब मे चलने को कहा हमेशा तुमने टाला, कोई बहाना बना लिया। कभी चलकर तो देखो वहा क्या होता है यहा बैठे दिन भर फाइलो के आकडो मे खोये रहते हो।

मुझे ऐसे स्थान पर जाने मे कोई रुचि नहो जहा जाकर हम अपने को भूल जायें। मुझे तुम्हारे क्लब की कोई भी बात पसन्द नही। मैं बगीचो से आठ बजे आ गया था नौकर ने बताया तुम घूमने गयी हो। खाना खाने के बाद बैठा तुम्हारा इन्तजार कर रहा हू काम भी करता रहा हू तुम्हारे डैडी के सारे काम को सभालता हू और जबसे काम को मैंने अपने हाथो में लिया है कपनी को कई लाखो का अधिक फायदा होने लगा है।

मुझे क्यो सुना रहे हो ये बातें। तुम मुझे कम्पनी नही दे सकते, जैसी मेरी इच्छा है, उसमे मेरा सहयोग नही करते तो तुम्हारा कमाया सारा पैसा बेकार है। मुझे लाइफ मे शादी कर लेने के बाद भी क्या खुशी मिली सिवाय इसके कि मैंने अपने को झझट मे डाल लिया। सुबह से शाम तक ऑफिस मे रहते हो। देर तक घर पहुचते हो, मुझे क्या चार्म हो सकता है। अपने भारी दिल को यदि हल्का करने के लिये क्लब चली जाती हू तुम्हे वह भी पसन्द नही। तुम्हें मेरी कोई भी बात पसन्द नही, मेरा कही आना जाना पसन्द नहीं तो तुम्ही बताओ फिर जिन्दगी किसे कहते हैं ? क्या होती है ? किस चिडिया को तुम जिन्दगी मानते हो ?

। तुम्हारे इन बह आये आसुओ का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा। तुम क्यो नही अपने जीवन को नये मोड से शुरू करती हो। क्यों नही तुम यह सोचतीं कि अब तुम्हारी शादी हो गयी, अब तुमको कुछ सीमाओं मे रहना है। तुम शादी के पहले क्लब में जाती थी या नही, ड्रिंक करती थी या नही मुझे कोई मतलब नहीं। लेकिन अब वह बात तो नही। अब तुम किसी की बीबी हो। हरेक काम

की एक उम्र होती है समय होता है तुम अभी भी चाहो तो सुखी हो सकती हो अपने साथ मुझे भी मानसिक सुख दे सकती हो।

यह सब कुछ छोड देने के लिये कह देना बडा सरल है राजेश। लेकिन ये सारे तौर तरीके मेरे जीवन के अग बन गये हैं। सच तो यह है कि मैं उन्हे न तो छोड सकती हू और न छोडना चाहती हू। तुम खुद क्यो नही अपने को इस ढग से ढालने की कोशिश करते हो। आजकल तो इन सब बातो से ही लोगो के स्टेन्डर्ड का अनुमान लगाया जाना है और जमाने के साथ अपने आपको बदलते रहना चाहिए। शरद का क्या है दो एक महीने यहा और रहेगा फिर चला जायगा, उसकी वजह से मुझे भी कपनी मिल जाती है।

कितना अच्छा लगता है जब मैं अपनी आखो से अपनी बीबी को गैर की बाहो मे जाते देखू, नाचते देखू, हस-हस के बातें करते देखू, क्यो ठीक कह रहा हू या नही? शरद की वजह से तुम्हे भी अच्छी कम्पनी मिल जाती है। खैर नम्रता, तुम यदि मेरी बात नहीं मानती, तो मैं क्या कह सकता हू। ये सब बातें मेरे कहने की नही तुम्हारे सोचने की है। सोचता था कि तुम नीरजा के स्थान पर रहकर मुझे शाति दे सकोगी, मुझे दुख नही रहेगा। लेकिन जो भी देख रहा हू वह सब मुझे जो दुख देता है, उसके लिए कहना व्यर्थ है।

आज भी मैं तुम्हे प्यार करती हू, इसमे कोई दूसरी बात नही। लेकिन जहा तक विचारो की स्वतत्रता का प्रश्न है, उसमे मैं अपने को स्वतत्र चाहती हूँ। मेरे विचारों और तुम्हार विचारो मे ज्यादा अन्तर नही है। केवल सोचने का अन्तर है। एक ही बात को तुम अलग दृष्टि से देखते हो मैं अलग से। विचारो की इसी भिन्नता से हमें दुख होना है। तुम अपने रूढिगत सस्कारो मे बधे रहना चाहते हो जिसमें जीवन का आनन्द कुछ भी नही है जो कुछ है बधन ही बधन।

उन बधनों को ही सुख का सागर मानकर यदि तुम चलो तो तुम्हे नयी जिन्दगी मिलेगी। य सारे औपचारिक सबध, पीछे रह जायेंगे फीके पड जायेंगे।

तुम्हारे भाषण मे मुझ पर कोई प्रभाव नही पडगा। जो ठीक समझती हूँ वह ठीक है, उपयुक्त है। मेरा जीवन जैसा शुरू से चला आया है उसमे परिवर्तन करना मेरे लिय कठिन है।

नम्रता, छोडो इन बातो को जिनका तुम्हारे पर कोई प्रभाव नहीं। तुम जैसा चाहो अपने जीवन को चला सकती हो। मैं यदि चाहू तो तुम्हे कई [illegible] से अधिकार पूर्वक रोक सकता हूँ लेकिन मुझे किसी पर भी अपनी इच्छा को थोपने की आदत नहीं है और कम से कम तुम जैसी स्वतत्र पत्नी पर।

[illegible]

वैसे भी तुम मुझे रोक नही सकते हो, जो मेरी इच्छा होगी वही करूंगी।

चुप रहो। तुम्हें यह नही भूलना चाहिये कि तुम मेरी पत्नी हो। मेरा तुम्हारे पर अधिकार है। जो मैं चाहूंगा, वह होगा इस घर में। मेरी शिष्टता को यदि कमजोरी मानती हो तो यह तुम्हारी भूल है।

ये क्यों भूल जाते हो कि मेरे पति होने के साथ साथ तुम मेरे पिता के नौकर हो, तुम उनके मातहत हो।

नम्र''' ता। नम्र''' ' ता यहां से चली जाओ, मैं'''तुमसे बात भी नही करना चाहता। मुझे मालूम नही था कि इतने तुच्छ नीचतापूर्ण विचार भी तुम्हारे मस्तिष्क में उत्पन्न हो सकते हैं। चली जाओ यहां से।

राजेश जीवन के प्रति उत्पन्न इन्ही विचारो में डूबने उतराने लगा। रात बीतती रही।

२६

हां, पिताजी ने इसी महीने में शादी निश्चित करदी है। लाख मना किया मानते ही नही। नही चाहता कि शादी करूं मेरी इच्छा ही नही रह गयी। बिना तुम्हारे जिन्दगी मे है ही क्या। तुम भी मुझसे बहुत दूर हो।

शरद शादी नही करोगे तो मैं तुमसे बात नही करूंगी। जब तुमने लड़की को पसन्द कर लिया है ऐंगेजमेंट हो गया है तो शादी करने मे क्या दिक्कत है। जिन्दगी में मेरी भी शादी हुई, मैं जो कुछ भी हूं मेरा भाग्य है, तुम्हारी भी शादी होगी परिवार बढेगा। मेरी हार्दिक इच्छा है शुभ कामनायें हैं कि तुम जिन्दगी में खुश रहो। तुम्हें और अंकल को कितनी सहायता मिल जायेगी। यह जरूर ध्यान रखना कि शादी के बाद बिलकुल भूल ही न जाना।

और कहो जो भी कहना है। राजेश जाने के लिये क्यों कह रहा है डैडी से।

उनके दिमाग की मत पूछिये। उन्होने मुझे, मेरी हरेक रुचि को, सोसाइटी को खतम कर देना चाहा और मैंने साफ शब्दों मे उन्हे कह दिया कि उन्हें मुझे कुछ कहने का अधिकार नही। तबसे वे सोच चुके हैं कि दार्जिलिंग मे नहीं रहेंगे। लखनऊ जाना चाहते हैं। शौक से जायें मेरी बला से। डैडी ने समझाया लेकिन मानते नहीं। ठीक है, मुझे उनकी कोई चिंता भी नही है।

तुम रोज ये नीद आने की गोलिया क्यो खाने लगी हो । अच्छी बात नही है सिन्हा अकल ने बताया था मुझे।

छोडो इस बात को। जब दिमाग म हजारो दुख दर्द होगे तो नीद आयेगी कहा से। नीद जरूरी भी है इसलिय गोलिया ले लेती हू जिससे कुछ देर नीद आ जाती है। स्वय अपने मस्तिष्क को बहुत कमजोर अनुभव करने लगी हू लेकिन जो कुछ चल रहा है अच्छा है। मरना तो एक दिन है ही। जल्दी ही सही। मुझे जिन्दगी से कोई चार्म रहा भी नही। तुम्हारे दोस्त का रिसर्च वर्क पूरा हुआ कि नही बहुत मेहनती है वह।

नरेन्द्र का वर्क बाकी है। वाकई बडा मेहनती है। हम पहिले साथ पढ़ा करते थे। आज शाम को क्लब मे आओ उसने भी आने को कहा है। अच्छा रहेगा। राजेश गया आफिस ?

पता नही। डैडी तो बागान गय हुए हैं। तुमने नाम लिया और देखो वे आ रहे हैं। लगता है सीरियस है।

हा, कुछ ऐसा ही है।

नमस्ते। शरदजी।

नमस्ते। राजेश, बैठो।

बस, धन्यवाद। जरा जल्दी मे हू।

परेशान से लग रहे हो।

कुछ भी मान लो। आज लखनऊ जा रहा हू वहा के कॉलेज मे मुझे लेक्चरर बनने का चास मिला है। यहा क वातावरण से लगता है दम घुटने लगा है। हर ओर औपचारिकता और आडम्बर के सिवाय कुछ भी नही। मैं बहुत पुराने विचारों का आदमी हू ना। आज के माहौल, माडर्न लाइफ मे अपने को एडजस्ट करने मे बिल्कुल असमर्थ हू। बडे लोगो के बीच रहकर उनकी माडर्न लाइफ म बाधा न बनू क्योंकि प्रत्येक को स्वतत्रता है और वह जैसा चाहे वैसा कर सकता है।

लेकिन एक बात जानना चाहता हू क्यो नही अपने मे चेंज लाने के बारे मे सोचते हो। इस तरह की जिन्दगी से डरकर क्यो भागना चाहते हो।

कौन डरता है ? जिस अर्थ म तुम कह रहे हो, तुम जिस जिन्दगी की तारीफ कर रहे हो उसम कोई सच्चा प्यार नही सब कुछ दिखावा है, नग्न दिखावा। हजार बार मना किया नम्रता से कि वह अपनी जिद छोड दे लेकिन उसमे न जाने कौनसी जडता आ गई है, उसे मेरी बातें कडवी लगती है। शाम को लखनऊ जा रहा हू नम्रता। तुम जैसे भी प्रसन्न रह सको रहो, मुझे कोई आपत्ति नही।

तुम्हारी कोई गलती नही है तुम्हारे संस्कार ही ऐसे रहे हैं। मनुष्य स्वयं मे अच्छा है लेकिन परिस्थितिया और वातावरण ठीक नही होने से उस पर भी वैसा ही प्रभाव पडना स्वाभाविक है। तुम जिस भी प्रकार प्रसन्न रहो, मेरी शुभ कामनायें हैं।

राजेश, तुम ठीक कहते हो मनुष्य स्वय बुरा नही होता। पर तुम थोडे दिन और ठहर जाओ, मेरी शादी पर यही रहोगे तो अच्छा रहेगा। तुम्हारे जीवन के प्रति विचार सुलझे हुए हैं।

जहा तक ठहरने की बात है मैं नहीं रुक पाऊंगा क्योंकि मुझे सुबह को कालेज मे ड्यूटी ज्वाईन करनी है। आज बारह हो गयी है। इस नौकरी को छोडना नही चाहता क्योंकि जबसे दार्जिलिग आया हू क्या कुछ भी लिख नही पाया हू। हमेशा दुख होता रहता है। कालज मे रहूगा तो अवश्य लिखने का समय मिल पायेगा। जब कुछ नही लिख पाता हू तो मेरा दम घुटन लगता है।

सिन्हा साहब से बात करली ?

हा, वही से आ रहा हूँ। उन्हे दुख हुआ लेकिन जहा कोई मेरी बात की इज्जत करने वाला न हो मैं वहा रुकने के बजाय मर जाना अच्छा समझूगा।

कहा जा रही हो, नम्रता ?

कही नही जा रही हू।

बैठो भी।

नही, शरद मैं इनकी ये सब बेकार की बातें सुनते सुनते तग आ गयी हू। इनकी आदर्श की, शिक्षा की बातें सुनते सुनते मेरे कान पक गये हैं। इनको जाना है तो जायें। यहा रुककर मुझ पर कोई एहसान थोडे ही कर रहे हैं।

नम्रता, इतना गुस्सा मत करो। इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही मानता हू कि मैं तुम्हे ठीक से समझ नहीं पाया। तुम्हे कोई दोष नही दे रहा। तुम्हारी कोई गलती नही। खैर छोडो इन बातो को, तुम प्रसन्न रहना मेरा यही कहना है। जैसी जिन्दगी से तुम्हे खुशी मिले तुम रहो। मैं भी जैसे तैसे जिन्दगी को गुजार लूगा।

राजेश कब लौटेंगे ?

लौटने की तो बात ही नही। जा ही रहा हू कि वापस नहीं आऊ। यहा के वातावरण से मैं गले तक भर गया हू अब जरा सी भी इच्छा नही है कि यहा रहूँ। सारे विचार, विश्वास, प्रेम के स्वप्न खतम हो गये। अब तक सब बेकार की बातें थी। भ्रम अपनाए हुए था। अच्छा मुझे कुछ तैयारिया करनी हैं। आप बैठो।

३०

कैसी है तबियत डाक्टर ?

ऐसी घबराने की कोई बात नही मि० सिन्हा। यो ही जब जब नम्रता के दिमाग पर जोर पडता है इसे दौरा पडता है और इसकी यह हालत हो जाती है। फिर भी विशेष बात नही है जो कुछ करना चाहिये मै कर ही रहा हूँ।

डाक्टर तुम खुद देख रहे हो कितने दिन हो गये मुझे बिजनेस के बारे मे सोचे, लम्बा समय बीता है बागानो मे गये। दिन रात इसी के बारे मे सोचता हू लगता है जिन्दगी खतम हो गई है। बिजनस चौपट हो रहा है।

आप चिन्ता क्यो करते हैं ईश्वर जल्दी ही सब ठीक कर देगा।

मुझे नम्रता की चिन्ता के साथ उसकी लडकी की भी चिन्ता है जिसकी उम्र तीन साल हो गई है। नम्रता की हालत देखी नही जाती। यह न जाने क्या हो रहा है। उसकी बच्ची की अलग देखभाल।

मि० सिन्हा दिल छोटा मत करिये। आप भी चिन्ता करने लगे। जिन्दगी मे यह सब कुछ देखना ही होता है आदमी को। आपको पहिले त भी इतना कमजोर दिल वाला नही समझा था। नम्रता को ग्रोडमाल इपीलेप्सी हो गई है। अपनी जिन्दगी से स्वय ही वह परेशान हो गयी है। ऐसा हो ही जाता है मि० सिन्हा, आदमी अपनी परिस्थितियो मे ही उलझ कर इस बीमारी का शिकार बन जाता है। फिर भी हिम्मत रखो। उम्मीद है नम्रता को होश आ गया होगा, यदि नही आया हो तो अभी आ जायेगा। इन्जेक्शन दे दिया है। अच्छा नमस्ते। शाम को फिर आ जाऊ गा।

नमस्ते डाक्टर।

अमल, मम्मी लो रही है।

आओ बेटे, चलते हैं। नम्रता। कैसी हो ? ठीक तो हो ना ?

हा डैडी ठीक हू।

बेटे रो नही। देख नीना भी तुझे देखकर रोने लगी है। ऐसे नही करते बेटी।

आप मेरी चिन्ता करते है डैडी। मुझे कुछ भी तो नही हुआ। आप न सुबह खाना खाते है न शाम। मेरी चिन्ता नही किया करें। मेरा जो भी कुछ होना है हो जायेगा।

कैसी बातें करती है पागलपन की सी। मैं तेरी चिन्ता नहीं करूं ये कैसे हो सकता है। आज जब तुझे इस हालत में देखता हूं तो मेरा दिल रो पड़ता है। कभी सोचा भी न था कि इन दिनों को भी देखना होगा।

डैडी, नीना को देख रहे हो ना आपकी बातों को कैसे ध्यान से सुन रही है। आप बागान पर क्यों नही जाते ?

तुम्हारी मुझे चिंता अधिक है बिजनेस की नहीं।

मम्मी, डैडी को समझाओ ना। मेरे पीछे सारा बिजनेस छोड़कर बैठे हैं।

क्या समझाऊं इन्हे। समझाने की क्या बात है। दुखी हैं। ये भी क्या कर सकते हैं। तेरे डैडी ने तो तेरी ही इच्छा से राजेश से तेरी शादी कर दी। लड़का भी अच्छा था। बेचारे ने सारा काम संभाल रखा था पर क्या करें, भाग्य के आगे कहां चलती है। आ''' ' नीना दूध पी ले।

हां, नीचे ले जाओ। सारी चिन्तायें छोड दो। तुम्हें चिन्ता किस बात की हो सकती हैं भगवान का दिया इतना पैसा है, सारे आराम हैं और क्या चाहिये तुम्हें, हंसी-खुशी से अपनी जिन्दगी काट दो, नम्रता।

आप भी क्या बात करते है डैडी। पैसे से क्या होता है, क्या हो सकता है? मैं अब समझी हू पैसा कुछ भी तो नही है आत्मिक शांति, खुशी के सामने। शायद राजेश ने एक बार कहा था मुझे याद आ रहा है पैसा महज आवश्यकताओं की पूर्ति करने का साधन है और कुछ नही। वास्तव मे डैडी मेरी लाइफ में कोई खुशी नही रह गयी। लम्बा समय गुजरा है यह जाने हुए कि खुशी क्या होती है। इन आंसुओं ने जरूर मेरा साथ दिया है। मेरे को जब दिल में दुख होता है तो ये आंसू ही मेरा साथ देते हैं। मुझे इन्हें देखकर लगता है मेरा साथ देने वाले ये तो हैं। लेकिन ये दूसरे ही क्षण जब आंखों से गिरते हैं और सूख जाते हैं, आखें जब रो रोकर थक जाती हैं तो उनमें आंसू भी नही रहते। फिर ये भी मेरा साथ छोड़ देते हैं।

ऐसे नही सोचते नम्रता, अधिक चिन्ता नही करनी चाहिये।

राजेश को पत्र लिखे, तार दिये लेकिन कोई भी जबाब नहीं है उसका। सोचता हूं एक दिन के लिये लखनऊ चला जाऊं लेकिन तुम्हारी यह हालत देखकर जाने की इच्छा नहीं होती। देखो कब जाना होगा ?

आप क्यो बुलाना चाहते हैं उन्हें। वे नही आयेंगे अब। मेरी मित्र ने लिखा था कि वे आजकल लखनऊ आर्टस कालेज मे लेक्चरार है। अब प्रसन्न ही होंगे।

ममता, तुमने गल्ती की उसकी बेइज्जती करके। तुम तो जानती हो लेखक का मन कितना कोमल होता है। वह स्वाभिमानी है कैसे तुम्हारी बाते सुन सकता था। उसने जिन्दगी मे कभी देखा नही कि औरतें ड्रिंक करती हो, डास करती हो। उसे सब पसन्द नही था। तुम यदि थोडा भी ध्यान से सोचती तो जरूर उसके विचारो को समझ पाती।

डैडी, आप जो कह रहे हैं मैं समझती हू और तब भी समझती थी लेकिन उस समय न जाने मेरे मस्तिष्क पर क्या छाया हुआ था कि मुझे मेरी इच्छा मेरी जिद के आगे कुछ दिखता ही नही था। उस समय मुझम बुद्धि कहिये थी ही नहीं। उसी की वजह से आज मेरी यह हालत है। आप दुखी न रहा करें। मुझे जो भी दुख आज है उसका दुख अधिक इसलिये नही है कि जो कुछ भी आज मेरे साथ बीत रहो है उसको करने वाली भी मैं ही हू। हा इस बात का दुख जरूर है कि जो खुशी मै शादी स पहिले राजेश को देना चाहती थी समय परिस्थितियो और विचारो की विभिन्नता क कारण नही दे पायी।

अभी तुम आराम करो, रात ज्यादा बीत चुकी है।

नही डैडी, इन सब बातो को जब मैं दिमाग से बाहर निकालती हू तो मुझे बडी मानसिक शाति अनुभव होती है। मुझे लगता है मेरे दिमाग स कोई भारी बोझ उतर रहा हो। डैडी बडी अजीब सी जिन्दगी हो गयी है। लगता है अन्दर ही अन्दर कुछ काटता है, लगता है कोई घुन लग गया है जो मुझे साल रहा है। कोई भरोसा नही जिन्दगी का क्या हो। आपका प्यार है जो मैं जिन्दा हू वरना मुझे किसी चीज मे कोई मतलब नही। आप लखनऊ जाने की सोचत है ना?

हा, हा, क्यो नही।

कब।

निश्चित नही कह सकता। लेकिन सोचता हू पहिले तुम ठीक हो जाओ, फिर चला जाऊगा। मैं चाहता हू राजेश को जैसे तैसे समझा बुझाकर वापिस यही ले आऊ और सारा बिजनेस, जमीन, जायदाद उसके नाम करके शाति से रहू। अब मेरे से सब कुछ नही होता। मैं सोचता हू राजेश मेरी बात टाल नही सकता। तुम्हारा क्या विचार है।

करके देखने से ही कुछ कहा जा सकता है। मुझे आशा नही है क्योकि वे लेक्चरार हैं ही तो नौकरी क्यो छोडकर यहा आना चाहेगे। अच्छा पैसा मिल जाता होगा।

मैं नौकरी थोड़े ही दे रहा हू उसे। मैं तो सारी प्रापर्टी उसके नाम ही कर देना चाहू गा। इतनी बडी पू जी कम होनी है ?

डैडी, पैसे की तो उन्हे चिन्ता रही नही। पैसे की चिन्ता करते होते तो यहा जैसे तैसे रह लेते और लखनऊ नही जाते। उनके स्वभाव को जानती हू। उनमे स्वाभिमान है। सोचती हू डैडी कि मैं ही लखनऊ चली जाऊ। आपके जाने से हो सकता है लाभ न हो। मैं उनसे माफी माग लू गी उन्हें समझा लू गी। मुझे आपके जाने से कोई लाभ नही दिखता। मैं ठीक हू ऐसी कोई बात नही। मैंने नींद आने की गोलियां भी बहुत कम लेना शुरू कर दी है। फिर भी थोडी लेनी ही पड़ती है। गोलियो से लगता है दिमाग कमजोर हो गया है। कुछ भी ठीक से याद नहीं रहता। जी उठने सा लगता है डैडी मुझमे ताकत नही रही है। यो ही लगता है बेकार जी रही हू। क्यो मैं लखनऊ चली जाऊ तो कैसा रहे ?

ठीक है जाने की कोई बात नहीं है लेकिन कुछ दिन ठहरो।

मुझे कुछ भी नही होगा, डैडी। ये चक्कर यो ही आ जाता है वैसे कोई खास बात नही। आप क्या सोचते हैं मै ठीक नही हू। बिलकुल ठीक हू। नीना को ले जाना कैसा रहेगा ?

ठीक नही समझता। तुम चाहो तो बात दूसरी है। इस सबध मे तुम खुद सोच सकती हो। मैं तो सोचता हू राजेश से मिलकर तुम्हे बडी प्रसन्नता होगी तुम एकदम ठीक हो जाओगी। आदमी जब मानसिक चिंताओ से घिर जाता है तो इस प्रकार की स्थिति होती है। जब चिंताओ का नाश हो जाता है तो ये दुख भी समाप्त हो जाते है। तुम जाना चाहो तो तुम्हारी इच्छा है। डाक्टर का तुम्हारे साथ भेज दू गा कोई दिक्कत नही होगी।

नही ऐसी कोई बात नही। मैं अकेली जा सकती हू। कुछ भी नही होगा। आप इतनी ज्यादा चिंता करके मुझे ज्यादा अस्वस्थ कर देते हो। मैं ठीक हू, सोचती हू दो चार दिन मे चली जाऊ। आप आज बागानो पर जा आओ बहुत दिन हो गये। आप तो इतने ज्यादा मशगूल हो गये मेरी तबियत ठीक करवाने मे कि सारा काम ही भूल गये।

सोचता हू कि तुम नही जाओ तो अच्छा है। हो सकता है राजेश यहां आने म आना-कानी करे या तुम्हें फिर से अपनाा म असर्थता प्रकट करे तो तुम्हें और अधिक दुख होगा और तुम्हारा स्वास्थ्य और भी अधिक बिगड जायेगा।

नही ऐसा तो नही करेगे वे। मेरा अनुमान है क्योंकि आखिर वे भी इन्सान है उनके भी दिल है। आप चिन्ता न करें। इन दिनो मेरी मित्र भी लखनऊ

मे अपने भाई के यहा आई हुई है। मैं उसके पास ही ठहर जाऊगी या उनके घर चली जाऊगी।

अच्छा ठीक हैं। कहो तो बगीचो तक घूम आऊ, कैसा काम चल रहा है। मैनेजर से भी सारा इतने दिन का हिसाब किताब लेना है। तुम घूम फिर लो थोडा अच्छा रहेगा। आओ चाहो तो साथ घूम आओ।

आप ही हो आइये। मैं आराम कर रही हू। आप जल्दी लौटना।

अच्छा जा रहा हू। डाक्टर तो शाम को ही आयेगा।

मुझे डाक्टर की जरूरत नही है आप बेकार ही बुलवा लेते हैं, बात बात पर। आप हो आइए।

३१

अम्मा दो प्याले चाय बनवा देना।

अच्छा राजे थोडी देर मे भेजती हू।

हाँ और सुन क्या हालचाल है ?

शादी कर ली, लखपति घरान में और मुझे कह रहा है कुछ सुना। तू ही सुना कैसा घर है कैसी है भाभी। भैया, रे तू तो अपने को पचास साठ हजार रुपया दे देना, धधे मे लगा दूगा। उन सेठ लोगो के क्या फर्क पडता है। कुछ बोलेगा भी। कही शादी के लिये झूठ तो नही कह रहा था कि करली है।

यार बोर मत कर बेकार की बातें करके।

बेकार की बातें हैं ? पगला हो गया है क्या ?

हा बिलकुल बेकार की बातें है। वैसे शादी हुई जरूर लेकिन यह भी मान सकता हू कि हुई ही नही।

क्यो ऐसी क्या बात है ?

मत पूछ यार, फिर हृदय के सारे घाव हरे हो जायेंगे और दुखी हो जाऊगा। जो कुछ भी हुआ है उसे कहने से क्या लाभ जो बीत गयी उसको क्यो बार बार रोया जाये।

मेरी समझ में नही आया आखिर ऐसी क्या बात हो गई। तू सुन्दर है, साहित्यकार है, तेरे में गट्स हैं। समझ नही आया ऐसी क्या बात हुई।

देवदास तू एक ही बात बतादे क्या तू ये पसन्द करेगा कि तेरी भाभी शराब पीये ? क्लब मे रात को दो दो, चार-चार बजे तक गैरों की बाहो मे झूले, अपने बाय फ्रेंडस रखे ? सोचता हू जो भी बातें मैंने बतायी उनमे से कोई भी थोडी सी भी तुम्हे पसन्द नही होगी।

क्या कह रहा है। अपन यहाँ ऐसा रिवाज ही नही है। मुझे भी मेरे दोस्त लोग कहते हैं उनके साथ क्लब जाऊ लेकिन एक दो बार जाने के बाद इच्छा नही हुई कि ऐसी जगह जाया जाय जहा पैसा पानी की तरह बहाया जाता है। फिर ये भी तो है जिनके पास ब्लैकमनी है वे उसका क्या करें ? अपना दिल बहलाने के लिये पैसा फेंकते है, जवानिया लुटती हैं। जिनके चेहरे पर झूठी मुस्कान जरूर है लेकिन दिल मे मजबूरिया है, दुख है, दर्द है। राजेश कलकत्ते में मैंने ऐसे ही कलब्ज मे नाचने वाली लडकियो से व्यक्तिगत रूप मे उनके घरो पर बात की, रोना आ गया उनकी वास्तविक हालत पर। तुम जो उनकी दुखभरी कहानिया सुनते तो कई उपन्यास लिख देते अब तक। तुम तो दो चार दस या बीस उपन्यास लिखते हो लेकिन भैया उन डासर्स की व्यक्तिगत जिन्दगी अपने मे उपन्यासो से ज्यादा दिल को छू लेने वाली है। उनकी स्थिति देखकर देश के सारे पैसे वाले लोगो पर शर्म आती है। यह सारी बातें भाभी के बारे मे जानकर दिमाग मे सदमा पहुचा है। तो आगे क्या हुआ।

होना क्या था। तू तो मेरी आदत जानता है मैं स्वाभिमानी आदमी हूँ। जिस बात को अपने सिद्धान्तो के विरोध मे समझता हूँ फिर उस बात के साथ मेरा गुजारा नही हो सकता। मैंने नम्रता को बहुत समझाया। हा, पहिले चाय लेले। बडे बाप की बेटी है वह कैसे मान सकती है मेरी बात। एक बार उसने मेरा अपमान कर दिया फिर मैं वहा नही रुक सका चला आया। यहा लेक्चरर बनने की मेरी इच्छा भी थी क्योकि वहा पर मेरा लेखन कार्य बिल्कुल ठप्प पड गया था। इन सबके बावजूद भी मैंने उनकी कपनी को बहुत पैसा कमाकर दिया। सारा मैनेजिंग का काम मेरे जिम्मे था। मैंने सारे बेईमान लोगो को वहा से निकाल दिया। फिर तो कपनी दिन रात उन्नति करती रही। अब तो चार साल हो गये वहा गये। वैसे मि० सिन्हा के कई पत्र मेरे पास आये हैं कि मैं फिर से वहा चला आऊ। लेकिन मैंने उनके किसी भी पत्र का कोई उत्तर नही दिया। उत्तर देने से कोई लाभ तो था नही बेकार ही पत्र व्यवहार होता जिससे कोई मतलब नही था। गये सप्ताह भी सिन्हा साहब का रजिस्टर्ड लेटर आया था, पडा है। मैंने पढा भी नही है, जानता हू वही पुरानी बातें लिखी होगी।

तुझे क्या नम्रता की याद बिलकुल नही आती ? क्या तू फिर से वहा जाना नही चाहता ।

साफ बात यह है कि अब कुछ भी नही हो सकता । अब तो मेरे और नम्रता के बीच इतनी बडी खाई आ गई है जिसे वक्त भी नही पाट सकता । समय को जो ये दुनिया वाले मानते हैं कि गहरे से गहरे दुख दर्द बदनामी को खतम कर देता है भुला देता है लेकिन यह बात मेरे पर लागू नही होती । मुझे कोई आशा नही कि अब मैं दोबारा नम्रता से समझौता कर लू । उसके पिता सिन्हा साहब के एक पत्र मे तो उन्होंने लिखा था कि वे मुझे अपनी सारी जमीन जायदाद का वारिस बनाना चाहते हैं । मुझ पर उनके इस प्रकार के प्रस्ताव का भी कोई प्रभाव नही है ।

पर यार, जब सारी जमीन जायदाद तेरे को दे रहे हैं तो तुझे भी क्या पडी है कि नम्रता मे अच्छाई बुराई को देखे । तू अपने आराम से रह ।

कैसी बच्चो की सी बात करता है । मुझे पैसे का लालच होता तो मैं दार्जिलिंग मे बडे शानदार बगले व कारो को छोडकर नही चला आता यहा पर और य पढाने का काम करता । पैसे का लालच होता तो जैसा नम्रता कहती, उसके पिता कहते हैं वैसा ही करता, लेकिन मुझे पैसा चाहिये ही नही । दो समय रोटी इज्जत के साथ मिल जाये बहुत है । लेकिन यार बडे दुख की बात उसके डैडी ने एक पत्र मे लिखी थी कि वह जीवन से बहुत तग आ चुकी है और उसे इपीलेप्सी हो गयी है । उसका भरोसा नही कब उसे दौरा पड जाये । ऐसे लोगो की जिन्दगी का कोई भरोसा नही रहता । उसने नीद आने की गोलिया भी बडी तादाद मे लेना शुरू कर दिया है ।

दिन भर गोलियो के नशे मे पडी रहती होगी इससे उसे दुख के बारे मे कुछ भी पता नही पडता होगा । लेकिन होश आने पर फिर वही दुख, घुटन, निराशाएँ, कुठायें आ घेरती होगी और वह दुखी हो जाती होगी । भैया, इन सब बातो से लगता है उसने जो कुछ भी किया, उन सबका उसे दुख है और वह अपने को बुरा समझती है । अब तो उसे समझ आ गयी है । पर यार चार साल लम्बे समय मे तुमने उसे एक भी पत्र नही लिखा ।

बिलकुल नही ।

नही, तुम्हे लिखना चाहिये था । तू तो यार शुरू से बडा क्षमाशील स्वभाव का रहा है फिर ये गलती कैसे कर दी ?

क्षमा कहा तक ? और किसे किसे करू । सब गलती करते रहें और मैं माफ करता रहू । सोचता था इसे समझ नही है धीरे-धीरे आ आयेगी । लेकिन एक

दिन जो उसने कहा वह मेरे दिल मे लग गयी। उसी बात के कारण मैं वहा से यहा चला आया। मुझसे एक रात जब वह क्लब से ड्रिंक करके लौटी तो मैंने उसे मना किया कि वह इस प्रकार देर तक रात मे घर से बाहर नही रहे। लेकिन वह मेरे से बहस करती रही, मैंने फिर भी कुछ नही कहा। लेकिन गुस्से मे तो था ही मैंने कहा मैं चाहू तो तुम्हे क्लब मे जाने से रोक सकता हू तुम मेरी पत्नी हो तुम पर मेरा पूरा अधिकार है।

तो ठीक ही कहा तुमने, उसमे गलत क्या था।

सब कुछ ठीक था, लेकिन जो उसने जवाब दिया तुम भी सुनोगे तो बुरा कहोगे।

कहने लगी राजेश मैं तुम्हारी पत्नी हू ये ठीक है लेकिन तुम्हें यह नही भूलना चाहिये कि तुम मेरे पिता के नौकर हो।

इतनी हिम्मत, कमाल कर दिया उसने। तूने कुछ भी नही किया उस समय।

सच था तो मैं उनका नौकर ही। मैं दूसरे ही दिन वहा मे नौकरी को, नम्रता को छोड कर चला आया। आज भी उसकी वही यह बात सालती रही है। जिन्दगी मे ऐसी बात किसी के मुंह से नही सुनी। वहा क्यो रहता। मुझे यहा पर नौकरी मे भी अच्छा पैसा मिल रहा है इज्जत की नौकरी है। दो-तीन घटे पढाया और घर चले आये। फिर जो चाहे घर पर काम करो। मैं यहा हू तो छोटा भाई पवन भी पढने लगा और अब एम० ए० मे है वरना मेरे यहा न होने से बहुत बिगड गया था। लेकिन मैंने इसे वापिस सभाल लिया। एक साल बाद ये भी किसी नौकरी पर लग जायेगा। फिर इसकी चिन्ता न रहेगी। शादी कर ही दी है साहबजादे के बच्चे भी हैं।

और एक तुम दुनिया को लुटाये बैठे हो।

नहीं यार, इस लुटी दुनिया मे ही मुझे खुशी है। मजे की बात तो यह है कि अपनी दुनिया तो शुरू से ही लुटती रही है और हम बैठे लुटाते रहे हैं और फिर भी दुनिया के सामने तो हम ही रहे हैं।

दुनिया से क्या होगा, तुम खुद ही सचमुच हसो तो मजा है।

अपने लिये अब हसना-रोना एक ही है। जिन्दगी जो भी बीती है तुम्हारे सामने है, तुम जानते ही हो सब कुछ।

लेकिन तुम नम्रता को माफ कर सकते हो। जबकि उसका पिता इतना तुम्हें लिख रहा है।

देव, जिन्दगी एक ही तो मिली है। क्या पूरे जीवन एक्सपेरिमेन्ट्स ही करता रहूगा। एक्सपेरिमेन्ट्स करने के लिये जिन्दगी नहीं होती।

इस प्रकार की गलतियां सबसे होती हैं यही सोचकर उसे माफ कर सकते हो।

मैंने तुझे बता दिया कि मैं माफ कर ही नही सकता और मैं होता ही कौन हू। उसके पिता जो मुझे बार बार लिखते हैं, यह मानता हू उनका वास्तव मे मेरे पर स्नेह है प्यार है। लेकिन इसके साथ मैं ऐसा हू उनकी नजर मे जो उनकी प्रापर्टी को बर्बाद नही होने दू गा। ये उनका लालच है अपनी जायदादें, अपने धन के लिये।

भैया, उनके लालच के साथ तेरा भी फायदा है। सब धन का मालिक तू है ही। देख नीचे शायद कोई आवाज दे रहा है।

कौन है यार, देखता हू अरे विकास ऊपर आ जा। ले एक और दोस्त आ गया। कैसा सयोग है पुराने सारे दोस्त कई दिनो, सालो बाद मिल रहे हैं। आ '' यार, आ।

और कैसे हो।

अपनी कता, मेरे तो ठीक है। तेरे से मिलने आया हूँ। दार्जिलिंग मे सिन्हा साहब से मिला था। तेरे से बहुत माफी चाही है और जल्दी से जल्दी तुझे वहां बुलाया है।

इन बेकार की बातो के अलावा कोई दूसरी बात कर। पिताजी ठीक हैं ना ? बिजनेस कैसा अच्छा चल रहा है ?

पिताजी ठीक हैं। बिजनेस मे तुम क्या समझो, अच्छा चल रहा है। तुम्हारे व नम्रता के बारे म सब कुछ मालूम पडा, दुख हुआ। पर तेरे से एक बात कहू यार, वह क्लब मे जाती थी तो तेरा क्या बिगडता था और आजकल तो ड्रिंक करना स्टेन्डर्ड हायर सोसायटी मे आता है।

और पति के होते हुए भी बाय फ्रेंडस रखना भी इसी स्टेन्डर्ड मे आता है। क्यो ठीक हैं ना।

जमाना बदल गया। पुराने सिद्धान्तो, रीति रिवाजो को तोडना होगा मेरे भाई।

छोडो इसे। चाय पियेगा या काफी।

चाय ही बनवा ले। वैसे मैं पीकर ही होटल से निकला हू।

पी भी ले यार, बडा ऐहसान होगा।

व्यंग मत कर, पी तो रहा हू।

अम्मा, अम्मा, भई एक प्याला मेहरबानी करके और बनवा देना।

एक बात बता, नम्रता से मिला था दार्जिलिंग मे ?

हा, हा, तुझे सच कहू अब उसे देखकर लगता है कारवा गुजर गया, उसकी उम्र ही बीत गयी समझ। उसे इपीलेप्सी के बहुत दौरे पडते है। मस्तिष्क से कमजोर हो गई है। सच कहू यार अब वह तो जिन्दगी के बाकी दिन गिन गिनकर निकाल रही है उसकी एक छोटी लडकी भी है। होगी तीन चार साल की।

लडकी है ? खैर होगी।

उसके डैडी की हालत और ज्यादा खराब है। बेचारे परेशान रहते हैं।

पर तू उनके घर पहुँच कैसे गया ? ये तो बताया नही तुमने।

यो ही होटल मे भेंट हो गयी, उन्होने मुझे पहिचान लिया और मैंने भी उन्हे।

तो क्या पहिले ही जान पहिचान थी उनसे।

अब तू सब कुछ कहलवा रहा है। क्या कहू। मेरे गुरू जब मैं एक बार बिजनेस के लिये दार्जिलिंग आया था और तेरे साथ ही दो एक दिन रहा था तब मैं वही लडकी देखने आया था। भैया कार मे जो लडकी देखी थी मैंने, उसके लिये तुमने कहा था कि वह मि० सिन्हा की लडकी है। मुझे जब यह मालूम हुआ कि जिसे मैं देखने गया था वह मेरे दोस्त की प्रेयसी है तो मैं तेरे साथ यो ही घूम फिर कर बबई लौट आया था।

यह बात तूने तब क्यो नही बताई थी।

सच बात यह है कि तेरे मे मेरे मे क्या फर्क है मैंने नही की शादी तुमने कर ली। यही सोच कि जब तेरा उससे प्यार है मैं लौट आया। दूसरी बात शादी करने की तब इच्छा भी नही थी कोई विशेष।

अच्छा तो आप महान त्यागी हैं।

मजाक मत उडा देवदास। मैंने क्या बुरा किया। इसे त्रास दिया और इस लेखक ने खो दिया। बता अब तेरा क्या विचार है नम्रता के प्रति। मेरा कहना है उसे मानले फिर से अपनी पत्नी के रूप मे और माफ कर दे।

बोर मत कर। अम्मा भई इसकी चाय लाओ ना।

रहने भी दे। माताजी, चाय रहने दो अभी पीकर आया हू।

बेटे, बच्चे से दूध मगाया था, सो ला रहा होगा।

रहने दो माताजी फिर कभी खाना ही खाऊ गा और देवदास तुम बैठोगे क्या ?

क्यों भई, मुझे काम नही है क्या ? अच्छा चलेंगे।

अच्छा नमस्ते।

३२

जिन्दगी जहां कुछेक क्षणों की खुशी, आनन्द को देती है। वही दूसरे ही क्षण अपने मजबूत व क्रूर हाथों से सारी खुशियों का समेट लेती है। बच जाता है दुख दर्द और जीवन से गहन विरक्ति। ये सब न जाने क्यों होता है मनुष्य इन सबके प्रभाव से टूट जाता है, उसमें साहस नहीं रह जाता है कि जिन्दगी स स्वयं बैठकर कोई खुशी मांगे फिर तो यही इच्छा होती है कि दुख बढ़ और बढ़े।

क्योंकि जीवन के दुखों से थकित आदमी कभी भी खुशियों की ओर बढ़ना ही नहीं चाहेगा क्योंकि वह जानता है जिसे उसने खुशी समझा है वह खुशी नहीं दुखों की शुरुआत है। इसी प्रकार से जीवन से विरक्त, उदास मनुष्य राजेश। जिसमें जीवन के प्रति उसकी दिखाई देने वाली खुशियों के प्रति उदासीनता का भाव हैं। आज वह खुश हैं इसलिये कि उसे किसी खुशी की इच्छा नहीं। इन्हीं विचारों को किसी आगन्तुक की आवाज न तोड़ दिया।

कौन? देखना पवन कौन आवाज दे रहा हैं।

हां देखता हू। कोई महिला हैं।

अभी आया। कौन, अरे। नीरजा। ऊपर आ जाओ, ठहरो मैं आया।

आओ। नमस्ते।

नमस्त, राजश। मुझे तुमसे कुछ जरूरी काम था इसलिये आई हू।

ये ही क्या कम हैं कि आपने आने का कष्ट किया। ऊपर बैठें, फिर जो कुछ भी काम हो बताना और डाक्टर साहब कहा हैं? हां बैठो।

वे तो बम्बई है। तुम्हारे लिये उन्होंने कई बार अपने मित्र को फोन किया, लेकिन तुम न जाने यकायक कहा चले गये पता ही नहीं चला।

हां। चला आया था। फिर दोबारा भी मुझे नौकरी की आवश्यकता पड़ी थी लेकिन यहीं कालेज म मुझे नौकरी मिल गयी और आपके दर्शन नहीं कर पाया। सच पूछो तो तुमसे मिलने की हिम्मत भी नहीं थी।

मैं सब समझ गयी कि मेरी यही बातों से निश्चित तुम्हें दुख पहुँचा होगा और उसी के कारण तुम चले आये। डाक्टर साहब तो तुम्हारे काम से इतने खुश

थे कि तुम थोडे समय मे ही अच्छे पद पर आ जाते। पर तुम वहा से चले आये। उन्हे तुम्हारा बडा दुख रहा। उस दिन जो कुछ भी कहा उस सबका मुझे बहुत दुख हुआ। तुमसे क्या कहू न जाने क्यो, कैसे तुम्हे जो मु ह मे आया कहती गई।

छोडो भी। मुझे इन बातो से कोई फर्क नही पडता। अब तो आदत सी पड गयी है। हरेक छोटे बडे दुख को सह जाना मेरे लिये विशेष बात नही। जिन्दगी मे कोई इच्छा नही रह गयी जो कुछ है वह यह कि दिन बिता रहा हूं क्योकि यह सब जरूरी है। भाई है छोटा, वह पढ रहा है यही मेरी प्रसन्नता है और कुछ नही। डाक्टर साहब कितने बच्चो के पिता बन हुए हैं।

दो बच्चे है छोटे। डाक्टर साहब तो प्रेस के बाद घर पर ही उनके साथ खेलते रहते हैं। उनके जीवन मे एकदम परिवर्तन आ गया है। बडे मस्त स्वभाव वाले बन गये हैं। गये दिनो भैया के बच्चा हुआ है। उन्ही से मिलने के लिये आयी थी। अब शीघ्र ही वापस जाना है। अरे, मैं बातें ही किये जा रही हू। जो काम

पहिले नाश्ता करलो, फिर काम की बात।

कैसी बातें करते हो। नम्रता आज सुबह आयी थी। उसकी तबियत बडी खराब है, कह सकते हो सीरियस है। तुम जल्दी से घर चलो।

क्या करूगा, वहा जाकर।

ऐसी बात मु ह से नही निकालते। जल्दी चलो। बेचारी कितनी दुखी है। मैंने अब तक उसे कभी इतनी खराब हालत मे नही देखा था। तेज बुखार है उसे और भी कुछ बीमारी है। तुम चलो तो सब मालूम हो जायेगा।

नही नीरजा अभी फिर ऐसी जगह मत ले जाओ, जहा से मुझे और दर्द मिले, जिसे मे सहन न कर सकू। पहिले ही मैं जिन्दगी से तग आ चुका हू यदि मुझे और दर्द मिलेगा तो हो सकता है मैं आत्महत्या ही कर बैठू। तुमसे मैंने अभी क्या कहा था अब मेरा उद्देश्य जीवन को जीना नही है, महज गुजार देना है। नीरजा तुमसे क्षमा चाहूगा, नहीं चल सकता।

क्या हो गया है तुम्हे, कैसी बात करते हो। नम्रता आखिर तुम्हारी पत्नी है। तुम्हारा प्यार उसके लिये बहुत आवश्यक है। देखो, मुझे घर से चले बहुत देर हो गयी है न जाने कैसी हालत है उसकी जल्दी तैयार हो जाओ।

नही चल पाऊगा, नीरजा। सच कह रहा हू मेरे लिये जाना कठिन है।

मेरी तुमसे प्रार्थना है भगवान के लिये तुम चले चलो। हो सकता है उसे होश आ जाये, ठीक हो जाये। सुबह तो उसे होश आ गया था। काफी देर बात

हुई लेकिन फिर उसे दौरा पडा गया। जो कुछ और भी बहुत कुछ हुआ है वही चलकर बताऊंगी, अभी यहा नही।

नीरजा ...।

मेरी बात मान लो, आज तो ...।

मेरी बिलकुल भी इच्छा नही चलने की। मुझे अब दुख-खुशी किसी के पास जाने मे अच्छा नही लगता। मैं तो इन सबसे बहुत दूर रहना चाहता हू। तुम कह रही हो, इसलिये चलना पडेगा। चलो।

ऐसे चलोगे। कपडे तो बदल लेते।

नही ऐसे ही। ठीक है।

जैसा तुम चाहो। गली के बाहर अपनी गाड़ी खडी करवा कर आयी थी।

वहा अधिक ठहर नही पाऊंगा।

चलो तो सही। पहिले ही लौटने की कहने लगे। तुम्हारे मे सब इतना क्यो बदल गया है। अजीब बात है। इस उम्र मे अबकि तुम्हे लम्बी जिन्दगी बितानी है। क्या वह ऐसे ही बिता पाओगे। आओ बैठो।

ड्राइवर चलो।

तुम क्यो नही अपने आपको एडजेस्ट करने की कोशिश करते हो तुम अपने को थोडी सी भी खुशी आज की इस हालत मे दे दो तो तुम बहुत प्रसन्न रह सकते हो। क्या कमी है तुम्हारे को नम्रता के पिता के पास जो पैसा है वह कितना है।

पैसा नही प्यार चाहिये था मुझे। इज्जत चाहिये थी, उनकी जगह जो मिला कहूंगा बेइज्जती। आज मैं अपने परिवार का जिस गरीबी से गुजारा कर रहा हू, जानता हूं। लेकिन मेरे छोटे घर मे मेरी इज्जत है। मैं खुश हू रही बात एडजेस्ट करने की वह मेरे से नही हो पाता है और न ही मैं करना चाहता हू जिसमे सच्चाई कुछ भी न हो तथ्य भी न हो। मुझे तो सरलता से रहने मे अच्छा लगता है।

तुमने जमाना देखा नही है।

छोडो इन बातो के लिये मुझे तुम्हारी दलीलें नही सुननी। जो कुछ भी अब तक हुआ ठीक है और उसके लिये मुझे कोई खेद नही है। मैं अपने मे ही ठीक हूं, प्रसन्न हूं। तुम्हे नम्रता ने मेरे लिये कुछ कहा ही होगा।

हा, कहा। लेकिन अब जो उसकी हालत है वह देखी नही जाती। कितनी कमजोर हो गई है उसे इपीलेप्सी भी हो गई है। उसने नींद की गोलियां लेलेकर अपने को इतना बेकार बना लिया है कहा नही जा सकता। थोडी थोडी देर में फेन्ट हो

जाती है। आज जब मैं उसे लेने स्टेशन पहुँची अपनी सीट पर सो रही थी लेकिन जब मैंने उसे जगाया तो वह हिल भी नही सकी। उस समय भी वह बेहोशी की हालत मे थी यह अच्छा हुआ कि उसे उसी समय होश आ गया लेकिन वह मुश्किल से कार तक बाहर चल पायी और फिर कार म ही बेहोश हो गयी। घर पर डाक्टर ने बताया कि जब गाडी सुबह लखनऊ पहुची उसी रात उसने नींद लाने वाली बहुत ज्यादा गोलिया खाली थी। अच्छा हुआ समय रहते उस डाक्टर ने सभाल लिया। नही तो नम्रता अब तक इस दुनिया मे नही होती। आओ उतरें। ड्राइवर गाडी रोक लो। ऊपर ही है वह। उसने अपने को बिलकुल नष्ट कर लिया है। तुमसे वह माफी मागे तो तुम उसे माफ कर देना।

कैसी बात करती हो। मैं कौन होता हू उसे माफ करने वाला।

शाति रखो सामने ही उसका पलग है, सुनेगी तो और दुखी होगी। आओ, धीरे से। भाभी, क्यो होश आ गया, उसे।

हा। थोडी देर पहिले तो ठीक थी अभी फिर दौरा पड गया है। तुम्हारे भैया डाक्टर को लेने गये हैं। उसके पास न जाना बहुत रो रही थी।

राजेश आओ उधर बैठते हैं। एक मिनिट आयी देखती हू बुखार तो नही है।

बालकनी पर खडा हू तुम हो आओ।

राजेश, उसे तेज बुखार है। लो, भैया आ ही गये। अब सब ठीक हो जायेगा, डाक्टर भी आ गया है और तुम भी। भैया, उसे तो तेज बुखार है, ये ही हैं नम्रता के पति राजेश।

अच्छा। डाक्टर जरा देखो कैसी है तबियत। आओ राजेश जी।

जी। हा

हा भैया। डाक्टर साहब इसे बडा तेज बुखार है। आप इसे पहिले होश में ले आइये।

पहिले वही कर रहा हू, इन्जेक्शन लगा देता हू, अभी होश मे आ जायेगी। लगा दिया। सीरियस कडीशन है। इस हालत मे कैसे चली आयी ये भी। अच्छा नही किया इन्होने।

डाक्टर क्यो चली आयी। लम्बी कहानी है यह।

बुखार अधिक है। दूसरा इन्जेक्शन लगा देता हू। लगता है होश आरहा है।

रा जेश, तुम आ गये।

हा नम्रता, मैं लेकर आयी हू इन्हें अभी।

डाक्टर आओ हम उधर चाय पी लेते है ।

देखिये पेशेन्ट से ज्यादा बात नही कीजिये । इनके दिमाग पर बिलकुल भी जोर नही पडना चाहिये । आइये ।

राजेश क्यो तुमने माफ कर दिया न मुझे । मैं गलतिया कर बैठती हू । तुम्हारा स्वभाव अच्छा है । तुम्हारी बात न मानकर मैंने बहुत बुरा किया ? सब कुछ खो दिया है अपना । तुम्हे पा लू गी तो मुझे सब कुछ मिल जायेगा । मैं जिन्दगी की एक ऐसी कगार पर खडी हू यदि तुम सहारा दे दोगे तो जी जाऊ गी वरना दूसरी ओर गिरकर मर जाऊ गी । बोलते क्यो नहीं ।

क्या कहू । कुछ कहू भी तो क्या होगा, कुछ भी तो नही । तुम ठीक हो जाओ, आराम से रहो और क्या ।

अच्छा, तुमने माफ कर दिया .. ना अपनी . नम्रता... को । देखा नीरजा । मैं कहती नही थी राजेश मुझे जरूर माफ कर देंगे । मुझे तुमने जो भी कहा सब ठीक था । जब मैंने वास्तविक रूप मे दुनिया को पास से देखा तो सब समझ गयी । नगेन्द्र जो रिसर्च कर रहा था, उसने मेरे से खूब सबध बढाये । मैं भी उसके चक्कर मे फसती गयी । उस समय उसके लिये मेरे दिल म इतना विश्वास हो गया जिसे कहा नहीं जा सकता । मुझे रोज नये नये चक्कर देना जीवन का उद्देश्य बना लिया । शराब मे ही उसने हजारो रुपया डैडी की मेहनत की कमाई मे से बहाया । मुझे हमेशा कहता रहा कि वह शादी शुदा नहीं है । लेकिन बाद मे मालूम पडा कि वह विवाहित था । इस बात से मुझे लोगो पर से विश्वास ही उठ गया । उधर शरद मुझे मार देने की धमकी देकर मुझसे तीन लाख रुपया ले गया । उन दिनो मैं ही कपनी का हिसाब सभालती थी । जो भी मेरी सहायता करने आया, दिल से वह खराब था । शरद जिसे शुरू से प्यार किया, उसने मुझे मार देने की धमकी दी । उन्हे पैसा चाहिए, एक तुम हो डैडी की सारी प्रापर्टी छोडकर चले आये । राजेश, मुझे माफ कर दो ।

माफ करने वाला कौन होता हू मैं ।

क्यो नही होते, तुम मेरे सब कुछ हो ।

नहीं नम्रता नही । मुझे अब किसी से प्यार नही, किसी के प्रति विरोध नही । तुमने जो कुछ भी किया ठीक है । मैं उसके लिये तुम्हे कुछ कह नही रहा ।

ऐसा नही कहो राजेश । तुम्ही तो हो मेरे सब कुछ । तुम्हे खुशी नही है तुम्हारे एक लडकी भी है ।

क्या खुशी हो सकती है ? कुछ भी नहीं ।

भूल गये कि तुम कितना चाहते थ । आज कैसी बातें कर रहे हो । जैसे जानते ही न हो । तुम भूल गये अपने वायदो को जो तुमने कभी किये थे । मुझसे मेरे दर्द को बटाने के लिये मत कहना कि मैंने कौन सा तुम्हारा साथ निभाया ? राजेश तुम इतने कठोर कब से बन गये। तुम तो लेखक हो । तुम तो क्षमाशील रहे हो।

कौन मैं लेखक हू ? पहिले कभी था अब तो मैं केवल अपने शरीर को जिलाये जा रहा हूँ। इस दिल म अब कोई चाह नहीं । चार साल बीत गये तुम्हारे लेखक राजेश को मरे । अब तो मेरे पास छोटे स बीते दिन के विशाल कटु अनुभव है और इन्हे ही मैं अब अपने जीवन की बडी उपलब्धि मानता हू। मैं किस माफ करू ? इस योग्य नही नम्रता ।

राजेश इतने पत्थर दिल न बनो । मुझे फिर से अपना लो । मैं तुमसे माफी मागती हू अपनी गलतियो का प्रायश्चित करती हू । मुझे नयी जिन्दगी मिल जायेगी । क्यो इतने विरक्त हो गये हो ।

कौन मैं ? मैं तो सोचता हू मेरे मे कोई अन्तर नही है । विरक्ति की जो बात है उसके लिये क्या कहू अब जिन्दगी म कोई इच्छा नही है न ही कोई कमी है सब ठीक है चलना रहेगा ।

मिसेज नीरजा । प्लीज पेशेन्ट से ज्यादा बात नही कीजिये । केस बहुत सीरियस है ।

अच्छा डाक्टर । आओ बाहर खड होते है नम्रता को आराम करने दो ।

पहिले बता दो राजेश तुमने माफ कर दिया ना अपनी नम्रता को । राजेश एक बार हा कहदो कहदो ना ।

नम्रता ठीक हो जाओ मेरी इच्छा है । तुम फिर क्षमा करने को कह रही हो । मैं किस अधिकार से तुम्हे माफ कर सकता हू ? तुम दूसरे शब्दो मे कह सकती हो माफ नही कर पाऊगा । क्योकि अब तक जिन्दगी म जो कुछ बीता है उस सबने मुझे ऐसा बना दिया है ।

रा जे श क्यो क्यो भूलते हो मैं मैं तुम्हारी पत्नी हू ।

कौन किसका होता है नम्रता ? कोई किसी का नही । न जाने ये दुनिया के लोग बडी सरलता बेशर्मी से कहते हैं कि ये किसी के है कोई उनका है ऐसे लोगो के प्रति मेरे दिल मे कोई जगह नही । पहिले कभी गलती से थोडी रही होगी तो आज वह भी नही है । तुमने ही मुझे खुशिया दिखाई मेरी निराश जिन्दगी मे आशा उत्साह दिलाने का नाटक किया । क्या हुआ उससे ? जो कुछ तुमने किया वह सब उस समय के लिये ठीक था । लेकिन शादी के बाद अब जीवन के

वास्तविक धरातल पर तुम आयी तो जो मैंने तुममे देखा– जिससे मुझे सख्त नफरत थी और उन्ही से तुम्हें बेहद प्यार। उन सारी बातो मे तुमने मुझे ठुकरा दिया, बडी लापरवाही से। इन सब बातो के बारे में मुझे कुछ नही कहना है। जो कुछ भी कह गया, चाहता नही था।

तो फि .. र। तुमने मु-मुझे माफ न .. न नही किया .।

मैंने कहा न मैं जिन्दगी के दुख-दर्द से गले तक भर चुका हू। अब कुछ भी नही करना चाहता, इस बेकार की जिन्दगी मे जिसमे शाति न हो, स्थायित्व न हो। मुझे अपनी जिन्दगी से सख्त नफरत है नम्रता और

देखते नही बेहोश हो गई। डाक्टर को बुलाओ सामने वाले कमरे मे से।

मैं बुलाती हू। भैया डाक्टर। वह फिर बेहोश हो गई।

मैंने पहिले ही कहा था उसके दिमाग पर बिलकुल भी जोर नही पड़ना चाहिये, आओ।

डाक्टर एक इजेक्शन और

एक मिनिट वेरी सॉरी, पेशेन्ट की मृत्यु हो चुकी ··।

नम्र · ता, नम्रता कहा चली गयी तुम? लो राजेश सभालो अपनी नम्रता को। तुम्हारे मे इतनी कठोरता, जडता कहा से आ गई। वह रोती रही, चुपचाप देखते रहे, सुनते रहे। तुमसे इतना भी न हो सका कि बढकर उसके बहते आसुओ को पोछ देते। ऐसा क्या हो गया है, तुम्हे? पूछती हू जवाब दो।

राजेश ने नम्रता के चेहरे पर चद्दर ढकते हुए कहा छोडो नीरजा, इन सारी गुजरी बातो को। ऐसा नही करते। जिन्दगी के कुछ दिन और बाकी हैं लेकिन कहानी आज खतम हो चुकी है। अब तो इस जीवन में सी.मित सासे शेष हैं। अच्छा नम्रता मैं जा रहा हू। मेरे से यदि हो सकता तो मैं क्षमा कर देता।

बाहर तेज बरसात हो रही है नीरजा आखो मे आसुओ को लिये बालकनी से सडक पर निस्पन्द, बोझिल पैरो से जाते हुए राजेश को देखती रही जब तक कि वह उसकी आखो से ओझल नही हो गया।

